ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

के नियम

(जन्म आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

—उद्देश—

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला ५ को प्रकाशित हुआ करेगा।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २॥।) रु० है एक प्रति का मूल्य।) है।

३—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहियें।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जौहरी बाजार आगरा

नोट-"ओसवाल" को रवाना करते समय कई दफा जांच की जाती है, फिर भी किसी के पास नहीं पहुंचे तो कार्यालय को सूचना मिलने पर फिर उनकी सेवा में भेजा जासकता है।

निवेदक—मैनेजर "ओसवाल"

जौहरी बाजार आगरा

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाज का, जिस से कुछ उपकार॥

वर्ष ७ | आगरा, जनवरी सन् १९२५ ई० | अङ्क १

नव-वर्ष का स्वागत।

लेखक—
पंडित हरस्वरूपजी त्रिवेदी

प्यारे! प्यारे!! नूतन वर्ष, आओ स्वागत करें सहर्ष।
जाति प्रेम की उठै तरंग, गाढ़ी निद्रा होवे भंग।
ज्योति जगै फिर पलटै रंग, होवे सब का आदर्श॥१॥
दिन दिन दूनी बढ़े उमंग, ऊलें उन्नति रूप तुरंग।
शासन के हों उत्तम ढंग, छाये भारत का उत्कर्ष॥२॥
धन-विद्या बल राशि बढ़ै, गौरव गिरि पर जाति चढ़ै।
शीघ्र समुन्नति पाठ पढ़ै, जग जाये प्रिय भारतवर्ष॥३॥

पीयूष वर्षक छन्द ।

(ले० श्रीयुत मोहनलाल जी शर्मा फत्तेपुर खानदेश)

जो सुविज्ञ सुवीर सुत इस जाति के ।
थे सहायक प्रेम से सब भांति के ॥
हर्ष इन सब के हृदय में छागया ।
अहा ! अब तो वर्ष नूतन आगया ॥१॥

जो पड़े हैं मूर्खता के जाल में ।
सो रहे भर नींद हैं इस काल में ॥
उनको जगाय दिखावें उत्कर्ष का-
दिन, यही उद्देश है इस वर्ष का ॥२॥

कहेगा सब को "सुपथ पर ही चलो ।
मत कुपथपर धर चरण अब उलमलो ॥
खोललो दृग, निडर हो सिखलायगा ।
भाव नूतन वर्ष का दिखलायगा ॥३॥

हे दयामय दृष्टि शीतल कीजियो ,
जान बालक बुद्धि बल अब दीजियो ॥
प्रभु ! जी सब समय होवे हर्ष का ।
पदारोपण शुभ बने नव वर्ष का ॥४॥

नेताओं के लिये एकही आवश्यक बात।

(लेखक-श्रीमान रामदासजी गौड़ अमरा)

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्त्तते।
नमे पार्थास्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन,
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त्त एव च कर्म्मणि।
यदि ह्यहं न वर्त्तयेयं जातु कर्म्मण्यतन्द्रितः
मम वर्त्मानुवर्त्तंते मनुष्याः पार्थ सर्वशः
उत्सीदेयुरिमे लोकाः न कुर्य्यां कर्म्म चेदहम्,
संकरस्य च कर्त्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।

बात बहुत सीधी है, बड़े २ लोग जैसा आचरण करते हैं, साधारण लोग उन्हीं की देखा देखी चलते हैं। बड़े पर बड़ी जिम्मेदारी होती है उसे अपना जीवन ऊंचा और पवित्र बनाना पड़ता है। जो बड़ा बना, परन्तु अपने को अनुकरणीय न बनाया उसने दम्भ किया और जनता को धोका दिया। एक व्यक्ति को धोखा देने वाला इस जगत् में दण्डनीय होता है पर यह बात आमतौर से देखी जाती है कि जनता को धोखा देने वाले निर्द्वंद्व विचरते हैं और सांसारिक मजे उड़ाते हैं। राजनैतिक आन्दोलनों में यह एक साधारणसी बात होगयी है, कि जो ज़रा अच्छा बोल लेता है नेता बन जाता है। मन और कर्म चाहे जैसे हों, आजकल नेतृत्व के लिये वाकपाटव आवश्यक गुण है, मन का हाल कोई नहीं जानता कर्म भी बहुत थोड़े देखते हैं। बचनों के सुनने

पढ़ने वाले हज़ारों और लाखों की संख्या में होते हैं यह स्वाभाविक बात है। इसी दम्भ से बचने के लिये गुरु का शिष्य को प्राचीन उपदेश है कि हम जो आचार करें उसका अनुकरण न करो, हम जो अच्छे उपदेश करें उन्हें मानो, तात्पर्य यह नहीं कि गुरु दुराचारी होगा, पर मनुष्य ही तो ठहरा। कोई खोटा आचरण हो जाय तो तुम उसका अनुकरण न करना, यह तो सच्चे ईमानदार गुरुओं का कहना है। पर ऐसे वक्ता बहुत कम देखे जाते हैं जो उपदेश करते हुए श्रोताओं को अपने अवगुणों से अभिज्ञ करते चलें। इसका प्रभाव श्रोताओं पर यह पड़ता कि श्रोता भी, जो उपदेश के अनुसार चल न सकते साफ़ और सच कह देते। श्रोताओं में दम्भ न फैलता; परन्तु वक्ता महोदय जो कराना चाहते वह बात न हो पाती, सत्य के प्रचार से दम्भ नष्ट होता, परन्तु जिस सत्कर्म का प्रचार वक्ता कराना चाहता, अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिये लाचार हो वक्ता को वही आचरण करना पड़ता और अपने को आदर्श बनाना पड़ता, सत्य इसीलिये बड़ा भारी शोधक है। औरों के सुधार के पहले इसीलिये अपना सुधार अनिवार्य है, नेतापर अपने सुधार की भारी जिम्मेदारी है पहले उसे ही तपस्या की आवश्यकता है, स्वयं तपस्वी बिना हुए श्रोताओं को तपस्वी नहीं बना सकता। भगवान् श्री कृष्णचन्द्र स्वयं अपने आचरण के बल पर ही अर्जुन को कर्मयोगी बना सके। उनका आदर्श संसार के सभी नेताओं के लिये आदर्श है। बुद्ध, जिन, ईसा, मुहम्मद आदि संसार के बड़े बड़े आदर्श चरित्रवान् थे, जो कहते थे वही करते थे, उनके चरित्रबल से ही उनके इतने अनुयायी आज भी बने हुए हैं।

सम्वत् १९७७ (१९२० ई०) के नागपुर के कांग्रेस ने पंचविध बहिष्कार और खद्दर प्रचार के प्रस्ताव पास किये सारे देश में बड़े ज़ोरों से आन्दोलन उठा। खिताबियों ने खिताब छोड़े, लड़कों ने मदरसे, बहुतों ने विदेशी कपड़े, वकीलों ने वकालत, मुकदमेबाजों ने

असहयोग आन्दोलन के आरम्भ से ही यह बात समझी हुई है कि असहयोग यद्यपि व्यापक हो सकता है पर ठीक ठीक बत्तीसों करोड़ भारतीय नर नारियों में उसका किसी भी काल में सर्व व्यापक होजाना असम्भव है। जितने असहयोग को कांग्रेस ने अंगीकार किया है, वह वस्तुतः बहुत थोड़ा है और साधारण मनुष्य से अत्यधिक त्याग नहीं कराता। एक तरह से यह दो बातों की कसौटी है. एक तो यह कि यदि राष्ट्र जीवित है, तो क्या इस पर इतने अत्याचार हो चुके हैं कि असहयोग जैसी त्यागशक्ति चाहनेवाली रीति का अवलम्बन करने को तैयार है-दूसरे यह कि क्या देश की सच्ची भक्ति ने समझदारों के हृदय में इतना स्थान कर लिया है कि वह अपने सुख समृद्धि पर लात मारकर वैराग्य और तपश्चर्या का अवलम्बन करें। एक ओर आवश्यकता की और दूसरी ओर भक्ति की इस प्रथा से सहज ही जांच होजाती है। अत्याचारों के कारण असअदालत और मेम्बरों ने सरकारी कौंसिलें। कुछ लोगों ने समझा कि यह त्याग केवल थोड़े दिनों के लिये है। कच्चा वैराग था, बहुत दिनों तक न चल सका; या उन्होंने जान बूझकर केवल थोड़ी मुद्दत के लिये त्याग किया था। अब उस वैराग्य से हटे, हटने के साथही उपदेशक पद से भी हट जाना स्वाभाविक था, वकील जब वकालत करने लगा, मुकद्दमेबाज़ी में जब मेम्बर प्रत्यक्ष रीति से फंस गया, जब स्वराज्य-पार्टी कौंसिल में गयी, तब अदालत और कौंसिलों के वहिष्कार पर व्याख्यान देना ऐसे लोगों के लिये असंगत होनाही था। कांग्रेस में वहिष्कार का उपदेश और उससे बाहर अंगीकार करो किया यह ईमानदारों के लिये असंगत बात थी। इसलिये वहिष्कार के विरोध में कांग्रेस के भीतर ही आवाज़ों का उठना उसी तरह युक्ति संगत था जिस तरह वहिष्कार के पक्षसमर्थन में, इस प्रकार दो दलों का होजाना स्वाभाविक था।

हयोग का अवलम्बन भी जनता के उसी अंश से हो सकता है जिसे हम समझदार कह सकते हैं। जिस समय यह रीति देश के सामने रखीगयी देशके दिल और दिमाग ने इसे तुरन्त स्वीकार कर लिया। कुछ थोड़ीसी संख्या पूर्णतया व्यवहार में भी लायी। परन्तु परिस्थितियां कुछ ऐसी होगयीं कि ठीक पता नहीं चल सकता था कि मनसा वचसा कर्म्मणा देश का कितना अंश असहयोग का पूरा अनुयायी है। जो लोग वस्तुतः लम्बे चौड़े व्यख्यानों में चरखे की स्तुति कर जाते थे और जनता को चरखा खद्दर की ओर उत्साहीं करते थे उनमें से बहुत थोड़े ऐसे थे जो स्वयं कातते हों या सूत की तरह शुद्ध खद्दर का ही व्यवहार करते हों। अनेक कांग्रेस के नेता तो ईमानदारी से अपने व्याख्यानों में यह स्वीकार कर लेते थे कि हम अमुक २ कार्य्यक्रम में विश्वास नहीं रखते अथवा अमुक २ बहिष्कार व्यवहार में नहीं ला सकते। श्रोताओं पर इसका अनिष्ठ प्रभाव पड़ता गया। उनके मन कांग्रेस कार्य्यक्रम से हटने लगे। देश में जो मुर्दनी सी छायी दीखती है; उसका एक कारण यह भी अवश्यही है। कहनेवाले साफ़ कहते हैं कि कांग्रेस के बड़े २ नेता तक अमुक बात मानतेही नहीं तो मेरे जैसे साधारण मनुष्यों की बातही क्या है। और यह सच है कि बड़े २ नेता ही जब फिसल रहे हैं, तो "तथ-देवेतरो जनः" जनता भी उसी तरह फिसलेगी ही।

अहमदाबाद में महात्माजी के प्रस्तावों ने इस लेख की आदि में उद्धृत गीता के श्लोकों को चरितार्थ कर दिया जनता के प्रतिनिधि ही तो देश के नेता हैं। प्रतिनिधियों पर २००० गज सूत कातकर देना अनिवार्य कर देने से कई भलाइयां सहज ही हो गयीं। अब कांग्रेस के वक्ता फिसलने वाले नहीं रह गये। कांग्रेस के प्लेट फार्म से वही बोलेंगे जो कांग्रेस के ठहरावों को सोलह आना मानते हैं और उन्हीं के अनुकूल आचरण करते हैं। जनता के लिये कोई संदेह युक्त या दुविधे की बात उनकी जबान से नहीं निकलेगी। सच्चे आचरण करने वाले ही वस्तुतः देशका उद्धार

कर सकते हैं। कांग्रेस इस समय आंच की दशा में है। बहुतसे लोग उससे अलग होरहे हैं। वेलगांव की कांग्रेस तक उसकी रचना भिन्न प्रकार की हो जायगी। प्रतिनिधि-सदस्य कम हो जायंगे, परन्तु वही रह जायंगे जो कातते हैं। खद्दर का प्रश्न बहुत कुछ सरल हो जायगा। "स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्"। देशको धीरे २ अधिक व्रतशील बनाने में यह संस्था प्राणपणसे लग जायगी और वेलगांव में यदि वर्त्तमान संगठन को काम करने आज्ञा मिली और यह काम करने पाया तो हम आशा कर सकते है कि वरस दो वरस में देश सार्वजनिक भङ्गावज्ञा के लिये तैयार हो जायगा। गीता में नेताओं के लिये जो मार्ग बताया है वैसे ही मार्ग का इस समय अनुसरण हो रहा है।

परन्तु स्वराज्यदल की नीयत कांग्रेस को अपने हाथों में लेने की मालूम होती है। यदि भारत की अधिकांश जनता यही चाहती है, तो भी कोई बुराई नहीं है। कांग्रेस का सारा संगठन हमारे स्वराज्य पक्ष के भाई चलावें और अपरिवर्त्तन-वादियों को चाहिये कि उनसे लड़ें नहीं, वरन अलग होकर अपना संघ बनायें, और उसके द्वारा चरखा, खद्दर, और बहिष्कारों का प्रचार जारी रखें, चुपचाप अपने विश्वास के अनुकूल, बिना भाइयों से झगड़ा किये ही काम करते जायं। दोनों दलों का लक्ष्य एकही है. विधियां भिन्न हैं, इसीलिये दोनों अपनी अपनी विधि से काम करें। जिधर जन सम्मति अधिक हो, कांग्रेस उधर ही हो।

कांग्रेस किसी दल के हाथ में रहे, नेता कोई भी हो, परन्तु देश हित के लिये अपने दायित्व पर ध्यान रखें, अपनी जिम्मेदारी पर निगाह रहे, कि भारत के नेताओं के नेता भगवान् कृष्णचन्द्र ने नेताओं के क्या कर्त्तव्य बतलाये हैं। आचरण आत्मा को शुद्ध करता है, मनको दृढ करता है, वचन प्रभावशाली निकलते हैं, विचार मजबूत होते हैं,

कहने और करने का प्रभाव अन्तर्वाहिनी धारा के रूप में बहता है, और हमारे आस पास के लोग, हमारे प्रभावक्षेत्र में आने वाले उस धारा में बिना बहे नहीं रह सकते मन और कर्म से पुष्ट वचन श्रोताओं के हृदय में स्थान करते हैं और विचार और कार्य्य के वास्तविक वाहक होते हैं। भारत का कल्याण इसी में है कि हम ज़बानी जमा खर्च छोड़कर, कार्य्यं वा साधयामि शरीरं वा पातयामिपर दृढ़ता से आरूढ़ होजायं। कांग्रेस के किसी ठहराव के स्थिर रहते उसे व्यवहार में न लाना, कांग्रेस को बलहीन कर देना है, जनता में दुर्नीति फैलाना है, और मानते हुए स्वयं उसपर आचरण न करना दम्भाचार है। नेताओं के लिये एकही आवश्यक और अनिवार्य बात है, और वह है, मन वचन कर्म से ठहरावों का सोलह आना पालन।

एवं प्रवर्त्तितं चक्रं नानुवर्त्तयतीह यः,
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ सजीवति।
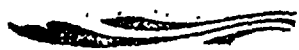
——निरोग रहने की इच्छा करने वाले प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह तम्बाकू और सिगरेट का व्यसन छोड़दे। तम्बाकू और सिगरेट से होने वाली हानियों का हिसाब नहीं लगाया जा सकता।
—महात्मा गांधी

——चुरुट, तम्बाकू पीने से बुद्धि नष्ट होकर मनुष्य की अधर्म में प्रवृति होजाती है; यह एक ऐसा नशा है जो कई अंशों में शराब से भी बुरा है।
महात्मा-टाल्स्टॉय

बलिदान

—:o:—

हमारी समाज में कई कुरीतियां ऐसी हैं जो हमारे दुःख दूर करनेके बदलेमें दुख बढ़ा देती हैं। जब किसी के घरमें मृत्यु होजाती है तब उसे ढाढस बंधाने के लिये दूसरों का आना आवश्यक हो जाता है और अनावश्यक भी है। किन्तु जब हम उस जगह घी खिचड़ी का व्यवहार देखते हैं तब उसमें बुराई भी पाते हैं। जब घरमें मृत्यु होजावे तब दूर २ के सम्बन्धी मिलने के लिए आते हैं और उनको भोजन कराना भी जरूरी बात होजाती है किन्तु उसमें घी खिचड़ी ही खिलाना चाहिए यह रूढी जबसे हुई है तबसे न मालूम कितने गरीबों को इस चिन्ता में लगकर अपने घरके आदमी के जानेके दुःखमें वृद्धि हुईहै। कई गरीबों के लिए तो यह चिन्ता मनुष्य के जाने के दुःख की अपेक्षा अधिक दुःख दायक होजाती है। किन्तु क्या किया जाय समाज में रह कर यदि वह सामाजिक टैक्सों कोन चुकावेगा तो उसके लिए समाज निन्दारूपी शासन देने के लिए तैय्यार है भला इस शासन के आगे उन गरीबों की क्या चले। वे डर के मारे चुपचाप टैक्स चुकाने के लिए तैय्यार होजाते हैं। भारत में इन अभागियों की संख्या कम नहीं है।

हीरालाल भी इन अभागियों में से एक था। घरमें दरिद्रावस्था जैसे तैसे गुजरान चलता था। तिसमें भी ३ बहिनें थीं जिनका खर्चा सहन करने में वह यद्यपि दुर्बल था तथापि माता की इच्छा के कारण वह बोल नहीं सकता था। एक बहन का अभी विवाह होने का बाकी था, वह तेरह वर्ष की होचुकी थी किन्तु [illegible] अच्छा देखना चाहिए इस माता के

आग्रह ने अभी तक विवाह नहीं होने दिया था। व्यापार बिलकुल बैठ गया था, लोगों के तरफ का लेना रुपया बिलकुल आता नहीं था। ऐसे समय में उसके पिता की मृत्यु होगई। विचारा आफत में फंसा जितना पिता के मरने का शोक नहीं था उतनी चिंता थी, घी खिचड़ियों की, उसे यह मालुम था कि हमारे सगे सम्बन्धी बहुत हैं और वे सभी आवेंगे। जिसमें उसकी माता का ध्यान इस बात की ओर सदा रहता था कि-मेहमानों की पूर्ण खातरगीरी रखी जाय एक थाल में यदि पाव सेर घी झूटा न पड़ा तो फिर घर का नाम डूब जाने का भय था। इसलिये हीरालाल को कोई मार्ग नहीं सूझ पड़ता था, केवल घी खिचड़ियों का प्रश्न हल हो जाने से ही काम नहीं चल जाता। क्योंकि पीछे ओसर की चिन्ता थी ही। आखिर निश्चय किया कि स्त्री के अङ्ग पर का जेवर रेहन रखकर घी खिचड़ी की समस्या हल करें। वह बेचारा माता को सांत्वना देने के लिए अन्दर गया। प्रथम तो उसकी माता खूब रोई बादमें उसने पूछा—कलसे मेहमान आना शुरू हो जावेंगे, घी की क्या व्यवस्था की कमसे कम एक मन भी तो अवश्य चाहिए।

हीरालाल-क्या किया जाय मैं बड़ी चिन्ता में पड़ गया हूँ, घरमें तो एक रुपया भी सीलकमें नहीं है, उधार कोई देता नहीं।

माता-इससे क्या चाहे जो करो बड़ों के नामकी रक्षा तो करनी ही पड़ेगी आज तक के नाम पर क्या पानी फिरा दोगे?

हीरालाल-पर आपही बतलाइए कि क्या कीया जाय?

माता-अपनी स्त्री के जेवर रेहन रखदो।

हीरालाल-माता जी मैंने वह तो सोचही लिया है किन्तु इससे कितने रोज चलेगा। सुन्दर के विवाह में उसका सारा जेवर चला गया रहा सहा अब चला जावेगा, और रहा भी कितना होगा २००-३०० रुपयों का, फिर भी ओसर का प्रश्न हल नहीं होता। इस लिए यदि घरकी स्थिति समझ कर खर्च किया जाय तो अच्छा होगा।

माता-तो क्या घरके नाम को डुबा देना है। हे भगवान! तू मुझे यह

देखने के लिए क्यों रखा रे ! यों कहकर रोने लगी। विचारा हीरालाल अधिक चिन्ता-मग्न होकर वहांसे उठा।

(२)

ओसर की रूढी कबसे प्रचलित हुई यह बताना यद्यपि कठिन है तथापि इस प्रथा का आगमन हमारे समाज में ४०० वर्ष के पहिले न था। इसका कहीं हमारे साहित्य में तथा धर्म में प्राचीन समय में स्थान न था किन्तु किसी एकाध श्रीमान्‌ने अपने पिताकी मृत्यु पर लोगों को जिमा दिया होगा तभी से यह रिवाज प्रचलित हुआ होगा। क्योंकि एक दूसरे की देखा देखी सो भी बुरे काम के करने के लिये हम सदा तत्पर ही रहते हैं। यद्यपि इस प्रथा के उत्पन्न होने में उनके निर्माण-कर्त्ता ने जाति सेवा भी समझी होगी, किन्तु आज तो यह एक प्रकार का टैक्स होगया। यदि टैक्स न चुकाया जाय तो निन्दा-रूपी दण्ड के डर से भयभीत हो जाना पड़ता है; खासकर गरीबों के लिए तो यह बात अत्यन्त ही चिन्ता की तथा दुःख की बात होगई है; क्योंकि उन्हें सन्मान की सदा प्रतिज्ञा करनी पड़ती है। इसलिए खासकर इस मोसर को तो वे सन्मान की ही वस्तु समझते हैं; क्योंकि हम दरिद्री हैं यों समझ कर हमारा समाज में मान न रहेगा। वह हम मोसरों के द्वारा मिटालें यह भावना उनके हृदयमें होना स्वाभाविक है। कितनेक कुटुम्बों में तो इन कार्यों की बदौलत जो दरिद्रता सचमुच नहीं थी वह आगई। कैसी विस्मृति, कितनी भूलें !!

हीरालाल के कुटुम्ब की वही स्थिति थी। मान के लिये कार्यों में हदसे ज्यादह खर्च कर करके ही दरिद्रता आई थी और दरिद्रता आने पर भी खर्च कम नहीं किया यदि कर्ज होजाय और फिर इज्जत चली जाय तो हर्ज नहीं, किन्तु समाज में तो हम सदा ऊंचे रहें ऐसी उसके घरके लोगों की भावना थी इसी कारण से वह आज बड़ी मुसीबत में है। बैठा २ यह सोच रहा है कि इस आपत्ति से कैसे छुटकारा मिले। इसी चिन्ता में वह बैठा है कि—एक सज्जन का वहां आगमन हुआ। हीरालाल ने कहा—'शोभाचन्दजी आये।' शोभाचन्दजी ने बैठकर पूछा—क्यों भाई हीरालाल मोसर के सम्बन्ध में क्या

किया ? हीरालाल अपनी निर्बलता नहीं प्रकट होने देने के लिए बोला व्यवस्था कर रहा हूं। शोभाचन्दजी बोले-हीरालाल तुम मेरे से छिपाना चाहते हो पर मेरे से छिपा नहीं है। मैं तुम्हारे पिताजी का एक हित-चिन्तक मित्र था मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है कि इस समय तुम बड़े आर्थिक कष्ट में हो और इसी लिये मैं आज तुम्हारी सहायता के लिये आया हूँ। चलो सेठ धन्नालालजी के यहां से तुम्हें रुपये दिलवाये देता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी प्रतिष्ठा को अपनी प्रतिष्ठा समझता हूँ। हीरालाल ने मनमें विचार किया यह सज्जन न तो मेरे पिताजी के मित्र थे न हमारे हित चिंतक और आज अचानक आकर सहायता देने के लिए तत्पर बने इसमें कुछ भेद तो अवश्य होना चाहिये किन्तु क्या किया जाय आजकी चिन्ता तो दूर होती है। इसलिये इनकी सहायता लेना अनुचित नहीं होगा, योंविचार कर वह बोला आप कहते हो वह ठीक है किन्तु रुपये को आगे चलकर क्या व्यवस्था करूं। शोभाचन्द जी हंसकर बोले अरे इसकी तूने भी खूब सोची आज प्रसंग तो निकल जायगा फिर मैं ही तुझे कोई मार्ग बता दूंगा, चिन्ता मत कर। शोभाचन्द जी के हीरालाल को २०००) रुपये कर्ज दिलाकर पितृऋण से मुक्त होने में सहायता दी।

(३)

ओसवाल समाज के धर्म तत्व महान हैं। वे अपने को अहिंसा धर्मी मानते हैं, प्रेम तत्व के पूर्ण अनुयायी अपने आपको समझते हैं किन्तु उनका आचरण में वे तत्व बहुत कम दीख पड़ते हैं। एक दूसरों के प्रति उनके द्वेष इस सीमा तक भरा हुआ है कि किसी का यदि कार्य अच्छा होता हो उसे विगाड़ने के लिये नीच से नीच उपाय काम में लाते हैं। कारज वाले के काम में कठिनाइयां उपस्थित करने के लिए उसे २-४ बार बुलाने के लिए आए बिना नहीं आना अपना गौरव समझते हैं। जरासी कारजवाला कुछक हदेतो उसके प्रति असहयोग करना यह उनके बांये हाथ का खेल है। असहयोग

यह यद्यपि भारतवासियों को महात्मा गांधी ने परिचय में लाया है तथापि हमारा समाज तो इसका प्रयोग कई दिनों से कर रहा है। यद्यपि भूंठन छोड़ना उनके धर्म में पाप माना गया है तथापि कार्य-वाले की मिठाई लुटाना यह पवित्र और परम कर्त्तव्य समझ कर आध सेर मिठाई एक पत्तल में छोड़ना यह आवश्यक बात उन के लिए होजाती है। इस समय कारज वाले की जो दशा खराब होती है। उसका वर्णन करना सर्वथा असम्भव है, क्योंकि इसका बुरा परिणाम खासकर उन लोगों को ही भोगना पड़ता है जो कि गरीब हैं तथा जिनके आई बन्दों का आड़ा कमी है।

हीरालाल के यहां आज मोसर है, उसके सगे सम्बन्धी तथा अन्य ज्ञातिय बन्धु आज उसके घर लड्डू उड़ाने आये हैं। हीरालाल को ४ दिन होगए विश्राम एक क्षण भर भी नहीं है। क्योंकि सिवाय उसके और कोई काम करने वाला न था। उसने चार दिन में सभी व्यवस्था ठोक ठाक करके रखी थी किन्तु इससे दोष निकालने वाले कब कमी करते। अजी क्या आप गये से बोलता तक नहीं, बड़ा गरूर है तो हमें किस लिए बुलाया, हमसे बोलने हमारी खातिरदारी करने के लिए उस के पास समय नहीं था तो क्या हम भूखे बैठे थे। उन्हें क्या जराभी विचार नहीं था कि उसकी विवशता की तरफ देखते किन्तु नहीं, हमें तो आज यह शिकार मिलगई है इसपर जितनी हुकूमत की जाय उतनी करने को अपना कर्त्तव्य समझते हैं। अबजीमना हुआ तब यद्यपि मिठाई अच्छी हुई थी तथापि जश देना यह ठीक न समझ कर आपस में हीरालाल की निन्दा करही रहे थे। क्या मिठाई बनाई है, इसमें न मालूम क्या खोपरे का तैल काम में लाया है क्या, नहीं तो ऐसी बास नहीं आती। और साग का तो कुछ ठिकानो ही नहीं और परसने वालों की बिलकुल पोलमपोल। अजी अपने से बराबर इन्तजाम न हो सके तो क्यों औसर करके नाम मिलाने की इच्छा रखनी चाहिए। इत्यादि अनेक प्रकार की निन्दा आपस में करते थे। उसके सम्बन्धियों का तो हालही मत पूछिये, जिसमें उसके बहन के

ससुरेवालों की क्या कहना है। आने इन्होंने इसपर सात पीढ़ी का दास ही बना रखा है। इस पर जो २ हुकूमत बजाई जाती हैं वह सब बजाई। जीमने के लिये ४-४ बार बुलाने को जाना पड़ता था किन्तु उन्हें ताश, चौसर के तथा बनाव सिंगार के आगे जीमने को कहां फुरसत थी। न मालुम विचारा क्या अपनी बहिन देकर इनका गुलाम बनगया था सि क्या! जिसमें भी इस ओसर में माल कम मिला इससे तो फिर एक दम हीरालाल के ऊपर उनकी कोप दृष्टि होगई थी। उसके मुंह परही जितने कटु शब्द बोले जांय उतने बोल कर उन्होंने शान्ती की, किन्तु बेचारे हीरालाल की दशा अत्यन्त सोचनीय होती चली। आर्थिक चिन्ता तथा मोसर के शारीरिक श्रम ने उसके स्वास्थ्य को बिलकुल नष्ट कर डाला तो भी ओसर तक तो वह चुपचाप काम करता गया। किन्तु ओसर के बाद उसे बीमारी ने धर दबाया और रोग के पंजे में सपड़ गया। इधर कर्ज की चिन्ता उसे बारंबार अस्वस्थ बनाती थी। उसकी माता ने उसकी बीमारी में डाक्टर को बुलाना उचित न समझा क्योंकि वह स्वयं बड़ी हुशियार कहलाई जाती थी। उसने उसे खूब पौष्टिक चीजें खिलानी आरम्भ की उसकी पाचन शक्ति पहले ही खराब होगई थी तिस पर जड़ और जल्दी न पचने वाला खिलाया जाना। जब वह नहीं खाता था तो उसे जबर्दस्ती खिलाया जाता था। वह कहती थी—बिना तेल के दीपक नहीं रह सकता वैसे बिना अन्न शक्ति नहीं आ सकती। आखिर परिणाम वही निकला कि हीरालाल इस व्याधीमय तथा अशान्त संसार से चल दिया और पीछे उसकी माता तथा पत्नी को अनाथ बना डाला। बन्धुओ! इस हीरालाल की माता की मूर्खता देख तुम्हे हंसी आती होगी किन्तु हंसते क्योंहो यह बातें तुम्हारे यहां भी पाई जावेंगी। और जब तक तुम अपनी माताओं को शिक्षा नहीं अशिक्षित रखोगे तब तक ऐसे हृदय विदारक दृश्य तुम्हारे हमारे देखने में आवेंगे।

(४)

हीरालाल की मृत्यु ने उसकी माता की आंखें खोलदीं उसे अपने कीये पर पश्चात्ताप होने लगा। उसने जिन लोगों को खिला कर अपना घर फूंक डाला

अपने बेटे को बलि चढ़ाया उनमें से एक भी उसकी सहायता देने के लिये आगे न बढ़ा। और तो क्या पर खुद बेटियों की ससुराल वाले जिनके घर में उसने हजारों का माल भरा था वे भी उसके दुःख में काम न आए। बेटी बड़ी हो गई थी उसका विवाह करना आवश्यक था। इधर कर्जदार कर्ज के लिये पीछा कर रहे थे। अन्त में शोभाचन्दजी ने उसे मार्ग बतलाया। यद्यपि उसने उस मार्ग में महापाप देखा लज्जा देखी किन्तु इलाज क्याथा। आखिर अपनी बेटीको भी बली चढ़ाया-एक वृद्ध के भेट करना अनिवार्य होगया। शोभाचन्दजी ने १००००) रुपये में सौदा ठीक करके धन्नालालजी के ऊपर इस कुसुम कली को चढ़ाया। धन्नालालजी की आयु पचास वर्ष की थी; यह बात हीरालाल की मा अच्छी तरह जानती थी, किन्तु क्या करे इलाज नहीं। अपना तथा उसकी विधवा पुत्र वधू का उदर पोषण के लिए उसेकुछ भी व्यवस्थाकरना जरूरी था, और इसीलिए उसनेजानबूझकर अपनी प्यारी बेटी को बली चढ़ाया

पाठको! आपको इस अभागिनी माता पर क्रोध आता होगा। और यह स्वाभाविक भी है किन्तु क्यालड्डू जीमते समय यह विचार कियाथा इसमें कि विष मिला हुआ!! या हीरालाल तथा उसकी बहिन के बलेदान का कारण आप लड्डू जीमने वाले नहीं हैं! यदि नहीं होंगे तो फिर न्याय और अन्याय कोई वस्तु ही नहीं है यो समझना पड़ेगा। ऐसे एकही नहीं किन्तु हजारों घर उजड़ रहे हैं और जिसका कारण लड्डू हैं फिर भी हमारा समाज न मालूम यह लड्डूओं का मोह क्यों नहीं छोड़ता। तथा लड्डू जिमाकर मान मिलने की इच्छा रखने वाले आज भी जागृत क्यों नहीं होते। आज हम कई बार मोसरों में जाकर मोसर करने वाले के कार्य में कठिनाइयां उपस्थित करना हमारा कर्त्तव्य समझते हैं यहबात बुरी होने पर भी छोड़ नहीं सकते और जब तक यह नहोगा तब तक ऐसेही हजारों हृदय विदारक दृश्यों को देखकर अन्तःकरण को दुखित बनानाही पड़ेगा।

शैतानों के बाबा

(ले० श्री हरस्वरूप त्रिवेदी)

कुसुम कली नव बाला पर बुड्ढे बाबा ललचाने हैं।
गर्दन हिलती कमर झुकी है मदन-मत्त मस्ताने हैं॥
हाथ पकड़ खींचा तानी आलिंगन-हित दीवाने हैं।
वृद्ध देश के वयोवृद्ध ही कलियुग में बौराने हैं॥
दाँत हिलें थर थर काँपें पर काटें कान जवानों के।
दूल्हा बन सिर मुकुट धरें ये बाबा हैं शैतानों के॥
मधुकर बन कर रस चुम्बन कर फूले नहीं समाते हैं।
बुड्ढे खूसट ब्याह नाम सुन ठठरी से उठ आते हैं॥
गाय भेड़ बकरी के सदृश कन्या बेची जाती हैं।
राँड़ अहा कर रँडुआ दल में फिर वे मौज उड़ाती हैं॥
यौवन मद में कुल कामिनियां कुल की लाज डुबातीं हैं।
अंधे मात पिता को कोसें रो रो कर बिलखाती हैं॥
कौतुक है कलिराज तुम्हारे कब तक दाल दलोगे तुम।
विधवाओं की आहों से अब फूलो नहीं फलोगे तुम॥

कुसुम कली नव बाला पर, बूढ़े बाबा लुभियाने हैं।
गर्दन हिलती कमर-झुकी है, मदन मत्त मस्ताने हैं॥
हाथ पकड़ खांचा तानी, आलिंगन हित दीवाने हैं।
वृद्ध देश के वयोवृद्ध ही, कलियुग में बौराने हैं॥

नवयुवकों के नाम सन्देश

भलाई और बुराई, सत्य और असत्य, हित और अनहित समझने की शक्ति सभी में होती है, एक बालक से लेकर वृद्ध तक, अविज्ञान से लगाकर विद्वान तक, अबुद्धिमान से लगाकर बुद्धिमान तक, क्योंकि सभी में आत्मा एक है और आत्मा का धर्म है जानना, पर फिर भी बुरे काम होते ही हैं। अनहित समझकर भी वे बातें की जाती हैं। वह क्यों की जाती हैं? आज हमारा बीड़ी तम्बाखू, भांग, गांजा, नाच, तमाशे, तथा विदेशी कपड़ों के इस्तेमाल से नाश होरहा है—हानी हो रही है सब जानते हैं फिर भी उनको छोड़ते हुए नहीं देखते इसका कारण क्या है?

हम दो भागों में बटे हुए हैं एक शारीरिक और आत्मिक। शारीरिक भाग वह है जो हम खाते पीते हैं और हम सुख भोग करते हैं। इसका ही सम्बन्ध हमेशा हमको रहता है इसकी जो प्रवृत्ती रहती है वह हमको सुख भोग की तरफ लगाती है और हम उसके आधीन होकर सुख भोग में निमग्न हो जाते हैं, तब हमसे बुराई होना स्वाभाविक है। क्योंकि वासना ही मनुष्य को पाप में डुबोने वाली है। जब मनुष्य उसका गुलाम बन जाता है तब वह अधिकाधिक उसे अपनी गुलामी में जकड़ती है और धीरे २ हम पाप की ओर झुकने लगते हैं। तब हमारा आत्मा हमें कहता है कि यह करता है वह ठीक नहीं है। तब उसकी आवाज-सच्ची किन्तु

चुभती हुई बात से हमारा अन्तःकरण जलने लगता है। हम पश्चाताप करने लगते हैं किन्तु कुछ देर बाद हम उस बात को भुलाने की चेष्टा करते हैं और इसलिए बुरी आदतों के अन्दर मनको मशगूल बना लेते हैं त्यों २ हमारा सच्चा ज्ञान मिटकर हम धीरे २ कुप्रवृत्तियों के दास बनते जाते हैं और फिर हममें सत्य समझने की शक्ति नहीं रहती है। हम दूसरों की अच्छी बातें देखते हैं पर यदि विचार पूर्वक देखें तो हमारे पास ही वह बात है।

मेरे कहने का मन्तव्य पाठकों के हृदय में आही गया होगा। वह यह कि हमको हमारी बुरी आदतों का त्याग करके आत्मा के तरफ ध्यान देना चाहिए। और आत्मा से सत्य असत्यता की जाच करवा लेनी चाहिए। दूसरों के पाससे समझने की आशा नहीं रखनी चाहिए। क्योंकि दूसरा भी वही कहेगा जो कि तुम्हारा आत्मा तुम्हें कहता है। फिर हम तुम्हें क्यों समझा रहे हैं यह प्रश्न सामने आता है। उत्तर सरल है जब तुम अपनी आत्मा की शक्ति का बिलकुल ध्यान नहीं करते हो केवल वासनाओं के और मनके पीछे लग मनुष्य जीवन जैसी वस्तु व्यर्थ गंवा रहे हो तब कहनाही पड़ेगा। और कहना वही है जो तुम्हारा आत्मा कहता है। किन्तु तुमजो बात भूल गये हो वही बात तुम्हें स्मरण में लानी है तुम्हारे आत्मा का तुम्हें फिरसे साथ जोड़ने का है, और आत्मा के कहने माफिक चलने लगना है।

यदि एक पापी से पापी और बुराइयों का करने वाला हो उससे पूछिए बुराई करना अच्छा है क्या? एक कन्या विक्रय करने वाले से पूछिये कि कन्या विक्रय करना अच्छा है क्या? नहीं, यही उत्तर मिलेगा, किन्तु उस मनुष्य ने अपने आपको वासनाओं के इतना आधीन बना रखा है कि उसे इन घृणित और पापमय काम करने में तनिक भी संकोच नहीं होता। जब किसी मनुष्य का मन पाप की ओर जाता है और वह प्रथम पाप करता है तब आत्मा उसे धिक्कार देता है किन्तु फिर वह अपने मनको दुःख से छुड़ाने के लिये आत्मा की

धिक्कार विसारने के लिये किसी भी बात की तरफ चित्तको लगा लेता है। खासकर उसे बड़ा आश्चर्य इस बातका होता है कि फलाने ने जब यह कार्य किया है तब मुझे क्या हर्ज है। और फिर वह अपने मनको दूसरे की निन्दा करने में, बुराई करने में तम्बाखू भांग इत्यादि आदतों में फंसाकर आत्मा के धिक्कार से बचता है। किन्तु इससे उसके पाप बढ़ते जाते हैं वह पतित बनता जाता है। और फिर उसमें आत्मा के कहने माफिक चलने की शक्ति नहीं रह जाती है। और ज्यों २ बुराइयां बढ़ेंगी त्यों २ आत्मिक ज्ञान घटता आवेगा।

पर प्यारे नवयुवको तुम अभी तक बुराई के पंजे में इतने नहीं पड़े हो और न अभी तुम्हारा पतन ही हुआ है। इससे तुम्हें आत्मिक-ज्ञान अर्थात् सत्य को समझने की शक्ति अधिक है। तुम इस शरीर की वासनाओं के वशवर्ति नहीं बने हो इसलिये तुमको अपने कर्त्तव्य की पहिचान जल्दी होती और है आज तक बड़े २ देशभक्त समाज सुधारक यही कहते आये हैं कि:—

नवयुवक ही जाति का जीवन हैं, क्योंकि नवयुवक ही जाति के लिए सर्वस्व अर्पण करके कर्त्तव्य पालने की शक्ति को रखते हैं।

उनका उत्साह ही इतना होता है कि जिसमें वे शारीरिक सुखों की तरफ़ बिलकुल ध्यान नहीं देते। इसलिए तुम्हें मैं यह कह देना उचित समझता हूँ कि तुम अपने कर्त्तव्यों का जाति तथा देश के प्रति पालन करने के लिए तैयार हो जाओ। आत्मा से पूछिये कि क्या जाति का ऋण चुकाने के लिये सर्वस्व त्याग करना हमारा कर्त्तव्य नहीं है? वह यही उत्तर देगा 'अवश्य' है।

फिर अब देरी मत लगाओ शारीरिक सुखों के दास बनकर कर्त्तव्य को मत भूलो तुम्हारी जन्म देने वाली जाति तुम्हें पाल पोसकर बड़ा करने वाली जाति, तुममें मनुष्योपयोगी गुण और सभ्यता भरने वाली जाति आज किस

यन्त्रणा में पड़ी है, किस अपमान से उसका शिर नीचा है आज अपने बालकों की दुर्दशा देखकर उसका अन्तःकरण विदीर्ण होकर देखो वह किस तरह आंखों से आंसू बहा रही है। जिसने भारत का महाजनपन लिया था चैतन्य लिया था वह जाति आज किस तरह अपने पदसे नीचे पड़गई है उसके पुत्रों के आपस में झगड़ना शुरू कर देने से देखो उसका हृदय टूक २ होरहा है उसके पुत्रों ने एक दूसरे के प्रति सहानुभूति न रखते देख उसका चेहरा कितना उदास होरहा है। उसके पुत्रोंके बुरे २ रिवाज अपने अन्दर लाने से देखो वह लज्जित होकर अन्य जातियों में बैठने योग्य नहीं रह गई है। देखो युवको तुम्हारी मां की क्या दुर्दशा है। उसकी यह करुणापूर्ण देखने की शक्ति तुममें ही है देखो वह तुम्हें क्या कह रही है—

मेरे प्यारे सुपुत्रो तुम सब मेरे पुत्र हो, भाई भाई हो, तुमको आपस में प्रेम और सहानुभूति रखना चाहिये था सह नहीं रखकर मेरे इन निर्बल बच्चों पर जुल्म कर रहे हो। तुम उनके ऊपर जराभी दया नहीं लाते यह देख कर मुझे दुःख होता है। तुम्हारे इस करनेसे मैं लज्जित हो चुकी हूं अन्य जातियों के सन्मान से वञ्चित होगई हूँ देखो तुमने मुझे जर्जर बना डाला है, रोगी अवस्था में हूँ। यदि तुमने मेरी बात न मानी तो मैं इसी चिन्ता में मर जाऊंगी, और तुम्हारी मां इस संसार से उठ जावेगी। इसलिए तुम मेरे लालो! मेरा कहना मानकर कार्य करो:—

तुम आपस में प्रेम स्थापन करो, हम सब एक मां के बेटे हैं, यों समझो।

अपने दुखित भाइयों तथा बहिनों की दुःखितावस्था देखकर उसे छुड़ाओ, यदि इसमें दुःख सहना पड़े तो सहो।

तुम्हारे में जितनी कुरीतियां हैं उतनी सब दूर करके सुरीतियों के प्रचार में लग जाओ।

तुम्हारे जितने सद्गुण हैं उन्हें बढ़ाकर तुम बुरी आदतों से छुटकारा पाओ।

तुम्हारे भाई जो निर्धन बन गये हैं उनके लिये तथा सद्गुण सदा के लिए रहें इसलिये प्रयत्न करो।

उठो लगो कार्य में देर न करो, बस

यही मेरा सन्देश इसीमें ही सब कुछ है यदि तुमने सुन लिया तो तुम सब कुछ कर सकोगे।

बन्धुओ क्या यह सन्देश सुनने की शक्ति तुममें है। जिनके कानों में अपनी स्तुति सुनने की आदत पड़गई। जिनको धनकी ही बात सुनने की आदत पड़गई है वह यह न सुन सकेगा। उनके कान धन की झनकार सुनने में हैं उन्हें माता की करुण किन्तु मन्द आवाज कहांसे सुनने में आवेगी। किन्तु जो अपनी वासनाओं के गुलाम नहीं बने हैं जिन्हें आत्मा की पुकार सुनने की आदत है वही इसको सुन सकेंगे- और वही सुनकर माता की यन्त्रणा- दुःख मिटाने के लिए आगे बढ़ेंगे।

मित्रो! केवल समझने से ही काम नहीं चलेगा। समझने तो तुम सदा ही हो यहाँ तो कार्य में लगना चाहिए आत्मा के बतलाये हुए सत्य मार्ग पर चलना चाहिए। यदि तुमने इतनी तयारी करली तो हम समझेंगे कि तुमने माता का रुदन सुना और माता का दुःख दूर करने के लिये प्रयत्न करने लगे उठो कर्त्तव्य में जुटने की तैय्यारी करो माता के दुःख दूर करने के लिए कमर कसो। उठो बन्धुओ फिर न कहीं सो जाना उठकर कार्यक्षेत्र में आओ और कार्य करने लग जाओ।

हमारा व्यापार

हमारी जाति आज व्यापारी जाति है, और कहते हैं व्यापारी लोग बड़े बुद्धिमान होते हैं तभीतो "आकल बुद्धि वाणियां, और पाकल बुद्धि बामणियां" य कहावत चालू हुई है और आजभी वही गर्व हमको है कि हम बड़े बुद्धिमान हैं किन्तु उनकी बुद्धिमानी का दावा निरर्थक है क्योंकि उनका व्यापार-सच्चा व्यापार उनके हाथ से निकल कर विदेशियों के दलाल और देश-वासियों की गर्दन पर छुरी फेरने वाले बनें।

जरासे स्वार्थ के लिये देश का धन विदेश में पहुंचाने लगे। उनकी बुद्धि कहां चली गई कि जब देशका धन चला जावेगा तब हम भी निर्धन बन जावेंगे। उनका गर्व चूरचूर होगया विदेशियों ने बाजी मारली।

इस वक्त एक किस्सा याद आता है। यद्यपि वह किस्सा कुछ सज्जनों को अखरेगा, यदि वे विचार पूर्वक देखेंगे तो उन्हें ठीक २ ज्ञात हुए विना न रहेगा। कुत्ता हड्डी चबाने लगता है हड्डी यद्यपि उससे चाबी नहीं जाती तथापि रसकी लालसा से जोर जोर से चबाता है अन्त में उसके मसूड़े फूल जाते हैं और लहू निकलने लगता है तब उसे आनन्द आता है, और वह आनन्दित होकर उसको चबाता है। ठीक, यही हालत हमारी जाति की है। हम अपना धन गंवाकर धनी बनने की फ़िक्र में हैं। धन्य है हमारी बुद्धिमानी को!

हम देखते हैं कि हम खूब मुनाफा उठा रहे हैं खूब धन बढ़ रहा है। पर क्या बढ़ रहा है कागद और लेन देन। हमारे पूर्वजों की सम्पत्ति से हमने बहुत सम्पत्ति बढ़ाली ऐसा गर्व हम करने लग जाते हैं पर विचार पूर्वक देखें तो सम्पत्ति नहीं बढ़ी है लेन देन बढ़ा है। सम्पत्ति तोसोना चांदी धान्य और पशु इत्यादि पहिले समझी जाती थी। आज धान्य तो बाहर से मोल ला कर खाते हैं। पशु पालन की झंझट में तो पड़े ही क्यों जब कि आवता दूध मिल जाता है। सोना चांदी गृहिणियों के दागीने स्वरूप अर्थात् रुपये के माल के आठ दस आने में कुछ पाया जाता है। नकद तो रुपये कौन रखे जब कि व्याज उपजता है। आज लखपती के ऊपर देनो तो सपड़ेगा ही चाहे फिर लेना कितना ही क्यों न हो। लेना चाहिये इतना सपड़ जाय पर नकद तो घर में हजार रुपये भी नहीं सपड़ेंगे। इसी को हमारे बुद्धिमान् कहलाने वाले भाई सम्पत्ति बढ़ी यों कहते हैं।

तुम्हारे लोगों के तरफ लाखों रुपये लेने हो गये पर जब उन के पास होंगे तब तो तुम लोगे नहीं तो क्या ले सकते हो इस बात का अनुभव प्रत्येक व्यापारी को हो कर भी फिर वे जागृत नहीं होते। हां मुंह से इतना तो कहते हैं कि

"लेण देण री अब बखत नहीं रही" अरे भाई तुम ने ही तो यह समय बुला या है और फिर दूसरों को दोष देते हो। जब तक धन किसानों के पास था तब तक बेचारे देते रहे किन्तु अब उन का यथेष्ठ रक्त चूसा जा चुका है उन के पास कुछ भी बाकी नहीं रहा है यदि ज्यादा उन्हें सताओगे तो ध्यान में रखो कि तुम से डूबने वाले किसान तुम्हारे को दबाये बिना नहीं रहेंगे इस का कुछ अनुभव नाशिक तथा अहमदनगर वाले भाइयों को हुआ भी है। इस लिये बन्धुओ! सावधान हो जाओ देश का व्यापार हाथ में लो।

आज हम जो व्यापार कर रहे हैं वह व्यापार नहीं है दिन दहाड़े लूट मचाना है हमारा व्यापार पवित्र नहीं उस में कितना पाप घुस गया है इस का अनुभव आपको है ही, हमको पैसे२ के लिये झूठ बोलना पड़ता है आत्मा को ठगना पड़ता है पापमें डूबना पड़ता है हम झूठ न बोलें लबाड़ी न करें तो हमारा व्यापार चल ही नहीं सकता! ऐसी भी कई भाइयों की धारणा पाई जाती है। कितना पतन, कितनी आत्म विस्मृति। फिर भी हमारी स्थिति अच्छी हो ऐसी लालसा रखते ही हैं।

आज हम गरीब होते हैं जिसको कहीं सहारा नहीं होता है जो बड़े मिहनत से पैसे कमाता है उसके पाससे ही ज्यादा दाम लेते हैं-व्याज कड़ा लेते हैं यह क्यों? वह गरीब है इस लिये फिर भी हम धर्मात्मा कहलावें, बड़े कहलावें यही बात तो बड़े आश्चर्य की है! ......

इन पापों का बदला चुकाना पड़ता है हम कितने सुखी है इसका पता हमको ही है, क्योंकि कभी पाप से भला किसी का नहीं होता बुरे कर्मों का फल बुरा ही होता है। यदि आजभी हम जाग जांय देशका व्यापार हाथ में ले लें तो यह हमारा व्यापार इस स्थिति में से निकल कर अच्छी स्थिति में आ सकता है किन्तु इसके लिए तपश्चर्या करनी होगी, त्यागकी जरूरत है। तुम्हें हजारों रुपये की इस भुलावनी आमदनी को छोड़कर सैकड़ों रुपये की ही किन्तु सच्ची आमदनी को अपनाना होगा तभी तुम्हारा जीवन शुद्ध तथा पवित्र बनेगा जब कि तुम न्याय से पैसे कमाने लग जाओगे

किसी कवि ने ठीक कहा है कि अन्याय से कमाया हुआ धन कभी अच्छे कामों में खर्च नहीं होता। इसलिए यदि तुम्हें अपने जीवन को शुद्ध तथा पवित्र करना है। जाति को उन्नति बनाना है तो प्रथम व्यापार नीति को सुधार लीजिये हमारे व्यापार में भी वही तत्व बसना चाहिये कि दूसरों की भलाई। जब हम दूसरे की भलाई के लिए व्यापार करने लग जावेंगे तब हमारा हित तो होवेगा ही किन्तु दूसरों का भी हित होवेगा और जो भारत आज निर्धन बनकर-पराधीन बनकर दुख भोग रहा है उससे उसे छुटकारा मिलेगा।

प्रश्न यह खड़ा होता है कि क्या स्वदेशी व्यापार से हमारी जरूरतें पूरी हो जावेंगी हां अवश्य हमारी योग्य जरूरतें पूरी हो सकती हैं और जो फिजूल की आवश्यकताएं बढ़गई हैं वे जब घट जावेंगी तब हमारा खर्चा घट कर हमारा जीवन सुखी तथा शान्त बनेगा। आज जैसा दुःखी और अशान्त नहीं रहेगा। इसलिए ध्यान में रखिए कि, व्यापार हमजो कर रहे हैं वह यदि ठीक नहीं है तो सुधार दीजिए और व्यापार को जहां तक होसके वहां तक शुद्ध और पवित्र बनाइये।

समाज ध्यान दे ?

आसुर तथा पैशाचिक विवाह का निपटारा !

(ले०—श्री प्रतापमलजी कोचर)

—:०:—

आ सवाल जाति में एक की मांग दूसरे को परणाना मानो बांयें हाथका खेल होगया है। नासिक जिले के चिन्दखेड वालों की मांग बम्बई के एक सेठ के मुनीम ने लड़की को भगाकर छुपके जातीय नियमों के विरुद्ध व्याह करने के समाचार बनी वाले श्रीमान नथन सुख दासजीपारखने जाहिर पत्रों द्वारा भा-

रत भर में ओसवाल जाति को सुनाये, जिस समय यह जाहिरपत्र बांटे गये उस समय पारखजी को बड़ी आशा थी कि समाज में इस अत्याचार को सुनते ही खलबली मचैगी। समाज पर बड़ा भारी असर होगा, चहुं ओरसे सुधार की आवाजें उठेंगी, सुधार के लिए सहानुभूति के पत्र आवेंगे, लेकिन कुछ नहीं हुआ, आशा निराशा मात्र हुई। उस पत्र में ऐसे २ अन्याय सदाके लिए बन्द करने के लिए एक नासिक जिला सभा स्थापन करने की आवश्यकता बतलाई थी लेकिन एक गांव के सज्जनों के अतिरिक्त सहयोग करने का किसी का भी पत्र नहीं आया। जिस नासिक जिले में श्रीमान् नयनसुखदासजी निमाणी जैसे नर रत्न पैदा हुए हैं उसी जिले में आज सुधार के लिए (जिला सभा के लिए) पूर्णतया सहानुभूति का अभाव! परम लज्जाकारक है!! वनी वालों को अपने जिले से बड़ी आशा थी कि, संगठन की आवाजें उठेंगी, बड़े बड़े श्रीमान् लोग इस अवसर को हाथ से न जाने देंगे लेकिन कुछ नहीं! समाज को भयंकर कुम्भकर्णी निद्रा लगी हुई है वह अपनी करवट तक नहीं बदलता है नीचसे नीच जातियें भी अपनी उन्नति कर बुरी २ प्रथाओं का काला मुंह करने में शक्ति भर प्रयत्न कर रही हैं और उच्चता की डींग मारनेवाला वास्तविक बुरी २ प्रथाओं का समूह ओसवाल समाज आज कहां पर है? क्या सर्वनाश होने पर निद्रा भंग होगी? क्या नीचता की परम सीमा होगी तब करवट बदलेगी? लड़कियों को भगाना, एककी मांग दूसरेने ब्याह जाना, द्रव्य लोभ से कन्या का हित कुछ नहीं देख अयोग्य व्यक्ति से ब्याह कर देना क्या उच्चता के चिन्ह हैं? ओसवालेत्तर जातियें आज हमसे जो घृणा कर रही हैं उसका कारण हमारा यह नीच व्यवहार है!!

जिस अन्याय के फलक वनी वालों ने बांटे, उस अन्याय का न्याय (?) हो गया! पाठक, अन्याय का भी कभी न्याय हो सकता है? उस आसुर व पैशाच विवाह का निपटारा होगया यह फैसला आपस में (चिचखेड व ननाली वाले) कहते हैं सेठ बुधमलजी के यहां हुआ (नासिक में) ननाली वालों से ४॥ हजार रुपये चिचखेड वालों को दिलवाकर समझौता कराया; चिचखेड वालों ने ननालीवालों को रीत के—लड़की की कीमत—दिये हुए रु० १०००)-

गहना रु० ८००) तथा संभाल खोल आना जाना तथा अदालत का खर्चा के अन्दाजन रु० ७००) यह सब मिलकर रु० २५००) जाते बाकी रुपये दो हजार के लगभग चिचखेड वालों के पास रहे होंगे व विचारे की मांग चली गई, दो हजार रुपयों में विवाह से वंचित रहा, आजन्म कुंवारा रहा ! तथा समाज में अत्यन्त मान हानि प्राप्त हुई, खासा न्याय ! इसका नाम जातीय प्रबन्ध !!

सुनते हैं जिस समय सेठ बुधमल जी को बम्बई वालों का पत्र आया तब उन्होंने चिचखेड वालों को पत्र देकर समझौते के लिए नासिक बुलाया, यह बात बनी वाले श्री० नयनसुखदासजी को मालूम हुई तब उन्होंने बड़े प्रेम के साथ सेठ बुधमलजी व समस्त ओसवाल पंच नासिक वालों की सेवामें एक अत्यन्त हृदयद्रावक पत्र भेजा, यह पत्र पूर्णतया नम्रता व प्रेम भरे शब्दों से भरा होकर नासिक वालों से नम्र निवेदन किया गया था कि—सारांश,

"ननासीवालों के एक लड़की और व्याह करने योग्य कुमारी है, मुनीमजी आपकी आज्ञा में हैं व मुनीमजी की आज्ञा में ननासीवाले हैं, आप ऐसी कृपा कीजिए कि-मुनीमजी से रुपये (चिचखेड वालों को न दिलवाते) ननासी वालों को दिलवाइये और ननासीवालों की कुंवारी लड़की का चिचखेड वालों से व्याह करवाके आप अत्यन्त पुण्य व यश सम्पादन कीजिए, ऐसा न्याय करने से समाज को बड़ा भारी आनन्द होगा और आपकी वाहवाह होगी तथा चिचखेडवाला आपको आजन्म धन्यवाद देता रहेगा आदि २"

जो समझौता हुआ है उससे ज्ञात होता है कि इस पत्रका कुछ भी उपयोग नहीं हुआ। प्रायः एक की मांग दूसरा यदि परण जावे तो अनेक गांवों की एक बड़ी पंचायत व सभा होकर बहुमत से अपराधी को उचित-मामूली-प्रायश्चित्त दिया जाता है, लेकिन इस बार मध्यस्थों ने ऐसी युक्ति निकाली कि पंचायती का प्रसंग ही उद्भुत न हो, उन्हें विश्वास था और अबभी है कि-समाज में सब पोलपाल है, पंचायत के लिये है कौन निकम्मा ! शायद यह भी सोचा होगा कि फ़र्यादी से समझौता

(उस समय मुनीमजी पर विवाहेच्छ वालों की ओरसे अदालत में काम चल रहा था) कब्जे से झगड़ा खतम हो सकता है, जाति में कौन ऐसा निकम्मा है जो पंचायत कराके उचित न्याय करावेगा।

नासिक जिले के ओसवाल भाइयो, आपके जिले में आपके जातीय नियमों के विरुद्ध मुनीमजी व ननासीवालों ने जाति के प्रति बड़ा अन्याय किया है, यदि आपमें कुछ जातीय भाव शेष हो तो अन्यायियों को उचित दण्ड दे सकते हैं जिससे फिर जाति में ऐसे २ अत्याचार होना बन्द हो जांय, यदि आपको जाति में गरीबों के लिए कुछ सहानुभूति हो तो अवश्य कुछ कर बताइये। ऐसे अत्याचारों से जातीय गौरव नष्ट होरहा है, जाति कलंकित होरही है, आपको इन बातों पर अवश्यही विचार करना चाहिये कि–ननासी वालों ने अपनी बेटी का सगपन दो बार (एक बार अप्रकाशित छुपके हुआ) किया, मुनीमजी का विवाह कहां हुआ, व जातीय नियमों के अनुसार हुआ या नहीं? उस व्याह में व आखिर से अन्त तक इस घोर अन्याय में कौन २ उपस्थित थे आदि २ बातों पर विचार करना आपका कर्त्तव्य ही नहीं किन्तु धर्म है। यदि आप कुछ नहीं करेंगे तो नासिक के निमाणीजी का स्वर्गीय आत्मा को अत्यन्त दुःख होगा, दो चार व्यक्तियों ने ऐसे अन्याय का न्याय कर जाति की अवहेलना करनी है। क्या जाति को ऐसी बातें प्यारी हैं?

समाज में चारों ओर निद्रा देवी का साम्राज्य फैला हुआ नजर आरहा है, अवनति के काले बादल चारों ओर घिरे हुए हैं, ऐसी हालत में पंचायत बुलाने के लिए कौन २ नरवीर आगे आते हैं यह देखना है, समाज का सितारा सेठ नयनसुखदासजी निमाणी के जातेही सुधार का सूर्य अस्त होगया है निमाणीजी के बाद अबतक कोई नररत्न पैदा होकर जाति का उद्धार नहीं किया, क्या कोई इस डूबती हुई जाति की रक्षा करने वाला समाज में कोई कर्मवीर है?

धनवालो, अत्याचारों व बुरी २

प्रथाके उत्पादक आपही हो, वह भी एक समय था जब आपके पूर्वज जाति की रक्षा के हेतु उन्नति के लिए अपना तन, मन, धन अर्पण करते थे, आज आप क्या कर रहे हो? बुरी २ प्रथाओं के जनक बन रहे हो, बुढ़ापे में विवाह कर छोटी २ बालिकाओं का जीवन बिगाड़ने वाले आपही लोग, धनके लोभियों को लालच दे कन्या विक्रयकों को उत्तेजना देने वाले आपही लोग, कुंवारे व विधवाओं की संख्या आपही लोगों ने बढ़ाई, फिजूल खर्ची को ही आपने जन्म दिया, आपके पूर्वजों की कीर्ति अनुसार आपको समाज की बाड समझी जाती हैं-रक्षक समझे जाते हैं लेकिन आज आप भक्षकों का काम कर रहे हो, क्या यह उचित है? स्मरण रखिए, आपके अत्याचारों से पीड़ित कुंवारे व विधवायें आपको धिक्कारते हैं, दुःखी आत्मायें आपको शाप देरहे हैं, अतः श्रीमानो! अपना कर्त्तव्य पालो, धन पाने का सार मनुष्य जाति की सेवा करना है, जिस जाति में पैदा हुये हो उसके ऋण से मुक्त होने का मुख्य उपाय, गिरी हुई जाति का उद्धार, और यह आपका कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि परम धर्म होना चाहिये।

बम्बई वाले ओसवाल पंचो, आपका कर्त्तव्य है कि मुनीमजी ने जो समाज के साथ अन्याय किया है उनको उचित दण्ड देना, इस विवाह में कौन कौन शामिल थे और जातीय नियमों के विरुद्ध यह काम हुआ है अतः आप जातीय गौरव की रक्षा के लिए अपना कर्त्तव्य अदा कीजिये, अन्यथा बम्बई जैसे बड़े २ शहरों के लोग दूर २ जाकर छोटे २ गांवों के लोभी पिताओं को लालच दे बड़े २ अनर्थ करेंगे।

शासनदेव, हमारी जाति को सुबुद्धि दो, हमारे अपराधों को क्षमाकरो, हमारे बुरे विचारों को हमारे मस्तिष्क में से निकालो, अन्याय अत्याचार का काला मुंह हो, जातीय भाव बढ़ ऐक्यता की नहर बहादो, प्रेमका साम्राज्य स्थापित हो हमारी जाति की उन्नति करो, जिससे हमारा गौरव बढ़े।

जाति उत्थान के लिये साहित्य की आवश्यकता

—:o:—

सा

हित्य जाति का हृदय है जिस जाति के पास कुछ भी साहित्य नहीं है वह जाति निर्जीव है क्योंकि हृदय बिना जीवित ही कैसे कोई रह सकता है।

ऊपर लिखे हुए वाक्यों में जो बातें लिखी हुई हैं वे बड़ी विचारणीय हैं और महत्वपूर्ण हैं। आज बड़े खेद के साथ फिर यह लिखना पड़ता है कि "साहित्य का महत्त्व क्या है?" हमारे जाति के पतन की पराकाष्ठा होगई है जो जाति अपने आपको बुद्धिवान समझती उसे क्या यह भी मालूम नहीं है कि अपना हित किस बात में है। यदि ऐसा न होता तो क्या हजारों नहीं बल्कि लाखों श्रीमानों तथा बुद्धिवानों के रहते हुये हमारी जाति ने साहित्य नहीं बढ़ा लिया होता क्या? किन्तु बढ़ा कैसे सकते उन्हें तो अपने आपको अवनति के गढ़े में डाल देना था। जिस जाति में हजारों रुपये मृतक भोजन जैसे निरर्थक तथा उद्देशहीन कार्यों में उठजाय और उस जाति के लोग अनाथ बनकर मारे २ फिरें। जिस जाति में विवाह शादियों में लाखों रुपये उड़ाये जांय और हजारों नवयुवक विवाह विहीन रहें। जिस जाति में हजारों रुपये कपड़े की सजावट में लग जांय और अन्य जातियों में जराभी मान न हो। जो जाति अहिंसाधर्मी कहलावे और कुमारियों पर अमानुषिक अत्याचार करे। जिस जाति के लाखों रुपये गांजे, भाँग बीड़ी इत्यादि में उठ जांय और जाति

के लिए कुछ भी प्रयत्न न किया जाय। क्या यह बुद्धिमानी का लक्षण है? आज हमारे पास न तो कोई ऐसी संस्था है जो कि हमारे दीन दुःखी भाइयों को सहायता पहुंचा सके और न कोई ऐसा विद्यापीठ है जिसमें कि शिक्षा प्राप्त कर हम मनुष्य बन सकें और न ऐसा कोई साहित्य है कि जिससे हमारी जाति की अवस्था का पता लग सके।

साहित्य अन्धे की लकड़ी है, साहित्य ज्ञान शून्य का ज्ञान है, साहित्य अनाथों का सहारा है और साहित्य ही अवनतों का उत्थान करने वाला है। यदि आज हमारे पास साहित्य होता, जातीय साहित्य होता तो क्या हमारी यह दशा होती? क्या साहित्य होता तो हमको हमारी दुर्दशा का पता न लग जाता? क्या साहित्य होता तो हम जाति के दुखितों के दुःख में विकल नहीं होते? जब हम शारीरिक सुखों के पीछे लग कर-वासनाओं के पीछे पड़ कर हमारे सत्य ज्ञान को भूल जाते हैं तब साहित्य ही हमें ज्ञान-सत् ज्ञान सुझाने में सहायक होता है। साहित्य-सच्चा साहित्य वही है कि जिसमें दूसरे का-बांचने वाले का हित करने की शक्ति हो। किन्तु हमको कहां इस बातका ध्यान है कि हमारा हित होता है या अनहित, हमारे सिर तो बस यही धुन सवार है कि "खाओ पीओ मौज उड़ाओ" किन्तु मार्ग भूलने वाले यात्री जिस प्रकार इच्छित स्थान को नहीं जा सकते उसी प्रकार हमभी मार्ग भूलकर सुख मिलने की आशा रखने वाले भी सुख और शान्ती को नहीं पा सकते।

जब घर में आग लग जावेगी तब क्या हम सुख से रह सकते हैं? कदापि नहीं। इस प्रकार क्या जाति में हाहाकार मचा हुआ है, जाति कुरीतियों से ग्रस्त और अशान्ति में पड़ी हुई है तब भला हम कैसे शान्ती पा सकते हैं। क्योंकि जाति हम व्यक्तियों द्वारा ही तो बनी हुई है। इसलिये जाति का सुधार करना यह अपने लिये है-कर्त्तव्य है। यदि हम कर्त्तव्य नहीं करेंगे तो हमभी कदापि सुखी नहीं हो सकते। इसलिए जाति की उन्नति करना यह

हमारे लिये अनिवार्य हो जाता है। और यदि हम जाति की उन्नति करना चाहेंगे। तो प्रथम हमें साहित्यक निर्माण की तरफ ध्यान देना ही पड़ेगा। आज तक के जातियों के उत्थान के इतिहासों को हम पढ़ेंगे तो हमें यही दीख पड़ेगा कि उन्होंने प्रथम साहित्य जातीय साहित्य निर्माण किया था और बाद में उनकी उन्नति साहित्य के प्रभाव से हुई थी।

साहित्य है ज्ञान का समूह। ज्ञान को एकत्रित करना ही साहित्य का उद्देश होता है यद्यपि हमारी आत्मा में अनन्त ज्ञान भरा हुआ है तथापि हम उस ज्ञान को वासनाओं के दास बनकर ढकना शुरु कर देते यह यहांतक कि हमें मार्ग सुझाने के लिये दूसरे की जरूरत पड़ती है। तब हमको सत्संग करना पड़ता है किन्तु सत्संग करना यह हर व्यक्ति को कठिन होजाता है इसलिये उनको ज्ञान पहुंचाने के लिये साहित्य ही एक साधन है और इस साधन द्वारा हर एक व्यक्ति थोड़े परिश्रम में उत्तम से उत्तम ज्ञानको प्राप्त कर लेता है किन्तु हमारे बुद्धिवान् समाज की विलक्षण बुद्धि में यह लाभप्रद बात क्यों नहीं आई और साहित्य की तरफ वह ध्यान क्यों नहीं दिया जाता।

उन्नति जाति की उन्नतावस्था कायम रखने के लिये तथा अवनत जातियोंको उन्नति बनाने के लिये साहित्य यह उत्कृष्ट साधन है। साहित्य द्वारा ही एक सुधार हितेच्छु अपने विचार सारे समाज में फैला सकता है और जाति में हलचल पैदा कर सकता है। साहित्य द्वारा ही गन्दे तथा दूषित विचारों की जगह पवित्र और उत्तम विचार भरे जा सकते हैं। आज हम देखते हैं कि हमारे समाज के बहुत से लोग काम काज से छुट्टी पाकर या तो किसी की निन्दा करने लगजाते हैं या गन्दी बातें करने लगजाते हैं उससे होने वाली हानियें यद्यपि भयानक हैं तथा जाति को निर्बल बनाने वाली हैं तथापि इसका न तो कुछ उपाय किया जाता है और न यह आदत छूटती है। साहित्य द्वारा अनायास यह आदत छूट सकती है। खासकर अवनत जातियों के लिए सुलभ और कम परिश्रम का साधन यही है कि:—

सुसाहित्य का प्रसार
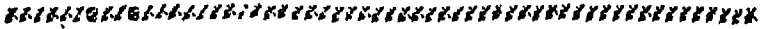
ओसवाल महासभा—

अभी हमारे जाति के लेखक तथा कार्यकर्त्ताओं ने ओसवाल महासभा के सम्बन्ध में लिखकर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। आपने जो लिखा सो योग्य है किन्तु ओसवाल महा सभा को जागृत करने के लिए -कार्यरूप में परिणत करने के लिए यह काफी नहीं है और उसमें भी एक दूसरे के प्रति आक्षेप युक्त लिखने के हम पूर्ण विरोधी हैं। हमारे समाज में त्याग की बहुत कमी है प्रेम का पूर्ण अभाव है। जिधर देखो उधर मत भेद जरा जरासी बातों में मत भेद यह बात समाज के लिए अत्यन्त हानिकारक है यों जानकर भी की जाती है। यह बात यद्यपि साधारण मालूम होती है तथापि हमारी महासभा के असफल होने का कारणरूप है। इस समय तो हमको परस्पर एक दूसरे से जितनी सहायता मिले उसे स्वीकार कर लेना चाहिये। जिस व्यक्ति से जितना त्याग हो वह उसके पास से लेकर के काम में लगजाना चाहिये, हमें कार्य करते समय अपनेपन को भुला देना चाहिये, यदि हम ऐसा प्रयत्न करेंगे तो अवश्य हमारी महासभा कुछ न कुछ कार्य कर सकती है। हम श्री० प्रतापमलजी तथा श्री० कोठारीजी इन दोनों मित्रों से अनुरोध करते हैं कि आप इस कार्य को हाथ में लें और कार्य करके बतलावें। हमसे जो हो-सकेगी वह सहायता हम देने के लिये तैयार हैं। हमही क्या, सारा ओसवाल समाज ही तैयार है, किन्तु कुछ काम भी हो। इसलिये हमारी सम्मति से यह बातें करनी आवश्यक हैं।

"महासभा का कार्य ठीक चलने के लिए २-४ पूर्ण स्वार्थ त्यागी कार्यकर्त्ता" हमने देखा है कि इस बात की बिना पूर्ति किये हमारा कार्य आगे बढ़ नहीं सकता। जबतक समाज में २-४ कार्यकर्त्ता नहीं पैदा हो जायंगे तबतक यह कार्य होना कठिन है।

समाज के कार्यकर्त्ताओं का संगठन,

उद्देश की स्पष्टता।

जागृती के लिये समाज में डेपूटेशन का घुमाना।

साहित्य का प्रसार।

इसलिये प्रथम कार्य हाथ में लेने के यह बातें सोचकर कार्य आरम्भ करें कि जिससे हमें फिर असफलता की ओरसे कुछ अंशों भय कम होजाय। हमने इस सम्बन्ध में श्रीयुत् ललवानी जी से सम्मति ली थी तब उन्होंने कहा कि यदि कोठारीजी कार्य करने लग-जावें तो मुझसे जो हो सके उतनी सहायता मैं दे सकता हूं, यदि डेपूटेशन में घूमना पड़े तो मैं जाने के लिये तैयार हूँ तथा घूमने के लिए जो खर्च चाहिये वह एकत्र करने के लिये फंड खोला जावेगा तो मैं उसमें भी सहायता दूंगा। आशा है हमारे कार्यकर्त्ता शीघ्र ही अपनी एक मीटिंग बुलाकर जरूर कुछ तो महासभा के सम्बन्ध में निश्चित करके पिछड़े हुए समाज में नवजीवन भरने का प्रयत्न करेंगे। हमारे विचार से कमसे कम कार्यकर्त्ताओं का एकत्र होना तो अत्यन्त आवश्यक है और शीघ्रही इस पर हमारे कार्यकर्त्ता विचार करके निश्चय करें। यदि यह विचार निश्चित हुआ तो हम अलगांव यह स्थान उपयुक्त समझ कर सभी कार्यकर्त्ताओं को निमन्त्रण देकर बुलाने का प्रयत्न करेंगे। आशा है हमारे कथन पर हमारे समाज के हितचिन्तक ध्यान देकर अपनी सम्मति सूचित करने की कृपा करेंगे।

दक्षिण के ओसवाल—

हमने धनके लिए हमारी मातृभूमि जो मारवाड़ उसका त्याग किया। जबसे हमने मारवाड़ का त्याग किया तभी से सद्गुणों का भी त्याग कर दिया है। हम ज्यों २ मरु भूमि से दूर होते

गये, त्यों २ हमारे सद्गुण भी दूर होते गये। हम दिसावरों में दूर २ इसलिये गये कि धन अधिक मिले अर्थात् जो व्यक्ति अधिक लोभी वह मातृभूमि से अधिक दूर, और मातृभूमि से जितना दूर उतनाही वह सद्गुणों से दूर क्योंकि लोभ यह दुर्गुणों को एकत्र करने वाला और सद्गुणों का नाश करने वाला है। और वह लोभ दिशावरों में आने से मात्रा से भी अधिक बढ़गया और हम केवल धनके दास बनगये। धीरे २ रहे सहे सभी सद्गुण जाकर हम पूर्ण रूप से दुर्गुणों के मूर्तीमान पुतले बन गये। हमारे जीवन का उद्देश एकमात्र धन कमाना होगया। दक्षिण में मद्रास तथा निजाम स्टेट के ओसवाल बन्धुओं के सम्बन्धमें हम आज लिखना चाहतेहैं इन बन्धुओं का विद्याध्ययन बिलकुल नहीं होता क्योंकि वे एक तो स्थिर मारवाड़ में अपने बच्चों को रखकर विद्या नहीं पढ़ाते और न दिशावरों मेंही पढ़ाते हैं क्योंकि वहां की भाषा हमारी भाषा से भिन्न होती है ऐसी अवस्था में हमारे बन्धु विद्या से बहुत दूर पड़जाते हैं। इनके जीवन के उद्देश की पूर्त्ति करने के लिये जो विद्या चाहिये वह विद्या दुकाना पर बैठकर सीखी जा सकती है। इन नन्हें२ बालकों को यही सिखलाया जाता है दूसरे का फंसाकर पैसा कैसे लिया जाता है, बस फिर ये कच्चा उमर में ही! इस मायाके फन्दे में पड़कर अपने जीवन को वर्बाद करने लग जाते हैं। थोड़ी ही उमरमें उनपर दूना बोझ आ-पड़ता है पत्नी का तथा व्यवहार का इस बोझ के नीचे दबकर कई कोमल कलियों मुर्झा जाती हैं। दिसावरों में आकर के धन कमाने की कला सपड़कर हम पशुवृति से धन कमाते हैं कभी हम यह विचारनहीं करते कि हमारेको यथा करना न्यायोचित है। हम कर रहे हैं वह क्या धर्म के अनुसार ठीक है? तब फिर इस लूट के धनका विनियोग भी अच्छे कामों में नहीं होता। वे बे-चारे वृतियों के गुलाम जिनके हाथ से कभी अच्छा कार्य नहीं हुआ वे इस पाप को धोने के लिए बुराई के कलंक से बचने के लिये मान के पीछे लगतेहैं

और मान मिलाने का प्रयत्न करते हैं। वे अच्छे २ कपड़ों से जिनकी कीमत हजारों रुपयों की है पहन कर सन्मान के लिए लालायित रहते हैं। वे हजारों रुपये विवाह शादियों में तथा ओसरों में खर्चकर सन्मान से वंचित आत्माको सन्मान मिले इसलिए प्रयत्न करते हैं। वे हजारों रुपये खर्च करके मान मिलाना चाहते हैं, पर मान मिलता नहीं। मिल कैसे सकता है? जहां विद्या नहीं धर्म नहीं, नीति नहीं, समाज पर प्रेम नहीं, दुखियों पर दया नहीं, पर हितकी भावना नहीं, उनको सुख शांति कहांसे मिलेगी। वे मान के लिए आपस में द्वेष करने लगजाते हैं। जाति को दुखिया देखकर उसपर हंसते हैं। बस उन्होंने एक बात समझ रखी है कि मनुष्य जीवन में धन कमाना, नाम मिलाना और ऐश आराम भोगना, किन्तु ये तीनों मार्ग इतने गल्ती से भरे हुए हैं कि जिससे उन्हें सुख मिलही नहीं सकता। इनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता है इनको स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने के लिए समय कम है। क्यों कि धन कमाने की चिन्ता, विषय भोग की लालसा और नाम मिलाने की इच्छा। इस त्रिवेणी में अपने स्वास्थ्य रूपी नौका का छोड़ देते हैं। उसका खेना दुसाध्य होकर कुछ देर बाद स्वास्थ्य रूपी नौका डूब जाती है। इनका गृह सुख भी बड़ा विचित्र होता है। ये कभी स्त्रियों का महत्व नहीं समझते उन्हें केवल विषय भोग की मशीन ही समझकर काम में लाते हैं, उनके स्वास्थ्य की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। बेचारी सासु की हुकूमत ननद, जेठानियों के बोल तथा पती के स्वभाव को संभालते २ ही अधमरी हो जाती हैं, तिस पर भी विषय-भोग के उन्मत्त पतिया की इच्छा पूरी करते २ वह मृत्यु को प्राप्त होजाती हैं, और इधर दूसरे विवाह की तैयारियां शुरू होजाती है। दिनों दिन स्त्रियों की कमी से कन्या-विक्रय इतना अधिक होरहा है। आपसी द्वेष भी खूब होता है एक दूकानदार दूसरे दूकानदार को नहीं चाहता। इनको यदि व्यापार से छुट्टी मिली तो

ये दो चार व्यक्ति मिलकर या तो अश्लील तथा बुरी बातें आरम्भ कर देते हैं या दूसरे की निन्दा बीच २ में तम्बाकू या भांग उड़ा करती हैं। ये कभी स्वदेशी की छाया में नहीं खड़े रह सकते क्यों कि कहीं स्वदेशी की छूत लगने पर इन्हें अपने प्रियवास-स्थान को छोड़ देना पड़े; या कुछ आपत्ति न आजाय। दूसरा चाहे कोई जीवे या मरे, इससे इन्हें क्या काम है। इन्हें तो केवल अपने आनन्द में रहना ही चाहिये। बस धर्म के सम्बन्ध में तो इनके अलग ही विचार हैं, द्वार पर आये हुए को दो पैसे देदेना या वर्ष भर में एकाध उपवास कर देना वा सामायिक करना। दिन भर में एकाध नवकार मंत्र का स्मरण कर लेना वा मंदिर में जाकर प्रभु के दर्शन कर लेना ही स्वर्ग प्राप्ति के लिये काफी समझते हैं। शायद, उनकी इस धारणा से उन्हें स्वर्ग मिल जाता हो किन्तु जो वे जीवन व्यतीत करते हैं वह स्वर्गमय जीवन नहीं, किन्तु नर्कमय जीवन व्यतीत करते हैं, फिर आगे चलकर क्या होता होगा, यह तो उन्हेंही ज्ञात होगा। इनको गीत गालियों से बड़ा प्रेम दीख पड़ता है, ये अपनी स्त्रियों के शरीर पर खूब गहने देख कर बड़े खुश जान पड़ते हैं सुधार के तो ये बिल्कुल विरोधी जान पड़ते हैं। क्यों कि इन्होंने जब अच्छी बातों से ही असहयोग कर लिया तब क्या किया जाय। नहीं तो क्या दक्षिण जैसे सुविस्तृत देश में फैले हुए हमारे हजारों बन्धुओं में दस बीस कार्य कर्ता कार्य-क्षेत्र में आकर कुछ करके न बतलाते?

जालने के लोभी व्यापारी—

जालना भी दक्षिण के अन्तर्गत है वहां पर हम अभी गए थे, तब हमने एक बात सुनी, सुनके अत्यन्त खेद हुआ, वहां के व्यापारी श्रीमान् हैं, किन्तु फिरभी लोभ बढ़ा हुआ है। उनके धनका विनियोग के कभी दुखितों के दुख दूर करने में अपना कर्त्तव्य नहीं समझते। अपना धन सेठानियों के मूल्यवान कपड़ों के बनाने में लड्डुओं के
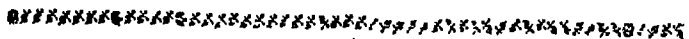
जीमने जिमाने में खर्च करना ठीक समझते हैं, उन्हें जाति का यदि घोर अपमान हो तो भी परवाह नहीं है क्योंकि यहां कुछ वर्ष पहले एक ओसवाल इस्लाम की गोद में चला गया था किन्तु उन्हें जरा भी ध्यान नहीं आया यद्यपि पूछा गया तो उत्तर मिला कि उसे हम रोक कैसे सकते थे वह तो बिगड़ा हुआ था। पर बन्धुओ विचार किया होता तो यही स्पष्ट दीख पड़ता कि उसे मुसलमान बनाने के कारण हमही थे। उसे आपने विद्वान् नहीं बनाया जिससे वह धन कमाकर विवाह कर लेता। बाद में तुमने उदारता बतला उसका विवाह नहीं किया, इसीसे उसको बुरे फन्दे में पड़कर इस दशा को पहुंचना पड़ा। आप अपने धन को एकत्र करके जाति सन्मान के लिए खर्च नहीं करोगे तो वह धन किस काम का। मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है कि जालने का समाज काफी धनी है वह चाहे जो कर सकता है। पर आपकी वृत्तियां दूसरे कामों में लगी हुई हैं आप अपने व्यापार को करते समय भी अपनी वृत्तियों को पवित्र नहीं रखते इससे भला जब पवित्रता से धन नहीं कमाया जाता तो वह पवित्र कार्यों में खर्च कैसे हो सकता है आप लोग धन कमाते समय धर्म को भी ताक में रख देते हैं। कुछ समय पहले महासतियांजी राजकुंवरजी ने बारूद बेचने वालों को सौगन्द दिलाने का प्रयत्न किया था यहाँके कुछ भाईतो मान गये पर कुछ न माने और आखिर उस विदेशी बारूद के पटाखे आदि बेचने लगे। इससे पता लगता है कि आप लोगों की प्रवृत्ति किस ओर है समय ने पलटा खाया है आंखें खोल कर देखो यदि नहीं तो जो नतीजा मिलना है सो मिलेगा।

बागली पंचायत की लड़की—

बागली में गत साल पंचायत हुई थी एक कन्या विक्रय करने वाले व्यक्ति ने कन्या विक्रय के उद्देश से अपनी साली को बड़ी उमर की कर डाली थी इच्छा यह थी कि खूब धन आवे। एक सज्जन ने देखा कि लड़की बड़ी होगई है किसी नवयुवक के साथ विवाह क-

रादें इसलिये उस लड़की को उठाकर लेजाने का प्रयत्न किया। पंचायत में निर्णय हुआ कि उठा लेजाने वाले सज्जन के पास से ३०००) रुपये लिये जांय और उसमें से कुछ जाति संस्था को तथा कुछ रुपये विवाह में लगा दिये जांय' उस लड़की का विवाह किसी योग्य नवयुवक के साथ कर दिया जाय और वह बागली में पंचों के हाथ से तब तक लड़की बहनोई के पास रहेगी किन्तु उस लड़की का विवाह करने का स्वत्व हरण कर लिया गया। अब वह लड़की का बहनोई इस बात को तैय्यार नहीं कि इतनी बड़ी साली मुफ्त में चली जाय उसने न तो अभी तक उस लड़की का विवाह बागली के पंचों के कहने मुताबिक करने का विचार किया है और न वह स्वयं करता है लड़की बहुत बड़ी होगई है कहते हैं शायद १६ वर्ष की होगई है इसलिये बागली के पंच भी चाहते हैं कि लड़की का विवाह जल्दी होजाय पर वह तो पक्का मिलो उसको अपने पास से छीनकर ले आवेंगे इस डर से अपने दूसरे साढू के पास उस लड़की को पहुँचा दिया है। यदि उस लड़की का विवाह शीघ्र न हुआ तो वही कांड होगा जो कि पहले हुआ था। इसलिये कुछ ना कुछ प्रतिबन्ध शीघ्रही करना आवश्यक है नहीं तो उसका परिणाम पंचायत पर बुरा होगा।
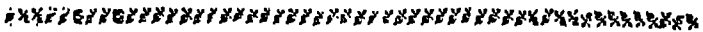
ओसवाल संसार।

विधवा विवाह।

धमतरी में अभी एक विधवा विवाह ओसवाल समाज में हुआ है। हमारे पास वहां के पञ्चों का पत्र आया है वह हम भाषा सुधार कर दे रहे हैं:-

श्री संघ सकल ओसवाल पञ्चों की सेवा में धमतरी के पञ्चों का जय-जिनेन्द्र, हमारे यहां पर अचलदासजी नाहटा का लड़का सागरमल नाहटा बागवड़ (जयपुर) के रहने वाले ने एक विधवा स्त्री के साथ जान-बूझकर विवाह कर लिया है। वह स्त्री गर्भ-

सहित है और उस विधवा स्त्री का लड़का ५ वर्ष का है और उस विधवा स्त्री की माता यह दोनों हैं।

यह काम सागरमल ने अपनी समाज के विरुद्ध किया है इसलिये पञ्चों ने एकत्रित होकर सागरमल नाहटा के साथ जातिय व्यवहार बन्द कर दिये हैं। अगर इस व्यक्ति के साथ जो व्यवहार रखेगा वह भी जाति का गुनहगार समझा जावेगा। मिती कार्त्तिक सुदी ६ बुधवार सं० १६८१।

श्रा० रतनलाल चांदमल कोचर
धमतरी।

इसके अतिरिक्त वहां के करीब ३८ पंचों के हस्ताक्षर हैं।

ओसवाल समाज में नयापत्र

अभी मद्रास से "जैन सुधारक लेख माला" नामक मासिक पत्र रूप में निकला है, सम्पादक-मुनि परमानन्दजी प्रकाशक विजयराजजी माहेल हैं। वार्षिक मूल्य २) रुपया है। हर्ष का विषय है कि हमारी जाति में साहित्य बढ़ रहा है, हम जाति प्रेमियों से अनुरोध करते हैं कि वे इस मासिक पत्र के रूप में निकलने वाली माला को अपनावें।

मिलने का पताः——

मगनमलजी कोचेटा
मन्त्री श्री शान्तिनाथ जैन
सुधारक मंडल
नं० १६६ बंगाली बाजार
सेन्ट थामसमाउन्टर (मद्रास)

अखिल भारतवर्षीय ओसवाल समाज को सूचना

गत साल वांगली में पञ्चायत हुई थी उसके अनुसार वह लड़की वांगली के पञ्चों की सम्मति से होना निश्चित हुआ था। किन्तु उस लड़की के बहनोई गुलाबचन्द उदयराम ने न तो उस लड़की को पञ्चों के आधीन किया और न पञ्चों की सम्मति से विवाह करना चाहता है अतएव हम वांगली के पञ्च तथा समस्त ओसवाल भाईयों को सूचित करते हैं कि वांगली के पञ्चों की सलाह बिना उस लड़की का सम्बन्ध न करें यदि जो सम्बन्ध कर लेंगे वह

पञ्चों के अपराधी समझे जावेंगे।

रतनचन्दजी चौरड़िया आदि ५ पञ्चों के दस्तख़त हैं।

हर्ष   हर्ष   हर्ष

आइये, आइये, उत्सव की शोभाको बढ़ाइये।

श्री शौरिपुरतीर्थ

इसी पवित्र भूमिपर बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान का च्यवन और जन्मकल्याणक हुआ। यहां का प्राचिन मन्दिर बहुत जीर्ण होजाने के कारण स्वर्गीय सेठ नथमलजी गोलेच्छा ने उसका जीर्णोद्वार करने में तन मन धन से प्रयत्न किया था लेकिन वे कई कारणों से सफलता प्राप्त न करसके। अब आगरा श्री संघ ने इस कार्य को अपने हाथमें लिया है। और वहांका जीर्णोद्धार कराया है। आगामी माघशुक्ल ५ गुरुवार तारीख २६ जनवरी १६२५ को प्रतिष्ठा महोत्सव होगा। प्रतिष्ठा केदिनों में अठाई महोत्सव और व्याख्यान आदि प्रभावक कार्य भी होंगे। सब श्वेताम्बर भाइयों से प्रार्थना है कि इस अवसर पर सकुटुम्ब पधार कर शासन की शोभा को बढ़ावें। आनेवाले भाइयों को चाहिये कि वे ई०आई०आर०लाइन के शिकोहाबाद जंक्सन (Shikohabad Junction) पर उतरें। यह स्टेशन टूंडला और कानपूर के दर्म्यान है। स्टेशनपर आपके स्वागत के लिये स्वयम् सेवक मौजूद रहेंगे।

निवेदक, मंत्री,
श्री शौरिपुरतीर्थ श्वेताम्बर कमेटी
आगरा,

पूज्यपदवी महोत्सव

स्थानकवासी जैन समाजकी प्रसिद्ध श्री धर्मदास जी महाराज की संप्रदाय की पूज्य पदवी का महोत्सव जयपुर नगर में शुभ मिती महा सुदी ५ ता० २६ जनवरी सन् २५ को होगा। उसी अवसर पर "जैन ग्रन्थालय" का कार्य भी प्रारंभ किया जायगा।

अनंग दिवाकर वटिका

यह वह औषधि है जिस से स्वप्न दोष का होना, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाव व दस्त के समय वीर्य का निकलना, सम्भोग की इच्छा न होना, या होते ही तत्काल वीर्य का निकल जाना, इन्द्रियों का शिथिल पड़ जाना, किसी काम में चित्त न लगना, आंखों के सामने अंधेरा जान पड़ना कमर का दर्द, सिर का दर्द, साध्य प्रमेह, धातु क्षीण, सुस्ती आदि रोग नष्ट हो कर शरीर हृष्ट पुष्ट बलवान हो जाता है। इस "अनंग दिवाकर" वटिका का सेवन करने वाला सदैव काम सुन्दरियों को अपने वश में रखता हुआ निर्भय निर्द्वन्द्व आनन्द करता है। ये "अनंग दिवाकर" कामी पुरुषों का परम मित्र, देही का रक्षक, और पुरुष का स्त्री के सामने मान रखने वाला, नामर्द को मर्द बनाने वाला, बुढ़ापे में भी जवानी का मजा चखाने वाला, इन्द्रियों की टूटी व ढीली नसों को सख्त करने वाला, विलासी पुरुषों को परम प्रिय और युवा पुरुषों की इच्छा पूर्ण करने वाला है। यदि आप सुन्दरियों से स्नेह का संग्राम करते हार जाते हों तो इस अनंग दिवाकर वटिका को मंगा कर सेवन कीजिये और फिर अपनी प्यारियों से स्नेह का संग्राम कीजिये मारे संग्रामी स्नेह के सपाटों से सुन्दरियें परास्त हो कर आप को सब दिन याद करती रहेंगी अगर ऐसा न हो तो दाम वापिस दगे। लीजिये मगाइये परीक्षा कीजिये। तीन महीने की खुराक दाम सिर्फ ६) एक महीने की खुराक का दाम केवल २॥) डाक-व्यय पृथक

रति संग्राम वटिका

स्त्री प्रसंग करते समय सिर्फ १ गोली "रति-संग्राम वटिका" को जब तक सेवन विधि अनुसार मुख में धारण करे रहोगे तब तलक वीर्य पात नहीं होगा। अधिक कहने की बात नहीं है मंगा कर परीक्षा कर देखिये दाम केवल ७) रु० डाक व्यय पृथक—

:—भारत सेवक कार्यालय, पो० बनखेड़ी G I P

हिन्दू-बाल-विवाह-निषेध क़ानून

श्रीयुत रंगलाल जाजोदिया का बिल।

बाल विवाह और वृद्ध विवाह का भारत में अधिक जोर है और इसी से हमारी अधोगति होरही है। इस के रोकने के लिये अनेक तरह से आन्दोलन मचाये गये परन्तु ज्यों इलाज किया गया त्यों २ रोग असाध्य होता गया" इस लोकोक्ति के अनुसार ही भारतवर्ष की हालत होरही है इस प्रकार के विवाहों को रोकने के लिये बड़े लाट की कौंसिलों में एक ऐसा कानून बनने वाला है सच है जो बातों से नहीं मानते उनके लिये यही उपाय है।

नाबालिग हिन्दू लड़कों का व्याह-निषेध बिल बड़ी व्यवस्थापिका परिषद् में श्रीयुत रंगलाल जाजोदिया ने पेश करने का नोटिस दिया है। जो इस प्रकार है—

चूंकि कम उम्र के हिन्दू लड़कों का व्याह रोकना वांछनीय है इसलिये यह कानून बनाया जाता है।

(अ) इस कानून का नाम हिन्दू-शिशु-विवाह-निषेध ऐक्ट होगा।

(ब) सारे भारतवर्ष में यह कानून लागू होगा और प्रान्तिक कौंसिल में इसी आशय का प्रस्ताव पास हो जाने पर यह प्रांत विशेष में लागू होगा।

१८ वर्ष की कम उम्रवाला हिन्दू बालक व्याह नहीं कर सकेगा। बालक का पुरुष गार्डियन जो इस विवाह में किसी तरह का भाग लेगा उसे सादी कैद की सजा मिलेगी, जिसकी अवधि एक महीने तक हो सकती है या एक हजार तक जुर्माना या जुर्माना और सजा दोनों ही। इस कानून के कारण कोई भी बात जो लड़के के व्यक्तिगत कानून से कानूनी है गैर कानूनी नहीं ठहराई जायेगी।

कारण।

देशमें इस समय जबरदस्त भाव है कि कम उम्र में हिन्दू लड़कों के व्याह की प्रथा उठ जानी चाहिये। यह प्रथा ऐसे बालकों के स्वास्थ्य और शिक्षा का विनाशक है और आने वाली पीढ़ी के लिये भी हानिकारक है। शिक्षा के कारण यह भाव बहुत दूर हो रहा है पर प्रचलित प्रथा से इसमें बहुत बाधा पड़ रही है। कई समितियां बाल विवाह रोकने के लिये अपना २ नियम बनाती हैं पर बहुधा पारस्परिक वैमनस्य और पुरानी प्रथा की जिद (जो शास्त्र के विधानों के अनुकूल नहीं है) इसमें बड़ी बांधा डालने वाली हो जाती हैं। बाल-

विवाह से समाज की जो हानि होरही है उसका ध्यानकर और इस प्रथाकी बुराई शीघ्र नाश करने की आवश्यकता समझ यही कहना पड़ेगा कि इसके लिए एक मात्र औषधि यह कानून पास कराना है।

भिन्न २ परिस्थितियों की सम्भावना का ख्याल करके ही इसमें एक धारा ऐसी रख दी गयी है कि किसी प्रान्त में इसका प्रयोग तभी होगा। जब वहां की प्रांतिक कौंसिल इसे पास कर लेगी। इस प्रकार प्रत्येक प्रांत को यह विचारने का अवसर मिलेगा कि वहां इस कानून का प्रयोग हो या नहीं।

भारत सरकार की यह आशा हो गयी है कि प्रांत में इस प्रकार का बिल पेश नहीं हो सकता। इसलिये बड़ी व्यवस्थापिका ही इसके लिये उपयुक्त स्थान है।

भविष्यवाणी—

महात्माजी के जेल जाने और फिर रिहाई की घोषणा पहले पहल एक ज्योतिषी जी ने की थी। इस बार ज्योतिषीजी ने पहले ही से छपवा कर एक विज्ञप्ति बेलगांव में बटवाई थी। आश्चर्य तो केवल इसी बात का है कि जो कुछ कांग्रेस में हुआ ज्योतिषी जी ने पहले ही से छपवा दिया था। विज्ञप्ति में आपने यह भी लिखा है कि महात्माजी का एक बहुतही सुन्दर योग आया है और इस वर्ष में जितनी शक्ति और प्रधानता महात्माजी प्राप्त करेंगे उतनी पहले उन्होंने आज तक प्राप्त नहीं की थी। आपने भविष्य की बातें भी कही हैं जिनमें दुःखदाई बात यह है कि आगे ५-६ महीने हिन्दू मुसलमानों में भीषण मुठभेड़ होगी और सारे देश में हिन्दू-मुस्लिम रक्त की नदियां बह जायंगी। आपने प्रसन्नता देने वाली बात यह लिखी है कि सन् १९२६ में स्वराज्य भारत में अवश्य स्थापित हो जायगा।

(कैलास)

अमेरिका के डाक्टरों ने परीक्षा कर के देखा है कि मनुष्य के कलेजे को निकाल कर और उसके स्थान पर दूसरे का कलेजा डाल देने से आदमी नहीं मर सकता है।

प्रकाशक—अखिल भारतवर्षीय ओसवाल युवक महामण्डल (जोधपुर) की आज्ञानुसार पद्मसिंह सूराना जोहरी बाजार आगरा।
मुद्रक—परमेन्द्र वर्मा श्री जैन प्रेस आगरा।

"Oswal" Reg. No. A. 1308

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान।
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे नर सब हैं मृतक समान॥

वर्ष ७ } मार्च सन् १९२५ ई० { अङ्क ३

विषय-सूची।

सम्पादक-श्री० ऋषभदासजी ओसवाल (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी० पी० से ३॥) { प्रति अङ्क।)

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

—उद्देश—

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला ५ को प्रकाशित हुआ करेगा।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २॥।) रु० है एक प्रति का मूल्य ।) है।

३—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्योहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जौहरी बाजार आगरा

ओसवाल मुफ्त में.

श्रीयुत भेरूंलालजी बम्ब भुसावल निवासी ने एक वर्ष तक 'ओसवाल' पत्र अपनी ओर से ५ संस्थाओं को भेट देना चाहते हैं जिन्हें आवश्यका हो वह पते पर [illegible] भेजें।

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाजका, जिस से कुछ उपकार ॥

वर्ष ७ } आगरा, मार्च सन् १६२५ ई० { अङ्क २

नवीन वर्ष

(ले० श्रीयुत कृष्णलालजी वर्मा 'प्रेम' बम्बई)

बजाओ प्रेमकी वंसी, जलाओ ईर्षा ध्वंसी ।
बहाओ प्रेमका नाला, नशे यह घृणा का जाल ॥
रखोना मोह आसक्ति, करो निर्व्याज हो भक्ति ।
बनो तुम देश अभिमानी, बनो ध्यानी व सुज्ञानी ॥
बनो तुम जाति के त्राता, बनो दुःखियों को सुखदाता ।
करो निर्बलकी तुम सेवा, चखो शुभ कर्मका मेवा ॥
कृपा श्री की सदा होवे, गरीबी के वह दुख खोवे ।
सुखी हों "प्रेम" भी सोवे, वरस नूतन में यह होवे ॥

(मुनि से उद्धत)

हमारी दुर्दशा और उसके कारण
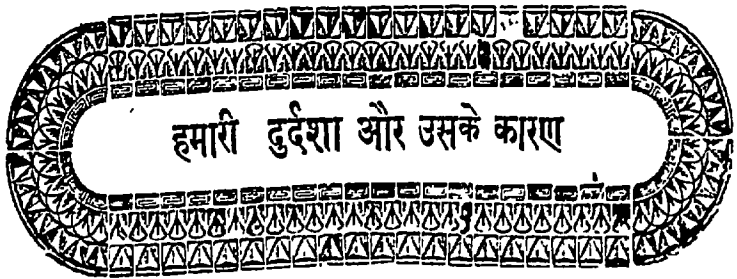
(ले०-श्री० सूरजमलजी वैद्य ओसवाल, कलकत्ता)

प्यारे ओसवाल भाइयो ! आज जब हम इस उन्नतिशील नवयुग में भी निज दृष्टि हमारे ओसवाल समाज की ओर फेरते हैं तो उसकी वर्तमान अधःपतित दशा देखकर हृदय मारे दुःख के विदीर्ण हुआ जाता है और नेत्रों से अश्रुधार बह निकलती है। हम उन्हीं वीर पुरुषों की सन्तान हैं, जिनकी दहशत से एक समय संसार भर में खलबली मची हुई थी। हाय ! आज हम इतने जर्जरित निर्बल तथा निस्तेज होरहे हैं, कि मौके बे मौके गुण्डे बदमाश तक हमीं पर हाथ साफ कर लेते हैं और हम मुंह पर कपड़ा गिरा रोकर ही रहजाते हैं ! तात्पर्य्य यह कि, हम बिलकुल ही आत्मभिमान शून्य हो रहे हैं।

हमारे ऐसे अधःपतन होजाने के कारण क्या हैं ? जहांतक हम सोचते हैं हमारी अधोगति के कारण अविद्या, परस्पर की फूट तथा वर्तमान महाघृणित कुरीतियां ही हैं। इन महाघृणित कुरीतियों के कारण हमारा ओसवाल समाज प्रायः रसातल को पहुंच गया है और बहुत सम्भव है, कि जिस प्रकार रोगी मनुष्य यथा समय उचित चिकित्सा न होने के कारण आखिर कालही के गाल में समा जाता है, ठीक उसी प्रकार यदि हम अपने कुरीतिरूपी महा भयंकर रोगों से ग्रसित ओसवाल समाज के लिए शीघ्र ही रोग निवृत्ति का कोई उपचार न करेंगे तो थोड़े ही समय में यह (ओसवाल समाज) सर्वथा ही मृत्यु मुख में प्रवेश कर जायगा, अर्थात् फिर इतिहास के पृष्ठों में ओसवाल समाज का अस्तित्व खोजे भी न मिलेगा।

आज मैं इस छोटे से लेखमें अपने समाज में फैली हुई वर्तमान महाघृणित कुरीतियों का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराता हुआ अपने समाज से अपील करता हूँ, कि भाइयो! चेतो, शीघ्र चेतो। बहुत देर तक सो चुके, अबतो उठो। बीती को बिसार कर अब आगे की तो सुधि लो। यदि आप अब भी कानों में तेल डाले इसी कुम्भकर्णी निद्रा में पड़े खर्राटे मारते रहोगे तो यही समझा जायगा, कि आप खुदही इतिहास के पृष्ठों से अपने समाज का नाम सदा के लिए मिटा देना चाहते हैं। किसी ने सचही कहा है कि:—

ज्यों २ भीजे कामरी त्यों २ भारी होय।

प्रथम मुख्य कुरीति समाजमें विद्या का अभाव है। कितने खेद और सन्ताप की बात है, कि हमारे भाई अपनी सन्तान को सुशिक्षित बनाने की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। उनका जीवन व्यर्थ के लाड़ प्यार से वृथा नष्ट कर देते हैं। उन्हें कूप मण्डूक (मूर्ख) बनाकर ही सुख देखा चाहते हैं। भाइयो! यदि आप अपने समाज की उन्नति चाहते हैं तो प्रथम अपनी सन्तान को सुशिक्षित बनाओ। जगह २ स्कूल पाठशालादि खोलो और अपने समाज रूपी उद्यान के बालकरूपी नवविकसित पुष्पों को विद्यारूपी पानी के अभाव से असमय ही में मुरझाने न दो। अहा! श्री भर्तृहरि महाराज ने विद्या की महत्ता (बड़प्पन) निम्न श्लोक में क्याही स्पष्ट शब्दों में प्रदर्शित की है—

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं-
प्रच्छन्नगुप्तं धनं।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी-
विद्या गुरूणां गुरुः॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने
विद्या परं दैवतं।
विद्या राजसु पूजिता नहि धनं-
विद्या विहीनः पशुः॥

भावार्थ—मनुष्य के शरीर के लिए विद्या के समान उत्तम और कोई भी रूप नहीं, यह कुरूप को भी कीर्तिवान बना सकती है। वह छिपा हुआ गुप्त धन है। विद्या सब भोगों को तथा यश और सुखों को देनेवाली है। विद्या गुरू जनों की भी गुरू है। विदेश में विद्या बन्धुओं से बढ़कर काम देता है। विद्या

परम देवता है। राजाओं में सर्वत्र विद्या ही की पूजा होती है, वहां धन की गिनती नहीं। ऐसी कल्पलता के ख़याल विद्या जिसके पास नहीं, वह पशु के समान है।

द्वितीय घृणित कुरीति हमारे समाज में बालविवाह की है। बड़ा ही दुःख का विषय है कि, ज्योंही लड़के १०-१२ वर्ष के होते हैं त्योंही हम उनको विवाह बगैर कुछ सोचे समझे ही लड़कों के हिताहित का कुछभी विचार न कर, कर देते हैं; और आखिर इस भयंकर भूल का हृदय विदारक फल यही होता है, कि, वे लड़के शीघ्र ही रोगी हो अकाल मृत्यु को ही प्राप्त होजाते हैं। न मालूम, भयंकर कुरीति के कारण आजतक समाज के कितने होनहार नवविकसित पुष्प असमय ही मुर्झा चुके हैं। इस घृणित प्रथा के रोमांचकारी दुष्परिणाम स्वरूप आज हमारे समाज में सैकड़ों हीन दीन बाल विधवायें बैठी अपने भाग्य को कोस रही हैं। प्रिय भाइयो! वास्तव में समाज के भविष्य का हिताहित बहुत कुछ हमारे इन नवल कुमारों (बालकों) पर ही निर्भर है। अतः बन्धुओ! यदि आप समाज हितैषी हैं तो शीघ्रही इस कुत्सित कुप्रथा को संमूल नष्ट कर अपना जातीय भविष्य उज्जल बनाइये।

तृतीय महाघृणित कुरीति हमारे समाज में वृद्ध विवाह और कन्या विक्रय की है। यह बात किसी से छिपी नहीं है। इस महाघृणित बदरीति से हमारी कितनी हानि हो चुकी है, और विशेष चिन्ता जनक बात तो यह है कि, यदि महा भयंकर कुरीति इसी प्रकार बरसाती मेंढ़कों की तरह बढ़ती ही गई तो थोड़े ही समय में हमारी क्या दशा होगी? हम उन महापापी कुलालची माता पिताओं को जितना ही धिक्कार दें, थोड़ा है, क्योंकि अपनी दस २ वर्ष की निरपराधिनी दुध मुही कन्याओं को साठ २ वर्ष के वूढ़े खूसटों को समर्पण कर सदा के लिए उन्हें (बालिकाओं को) अगाध दुःख सागर में सदा के लिये ढकेल देते हैं। हम ऐसे नृशंस माता पिताओं को वास्तव में कन्या घातक माता पिता कहें तो कुछभी अत्युक्ति न होगी। लानत है उन महापापी नरपिशाच कन्या दलालों पर जिन्होंने कि यह (कन्या वि-

क्रय) जघन्य नीच कर्म करना कराना ही अपना मुख्य कर्त्तव्य समझ रखा है। फिटकार है उन यमपुरी के मेहमान बूढ़े रामों को जिन्हें कि अपनी इस आखिरी अवस्था में भी विवाह कर बेचारी उन निरपराध-समग्र अबोध बालिकाओं का सर्वस्व हरण कर उनका समग्र जीवन सदा के लिये दुःखमय बनाने का शौक चर्राता है। भाइयो! इसी महाघृणित कुरीति के दुःखद फलरूप आज हमारी सैकड़ों हजारों बहिनें घोर वैधव्य यातना भोग रही हैं, जिसका कि ध्यान करते ही हृदय रोमांचित हुआ जाता है। प्रिय जाति हितैषी महानुभावो! यदि आप अपना पुनरुत्थान चाहते हैं तो इस महा भयंकर कुप्रथा को शीघ्र निज समाज से निकाल दीजिये। मेरी तुच्छ समझ में तो इस कुप्रथा को समूल नष्ट कर डालने का एक मात्र सहज उपाय "समाजसंघ या पंच पंचायत" ही है। प्रत्येक स्थान के ओसवाल भाइयों को चाहिये कि, वे अपने २ यहां पंचायत का सुसंगठन कर एक ऐसा नियम बना लें कि जो कोई भी ओसवाल अपनी कन्या बेचेगा तथा जो कोई भी ओसवाल इस घृणित व्यापार (कन्याविक्रय) की दलाली करेगा उसे पंचायती से अमुक दंड दिया जायगा।

चौथो महा घृणित कुरीति हमारे समाज में बेजोड़ विवाह या छोटा कंथ और बड़ी बहू की है। बड़े ही दुःख का विषय है, हमारे कई भाई योग्य अयोग्य जोड़े का कुछ भी विचार न कर सिर्फ बड़ा ही घर देखकर अपनी पन्द्रह २ सोलह २ वर्ष की लड़कियों का सम्बन्ध दस बारह वर्ष के अबोध बच्चों के साथ कर देते हैं। पर इस घृणित बदरीति के कारण समाज की प्रबल हानि हो रही है, व्यभिचार बढ़ रहा है, और बल, विद्या, बुद्धि का नाश हो रहा है। अतः समाज हितैषी भाइयो! यदि आप जातीय उत्थान चाहते हैं, यदि आपमें तनिक भी जात्याभिमान शेष है तो अपने समाज में होनेवाले इस सर्वथा लांछनीय बेजोड़ विवाह को अति शीघ्र रोक दो और जब कभी अपनी सन्तान की सगाई, विवाहादि करो तो इस वाक्य पर अवश्य ध्यान रक्खो कि "त्रिया तेरह, मर्द अठारह।"

प्रिय बन्धुओ! जब तक हमारे समाज में उपर्युक्त चारों महा घृणित कुरीतें विद्यमान हैं तब तक हमारा अभ्युत्थान कठिन ही नहीं बल्कि सर्वथा असम्भव है। हे समाज हित चिन्तको!

अब हम बहुत सो चुके याने बहुत खो चुके। अब हमको परस्पर की ईर्षा द्वेष त्याग एकमत होकर हमारी निद्रावस्था में हमारे समाजरूपी घर में घुसे हुए इन कुरीति रूपी चोरों को अति शीघ्र निकाल बाहर करना चाहिए और भविष्य के लिए ऐसा प्रबन्ध कर लेना चाहिए, जिससे कि यह कुरीति रूपी महा भयंकर चोर हमारे घर में प्रवेश ही न करने पाये। भाइयो! ध्यान रखना यदि आप अबभी निद्रावस्था ही में पड़े रहोगे तो ये कुरीतरूपी भयंकर चोर थोड़ेही समय में आपका सर्वस्व हरण कर आपको सदा के लिए बरबाद कर देंगे।

मुझे आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है, कि हमारे समस्त ओसवाल भाई मेरी इस अपील पर अवश्य ध्यान दे समाज सुधारार्थ बिना विलम्ब कमर कसकर खड़े हो जांयगे। यहबड़ेही हर्षका विषय है किअब हमारे भाइयों ने भी अपनी ओसवाल महासभा करदी है कार्यकरना निश्चयकियाहै अतःअब समस्त समाज हितैषियों का परम पुनीत कर्त्तव्य है, कि अति शीघ्र अपनी जातीय महासभा में सहर्ष सम्मिलित हो अपनी जातीय उन्नति में सहायक होते हुए अपने भविष्य को उज्वल बनायें।

यदपि चाहते निज तथा निज
भव्य सन्तति का भला,
तो छोड़ सब बदरीतियें
सीखो सदा विद्या कला।
फिर छोड़दो कुल वैर विग्रह
द्वेष ईर्षा त्याग दो,
स्वजाति के उत्थान में सब
एकमत हो भाग लो ॥ १

प्रिय ओसवालो! भाइयो
बहु सो चुके अबतो जगो,
क्या होरही हा! दुर्दशा
कुछ तो निहारो निज दगों।
वह विभव सब जाता रहा
अति दीनता है छागयी,
बस, नाम भी मिट जायगा
यदि और झपकी आगयी!! ॥ २
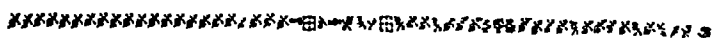
दरिद्रता और उससे बचने का उपाय ।

(अनुवादक श्रीयुत 'प्रेम' बम्बई)

संसार में सबसे खराब चीज यदि कोई है तो यह विचार-दारिद्र है। यह निश्चित है कि विचार-दारिद्र से ही हम दरिद्री हैं और सदैव रहेंगे। विचार दारिद्र सामर्थ्य-प्राप्ति के लिए विष है।"

"दरिद्रता के विचार हमें दरिद्री बनाते हैं और दरिद्र स्थिति में रखते हैं"

दरिद्रता अवैध-अनियमित-स्थिति है। यह किसी मनुष्य की दशा को ठीक नहीं बनाती। यह मनुष्य के भावी जीवन की उच्चता और पवित्रता का रोध करती है। प्रकृति की-परमात्मा की कभी यह इच्छा नहीं थी कि मनुष्य अनाथ, हीन वृत्तिकार या दास बनजाय। आश्चर्योत्पादक मानवी यंत्र रचना में शरीर में-एक भी ऐसा चिन्ह नहीं है, जिससे यह बात साबित होसके कि मनुष्य दरिद्र रहने के लिए उत्पन्न हुआ है। मनुष्य मुट्ठी भर नाज के लिए सदैव दासवृत्ति करते रहने को उत्पन्न नहीं हुआ, संसार में उसके लिए महत्ता और उच्चता है।

कोई मनुष्य उस समय तक सर्वोत्तम कार्य नहीं कर सकता है-अपनी गुप्त शक्ति को प्रकाश में नहीं ला सकता है-जब तक कि वह पद पद पर दूसरे की सहायता चाहता रहता है-जब तक कि वह प्रति हत होकर दुःसह परिस्थितियों की दया पर संतोष करके बैठा रहता है।

गरीब मनुष्य-जो सदैव खेतों की रक्षा करने ही में अपनी शक्ति को व्यय करते हैं-कभी स्वाधीन नहीं हो सकते; कभी अपने जीवन को नियमित नहीं बना सकते। प्रायः वे अपने विचारों को प्रगट करने के योग्य भी नहीं होते और न वे कुछ स्वतन्त्र विचार ही कर सकते हैं। उन गरीबों को हमेशा योग्य सभ्य वातावरण के स्थानों में या स्वास्थ्यदायक मकानों में रहना भी नहीं मिल सकता है।

जब दरिद्रता चरम सीमा तक पहुंच जाती है; तब यह प्रायः मनुष्यों के हृदय में बहुत खराब वासना उत्पन्न करती
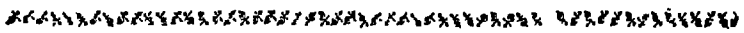
है और अपने सम्बन्धियों के साथ के उस प्रेम को नष्ट कर देती है, जो गरीबी में भी आनन्द से दिन कटा देने वाला होता है। चाहे कोई दरिद्रता की प्रशंसा करे, परन्तु हम तो यही कहेंगे कि सीमाक्रान्त दरिद्रता हृदय को निर्दयी, क्षुद्र, संकुचित, प्रेम विहीन और निराश बनाने वाला अनियमित फिटकार-दुराशिस (Curses) है।

मनुष्य हृदय में इसके द्वारा कुछ आशा भी उत्पन्न होती है, कुछ सफलता के दर्शन भी होते हैं; कुछ आनन्द भी मिलता है, परन्तु ऐसे मनुष्य बहुत कम होते हैं। सीमाक्रांत दरिद्रता आने पर सर्व साधारण मनुष्य तो अपने वास्तविक मनुष्यत्व की रक्षा भी नहीं कर सकते हैं। मनुष्य ऋण से दबकर या किसी और कारण से जब जैसा तैसा कार्य करके पैसा पैदा करने को विवश होता है; तब उसे अपने उस गौरव का; उस स्वमान का सुरक्षित रखना भी कठिन होजाता है, जिससे कि वह अपना सिर ऊंचा करके चलता है, और शौर्य के साथ संसार को देखता है। कुछ-उच्चतम और श्रेष्ठ आत्माओं ने इस काम को किया है। भीषण दरिद्रता के अन्दर रहकर भी जीवन उच्चता के साथ कैसे बिताना चाहिए यह बात उन्होंने अपने उदाहरण से बताई है; जो सदा संसार के हृदय-पट पर लिखी रहेगी; परन्तु दूसरी ओर देखने से विदित होता है, कि दारिद्रय के भयंकर प्रहार से हजारों मनुष्य नीचता के-क्षुद्रता के-गहरे गड्ढे में डूब गये हैं।

दुस्सह दरिद्रता के नष्ट कर देने वाले, पीस डालने वाले चिन्ह प्रत्येक स्थान पर दिखाई देते हैं। सूक्ष्मता से देखने पर दरिद्री के मुख की विकृत आकृति हमें उसकी अनिवार्य आवश्यकताओं का दिग्दर्शन करा देती है। दरिद्री को हम असमय में ही वृद्ध देखते हैं। जो बच्चे दरिद्री के घर जन्म लेते हैं वे बाल्यजीवन का आनन्द नहीं उठा सकते; उनका जीवन उनके लिए केवल भार अथवा फिटकार मात्र ही होता है। दरिद्रता के कारण नवीन चहरे भी मुर्झाए हुए दिखाई देते हैं और प्रायः देखा जाता है, कि यह दरिद्रता मनुष्य की सर्वोत्कृष्ट इच्छाओं को नष्ट कर देती है और असाधारण बुद्धिमत्ता को धूल में मिला देती है।

दरिद्रता प्रायः कल्याणकारक न होकर दुःखप्रद ही होती है। जो मनुष्य इसकी प्रशंसा करते हैं-इसको आत्म-विकास का साधन मानते हैं-उन्हें भी अन्त में यह अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि स्थितियां-शर्तें (Conditions) बहुत ही कठोर हैं।

मैं चाहता हूं कि नवयुवक इसकी भयानक और कठोर दुःस्थिति से परिचित होजायँ; और साथही यहभी जान जायं कि इसका बल, इसकी कठोरता और इसका श्वासावरोधक प्रभाव निजात्म-शक्ति को काम में लाने से नष्ट किया जा सकता है।

ऐसे कारणों के वश में होकर-कि जिनका मिटना सर्वथा असम्भव है-दरिद्र रहना निर्लज्जता नहीं है। जैसे लूला, अन्धा, बहरा होकर कोई व्यक्ति दरिद्री रहे तो उसके लिए हमारे हृदय में कभी तिरस्कार उत्पन्न नहीं होगा। बल्कि हम उसका आदर-सत्कार करेंगे और जहां तक हो सकेगा उसकी सहायता करेंगे; क्योंकि उसकी ऐसी स्थिति दैव के दुर्विपाक से हुई है; और जिसका मिटना सर्वथा असम्भव है। हम निर्लज्ज तो उनको बताते हैं कि जो सब तरह से परिश्रम करने के योग्य होकर भी परिश्रम नहीं करते हैं और दरिद्रता में पड़े रहते हैं।

हम जिस दरिद्रता से छूट सकने की बात कहते हैं; वह हमारी ही उत्पन्न की हुई दरिद्रता है। वह दरिद्रता, दुर्व्यवहारों से, लापरवाही से, कार्यपद्धति के अभाव से, सुस्तीसे, विलम्ब करने के स्वभाव से और बेध्यानी से होती है; जो मिथ्या विचारों से होती है; और जो नष्ट होने योग्य कारणों से होती है।

निवारण होने योग्य कारणों से जो दरिद्रता उत्पन्न होती है उससे प्रत्येक मनुष्य को लज्जित होना चाहिए, इसका कारण केवल इतना ही नहीं है कि दारिद्र्य योग्यता का प्रतिरोधक है, और लोग दरिद्री को तुच्छता की दृष्टि से देखते हैं; बल्कि इसलिए भी लज्जित होना बहुत आवश्यक है, कि इससे दरिद्री स्वयं-योग्य होते हुए भी-अपने आपको अयोग्य और तुच्छ समझने लग जाता है।

आज संसार में करोड़ों मनुष्य दरिद्रता के बलिदान होरहे हैं। इसका कारण खोजोगे तो पता चलेगा कि

उन्हें आत्म-विश्वास नहीं हैं, उन्हे यह श्रद्धा नहीं है, कि वे दरिद्रता से छुटकारा पा सकते हैं। दरिद्रियों के साथ ही होता है अथवा ऐसे धनाढ्यों के साथ होता है, कि जहां उन्हें सिवाय अपनी हीनता के और कुछ सुनने को नहीं मिलता। वे सदैव यही सुनते रहते हैं कि धनकी आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य का दूसरोंकी सेवा करने के लिये विवश करती है गरीब सदैव धनवानों का दासत्व करने ही के लिए पैदा होते हैं, गरीबों को कभी धनवान बनने का प्रयत्न न करना चाहिए, क्योंकि धन तो भाग्य से मिलता है। ऐसी बातें शनैः २ उनकी उन्नत बनने की योग्यता और अभिलाषा को नष्ट कर देती हैं और अन्त में वे निराश हो जाते हैं।

धनवानों में से कई हृदयहीन हैं। हमारी उनके निर्दयी व्यवहारों या घृणित और कठोर स्थितियों को लाने वाली उनकी स्वच्छंदता से बनाई हुई राजनीतिक और कर सम्बन्धिनी स्कीमों की ओर उपेक्षा बुद्धि नहीं है, परन्तु हम गरीबों को यह बताना चाहते हैं कि वे ऐसी कठोर स्थिति में भी अपने आपको उन्नत बना सकते हैं। सैकड़ों बल्कि हज़ारों ऐसी स्थिति में से उन्नत बलवान-बने हैं, और इसी लिए हम कहते हैं कि उनके लिए भी आशा है। यह बात उन्हे अपने हृदयपट पर भली भांति से अङ्कित कर लेना चाहिए कि वे दुर्धर्ष परिस्थितियों को बदल सकते हैं। उनको ऐसे लोगों के जीवन देखना चाहिए जो कि गरीब स्थिति में से निकल कर धनाढ्य स्थिति में पहुंचे हैं। उनका हृदय-पठन-गरीबों के लिये बहुत लाभदायक होगा।

जो मनुष्य आत्म-विश्वास छोड़देते हैं; उसे धीरे २ अन्य सफलता प्राप्ति के गुण भी छोड़ जाते हैं, और उसका जीवन भार रूप होजाता है। वह इच्छा और शक्ति को खो बैठता है, वह अपने व्यक्ति विषयक दिखाव (Appearance) की परवाह नहीं करता; वह निरुद्यमी बन जाता है; वह उस मार्गानुगामी नहीं होता जिसपर चलने से दूसरों को सफलता मिली है; वह हर प्रकार से शिथिल निष्प्रयोजनीय व आलसी बन

आता है और उसमें गरीबी जीतने का सामर्थ्य होता है वह भी धीरे २ नष्ट होजाता है।

गरीब मनुष्य अपने बाह्य दिखाव अच्छे नहीं रखते, अपने धनाढ्य पड़ोसियों की तरह उन्नत मन होकर अपना जीवन नहीं बिताते और न वे जो कुछ उनके पास होता है उसको सर्वोत्कृष्ट ही समझते हैं, इसलिये वे असाहसी बनजाते हैं। वे अपना कदम आगे बढ़ाकर दरिद्रता के चिन्ह को मिटाने के लिए अपनी पूर्ण शक्ति के साथ परिश्रम नहीं करते। यदि दुनियां में मनुष्य की शक्ति को जड़ बनाने वाली कोई चीज़ है तो केवल एक ही है। और वह यह है कि हम आभागी स्थितियों को खराब समझकर भी उनसे छूटने का प्रयत्न करने के बजाय, मेल कर लेते हैं—उन्हीं में संतोष मानने लग जाते हैं।

दरिद्रता इतनी खराब नहीं है, जितने कि इसके विचार। यह निश्चय करना कि मैं दरिद्र हूं और हमेशा रहूँगा, बहुत बुरा है घातक है। जब यह बात निश्चय की जाती है कि निर्धनता का मुकाबिला करने से, उस शक्ति के साथ जो कभी पीछे पांव रखना नहीं जानती है-दरिद्रता से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करने से-मनुष्य धनी बन सकता है; तब दरिद्रता भी अवश्य ही नष्ट-भ्रष्ट होजाती है।

अंधकार, पतन, और निराशायुक्त परिस्थितियों से छूटने के लिये जो कि उच्च अभिलाषाओं को नष्ट करने वाली हैं-प्रयत्न करना उस समय तक निरर्थक होगा, जब तक कि मनुष्य दरिद्रता के वातावरण में रहेगा, और दरिद्रता के विचारों में प्रवृत्ति रक्खेगा।

भिखमंगे विचार रखने से मनुष्य भिखारी के सिवा और क्या हो सकता है? मनुष्य की दरिद्र स्थिति उस समय तक रहती है; मनुष्य हत-सफल उसी समय तक होता है; जबतक कि वह दरिद्रता और असफलता के विचार करता रहता है।

यदि दरिद्रता से डर लगता है; यदि दरिद्रता भयंकर दिखाई देती है; "वृद्धावस्था में पैसे बिना मेरी कैसी दुर्गति होगी?" ऐसे विचार यदि म-

नुष्य-हृदय में उत्पन्न हुआ करते हैं, तो उसकी ऐसी ही स्थिति होजाती है, बहुत जल्दी होजाती है। क्योंकि- अन्तःकरण में रात दिन जो भीति होती है वह- मनुष्य को असाहसी, अपने पर भरोसा नहीं रखनेवाला और कठोर स्थिति का मुकाबिला करने में असमर्थ, बना देती है।

चुम्बक पत्थर अवश्यमेव सच्चा होना चाहिए; अपने स्वभावानुकूल लोहे का आकर्षण करने वाला होना चाहिए। संसार में 'मनुष्य आज तक पदार्थों को जिसके द्वारा अपनी ओर- खींचता रहा है, खींचता है और खींचेगा, वह केवल "मन" है और 'मन' विचारों के अनुकूल बनता है। कठोर परिश्रम करने पर भी हृदय यदि भयभीत विचारों से, दरिद्रता के विचारों से भरा रहता है तो, मनुष्य को सदैव दरिद्रता ही प्राप्त होती है।

मनुष्य उसी ओर चलता है जिस ओर, उसका, मुंह होता है। यदि वह दरिद्रता की ओर मुंह करके जारहा है तो उसे कभी आशा नहीं रखना चाहिए कि वह धनाढ्य बन जायगा। मनुष्य के कदम जब असफलता की सड़क पर जाने के लिए पड़ रहे हैं, तब यह कब सम्भव है, कि वह सफलता की सड़क पर पहुंच जाय।

अन्तरङ्ग की दरिद्रता को जीतने पर बाहिरी वस्तुओं की दरिद्रता शीघ्रही परास्त होजाती है, क्यूं कि जब हमारा अन्तरंग फिर जाता है-जब हमारी मानसिक प्रवृत्तियां बदल जाती हैं-तब शारीरिक प्रवृत्तियां तो उसके साथ स्वमेव फिर जाती हैं।

दरिद्रता के विचार हमको उस खराब स्थिति में रहने के लिए विवश करते हैं, जो दरिद्रता के आघात से होती है-जिसे दरिद्रता उत्पन्न करती है। लगातार दरिद्रता के विचार करने से, और दरिद्रता का ढंग रखने से मानसिक स्थिति दरिद्र हो जाती है। अन्य दरिद्रताओं की अपेक्षा मानसिक दरिद्रता संसार में सबसे ज्यादा बुरी है।

जबतक हमारे हृदयमें सफलताकी भावनाएं नहीं होंगी; तब तक हम कभी सफलताके मार्गपर नहीं चल सकेंगे। अंधकारकी ओर देखनेवाला मनुष्य प्रकाश के सुरक्षित स्थान में कभी नहीं पहुंच सकेगा। (शेष फिर)

(गज़ल) स्त्री शिक्षा

(ले०-श्री० शान्तीदेवी स्वर्गीय)

भारत की देवियों से फ़रियाद यही है।
पतिभक्ति ही श्रृंगार है मरयाद यही है ॥ १

पति-देव अपना सच्चा संसार में शिरोमणी।
पीयूष-प्रेम का पियें परशाद यही है ॥ २

'सीता' के तुल्य दुख को सुख मानकर बितावें।
गृहस्थी धरम को पालें बुनियाद यही है ॥ ३

तन मन वचन से सेवा ही धर्म नारियों का।
पद-पद्म पति के पूजें [1]अभिवाद यही है ॥ ४

अन्धा बधिर हों क्रोधी कोढ़ी कलंकी खानी।
शुभ इष्ट देव अपना [2]आल्हाद यही है ॥ ५

संसार स्वर्ग दीखै पति से ही मोक्ष सुख है।
चेतो ! उठो री बहिनों !! अब [3]नाद यही है ॥ ६

[1]वन्दना [2]आनन्द, प्रसन्नता [3]आवाज, शब्द

ब्रह्मचर्य

अर्थात्

वीर्य-रक्षा।

जिस आर्यवर्त में किसी समय हमने अपने प्रचण्ड ज्ञान तथा वीर पराक्रम द्वारा समस्त संसार को हिला दिया था। जिस देशने महावीर पाणिनि, वाल्मीकि, गौतम, कणाद और व्यास ऐसे त्रिकालदर्शी ऋषि, ब्राह्मण, दिलीप, रघु, राम और कृष्ण ऐसे पराक्रमी क्षत्रिय। परशुराम और भीष्म जैसे बालब्रह्मचारी उत्पन्न किये, उन्हीं की सन्तान विषय वासना की कीचड़ में फंसी, धड़ाधड़ निर्बल क्षीण काय, क्षीण मस्तिष्क क्षीण हृदय प्राणियों की, कीड़े मकोड़ों की भांति सृष्टि करती चली जाती है।

एक ओर तो भारतको दरिद्रता और पराधीनता ने घेर लिया और दूसरी ओर उससे भी कहीं अधिक भारतवासी अपने कर्म धर्म से गिरने के कारण अपनी मौत आपही मर रहे हैं। हम लोग दूसरों के सामने गिड़गिड़ाते हैं कि हमारे लिये यह करो वह करो, कुछ इने गिने वीर उत्साही लड़ भी रहे हैं कि हमें यह दो वह दो, कहीं स्वराज्य आन्दोलन होरहा है कहीं कांग्रेस जोर लगा रही है उधर मुसलमान भाई भी अलग ही सिर पटक रहे हैं, किन्तु फिरभी कुछ नहीं होता।

कोई कहता है अमेरिका स्वतन्त्र हुआ, कैनेडा को स्वराज्य मिला, मिश्र को आजादी मिली, आयरलेण्ड स्वाधीन हुआ, किन्तु भारत को कुछ नहीं। यह कैसे दुःख की बात है, जो भारत का उद्धार नहीं होता इसका कारण क्या है?

इस हेतु को ढूंढ़ निकालने के लिये कहीं दूर जाना नहीं, यह कारण बहुत निकट है वह अपनी आत्मा में है।

किसी महापुरुष का वचन है कि "फूल जब खिल पड़ता है तो कोसों दूर के भ्रमर आपही आप वहां चले आते हैं"। इसी प्रकार जब कहीं सरोवर उवल पड़ता है तो मीलों दूर से पशु पक्षी अपनी प्यास बुझाने को चले आते हैं।

दीपक जब प्रज्वलित होजाता है, तो पतिङ्गों का भुण्ड आपही आप उस ओर दौड़ पड़ता है, तदनुसार ही जिस दिन भारत के हृदय में उसकी आत्मा में वास्तविक प्रकाश होगया तो संसार सम्पत्ति आपही आप खिच कर चली आयगी।

यह वही भारत है, कि जिसके वासियों की सूक्ष्म विचार कुशलता की स्तुति गानसे समस्त सभ्य संसार गूंज रहा था, वही चन्द्र सूर्य हैं, वही गङ्गा यमुना की धाराएं हैं कि जिस जलवायु पृथ्वी और आकाश में उक्त महा पुरुषों ने जन्म लिया है।

आजकल हमारी जो हीन दशा हो गयी है उसका स्मरण करते हुए हमारे नेत्रों में जल भर आता है, हृदय अत्यन्त व्याकुल होजाता है। कैसे दुःख की बात है कि देश की वर्तमान दरिद्र अवस्था में हमसे अपनी उन्नति करते नहीं बनती। केवल यही नहीं किन्तु जिस स्थिति में हम हैं उसका भी क्रमशः नाश ही होता चला जाता है।

हमारी शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति दिन पर दिन गिरती चली जाती है और इसीके द्वारा हमारा राष्ट्र रूपी महल भी दिनों दिन नष्ट भ्रष्ट होता चला जाता है।

हमारी अवनत स्थिति का मुख्य कारण यह है कि हमने अपने पूर्वजों का अनुकरण त्याग दिया अतएव उनके गुण हम में नहीं रहे।

हमारे पूर्वजों का विषय भोग सम्बन्धी सादाचलन उनके गृहस्थाश्रम में जैसा रहता था आज उसका अनुकरण हम से वाल्य-अवस्था और विद्यार्थी की दशा में भी नहीं हो सकता। प्राचीन लोग गृहस्थाश्रम स्वीकार करने पर भी जितना ब्रह्मचर्य्य व्रत को पालन किया करते थे उतने दरजे तक भारतवासी ब्रह्मचर्य्याश्रम में भी ब्रह्मचारी नहीं रहते हमारे राष्ट्र की अवनति का मुख्य कारण बस केवल ब्रह्मचर्य का लोप है।

प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने बड़े गहन विचार और अतुल पराक्रम के जो काम किये वे सब ब्रह्मचर्य्य की सहायता से ही पूरे हो सके थे। जबतक आपका शरीर और आत्मा बलवान नहीं तबतक आपकी जाति तथा आप का देश भी कदापि बलवान नहीं हो सकता। शारीरिक सम्पत्ति को बलवान बनाने के निमित्त पुरुषार्थ-दायक ब्रह्मचर्य्य करना पड़ेगा। देशकी राजनैतिक सामाजिक, तथा धार्मिक उन्नति के लिये ब्रह्मचर्यव्रतस्थ, पवित्र मन आत्मा रखने वाले पुरुषों की आवश्यकता है।

यूरोप के देशों में भारतवर्ष की अपेक्षा अंग्रेज विद्यार्थी बहुत अधिक दिन तक ब्रह्मचर्य्य पालन किया करते हैं। कोई भी यूरोपीय स्त्री पुरुष २५ वर्ष से कम आयु में विवाहित देखने में नहीं आता। बहुधा ४०, ५०, की आयु में शादियां कर वे लोग गृहस्थाश्रम में आते हैं।

हमारे देश में इसके विरुद्ध ८-८ १०-१० वर्ष के बालक बालिका एं गृहस्थ आश्रम भोगी पाये जाते हैं, कुछही समय के पश्चात इन विवाहित बालकों के असमय सन्तान उत्पन्न होने लगती है। इन्हीं कीड़े मकोड़े की भांति निर्बल सन्तान से भारतवर्ष को आबादी करोड़ों की कामो संख्या में होते हुए भी कुछ अर्थ नहीं रखती। इन २० करोड़ प्राणियों की अपेक्षा यदि भारत में केवल बीस ही नरशार्दूल उत्पन्न होजावें तो न जाने वह भारत में क्या कर दिखावें।

सज्जनो! यदि आप गम्भीर विचार करें तो आपको स्पष्ट रूप से विदित होगा कि भारतवर्ष की दुर्दशा का मूल कारण ब्रह्मचर्याश्रम का ही भ्रष्ट हो जाना है।

हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने हमारे जीवन को चार भागों में विभाजित किया था और उन चार आश्रमों में सबसे ज्यादा जरूरी और जबरदस्त ब्रह्मचर्य्याश्रम को माना था। इस एक ब्रह्मचर्य्याश्रम की प्रथम नींव बिगड़ जाने से आर्यजाति की शेष इमारत (गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यस्थ) भी

बिगड़ गयी। जबतक देश में सच्चे ब्रह्मचारी नहीं पैदा होंगे तब तक देश के इन झूंठे गृहस्थ, सन्यासियों से कुछ सुधार न हो सकेगा।

यह कौन नहीं जानता है कि संसार को पलट देने के लिये केवल एक ही महा पुरुष की आवश्यकता हुआ करती है। भारत माता ने बहुत से महान् पुरुषों को जन्म दिया वह इस समय संसार के सामने; क्या किसी एक महापुरुष को रखने के लिये असमर्थ होगी?

आज कल के लोग इस ब्रह्मचर्य्य व्रत को बड़ा कठिन व्रत समझते हैं इसका विशेष कारण यह है कि उन्होंने अपने बाल्यकाल में ही इस व्रत को नहीं रक्खा, नहीं समझा कि जो अवस्था इस व्रत के लिये सर्वथा उपयुक्त थी। यदि उसी समय ब्रह्मचर्य्यव्रत यथा नियम पालन किया होता तो इस समय भी यह स्वाभाविक और एक साधारण बात थी।

ब्रह्मचर्य्य क्या है ?

"इन्द्रियों का संयम" अर्थात् समस्त इन्द्रियों को अपने अधिकार में रखना ही ब्रह्मचर्य्य है। लोग कहते हैं कि इन्द्रियों को काबू में कैसे करें वे तो बेकाबू हैं, हम परतन्त्र हैं जिधर को वह दौड़ती हैं। हमभी उनके पीछे दौड़ते चले जाते हैं। इन इन्द्रियों की दौड़ाग को रोकना, इन्द्रियों को जीतनो कोई कठिन काम नहीं। संसार में कोई भी ऐसा रोग नहीं कि जिसकी औषधि हमारे त्रिकालदर्शी ऋषियों ने नहीं बताई।

यदि आपको अपने अद्भुत शक्तिशाली दार्शनिक ऋषियों पर पूर्ण विश्वास है तो आइये यूरोप, अमेरिका के विद्वानों की भांति, हमभी उन पर विश्वास करें और उस ब्रह्मचर्य्य महाव्रत के नियमों को समझने का प्रयत्न करें।

इन्द्रिय निग्रह विधि

घोड़े की रासों को रोक कर जिस प्रकार उसके अल्हड़ प्रवाह को रोकते हैं अर्थात् उसके मुखको कभी दाहिने कभी बायें तोड़ मोड़ देते हैं तो वह स्वयं इस विधि से चलने भागने से मजबूर होजाता है फिर सवार उसको

अपने विषय पर धीरे २ ले जाता है। इसी प्रकार मन को भी विषयों के मनन से हटाकर किसी दूसरी ओर लगा देना चाहिये वह फिर उस विषय की ओर नहीं जायगा उसको क्षणमात्र के लिये फिर किसी ओर दृष्टि डाल लगा देना चाहिये।

इस प्रकार कई बार करने से मन बहल कर अवश्य ही दूसरी ओर चला जायगा सारांश यह है कि उस विषय की वस्तु को कुछही समय के लिये उसके सामने से हटा देना उचित है। इन्द्रियों के विषय प्रसंग में मन को नहीं लगने देना चाहिये क्योंकि विषय के प्रसंगों को देखकर, सुनकर विषय भोगों की इच्छा होने लगती है।

विषय प्रवेश के द्वार।

नेत्र, श्रवण, जिह्वा, नासिका, त्वचा,

१-नेत्रों के सामने रूप रङ्ग न आने दे। सुन्दर रङ्गीन कान्तियुक्त पदार्थों का दर्शन न करे।

२-कानों को रागों, वाद्यों, श्रुति सुखद स्वरों से बचावे।

३-जिह्वा, रसन-इन्द्रिय को अपने कब्जे में अधिक रखना, बहुत से स्वादिष्ट और पुष्ट पदार्थों को न खाना। केवल शरीर धारणोपयोगी मात्रा में ही भोजन करना, सादा खाना खाना कि जिसमें अधिक मात्रा में वीर्य न बने अन्यथा वह अधिक वीर्य शरीर में जज्ब न हो निकलने की चेष्टा करेगा। इसी कारण ब्रह्मचारी को एक ही समय भोजन करने का विधान है।

स्वादिष्ट पदार्थों का भोग रसास्वादन निर्णय और उन पदार्थों का मनन कभी न करे।

४-इत्र, एसेंस, लवेन्डर, तेल, फुलेल सुगन्धित पदार्थों के आच्छादन से बचा रहे।

५-त्वचा सम्बन्धी विषय, नर्म कोमल, मुलायम, पदार्थों को स्पर्श न करे।

(कैलाश से)

धर्म प्रसार का सीधा मार्ग

आज हरएक धर्म के अनुयायी की यह इच्छा रहती है कि मेरे धर्म के अनुयायी की संख्या बढ़े उसके हृदय में यह भावना दृढ़ता से जमी हुई रहती है कि सिवाय मेरे धर्म के अन्य धर्म झूठे हैं और मेरे धर्म की बराबरी नहीं कर सकते। यदि यह भावना सच्चे अन्तःकरण से हृदय में हो कि—मेरे धर्म में आकर ही दूसरों का हित हो सकता है तबतो ठीक किन्तु मेरे धर्म की संख्या बढ़े इसलिए मैं यदि धर्म-प्रचार करना चाहूं तो दोष युक्त है।

आज हमारे धर्म की संख्या बढ़े इसलिए हम दूसरे धर्म के अनुयायियों को अपनी तरफ खींचने का प्रयत्न करते हैं इसका परिणाम यह होता है कि दूसरे धर्मवाले चिढ़कर वे अपने धर्म के अनुयायी बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं फलतः दोनों में संघर्ष होने लगजाता है और धर्म बढ़ाने के लिए अधर्म की शरण ली जाती है। इस प्रकार से पक्ष अपने धर्म को अच्छा और दूसरे धर्म को बुरा समझाने का प्रयत्न यद्यपि धर्म वृद्धि के लिए किया जाता है तथापि इसका परिणाम सदा बुरा ही होता है।

धर्म वास्तव में देखा जाय तो इतनी पवित्र वस्तु है कि उसमें जरासी भी अपवित्रता आजाय तो उसकी उत्कृष्टता नष्ट होजाती है। पर हम आजकल इस बात को मानने के लिए तैय्यार न होंगे कि-धर्म का प्रसार करने में अधर्म का आश्रय लेना बुरा है और यही कारण है कि—आजतक जितने धार्मिक झगड़ों में अधर्म फैला उतना शायद ही किसी और काम में फैला हो और आज अधर्म का आश्रय लेना बुरा नहीं समझा जाता। आज तक इस धर्म प्रसार के पागलपन ने जितना अधर्म फैलाया है उतना शायद ही किसी और दूसरी बात ने फैलाया होगा। आज इस बात का अनुभव हमको बात २ में होता है। पुराने इतिहासों में नहीं पर आज कल के धार्मिक झगड़े भी इस ऊपर की बात को पुष्ट करते हैं।

मेरे धर्म का-प्रसार होना यह भावना हरएक धर्म का अनुयायी रखेगा किन्तु उसे अपने धर्म के अन्दर लाने के आजकल के मार्ग दोष पूर्ण हैं। क्योंकि

दूसरे को बुरा कहे बिना मेरा अच्छा नहीं समझा जावेगा इस गलत फहमी ने परस्पर प्रेम का अभाव कर दिया है। इससे न तो धर्म का प्रसार अधिक होता है और न किसी का हित।

तब धर्म का प्रसार किस प्रकार किया जा सकता है। उसका सुगम उपाय यह है कि:—

हम दूसरों के धर्म को बुरा न कह कर हमारे धर्म के मुख्य सिद्धान्तों का प्रसार प्रथम करना चाहिए जरा जरासी बात पर झगड़ा न करके धर्म को लोकोपयोगी बनाना चाहिए।

बस! यही सर्वोत्तम उपाय धर्म के प्रसार का है। और इसीका आश्रय लेने से हम अपने धर्म का प्रसार कर सकते हैं।

किन्तु आज हमारे अन्दर यह बात नहीं है यदि हो तो हम अपने धर्म का सच्चा प्रसार कर पाते और हमारे में यह आग्रह भी नहीं दीख पड़ता। मैं चाहे मेरे धर्म के उसूलों को न मानता होऊं, पर फिर भी दूसरे को उपदेश देने का लोभ नहीं रोक सकता इससे दूसरे पर प्रभाव नहीं पड़ सकता। और न धर्म का प्रसार ही हो सकता।

आज हमने यदि एकही बात का प्रसार प्रथम किया फिर वह जैन धर्म के नाम से न हो पर "अहिंसा" का प्रसार हर एक धर्म के अन्दर इस प्रकार से करना चाहिए कि उसे यह बात अपने धर्म में ही दीख पड़ती हो तो हम अपने कार्य को अधिक उत्तमता से कर सकेंगे। मजहबी कट्टरता हरएक व्यक्ति को होती है ऐसी अवस्था में उसे अपने धर्म का त्याग कर यों कहने की अपेक्षा अपने उत्तम संस्कारों का प्रभाव उस पर डालना अधिक असर कारक हुए बिना न रहेगा।

संसार में सबसे ज्यादह प्रसार बुद्ध धर्म का हुआ था और सबसे अधिक किया सम्राट अशोक ने। हम उसके धर्म प्रसार की रीति को यदि सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करें तो हमें एक बात दीख पड़ेगी और वह यह कि उसने वाद विवाद न करके उत्तम२ तत्वों को जो कि सभी धर्म से मान्य है समाज में फैलाकर धर्म को इतना लोकोपयोगी बनाया था कि उस समय को बुद्धधर्म की सेवा देखकर हजारों बल्कि लाखों लोग बुद्ध के अनुयायी
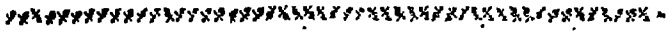
बन गए थे। सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म को जो सेवा का रूप दिया था यही कारण था उसके संसार के प्रसार का यदि आज हमको अपने धर्म का प्रसार करना हो तो तत्वों के अपार से झगड़ों के पीछे न लगकर मूल एवं सर्वमान्य सिद्धान्तों का प्रसार तथा अपने धर्म को समाज का सेवक बनाकर उसकी छाप दूसरों पर पाड़कर अपना धर्म बढ़ाने की कोशिश करना चाहिए न कि खण्डन-मण्डन। हमारा धर्म खण्डन मण्डन से यदि थोड़ा बढ़ भी जावे तो उसका चाहे जितना न प्रसार हो सकता है और न वह स्थायी हो सकता है।

कमज़ोर सन्तान

हम दिन प्रति दिन अपने समाज को दुर्बल का दुर्बल ही देखते आरहे हैं मानो उसमें कुछ शक्ति ही नहीं, यह अवस्था देख दुःख का होना स्वाभाविक है और उपायों का ढूंढना भी ज़रूरी बात है, किन्तु ऐसे बड़े विषय पर लिखना मेरे जैसों का काम नहीं है किन्तु फिर धिरष्टता करते हैं। और इस विषय के जानकारी रखने वालों से प्रार्थना करते हैं कि वे भी इस विषय पर कुछ लिखें:—

जिस जाति की सन्तान कमज़ोर दुर्बल और कान्तिहीन हैं उस जाति का भविष्य बड़े संकट में है क्योंकि यह सन्तान ही भविष्य में समाज बनाने वाली है और जाति का नैतृत्व भी इन्हीं के हाथ में आने वाला है। यदि जाति के वृद्धों ने चाहे इस बात का संगठन भी कर लिया हो कि हम जाति का सुधार नहीं होने देंगे तो भी हम को दिनों के मेहमानों से इतना डरने की कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि वे कितने दिन रहेंगे आखिर हमारा ही युग आने वाला है किन्तु हमें डर उन छोटे २ बच्चों का

रखना चाहिये जो भविष्य में जाति के कर्त्ता-धर्त्ता बनेंगे। यदि हमने उन्हें इसी कमजोर स्थिति में रखा तो फिर न मालूम जाति को और कितने बुरे दिन देखने पड़ें। आज हमारी सन्तान केवल शारीरिक शक्ति से ही कमजोर नहीं है उसमें बौद्धिक तथा नैतिक शक्ति की भी कमी है उसे दूर करने के लिए हमें क्या करना चाहिए यह बतलाने का प्रयत्न इस लेख में करने का विचार है।

प्रथम सन्तान सुदृढ़ बनाने की जिम्मेवारी उसके मां बापों के ऊपर है। आजकल हम देखते हैं कि सन्तान पैदा करने योग्य अवस्था के पहलेही सन्तान पैदा करने का मोह हमारे समाज के अन्दर बुरी तरह से घुस पड़ा है। वास्तव में पुरुष पचीस वर्ष का होने के बाद तथा स्त्री सोलह वर्ष के बाद सन्तान को पैदा करने योग्य होते हैं उसके पहले उनको ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए किन्तु हमारे दुर्भाग्य से हमारी समाज में १२ वर्ष की माता और १६ वर्ष के पिताओं की संख्याही अधिक है और यह संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती ही जारही है। और कमजोर सन्तान का बढ़ना हमारी समाज के लिए अनिवार्य है। बाल विवाह तथा विवाह के बाद पति पत्नी को एक स्थान में सुलाना यह है इसके मुख्य कारण; किन्तु हमारे समाज को यह दोनों रीतियां इतनी आवश्यक मालूम होती हैं कि जिसका निकालना हमारे लिए अत्यन्त कठिन बात है।

विवाह तभी करना ठीक है जब दोनों लड़का और लड़की विवाह के योग्य होजाय एवं उन्हें संसार सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान होजाय तथा संसार का भार स्वतन्त्रता पूर्वक उठाने में शक्तिवान् हो जाय। पर आज यह बातें प्रायः नहीं देखी जाती यदि कुछ देखा जाता है तो वह यह कि "घर धनवान है या नहीं; विवाहमें लड्डू उड़ाये जावेंगे या नहीं। उस सम्बन्ध में जो कि आवश्यक है कुछभी तलाश नहीं किया जाता और बाद में उसका बुरा परिणाम उन लड़कों तथा लड़कियों को भोगना पड़ता है जो विवाह पद्धत के बलि होते हैं। लड़के तथा लड़कियां उस आवश्यक

मर मिटे हैं आज 'क़र्ज़' बोझ से औलाद के।
घुल चुके हैं खूब गम से और हम औलाद के॥
फिर भी इनकी पर्वरिशका कोई चारा है नहीं।
जिन्दगी का भी कोई बस अब सहारा है नहीं॥

ज्ञान से बिलकुल वंचित रहते हैं जो संसार बसाने के पहले चाहिए। और न उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा रहता है कि जिससे वे सुदृढ़ सन्तान पैदा कर सकें। इसलिए स्त्री शिक्षा की बड़ी ज़रूरत है और उसका प्रबन्ध लड़के लड़कियों के माता पिता को करना चाहिए। आज हज़ारों रुपये उन लड़कों के लाड़ प्यार में खर्च होते हैं क्या उनके हित के लिए खर्च करना आवश्यक नहीं समझते। दूसरे विवाह के बाद में एकत्र सुलाना यह बात हमारे स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक है और इससे विषयवासना का प्राबल्य बढ़ने के सिवा और कोई लाभ नहीं दीख पड़ता किन्तु यह रिवाज इसलिए प्रचलित है कि-परदे की प्रथा के कारण घरवालों के सामने पति पत्नी से संकोचवश बोल नहीं सकता इसलिए रात्रि में एक जगह सोना यह आवश्यक होजाता है। यदि हम विचार पूर्वक देखें तो यह प्रथा सिवाय हानि के लाभ ज़रासी नहीं पहुंचाती क्योंकि जब हम सोने को जाते हैं तब ठंडे के पहले जा नहीं सकते और रात्रि में सिवाय विषय भोग के दूसरी बातें होना कठिन हो जाता है क्योंकि आगे सोने का समय हो जाता है। इस प्रकार यह रोज की आदत पड़ कर हम स्त्रियों को केवल विषय भोग की मशीन समझने लगजाते हैं। और अत्यन्त विषय भोग के सेवन से हमारा तथा हमारी स्त्रियों का स्वास्थ्य खराब होजाता है और उसका प्रभाव सन्तान पर पड़े बिना नहीं रहता।

परदे की प्रथा हमारे लिए और भी दूसरे प्रकार से हानिकारक है और वह यह कि उससे हमारी स्त्रियों का स्वास्थ्य बिलकुल खराब होजाता है किन्तु इसका निकालना जितना कठिन उतना शायद अन्य कुरिवाजों का नहीं क्योंकि इस प्रथा के कारण सास बहू पर मनमाना अत्याचार कर सकती है अगर इस प्रथा को निकालने का प्रयत्न हम करेंगे तो शायद हमारी वे वृद्ध स्त्रियां हमसे नाराज हुए बिना नहीं रह सकती क्योंकि आज वे अपनी बहुओं पर इस प्रथा के बल पर मनमाना अत्याचार कर सकती हैं। किन्तु उनके स्वार्थ से होने वाली हमारी भयानक हानि इस तरफ यदि उनका ज़रा भी ध्यान चला

जाय तो हमारी आज यह दुर्दशा न होने पाती किन्तु आज शिक्षा के अभाव से उनमें अज्ञान है और वे अज्ञानवश हमारे कल्याण की इच्छा रखते हुए उनके हाथसे हमारा अहित होता जाता है।

हमारे कपड़े तथा गहनों के पहनने के रिवाज से भी हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचे विना न रह सकती क्योंकि बारह-२ तथा चौदह २ वर्ष की लड़कियों को पांव में विवश होकर पांच २ सात २ चीजें पहननी पड़ती है और उससे उनके गर्भाशय पर बुरा प्रभाव पड़े बिना नही रहता। जोरसे घाघरा बांधना यथा इन ज्यादा वजन की चीजों का पहनना यद्यपि हानिकारक है तथापि बाप दादों के भक्त उनके चले हुए रिवाजों को त्याग नहीं सकते। भलेही उससे हमारे प्राण चले जांय किन्तु हम अपने बाप दादों के सिद्धान्तो पर अटल रहेंगे।

हम इस बात को ऊपर लिखही चुके हैं कि अज्ञान के कारण हमारी स्त्रियां बहुत दुःख पाती हैं तथा उनका स्वास्थ्य बहुत जल्दी बिगड़ जाता है। इसलिए हमारे समाज में स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान स्त्रियों को देने की बड़ी जरूरत है। आज हम देखते हैं कि हमारी समाज में प्रायः खाने में मसालेदार चीजें ही अधिक रहती हैं जिसके कारण हमारी पाचनशक्ति बहुत जल्दी बिगड़ जाती है। हमारे खाने की चीजों में स्वास्थकी तरफ ध्यान न देकर केवल स्वाद की तरफ ही ध्यान दिया जाता है और यही कारण है कि हमारे सैकड़ों नवयुवक संग्रहणी के शिकार बन संसार में से कूंच करते हैं। हमारे बालक प्रथम तो निर्बल तिसमें भी स्वाद युक्त चीजें खाने के आदी बनजाने के कारण बहुत ही कमजोर बनजाते हैं।

हमारे समाज में दिनों दिन विषयवासना बढ़ती ही जारही है जिसका परिणाम हमारे समाज पर इतना बुरा पड़ता है कि जिसकी सीमा तक नहीं इससे सन्तान बहुत पैदा होकर कमजोर होती है। हम देखते हैं कि हमारी समाज में एक लड़का दूध पीता है तो दूसरे ने आकर माता के उदर में स्थान ले लिया तब वह सन्तान कैसे उत्तम बन सकती है। इस लिये हम निम्न

लिखित उपाय लिखते हैं। यदि हमारा समाज इन्हें काम में लावे तो आशा है कि भविष्य में हमारे समाज के लोग सशक्त बने बिना नहीं रह सकते।

१—१३ वर्ष से पहले लड़की का तथा २० वर्ष पहले लड़के का विवाह न किया जाना चाहिए।

२—ऋतु स्नान के पहले स्त्री सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

३—स्त्री से पुरुष दिन में बोले किन्तु रातको एकत्र नहीं सोना चाहिए केवल उस दिन जिस दिन स्त्री से सम्बन्ध करना हो उस दिन एकत्र सोना चाहिए।

४—स्त्री को केवल विषय भोग की वस्तु न समझ कर उसके साथ मित्र का सा बर्ताव करना चाहिए। उससे केवल वैषयिक बातें ही न करके अच्छे विषय पर चर्चा करनी चाहिए।

५—स्त्री को गर्भ रहने के पश्चात् विषय भोग सेवन न करना चाहिए।

६—जब तक बच्चा दूध न छोड़दे तब तक स्त्री से विषय भोग न करना चाहिए।

७—बच्चे को अफीम जैसी नशीली चीज कभी न देनी चाहिए जिससे कि नशा आकर रोना बन्द होजाता है।

८—बच्चे को सदा ऐसी चीजें खिलानी चाहियें जिससे दस्त साफ हो। कब्जी करें ऐसी वस्तुएँ कभी न खिलाना चाहिए।

ओसवाल समाज के कुछ धनवान अपने लड़कों की कम उम्र में शादी इस लिए करते हैं कि अपने लड़के की दुर्दशा अपनी आँखों देख सकें। क्योंकि आप मरे बाद थोड़े ही वे अपने सन्तति की दुर्दशा देख सकते हैं।

"ओसवाल" समाज में शीतला को सन्तुष्ट करने के लिए जो स्वांग किया जाता है उसे देखकर भी अगर दूसरे लोग शीतला न पूजें तो उसमें शीतला के भाग्य का दोष समझना चाहिए जिससे उसका मान घटता ही जारहा है।

"ओसवाल" समाज ने डूबने पर कमर कसली है, तभी तो निं सुप्रथा के बदले में कुप्रथाओं को ग्रहण करता जारहा है।

* * *

ओसवाल समाज सुधारकों से सुधार तीन इंच के फासले पर रह जाय। ऐसा वे समझते हैं तभी तो वे केवल बातों द्वारा ही सुधार कर लेने की इच्छा रखते हैं।

* * *

ओसवाल समाज ने देखा कि— ज्यादा खर्च करने से हम कंगाल बने हैं वो उन्होंने "ओसवाल पत्र" का खर्चा उठाने की ठानी है, तभी तो "ओसवाल" की घड़ाघड़ वी०पी० लौट रही हैं।

* * *

ओसवालों ने विधवाओं की संख्या घटाने की युक्ति सोचली, तभीतो लड़कियों को विद्या न पढ़ाकर मूर्ख रखते हैं क्योंकि लड़कियों को विद्या पढ़ाने से वे विधवा होती हैं।

* * *

ओसवालों के गुरु का उपदेश ओसवालों ने व्यवहार में लाने का निश्चय कर लिया है तभीतो उन्होंने अपने रीति रिवाजों को जल्दी मौत के मुंह में ले जाने वाले बना डाले हैं क्योंकि उनके गुरु कहते ही हैं कि संसार दुखमय है। तब भला गुरु-भक्त शिष्य गुरु की आज्ञा को अस्वीकार कैसे करेंगे॥

* * *

ओसवाळ समाज के नवयुवक स्त्रियों को विषय-भोग की मशीन समझते हैं तभी तो उन्होंने स्त्रियोंके साथ सिवाय विषय भोग के दूसरा सम्बन्ध न रखने की प्रतीज्ञा ले रक्खी है।

* * *

ओसवाळ समाज की स्त्रियां सुधारकों से बड़ी नाराज होरही हैं क्योंकि वे उनकी थोड़ी बहुत रही हुई बोलने की स्वतन्त्रता गाळियां बन्द करने के रूप से छीनना चाहते हैं फिर उन्हें क्यों न नाराज होना चाहिए।

* * *

ओसवाल लोग धर्म बढ़ाने की चिन्ता में चिन्तित हैं और इसी कारण से उनमें से बाहर जाने वाळों का ख्याल उन्हें नहीं आ सकता और हजारों ओसवाल बाहर को जारहे हैं।

* * *

जाति बाहर करना बड़ी अच्छी बात है, क्योंकि ओसवाल समाज में लड़कियों की कमी का प्रश्न सहज में हल

होगा। और धनवान सेठों का कन्या तथा लड्डुओं का प्रतिस्पर्धि भी तो घटेगा।

धनवान सेठों का सुधारों को जाति बाहर करने का कारण प्रतिस्पर्धिता है पर उन विचारी विधवाओं के पीछे किसलिये पड़ते हैं। इसलिये, कि वे उनका कहना नहीं मानतीं। तब तो उनको जाति बाहर करना जाति हितैषियों का कर्तव्य है।

खादी पहनना अहिंसा धर्मी का कर्तव्य है किन्तु महात्मा गांधी जैसे परधर्मी का कहना मानना यह मिथ्यात्वी बनने जैसा भयानक पाप है इसलिए ओसवाल समाज खादी को नहीं अपना सकता। क्योंकि वे तो जैन धर्म के सच्चे भक्त ठहरे। उन्हें दूसरे धर्म की अच्छी बात भी क्यों अच्छी लगेगी।

ओसवालों को इस्लाम मजहब से अन्दरूनी बड़ा प्रेम है तभी तो अपनी बहू बेटियों को सतीं २ मजबूरन इस्लाम की गोद में सौंपते हैं। नहीं तो उनकी संख्या बढ़ती ही कैसे।

* *

ओसवाल अपने घर के तथा समाज के लोगों की अपेक्षा अपने नौकरों चाकरों को अधिक चरित्रवान समझते हैं तभी तो अपनी बहू बेटियों को घर के तथा समाज के लोगों के साथ पर्दा करने और नौकरों से बोलने मसखरी करने की इजाजत देते हैं। क्यों न हो, उनका आचरण ही इनकी अपेक्षा अधिक पवित्र है।

ओसवालों की स्त्रियां निकम्मे समय में चर्खा नहीं काततीं क्योंकि निकम्मे समय ही में तो बुराइयां उनके अन्दर आती हैं। भला वे अपने अन्दर से बुराइयां क्यों निकालने लगीं।

हमारी निर्बलताएँ

हमारे अन्दर अभी तक बहुत सी कमजोरियां मौजूद हैं कि जिसके कारण हम समाज के कार्य में सफल नहीं होते और न हम अपना ही हित कर सकते हैं। आज कल हमें जितने भर जाति के हित की इच्छा से कार्य में लगे हुए लोगों को देखकर संतोष नहीं होसकता क्यों कि वे अपनी कमजोरियां इतनी बढ़ाये हुए हैं कि उनका इस कार्य में पड़ने से उनकी आत्मा को न तो संतोष मिला और न वे सर्व साधारण जनता में आगे बढ़े, यदि उन्हें दो चार बातें करनी आती हैं तो यह गुण कुछ इतने महत्व का नहीं है कि जिससे उनके जीवन को विशेष महत्व आजाय।

जिनकी इच्छा जातीय कार्य करने की हो उनको अपने जीवन को निराली दिशा लगाना आवश्यक है और उनमें आत्मिक बल का होना जरूरी है आज हम देखते हैं कि हमारे कार्यकर्ताओं ने अपनी जरूरतें उतनीं ही बढ़ाली हैं जितनी साधारण जनता ने, जिन्हें पूरी करते करते न उन्हें समय ही मिलता है और न आत्मिक शक्ती का विकास करने को अवकाश उनको इस बात का भय सदा बना रहता है कि मेरे करने से, मेरे बाल बच्चों को आपत्ती तो न पड़े। इस भय के कारण से वे किसी भी महत्व के कार्य को नहीं कर पाते। उन्हें सत्य तथा स्वतन्त्र विचार को दबाने की आदत पड़ जाती है और इसके मूल में केवल एक ही बात होती है भय। जिसकी इच्छा समाज का हित करने की है उन्हें चाहिये कि वे प्रथम निर्भय हो जांय, यहां तक प्राणों तक का भय न हो। यह बात तो निसन्देह है कि अच्छे कार्य का फल अच्छा ही मिलेगा तब फिर हमारे अन्दर अविश्वास क्यों होना चाहिए कि हमें अच्छे कार्य को करते बुरा फल तो नहीं मिलेगा।

जो व्यक्ति अपने जीवन को जातीय कार्य में लगावेंगे वह इस बात को भली भाँति समझे बिना न रहेगा कि सुख लालसाओं के बढ़ाने में नहीं है उनके

बढाने में है इसलिये वह त्याग मय जीवन को सुख मय समझता है। यदि वह इस बात पर विश्वास नहीं करता तो उसको इस कार्य से अलग होजाना चाहिए क्योंकि वह सुख की लालसा पूरी करने के मार्ग में लग जायतो जीवन पर्यंत उसकी वासनाएं बढ़ती ही जावेंगी वसे न तो शान्ती मिल सकती है और न जातीय कार्य से आनंद, यदि हम विचार पूर्वक देखें तो बात बड़े महत्व की है कि-सुख क्या है केवल मन की कल्पना है इसे हम चाहें जैसा बना सकते हैं किन्तु जीवन को शान्ती का होना आवश्यक है और इसलिए शांती मिलाने के लिए वासनाओं की कमी करना जरूरी बात हो जाती है। जातीय कार्य करने का सच्चा उद्देश भी तो यही है कि हृदय को शांती मिले वासनाओं का प्रावल्य भी कमी हो।

हमको हमारे कार्य में सफलता न मिलने पर कभी असंतुष्ट नहीं होना चाहिए क्योंकि यदि हमको हमारे किए हुए काम पर यदि भरोसा न रक्खा तो हमारे अन्दर नास्तिकता आगई है ऐसे समझना चाहिए। केवल नास्तिकता ही नहीं आती पर उसके साथ काम करने में जो निरुत्साह आता है वह बुरा है। हमको प्रथम इस बातका ध्यान नहीं करना चाहिये कि मैं यहकार्य फलके लिए करता हूं। हमारा ध्यान काम की तरफ होना चाहिए फल की तरफ नहीं। और न हमें अच्छा फल मिलने से सन्तोष होना चाहिए और न बुरे फल से दुख.

हमें अपनी कमजोरियों के निकालने के लिए प्रथम इस बात को ठीक तरह से समझ लेना जरूरी है कि उसकी पहिचान का तरीका क्या है। हम जब शारीरिक हिस्से के पीछे पड़कर अपने आत्मिक हिस्से को भुला देते हैं तब हमें यह ज्ञान नहीं रहता कि भला क्या और बुरा क्या। इसलिए हमको अपनी शारीरिक इच्छाओं को कम करके आत्मा की तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए। हमको हमारे शारीरिक हिस्सेही ज्यादा काम पड़ने के कारण हम उसे ही सब कुछ समझ आत्मा की सत्य बात को खो थी और निरुपयोगी समझने लग जाते हैं। हम इस बात का अनुभव पग पग पर पाते हैं कि एक समय मनुष्य जिस बातका आदि बनजाता है फिर

उसे छोड़ना उसके लिये कठिन होजाता है। हम जब शारीरिक हिस्से के पीछे लग बुरी आदतों के आदी बनजाते हैं तब न तो उसकी बुराई ही हमारे हृदय में खटकती है और न उनसे छुटकारा ही पाया जाता है। बुराई को समझने का सुलभ तरीका है आत्मा की आवाज को सुनना।

अब रही अगली बात और वह यह कि—आत्मा की आवाज को सुनकर उसे निर्बलता के कारण काम में न लाना। यही कमजोरी सबसे बढ़कर खतरनाक है और इससे छुटने की ही कोशिस हमको करनी चाहिए। हमने जिसे बुराई देख लिया है उसे फिर करना यह सबसे भारी कायरता है, इसे निकालने को हमको पूरी कोशिस करनी चाहिए। उदाहरण स्वरूप हम इस बात को जानते हैं कि कन्या विक्रय यह बुराई है फिर हम उसमें शामिल क्यों होते हैं इसलिये कि हमारी कमजोरी। बुराई चाहे छोटी हो कि बड़ी किन्तु उसे समझ लेने पर त्यागही देना चाहिये उसका साथ देना आत्मा का पतन करता है। यहांपर तर्क करने की जरूरत नहीं यहां केवल एकही बात है और वह यह कि-आत्मा को नहीं ठगना।

हम जब कुछ काम करने लगते हैं तब केवल एकही तरीका इख्तियार करते हैं और वह यह कि-बुराई को बुराई से निकालना। यह बात कदापि हो नहीं सकती क्योंकि बुराई निकल सकती है तो केवल भलाई से। हम यह नहीं चाहते कि कन्या विक्रय जैसी बुराई समाज में हो। हम कन्या विक्रय करने वालों की बुराई इसलिये करते हैं कि वह कन्या विक्रय जैसा कार्य करता है। हम उस शादी में जाकर उसकी छुपे २ निन्दा करते हैं इससे बढ़कर और बुराई क्या हो सकती और हमारी कमजोरी। प्रथम तो हमको उस शादी में सम्मिलित होनाही ठीक नहीं है और दुसरी यह बात हमको इस तरह से देखनी चाहिए कि यह कन्या विक्रय क्यों करता है इसके मूल में हमतो नहीं हैं। यदि हमने इस बात को जरा सोचा तो यह स्पष्ट दीख पड़ेगा कि वह अपनी कन्या जैसी प्रेम की वस्तु बेचने पर बाध्य हमारे ही कारण हुआ है। हमने खर्चे को खूब बढ़ा दिया है गरीब यदि

खर्च न करें तो निन्दा के भय से उसे करना पड़ता है और बाद में उसे इस अन्तःकरण के विरुद्ध काम को करना पड़ता है। हम केवल उसकी ही बुराई कर उसको अधिक पतित बनाने का प्रयत्न करते हैं। यदि हमारे हृदय में उसे बचाने की इच्छा हो तो हमको उसे समझाने का प्रयत्न करना चाहिए और वह भी प्रेम पूर्वक यदि वह न समझे तो हमने उस काम के अन्दर सहायता न पहुंचा कर जो सहायता पहुँचाते हैं उन्हें सहायता न पहुंचाने के लिये समझाने की चेष्टा करनी चाहिए यदि वे न समझें तो क्रोधित न हो चुप होजाना चाहिए। और इस बात के अन्दर में क्या है यह समझने की चेष्टा करना चाहिए। किसी भी अच्छे काम को दूसरों से कराने के लिये आप बुराई में फंस जाना यह कदापि बुद्धिमानी का कार्य नहीं समझा जा सकता।

यदि हम इन कमजोरियों को निकालने के उद्योग में लगेंगे तो छोटी २ कमजोरियां आपही आप दूर हुए बिना नहीं रह सकती और हम समाज का तथा अपना हित किये बिना नहीं रह सकते।

सेवा किसकी ?

सेवा धर्म से बढ़कर कोई उत्तम धर्म नहीं पर प्रश्न यह खड़ा होता है कि-सेवा किसकी की जाय जो लोग गरीब हैं, दीन हैं, दुखी हैं वे अपने बुरे कर्मों का फल चखते हैं वे पापी हैं पापी को पाप का फल भोगने देना चाहिए हमको क्यों उसके बुरे कामों से मिलने वाले फलों को रोकना चाहिये। इस लिये कि हमारे हृदय में दया है। परन्तु आज पापी को घृणा की दृष्टि से देखने की रीति ने हमारे को ऊपर लिखी हुई बात को करने से रोक दिया है क्योंकि पापी को दंड देना न्याय है। यह बात हमारे अन्दर प्रचलित होजाने के कारण हम न जानते हुए पापी को जिसको कि सेवा की सच्ची आवश्यकता है उ-

सको सेवा नहीं कर सकते।

फिर सेवा किसकी की जाय क्या उन लोगों की सेवा करनी चाहिए कि जिन्हें सेवा की बिलकुल जरूरत नहीं हैं हां, आज हम वही करते हैं हम हमारे विवाह तथा ओसर आदि में जो लोगों को हमारे यहां बुलाते हैं उन्हें इस नीयत से कि समाज की सेवा हमारे हाथ से हो और हम हमारे जाति बन्धुओं की सेवा कर सकें। हमने जिसके पास से जितनी सेवा ली है वह सेवा पीछे लौटा देना हमारा कर्त्तव्य है और इसी नीयत से समाज का सेवा रूपी कर्जा अदा करने के लिए हम यों करते हैं।

हरएक काम समय तथा परस्थिति के अनुरूप किया जाता है। यदि कोई यही बात लेकर बैठे कि नहीं हम उसी काम को करेंगे जो अगले जमाने के लोगों के परस्थिति को पोषक था। तो उसकी बात ठीक नहीं मानी जा सकती पर आज हम वही कर रहे हैं। आगे हमारे पूर्वजों ने भले ही इस सेवा के तरीकों से लाभ उठाया हो पर वह तरीका हमारे लिये हितकर है या नहीं समझने की शक्ति तक हमने आज गंवादी है। और यही कारण हैं कि-आज हम लकीर के फकीर बन उन कामों को करते जारहे हैं जो हमारे लिए अहितकर हैं। यदि हमने आज हमारे यहां १०० बन्धुओं को जिमा दिया तो उससे न तो जरूरत पूरी हुई और न हमारी सेवा का उद्देश्य सफल हुआ उसकी जगह हमने यदि हमारे किसी गरीब विद्यार्थी को सहायता देकर विद्या पढ़ाई तो मैं समझता हूँ कि वह अपने जीवन को कुछ अंशों तक सफल बना सकता है और हमभी उस सेवा के मधुर फलको चख सकते हैं। मेरा यह मतलब नहीं है कि-भोजन-जिमाना यह बुरी बात है पर हां, जब हम आज दोनों बातों को तराजू पर तोलें तो निःसन्देह भोजन जिमाने की सेवा के अपेक्षा यह सेवा अधिक महत्व को रखती है जिसकी आज सचमुच जरूरत है।

नियम इसलिये बनाये जाते हैं कि हम किसी भी कार्य को अच्छी तरह से करें यदि वे ही नियम आगे चलकर हमारे लिए हानिकारक होंगे तो हमको उन्हीं नियमों के अनुसार काम करनाही चाहिए ऐसा नहीं है पर हम न मालुम

क्यों करते जाते हैं इसलिए कि निन्दा का भय पर यह कोई बात नहीं है हमारे में से एक दल उस काम की निन्दा करेगा तो दूसरा दल प्रशंसा भी करेगा। पर हमको इस तरफ ध्यान नहीं क्यों देना चाहिए हमने अपनी बुद्धि को न देख कर दूसरों की बुद्धि के पीछे क्यों लगना चाहिए यह बात तो हमारे आत्म-विश्वास को भूलने जैसी है। परन्तु न मालूम हमें इतना डर क्यों लगता है है कि जिससे हम सत्य असत्य की तरफ ध्यान तक नहीं देते और झूठे कामों तक को कर डालते हैं।

आज हमारे समाज में सेवा की बड़ी भारी जरूरत है और उन लोगों को जो समाज की दृष्टि से आज कुछ भी नहीं हैं-जिनका समाज में होना न होने के बराबर है जिन्हें समाज पतित सकझता है क्योंकि वे बिना सहायता के अधिकाधिक पतित बना रहे हैं उनकी सेवा की आज जरूरत है। यदि आज हम उन लोगों की सेवा करें जो भविष्य में पतित बनने वाले हैं तो हमारी जाति की सच्ची सेवा हो सकती है और हमारा समाज से लिया हुआ कर्जा अदा हो सकता है क्योंकि इसकी ही समाज को आज जरूरत है और हमको करना भी जरूरी है। आज हमही उन नवयुवकों को पत्नी विहीन रखकर पतित बनाने के मार्ग पर ले जाते हैं उनको पतित बनाने का दोष उनपर है जो उनके हिस्से की पत्नी को आप हड़प कर उन्हें क्वांरे रखते हैं। क्वांरे लड़के भी ब्रह्मचारी रह सकते हैं किन्तु उनको उच्च चरित्र से रहने की समाज को शिक्षा तो देनी चाहिए। अज्ञान मनुष्य से युवा अवस्था में ब्रह्मचारी रहना कितना कठिन है यह बात उन वृद्धों से पूछना चाहिए जो वृद्धावस्था में पत्नी के वियोग को सहन न कर सकने के कारण एक बाला का जीवन भ्रष्ट करते हैं। फिर न्याय के नाम पर उन्होंने उनकी चरित्र भ्रष्टता के कारण उन्हें जाति बहिष्कृत कर अधिक पतित बनाते हैं। यद्यपि उनके हाथ से अविचार के कारण भूल होजाती है पर हम यदि इस बात पर विचार करें तो उनकी यह भूल क्षमनीय है दण्डनीय नहीं। यही बात उन विधवाओं के सम्बन्ध में कही

जा सकती है जो दुष्टों के वासनाओं की शिकार बनकर अपने चरित्र को भ्रष्ट करती हैं। उनपर जब दुष्ट अत्याचार करते हैं तब समाज उसे छुड़ा नहीं सकता किन्तु उनका जरासा अपराध समाज सहन न कर उन्हें जाति बहिष्कृत करता है और अनाथ बनाता है। उनकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो जाती है। उन्हें कहीं भी आश्रय नहीं मिलता तो उस समय क्रिस्ती तथा इस्लाम समाज उनको आश्रय देने को तत्पर रहता है। समाज के स्तम्भ कहे जाने वालों के हाथ से समाज सेवा न होकर समाज का नाश होता आरहा है समाज दिनों दिन घटती जारही है।

तब हमको सेवा करने जैसों की करनी चाहिए व जिन्हें जरूरत नहीं है या उनकी यदि हम अपनी अन्तरात्मा से पूछे तो वह स्पष्ट कहेगा कि-सेवा जिन्हें सेवा-हमारी सेवा के बिना दुःख भोगना पड़ता है। चरित्रभ्रष्ट बनना पड़ता है उनकी ही सेवा करनी चाहिए। आज समाज उन लोगों के लिए कुछ नहीं करता और न उन्हें सहायता ही पहुँचा सकता है तब हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन दीन दुखी पापी तथा पतितों की सेवा करके समाज के कलंक को धोते हुए अपने धर्म का पालन करें। यही हम जाति सेवकों का कर्त्तव्य है और इसीके पालन में हमको लग जाना चाहिए।

खद्दर समाचार

आजकल खद्दर दिनों दिन उत्तम बनने लग गया है। और आवश्यक चीजें आसानी से मिल सकती हैं। खद्दर यदि चाहे तो गरीब आदमी भी पहन सकता है और अमीर भी क्योंकि गरीबों के लिए मोटा खद्दर जो बाजार के कपड़े से सस्ता उत्तम होता है और टिकने वाला ले सकते हैं और महीन खद्दर मंहगा होता है और सफाईदार भी। आज प्रत्येक वस्तु खादी की तैय्यार होने लगगई

है। जिन्हें मज़बूत खद्दर कोटों के लिए चाहिए वे पंजाब से मंगावे क्योंकि वहां दुसुता २६ इञ्ची कोटिंग बहुत उमदा तैय्यार होता है और धुलाई भी उत्तम होती है। यह माल प्रायः सफेद ही उत्तम आता है। यदि चेक चाहिए तो तीरूपुर (मद्रास प्रांत) में उत्तम बनते हैं जो विदेशी माल के डिज़ाइन पर निकाले गए हैं, जिनका अर्ज. ३६ इंच होता है और भाव ।॥) से १॥) तक होता है। यहां का शर्टिंग बहुत सफाईदार होता है और उसका कारण वहांका कपास भारत के किसी कपास से उत्तम ही होता है। इस कपड़े में मुलायमपना बहुत होता है। यह २७ से लगाकर ५४ इंच की चौड़ाई तक का कपड़ा होता है ५४ इंची का भाव ।॥) गज होता है। टावेल पंजाब तथा तीरूपुर दोनों स्थानों में अच्छे बनते हैं। सस्ता खद्दर होता है राजपूताना तथा पंजाब का राजपूताना का खद्दर ।~) आने गज से लगाकर ॥~) आने गज तक का आता है पंजाब का ।≈) से लगाकर ॥~) गज तक। छींटें राजपूताना उत्तम आती है जिनका रंग पक्का भी आने लगा है भाव भी सस्ता ही रहता है। पगड़ियां भी सस्ती और मोटे सूत की यहीं से आती हैं। जो महीन सूत चाहिए तो आंध्र प्रांत से मंगाई जा सकती हैं किन्तु भाव बहुत महंगा होता है। आंध्र प्रांत में महीन खद्दर मिलता है ४० नम्बर के सूत के कपड़े का भाव ५० इंची १।) गज के लगभग है और ६० तथा ८० नम्बर के सूत के कपड़े का भाव १॥≈) गज है। धोतियां मोटी तीरूपुर गंटुर मच्छली पट्टम ताड़पत्री बेलगाम आदि स्थानों से आती है महीन आंध्रप्रांत से। गरम खद्दर बीकानेर से उत्तम आता है। हरएक प्रान्त खादी मण्डल की शाखा खुली हुई है। वहांसे इस सम्बन्ध में विशेष मालूमात की जा सकती है और सेम्पल मंगाए जा सकते हैं।

स्वदेशी काच का सामान

हमारे यहां आजकल काच का सामान बहुतसा लगता है और वह प्रायः विदेश से आता है। हमारे यहाँ भी कुछ कारखाने उस सामान के खुले हैं किन्तु

उसकी विशेष प्रगती न होने का कारण स्वदेशी प्रेमी को पता न होना यह भी है। नहीं तो विदेश की अपेक्षा यहां कांच के कारखानों को खोलने में लाभ अधिक है क्योंकि यहां विदेश की अपेक्षा मजदूरी सस्ती होती है और दूसरे काँच जिस चीज से बनता है वह चीज भी सस्ती है किन्तु हमारे यहां ठीक प्रयत्न न होने के कारण हजारों रुपये हर रोज विदेश जाते हैं यहां निकले हुए कारखानों में माल अच्छा और सस्ता तैयार होता है। पैसा फंड कांच कारखाना और 'अंगले ग्लास वर्कस' इन दोनों कारखानों में बहुत सा उत्तम सामान तैय्यार होने लगा है जिन्हें स्वदेशी से प्रेम हो वे अवश्य इन छोटी २ चीजों द्वारा विदेश में जाने वाला पैसा रोकें।

सम्पादकीय विचार

वीर जयन्ती—

प्रभु महावीर की अनेक जयन्तियां आईं और हमने मनाईं यह जयन्ती भी हमारे पाठकों ने मनाई होगी किन्तु जयन्ती के मनाने के उद्देश में सफलता मिली व न मिली यह बात हम उन्हीं पर छोड़ते हैं जो इस बात के विज्ञ हैं किन्तु साधारण बाह्य दृष्टि से हम इस बात की तरफ देखें तो स्पष्ट दीख पड़ेगा कि जयन्ती मनाने का हमारा उद्देश सफल न हुआ। जयन्ती उन महापुरुषों की मनाई जाती है कि जो संसार के सामने कुछ विशेष बात रख जाते हैं और उस बात में अपना हित करने की शक्ति है प्रभु महावीर का जन्म उस समय में हुआ था जब कि भारत की हिंसावृती बढ़कर वह दुख पारहा था। उस समय मार्ग बतलाने वाले की जरूरत थी उन्होंने मार्ग बतलाया संसार को अशान्ति से छुड़ाया। उनके मार्ग में इतना विशालत्व था कि वह मार्ग सदा काम में लाया जासके। आज भी वही प्रेम का अभाव इस समय संसार में बढ़ा हुआ है। ऐसे समय में उनके

सिद्धान्त हमारा आज भी भला करने की शक्ति रखते हैं। आज हम उनके सिद्धान्तों से उन्नति कर सकते हैं। और इसीलिये हम उनकी जयन्ती मनाते आए हैं कि प्रभु वीर के सिद्धान्तों का स्मरण कर हम उसे ग्रहण करें किन्तु आज हमारे अन्दर अन्ध श्रद्धा है और इसी कारण से हम रूढ़ी जैसी मनाते हैं किन्तु अब हमको इन बातों को त्याग कर जयन्ती मनाने के उद्देश से जयन्ती मनाना आरम्भ करना चाहिए इसी में ही हमारा कल्याण है और कल्याण करने के लिए भी तो हमको दुर्बलता छोड़ उनके सिद्धान्तो को काम में लाना चाहिए।

रूढ़ियों का पालन ही क्या समाज की सेवा है—

आजकल हमारे समाज की कुछ रूढ़ियां हमारे पीछे लगगई हैं और उनका पालनको हमने समाज की सेवा समझ लिया है। इससे हमारे हृदय में रहने वाला सेवा भाव लुप्त होगया है। समाज के नियमों का पालन करना यह हमारा कर्त्तव्य है और वह एक प्रकार से सेवा भी कही जा सकती है किन्तु उन रूढ़ियों का पालन जिसकी नींव "अपनी नामवरी" के ऊपर खड़ी हो ऐसी रूढ़ियों का करना यह कोई समाज की सेवा नहीं है। आज हम हजारों रुपये इसलिए खर्च करते हैं कि हमारी नामवरी हो लोग हमें श्रीमान समझें और उन्हीं को यदि हम समाज की सेवा समझ लें तो इससे बढ़कर और हमारी दूसरी गलत फ़हमी क्या हो सकती है, पर आज धनका धुआं उड़ाने वाले हमारे भाई इस बात को समाज की सेवा समझते हैं हम उन्हें नम्र भाव से सूचित करते हैं कि यदि उनके हृदय में सेवा भाव हो तो आज हमारे समाज में दीन दुखियों की तथा पतित पापियों की कमी नहीं है यदि कमी है तो केवल सेवा करने वाले स्वेच्छा से सेवा करने वाले "स्वयं सेवकों" की यदि हम इस बात को समझकर रूढ़ियों के पालन में

होने वाला खर्चा कमकर सेवा में अपनी शक्ति को लगा दें तो हमारे समाज के उन्नत होने में देर नहीं है। किन्तु जाति के दुर्भाग्य अभी तक दूर नहीं हुए हैं और यही कारण है कि जब किसी रोगी अवस्था में पड़े हुए भाई की सेवा न कर–धन मद से उसको सेवा बिना परलोक गंवाने वाले भी प्रतिष्ठित कहलाये जाते हैं। हमें यह समाचार मिले कि कलमसरे में दो ओसवाल सेवा के अभाव प्लेग की बीमारी में मरगये, यह सुन हमें अत्यन्त खेद हुआ। यदि उस गांव में ओसवाल न होते व सेवा करते करते भी वे मरजाते तो उससे हमें खेद न होता क्योंकि मरना या बचना किसी के हाथ की बात नहीं है किन्तु वहां सेवा के बिना उनका मरना हमें जरूर खटकता है। यदि हमारे हजारों रुपये रूढ़ियों के पीछे खर्च करने वाले बन्धु जाति सेवा उसमें समझते हों तो वे अवश्य अपने बन्धुओं की उस स्थिति में सेवा करना ही समझें जब उन्हें जरूरी हो। यदि यह बात हमारे अन्दर न आई तो हम समझेंगे कि जाति के भाग्य में अभी तक दुख बदा है।

मेवाड़ के ओसवाल—

मेवाड़ में बसने वाले ओसवाल बन्धुओं की प्रवृत्ति दिनों दिन विलासता की ओर बढ़ती आरही है। वहां पर व्यापार ऐसा नहीं है कि जिसे अपने आपको मुत्सद्दी समझने वाले हमारे बन्धु करें। क्योंकि राजनीतिज्ञ कहे जाने वाले को व्यापार में सिर मारने से बढ़कर और क्या बात हो सकती है। इसलिए उनकी प्रवृत्ति नौकरियों की

ओर बढ़ती आरही है, क्यों न बढ़े नौकरी जैसी उत्तम चीज ही क्या है जो रौब भी रखे और धन भी दे क्योंकि वहाँ रिश्वत का बाजार गर्म है। यदि वहां दस रुपये की नौकरी मिल जाय तो फिर पूछना ही क्या है वे बड़े कहलाये जाते हैं और फिर उनके ऐश आराम की बात ही क्या पूछनी मानो वे बड़े जमींदार हों। वहां पर लड़कियां बहुत होने के कारण शादी तो सहलता पूर्वक हो ही जाती है। कहा जाता है कि वहां लड़कों की अपेक्षा लड़कियां दुगुनी हैं। यह ओसवाल समाज का भाग्यही समझना चाहिए कि वहां लड़कियां इतनी बढ़ी हुई हैं हां इस बात से लड़की बेचनेवाले व्यापारियोंको अवश्य हानि पहुंचेगी किन्तु वहां के निवासी अपनी लड़कियां दिशावरों में तथा दूसरी तरफ देना उचित नहीं समझते और इसी ताक में रहते हैं कि यदि किसी की औरत मर जाय तो उस जगह अपनी लड़की दे दें। उन बन्धुओं से हमारी प्रार्थना है कि वे इस संकुचित विचार को छोड़ बाहर लड़कियों का लेन देन आरम्भ करदें। वहां इसी कारण से स्त्रियों का मूल्य जूती समान समझा जाता है। वहां गालियों का प्रसार यथेष्ठ है। स्त्रियों का झुकाव दिनों दिन महीन कपड़ों की ओर बढ़ताप जारहा। वहां शिक्षा का प्रसार दिनों दिन बढ़ाने का प्रयत्न किया जारहा है किन्तु प्रवृत्ति विलासिता की ओर बढ़ जाने के कारण जाति को लाभ मिलना कठिन प्रतीत होता। वहां बाल-विवाह अधिक नहीं होते। ओसर की प्रथा चालू है वृद्धविवाह का दौरा भी साधारण है। कन्या विक्रय का बाजार मंदा है। देहातों में शिक्षा का विशेष प्रसार नहीं है। यदि आजभी वहां के लोग अपनी विलासिता को छोड़ जाति हित की तरफ ध्यान दें तो सफलता की गुंजाइश है। किन्तु विलासिता के पंजे से छूटना बड़ा कठिन काम है। हम आशा करते हैं कि हमारे मेवाड़ी बन्धु अवनीति पथ के नये पथिक हैं यदि चाहें तो उसे त्यागकर उन्नति में लगेंगे।

मालवा के ओसवाल—

मालवे के अन्तर्गत रहने वाले ओसवाल बन्धु धार्मिक श्रद्धा के लिए प्रसिद्ध हैं किन्तु उनकी धार्मिक श्रद्धा "मजहबी कट्टरता" युक्त होने के कारण उसमें द्वेष का बीजारोपण होकर परस्पर द्वेष वहां बहुत दीख पड़ता है। शिक्षा का-उच्च शिक्षा का यहांपर प्र-

भाव ही है। यहां चटक-मटक के कपड़ों से विशेष प्रेम है। अन्ध श्रद्धा का विशेष प्रावल्य होने के कारण प्राचीन हानिकारक रिवाज छूटना अत्यन्त कठिन बात है। यहां की धार्मिक श्रद्धा दिखावटी होने का सम्भव है। क्योंकि मिल के कपड़े हिंसायुक्त समझने पर भी उनका त्याग करना उन्हें बड़ा कठिन प्रतीत होरहा है इससे उनकी धार्मिक श्रद्धा के सम्बन्ध में शंका होती है। वस्त्रालंकारों से यहां के स्त्री पुरुष विशेष प्रेम रखते हैं। जाति उन्नति की तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया जाता और न यहां कुछ विशेष आन्दोलन है। यदि कहीं २ कुछ प्रयत्न किया भी जाता है तो उसमें सम्प्रदाय का संकुचित भाव होने के कारण फलदायक नहीं होता। यहां का व्यापार अपने हाथ में होते हुए भी दूसरों का है। विलासिता धीरे २ बढ़ती जाती है और उसका प्रभाव नैतिक जीवन पर पड़े विना नहीं रह सकता। यदि यहां के नवयुवक कुछ प्रयत्न करें तो सफलता की आशा है क्योंकि यहां के लोगों में श्रद्धा है केवल उस श्रद्धा को पलटने की जरूरत है।

सी० पी० बराड के ओसवाल

सी० पी० बराड़ में रहने वाले हमारे बन्धुओं में उत्साह बहुत है और यही कारण है कि यहां थोड़ा २ आन्दोलन भी चल रहा है। यहां विलासिता बढ़ी खूब सीमा तक बढ़ी दुष्परिणाम भोगने पर उन्नति का मार्ग सूझा। कई कार्यकर्त्ता निर्माण हुए किन्तु कर्मण्यता और त्याग विना फल कुछ न मिला साल में एकाध सभा हो जाती है। उत्साही लोग एकत्र होजाते हैं। धनवान लोग उदारता बतलाकर जातिय-कार्य करने के लिए वचन दे देते हैं किन्तु आगे जो होना है वही होता है। उत्साह ठंडा पड़ा लोग फिर अपने उस पवित्र काम को भूल जाते हैं। क्योंकि विलासिता उन्हें सूझने नहीं देती यही कारण है कि उनसे त्याग नहीं हो सकता और विना त्याग के ऐसे कार्य जिसके लिए बलि की जरूरत है वे काम हो नहीं सकते। हमने आशा की थी कि इस असहयोग आन्दोलन से हमारे उन बन्धुओं में त्याग का प्रवेश होगा और वे कुछ कर बतावेंगे। पहिले कुछ हुआ किन्तु फिर वही हुआ जो श्मशान वैराग्यियों को श्मशान में होता है। यहां तक कि खद्दर का पहनना आरम्भ कर फिर उन्होंने अपने शरीर की रक्षा विदेशी कपड़ों से करनी आरम्भ की है। यहां शिक्षा का प्रसार है धन काफी है और उत्साह भी। यदि कमी है तो एक बात की और उसे यदि चाहें तो दूर कर सकते हैं। त्याग की आशा है हमारे उत्साही बन्धु कर्मण्य बन अपने जाति के गौरव के बढ़ाने के लिए त्यागकर संसार को अपनाकर बतलावेंगे।

काम तथा रतिशास्त्र सचित्र.

(प्रथम भाग) (५० चित्र)

पसन्द न आने पर लौटा कर दाम वापिस लीजिये ।

पुनः छप कर तय्यार होगई है ।

मूल्य वापिसी की शर्त है तो प्रशंसा क्या करें। पाठक तो प्रशंसा करते थकते नहीं। हिन्दी के पत्रों ने भी इसको ऐसी पुस्तकों में प्रथम मान लिया है। जैसे–

प्रसिद्ध पत्रों की समालोचना का सारांशः—

चित्रमय जगत पूना ।

इस पुस्तक के सामने प्रायः अन्य कोई पुस्तक ठहरेगी या नहीं इसमें हमें शङ्का है। पंडित जी एक विख्यात और सुयोग्य चिकित्सक हैं। आयुर्वेद हिकमत और ऐलोपैथिक के भी आप धुरन्धर विद्वान हैं। यह पुस्तक हिकमत ऐलोपैथिक और आयुर्वेद के निचोड़ का रूप कही जा सकती है।

श्री वेंकटेश्वर समाचार ।

काम तथा रतिशास्त्र अश्लीलता के दोष से रहित है । इसे कोकशास्त्र भी कह सकते हैं, परन्तु वास्तव में इसका विषय कोकशास्त्र से अधिक है जैसी खोज और परिश्रम से यह ग्रन्थ लिखा है उसको देखते ग्रन्थ की सराहना करनी होगी। जो हो हिन्दी में अपने ढङ्ग का यह एक ही ग्रन्थ है।

महावीर ।

ऐसी दशा में पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा सरीखे अनुभवी वैद्य ने इस विषय पर ग्रन्थ लिखकर परोपकार का कार्य किया है। उन्हों ने ग्रन्थ लेखन में समय और औचित्य का पूरा पूरा ध्यान रक्खा है तथा विषय की केवल वैज्ञानिता दृष्टि से व्याख्या की है।

तरुण भारत ।

जहां पुराने काल के विद्वानों की लिखी हुई काम सूत्र आदि पुस्तकों से पूरी सहायता ली है वहां आधुनिक विद्वानों की सम्मतियों से भी सहायता ली गई है। हम शर्मा जी के इस प्रयत्न के लिये साधुवाद देते हैं।

विजय ।

पुस्तक में रंगीले चटकीले और भड़कीले ५० चित्र हैं। भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, रूम, जर्मनी, इटली, फ्रान्स, और आस्ट्रेलिया तथा हस्पानिया की प्यारी २ और भोली २ खूबसूरत स्त्रियों के चित्र भी हैं। लेखक महाशय ने पुस्तक को ऐसा बना दिया है कि एकबार हाथ में लेकर फिर उसे छोड़ने को चित्त नहीं चाहता. पुस्तक सुनहरी जिल्द बँधी है।

मूल्य ५) रु० पसन्द न आवे तो २ दिन के भीतर रजिस्टरी द्वारा वापिस कीजिये, वहां पुस्तक देखकर कीमत लौटा दी जावेगी ।

ऊपर छपी पांचों बिजलीकी अदभुत चीजोंमें न तेलकी जरूरत है, न दीया-सलाईकी बटन दबा दीजिये, चटसे तेज रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी, जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें बैट्रीकी शक्ति भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लेम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाईं वर्ता जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेका तीनरङ्गा लेम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा खींचिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लेम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक खर्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है जो कोट में लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्सन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।≤) जुदा (नं० ५) यह कमीजके, तीन बटनोंका सेट है जो रातमें, प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भांति चमकता है इसका भी तार बैटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें

आश्चर्य करते हैं भेटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी

रेल से माल भेजने का कायदा।

(सरल हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५०० विषयसूची के १८ पृष्ठ, मूल्य ३)
बढ़िया कागज़ पर] [बनारस की बढ़िया छपाई

मालगाड़ी से भेजे हुए माल आदि का नुक़सान न होने पावे या नुक़सान होजाने पर रेलवे कम्पनी ही नुक़सान का जिम्मेदार समझी जासके, यह बात व्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अच्छी तरह साबित होचुकी है। इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रूल, कायदे, शर्तें आदि जो कम्पनियों के अलग २ अंगरेजी टेरिफों में होते हैं वे सब इस एकही पुस्तक में बताये हैं। माल का नुक़सान होजाने पर रेलवे कब जिम्मेदार हो सकेगी आदि बातों के तमाम हाईकोर्टों के बहुतही महत्व के फैसले भी इसमें बताये हैं। विषयानुसार ६ हिस्सों में पुस्तक विभक्त है। देखिये विद्वान् लोग इस पुस्तक के विषय में क्या कहते हैं:—

१-ट्रैफिक मैनेजर, ओ० आर० रेलवे, लखनऊ-"हम यकीन से कहते हैं कि यह पुस्तक व्यापारियों को बहुतही उपयोगी है।"

२-श्री वेंकटेश्वर समाचार, मुंबई-"माल भेजने के सब नियम अंगरेजी में होने के कारण व्यापारियों को गुड्स क्लार्क की बात पर ही निर्भर रहना पड़ता है और रेलवे माल भेजने के कायदे ठीक २ न जानने के कारणही व्यापारियों को नित्य रेलवे झगड़ों की झंझटें सहनी पड़ती हैं। ऐसी दशा में इस पुस्तक को प्रकाशित करके काले महाशय ने एक बड़े भारी अभाव को दूर करके व्यापारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्रायः डेढ़ पौने दो सौ विषयों का विवेचन किया है। व्यापारियों के बड़े काम की पुस्तक है।"

३-वाणिज्य भूषण लालचन्द सेठी ता० ५-१-२५ को झालरापाटन से लिखते हैं:-"पुस्तक बड़ी उपयोगी हुई है जिससे एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ती हुई है। मेरा आग्रह है कि व्यापारी इस पुस्तक की प्रति अपने पास अवश्य रखें।"

आर्डर देते समय "ओसवाल" का नाम अवश्यही लिखिये। तीन कापी एकसाथ मंगाने से डाक खर्च माफ।

पता—आर० एल० काले हाईकोर्ट वकील, उज्जैन (सी० आई०)

ओसवाल पत्र को घाटा

जाति प्रेमी अवश्य ध्यान दें !

इस समय आपकी ओसवाल जाति का एकमात्र जो मासिक पत्र "ओसवाल" है उसका जीवन चारों ओरसे संकटों से घिरा हुआ है। हम गत अङ्क में यह बता चुके हैं कि "ओसवाल" की ग्राहक संख्या बहुत न्यून होगई है जिससे हमारा उत्साह भंग होरहा है। इधर तो ग्राहकों की कमी उधर "ओसवाल" में पृष्ठों का बढ़ाना, अच्छे कागज का लगाना और साथही प्रत्येक अङ्क में एक चित्र का निकालना इस प्रकार से अनेक खर्चों के बढ़जानेसे हमको इस समय सूझ नहीं पड़ता कि हम क्या करें। जिस समय जिन ग्राहकों का मूल्य समाप्त होजाता है उनको उसी समय सूचना दे दीजाती है, और जब उनका कोई उत्तर नहीं आता है तब "ओसवाल" पत्र की वी० पी० कीजाती है तो भी दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि वह उसको लौटा देते हैं। इसी प्रकार से "ओसवाल" के प्रथम अङ्क की ८८ वी० पी० लौटकर आई हैं जिस से हमारी आशाओं पर पानी फिर गया है

हमारा दोष—

इसमें हमारा भी दोष है परन्तु हमारी कठिनाइयों के सामने वह इतना न्यून है जो दोष, दोष नहीं माना जा सकता लेकिन हम फिरभी उसको दूर करने की पूर्ण कोशिश कर रहे हैं और उसमें हमको सफलता भी प्राप्त होरही है हमारा जो दोष है वह इतना ही है कि पत्र समय पर नहीं प्रकाशित होता जिसको दूर करने का हमने पूर्ण निश्चय कर लिया है और उसी निश्चय के अनुसार

ही आज यह अङ्क आपको बहुत शीघ्र प्राप्त होरहा है और इस महीने (अप्रैल) का अङ्क भी हम आपकी सेवामें इस महीने के समाप्त होते २ पहुंचा देंगे और फिर बराबर पत्र समय पर पहुंचकर आपकी सेवा करता रहेगा। हमारे सामने एक तो कठिनाई पत्रकी आर्थिक स्थिति का ठीक नहीं होना है और दूसरी कठिनाई

लेखों का अभाव

है। हमारी ओसवाल जाति में प्रभावशाली लेखकों का बड़ाही अभाव है और जो लेखक हैं भी सो अपने इस प्यारे "ओसवाल" पुत्र पर कृपा नहीं करते हैं यहभी मुख्य कारण है कि जो आज तक पत्र आपकी सेवा में ठीक समय पर उपस्थित नहीं होता रहा है। "ओसवाल" की शोभा अच्छे २ लेखों के प्रकाशित करने में है और यह कार्य आप जैसे विद्वानों पर ही निर्भर है अतः जाति के विद्वानों से निवेदन है कि वे हर महीने में घण्टे दो घण्टे को फुरसत निकालकर एक छोटा-मोटा लेख अवश्य भेज दिया करें। इसके अलावा जातीय-समाचार भी हमारे पास बहुतही कम आते हैं उसके लिये भी हम अपने भाइयों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वे कमसे कम अपने जाति-सम्बन्धी समाचार आदि और सूचना तो कमसे कम अवश्य भेजने की कृपा किया करें।

ओसवालों के पते चाहिये।

हम अपने प्रेमियो से निवेदन करते हैं कि वह अपने आस-पास के शहरों व गांवों के ओसवाल जाति के प्रतिष्ठित पुरुषों के जितने भी पते लिखकर भेजने का कष्ट उठासकें उठावें जिससे हम उनको सेवा में ओसवाल का नमूना भेज सकें आशा है इस सूचना पर ओसवाल के प्रेमी अवश्य २ ध्यान देंगे। १० से अधिक पते लिखकर भेजने वालों के नाम ओसवाल में प्रकाशित किये जावेंगे।

आवश्यकीय सूचना।

"ओसवाल" पत्र का प्रत्येक अंक खूब जांच करके ग्राहकों को सेवा में भेजा जाता है फिरभी किसीको कोई अंक प्राप्त नहीं हो तो कार्ड द्वारा सूचना मिलने पर भेजा जा सकता है।

प्रकाशक---अखिल भारतवर्षीय ओसवाल नवयुवक महामण्डल (जोधपुर) की

"Oswal" Reg No. A. 1308

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान।
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे नर सब हैं मृतक समान॥

वर्ष ७ } अप्रैल सन् १९२५ ई० { अङ्क ४

विषय-सूची।

सम्पादक-श्री० ऋषभदासजी ओसवाल (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी०,पी० से २॥।) { प्रति अङ्क ।)

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र ।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश—

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना ।

नियम ।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा ।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २॥।) रु० है एक प्रति का मूल्य ।) है ।

३—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा ।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों ।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये ।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये ।

"मैनेजर ओसवाल"

जौहरी बाजार आगरा

धन्यवाद

गत अंक में प्रकाशित प्रार्थनाके अनुसार निम्नलिखित स्वज्ञाति बंधुओं ने ओसवाल जाति के प्रतिष्ठित २ पुरुषों के पते लिख कर भेजे हैं जिसके लिये उनको धन्यवाद है ।

(१) श्री जयचंदलालजी बोथरा

(२) श्री कन्हैयालालजी भटेवड़ा

(३) श्री मुकनसिंहजी तहसीलदार

(४) श्री समरथमलजी सोभागमलजी

(५) श्री हुकमचंदजी बैद

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाजका, जिस से कुछ उपकार॥

वर्ष ७ } आगरा, अप्रैल सन् १९२५ ई० { अङ्क ४

जाति की बात

लेखक

श्री कन्हैयालाल जी जैन (कलकत्ता)

१- जाति कथा की तान-कान में गूंज रही हो-
जात्युन्नति लय ताल तान में गूंज रही हो
जाति-व्यथा की बात ध्यान में गूंज रही हो
जाति-कीर्ति ही विश्व-गान में गूंज रही हो
ऐसी जिन वीरों में रहे जाति-प्रेम-तल्लीनता
रख उन्हें वत्त पर कर सके जाति दूर निज दीनता।

२— जिससे सतत समाज जाति-उत्थान हुआ है
नित्य जाति का जिससे गौरव-गान हुआ है
सदा जाति के लिये जोकि बलिदान हुआ है
वही जाति का सदा हृदय-सम्मान हुआ है

वह पुरुष श्रेष्ठ केवल नहै अपनी जाति समाज का
है राज राज वह जन सदा विश्व-हृदय के राज का

३— ओसवाल! प्रिय ओसवाल! तुम कहां सोगये?
भाषा, भाव, विचार तुम्हारे कहां खोगये?
क्या पवित्र वीरतावेश पाताल को गये?
घोर पतन! थे कौन-और क्या आज होगये?

आलस प्रमाद का भूत जो सिरपर आज सवार है
क्यों नहीं तुम्हारे हृदय में उसका हुआ विचार है?।

४— किस प्रकार जाति का गला वह घोट रहा है?
कैसा उसके कारण घोर अनर्थ सहा है!
सब नीरव देखते, होरहा पतन महा है
हाय! जाति ने कैसा नाशक मार्ग गहा है?

हे ओसवाल! चेतो, उठो, कर्म्मकरो, सोओ न तुम
हित-साधनार्थ निज जाति के लड़ो; मरो, रोओ न तुम।

५— हित करना सीखो न जाति-हित करना जानो
प्रण करना सीखो न स्वप्रण पर मरना जानो
घर करना सीखो न जाति-घर भरना जानो
दुःख करना सीखो न जाति-दुःख हरना जानो

निज जाति तथैव समाज का हित अपना हित जानलो
जो चुभे हृदय में जाति के कण्टक—अपने मानलो।

६— देकर धक्के आलस स्वार्थ प्रमाद निकालो
शुष्क असन पर रहो गिरा से स्वाद निकालो
स्वीय जाति का सारा क्लेश विषाद निकालो
निज स्थिति को भूलो न, घृणित उन्माद निकालो

कायरता, जड़ता, भीरुता छोड़ उठो कटिबद्ध हो
तुम कर्म्मवीर हो कर्म्म में लगो शीघ्र सन्नद्ध हो।

७— हम चाहें तो वसुधा को विष-पान करादें
आप अगर चाहें नव-जीवन-दान करादें
हम चाहें—कुछ कहें—जाति अपमान करादें
आप अगर चाहें जग में सम्मान करादें

हम बातवीर हैं कर्म्म की शक्ति सर्वथा है नहीं
तुम कर्म्मवीर हो—आपकी सभी शक्ति साथी रही।

८— अधिक कहें क्या रात दिवस का है यह रोना
किन्तु हमें हठ है कि समय रोकर ही खोना
हमभी कहते रहें वही होगा जो होना
हम जगायँगे, तुम न कभी छोड़े निज सोना

यों बातवीर की हठ लगी *कर्म्मवीर से आज है
निर्णायक देखें प्रथम अब किसको आती लाज है।

---

*यह कर्म्मवीर शब्द यहां उपालम्भरूप में प्रयुक्त हुआ है। लेखक—

आज की आवश्यकता

हमारा समाज दिनों दिन रसातल को जारहा है हम यद्यपि उसे रोकने की चेष्टा करते हैं किन्तु उसमें न मालूम हमें सफलता नहीं मिल रही। यह क्यों? क्या हमारे अन्दर हमारे रसातल को जाते हुए समाजको रोकने की शक्ति मोजूद नहीं है? उत्तर साफ और सीधा है अवश्य कुछ ना कुछ त्रुटी रहगई होगी जिससे कि हम अपने समाज की विगड़ी हालत को नहीं सुधार सकते नहीं तो संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो असम्भव है फिर वह त्रुटी क्या रहगई होगी भला-यदि हम विचार पूर्वक देखें तो स्पष्ट दीख पड़ेगा कि आज हमारे अन्दर "गरीबी की लाज" यह बड़ी जबरदस्त त्रुटी रहगई है जिससे कि हम अपनी कमजोरियों को घटाने के बजाय बढ़ाते जा रहे हैं।

यदि विचार पूर्वक देखा जाय तो यह बात स्पष्ट रूप से दीख पड़ेगी कि हमारी जाति के अन्दर गरीबी बहुत फैलगई है किन्तु हमारे अन्दर कौशल या यों कहिए कपट की मात्रा अधिक होने के कारण हम अपनी गरीबी हालत छिपाने का प्रयत्न करते हैं और अपनी गरीबी-असली गरीबी हालत को छिपा रहे हैं। "कन्या-विक्रय" यह गरीब होने की बात को स्पष्ट कर देने वाली कुप्रथा है क्योंकि गरीबी के अन्दर धर्म सत्य न्याय तथा पवित्रता इन सभी उत्तम गुणों का त्याग करना पड़ता है और सिवा गरीबी के कन्याविक्रय जैसे घृणित तथा पापमय कार्य को कौन करने लगा। हम यह बात तो ऊपर ही बतला चुके हैं कि हम अपनी गरीबी को छिपाने का प्रयत्न सदा करते रहते हैं इसमें हम कहांतक सफल होते हैं यह तो मैं ठीक नहीं बतला सकता किन्तु ऐसा प्रयत्न किया जाता है इतनाही नहीं किन्तु गरीबी छिपाने के लिए बुरे से बुरे और अनुचितसे अनुचित कार्य कर डालते हैं और जिसके कारण हमको [illegible]

अगर हम दूसरे लोगों की तरफ देखेंगे कि जिन्हें दोनों समय खाने तक को नहीं मिलता तब उनके मुकाबिले में हम श्रीमान् ऊंचे दिखाई देंगे किन्तु यदि हम विचार पूर्वक देखें तो यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि हम वास्तव में उनसे गरीब हैं किन्तु अपने कपट से या बेईमानी से आज हमारी वह स्थिति नहीं आई है। आज हम अपने बुद्धि-कौशल से अपने पेट मजे में भर लेते हैं पर यह पेट भरना-हमारे पतन की चरम सीमा है यह हमारा अन्तरात्मा हमें कहे बिना नहीं रहता और उस बुराई का जो परिणाम है उसे हमें भोगना ही पड़ता है।

यदि आज हम अपने जीवन पर दृष्टि डालकर उसका निरीक्षण करें तो इस ऊपर लिखी बात की सत्यता के विषय में बिलकुल सन्देह नहीं रह सकता क्योंकि आज हमारा जीवन कितना हीन स्थिति में पहुँच गया इसका ठीक पता जितना हमारी आत्मा को है उतना दूसरे को नहीं हो सकता ज्यों २ हम गरीबी की लाज से अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न करते हैं त्यों २ वह हमारे नजदीक आती ही जाती है। आज हम अपनी गरीबी छिपाने के लिए अधिक खर्चा करके गरीब बनजाते हैं और गरीब बनजाने पर हमारे हाथ से बुरेसे बुरे काम हो ही जाते हैं।

आज इस गरीबी की लाज के कारण हमारे अन्दर बुरेसे बुरे और अपात से अपात रिवाज प्रचलित हैं हम न मालूम गरीब कहलाने से इतने क्यों डरते हैं। क्या गरीबी इतनी बुरी वस्तु है जिसका डर हमें मृत्यु से भी अधिक मालूम पड़े। आज हम गरीबी की उस अवस्था की तरफ देख रहे हैं जिसका स्वरूप अत्यन्त प्रति उसे छिपाने के लिए हो चुका है। नहीं तो गरीबी-स्वतन्त्रता से तथा स्वेच्छा से ली हुई-गरीबी से बढ़कर संसार में सफलता दिखाने वाली कोई वस्तु नहीं है। संसार के महान पुरुषों के जीवन-चरित्रों को यदि हम सूक्ष्म रीति से देखें तो उन्होंकी स्वेच्छासे ली हुई गरीबी बड़ा महत्व रखती है। और उसमें ही इतनी शक्ति है कि वह संसार का सुधार कर सके। क्या अगर

वान बुद्ध ने तथा अन्य महापुरुषों ने ली हुई स्वेच्छा पूर्वक गरीबी हमारे लिए शोष दायक नहीं है तथा उनका दिया हुआ त्याग सम्बन्धी उपदेश इस बात को क्या नहीं बताता कि गरीबी से बढ़कर आत्म कल्याण का दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

यदि हमने गरीबी की लाज त्याग दी तो हम समाज का हित कर सकते हैं और आज उसकी ही हमको जरूरत है। हम बुरे से बुरे काम इसलिए करते हैं कि हमें लोग गरीब न कहें और हमारी यह बुराई समाज में आगई है जिसके कारण समाज अत्यन्त निर्बल बनता जारहा है। यदि हमने गरीबी स्वेच्छा पूर्वक स्वीकारली तो हमारा संसार कैसे चलेगा हमारे लड़कों की शादियां कैसे होंगी इसके उत्तर में वही बात है जो बात हम रात दिन सोचा करते हैं कि हम अपना जीवन सादगी-मय व्यतीत करके उदर निर्वाह कर लेंगे तथा हमारे लड़के गरीब होने पर भी यदि योग्य होंगे तो उनका विवाह होना कठिन नहीं है और उनमें योग्यता नहीं हुई तो उनकी शादी होने से ही वे क्या करेंगे इसलिए हमें अपने जीवन को कलंकित बनाने की कोई जरूरत नहीं और हमें स्वेच्छा पूर्वक गरीबी स्वीकार अपना तथा अपनी समाज का सुधार कर लेना चाहिए यही है आजकी जरूरत और इसे पूरी करने के लिए हमको आगे बढ़ना जरूरी है आशा है हमारे नवयुवक गरीबी की लाज छोड़कर सुधार के लिए खर्चा कमकर आज की जो जरूरत है उसको पूरी करेंगे।

बुद्धिमानों की झिड़कियां बुद्धिहीनों की प्रसंशा से अच्छी हैं; जब वे तुझे तेरा कोई दोष बताते हैं तो वे समझते हैं कि तू उसे दूर कर सकता है; परन्तु जब बुद्धिहीन तेरी प्रसंशा करते हैं तो वे तुझे अपने समान ही समझ लेते हैं।

न्याय

(ले०-श्री० कन्हैयालालजी जैन, कस्तला)

मानव-चरित्र बड़ा विचित्र है। जितनेही गूढ़ उसमें जाइये उतनाही वह अद्भुत विचित्रताओं का आगार देख पड़ता है। जितने भी सांसारिक कर्म्म हैं उन सबमें अनेक विचित्रताएं दृग्गोचर होती हैं। जिस विषय की जितनी ही सूक्ष्म विवेचना करते हैं उतना ही वह अधिकाधिक गहन होता जाता है; जितना उसे सुलझाते हैं उतना ही वह अधिक उलझता है। उसकी आलोचना, प्रत्यालोचना, विवेचन विश्लेषण और मनन कुछ भी हमें तटस्थ करता नहीं दीख पड़ता; वरन् सूक्ष्मता के जटिल चक्र में, गहनता के गहरे गर्तमें, गुत्थियों की गठीली उलझनों में हम इस प्रकार जकड़े जाते हैं कि यातो हम उससे ऊबकर उदासीन भाव धारण करलेते हैं, या हमारे हृदय में संसार के प्रति एक अद्भुत अश्रद्धा का भाव प्रादुर्भूत होता है। मनुष्य स्वभाव को ही लीजिये, किसी के कर्म्मों को हम अन्याय संगत एवं क्रूर कह सकते हैं; पर जब उसीका सूक्ष्म एवं आलोचनात्मक दृष्टि से निरीक्षण करते हैं; उस पर गहरी दृष्टि डालते हैं, तो हमें वही कुछ २ उचित एवं न्याय प्रतीत होता है। इसी कारण तो पूर्वज कहगये हैं कि 'असमीक्ष्य न कर्तव्यं, कर्तव्यं सुसमीक्षितम्'। जितनी जिस कार्य की सूक्ष्म-समीक्षा की जावेगी उतनाही उसका प्रतिफल सुखद एवं उपादेय सिद्ध होगा। प्रत्येक मनुष्य अपनी २ बुद्धि अनुसार अपने लिये लक्ष्य वा ध्येय निश्चित करता है। जो जितना धीरमति होता है तथा जिसकी जितनी गहनगति होती है वह

अपना ध्येय उतनाही उच्च निर्णीत करता है। जो जितनाही गूढ़ होता है, वह उतनाही सफल काम होता है। पर रहती है उसकी एक निश्चित सीमा; सब कुछ उसी सीमा के अन्तर्गत है; उस सीमा के बाहर लेजाने का जो प्रयत्न है वह वहो व्यर्थ एवं निरर्थक है। जो मानव-स्वभाव की सीमा पहिचान कर उससे अधिक किसीसे कार्य्य नहीं लेता या दमन नहीं करता, वह मानव स्वभाव का उतना ही अधिक उत्तम परीक्षक है। स्वभाव की विवेचना का विस्तार इतना अधिक किया जा सकता है कि यदि उसपर स्वतन्त्र लेख लिखा जाय तो एक पुस्तक तैयार हो सकती है; पर इतनी न तो हमें बुद्धि है न समय, अतः हम उसके एक विशेष अङ्ग पर विचार करेंगे।

सारा विश्व परिवर्तनशील है। दिवस, रजनी, ऋतु, वायु आदि सारी प्रकृति परिवर्तनशील है। बहुतसी वस्तुओं में तो हम नित्य प्रति परिवर्तन और विचित्र परिवर्तन देखते हैं। 'काल' एक महान शक्तिशाली पदार्थ है। विश्व का सृजन, पोषण और लयीकरण भी सब इसीके अन्तर्गत है. पर है यह भी परिवर्तनशील। मनुष्य-प्रकृति का एक क्षुद्रतर जीव है; अतः यह तो सर्वतोभावेन परिवर्तन के वशीभूत है। उसी मनुष्य के स्वभाव-परिवर्तन में एक अद्भुत वैचित्र्य है; वह अपने स्वभाव को सन्तत वर्द्धमान बुद्धि के अनुसार उदार, उच्च, सुसंस्कृत, परिष्कृत, एवं परिमार्जित बनाता है; नित्य उसमें उन्नति करता है; पर वह जिस कार्य्य में निज अनुभवानुसार, निर्णयानुसार स्वार्थ-सिद्धि देखता है उसी पर अड़ जाता है। उससे उसका मत-परिवर्तन असाध्य नहीं तो क्लिष्ट-साध्य अवश्य है। इस कठिन-साध्य कर्म को जो वस्तु-जो शक्ति सरल एवं सुसाध्य बनाती है उसका नाम है "विवशता" या दूसरे शब्दों में "प्रथम प्रहर में निराशा"। विवश होकर ही मानव-स्वभाव में परिवर्तन उपस्थित होता है यही मानव स्वभाव की एक अद्भुत विचित्रता है।

सुभाषाल आज के सोकृ भंग

दिमाग़ सातवें आसमान पर चढ़ा हुआ था। उसके उद्दण्ड स्वभाव की शिकायत जन साधारण को थी। सलाम तक करने के लिये हाथ उठाते उसे महाकष्ट होता था। उसकी बात-चीत में उद्दण्डता थी, प्रत्येक कार्य्य में उद्दण्डता थी। उसकी चोरी और सीनेज़ोरी से ग्राम के अधिकांश निवासी उसके प्रतिकूल हो उठे थे, पर वह कभी इन सब बातों की ओर ध्यान देने का कष्ट न उठाता। उठाता भी क्यों? उसे किसका भय था? एक तो गत योरोपीय महायुद्ध में वह स्वयं ‡"ड्रेवरी" में भरती होकर फ्रंट पर हो आया था, जिससे वह अपने अनुभव क्षेत्र को सबसे बड़ा मानता था; दूसरे उसका बाप, जो उससे कम उद्दण्ड एवं दुर्दमनीय स्वभाव का न था, ज़मींदार विजयसिंह ठाकुर के यहां ड्योढ़ी पर नौकर था, इन सबके अतिरिक्त मुख्य कारण यह था कि ठाकुर साहब का वही भंगी था और ठाकुर साहब की अधिकांश प्रजा में भी वही कमाता था तब यदि उसके दिमाग का पारा चढ़ा रहता था तो क्या नई बात थी? । सांसारिक परिस्थितियां ही मानवी नम्रता और उद्दण्डता की कारण होती हैं। सुविधा और असुविधा, आशा और निराशा ये ही सब भली और बुरी परिस्थितियों के कारण हैं, फिर यदि, सब प्रकार की सुविधाजनक स्थिति में रहकर, भीकू 'आसमान को ठोकसी' समझने लगा तो क्या आश्चर्य्य था?

ठाकुर विजयसिंह को भी उसका यह दिमाग अच्छा न लगता, पर वे जानकर भी उसकी ओर से अनजान बने रहते, कारण यह था कि एक भंगी छुड़ाकर दूसरा उसके स्थान पर लगाना बड़ा कठिन साध्य कार्य्य था। बिना किसी विशेष अवसर के ऐसे परिवर्तन असम्भव नहीं तो कठिनतम अवश्य होते हैं। इसी कारण ठाकुर साहब जानकर भी अनजान बने रहते देखकर भी आंख बन्द कर लेते।

पर उनकी इस आंखमिचौनी का प्रभाव अच्छा नहीं था। भीकू की उद्दण्डता में धृष्टता की मात्रा बढ़ने लगी। पहले उसे उद्दण्डता करते भय होता था, पर अब उसे धृष्टता करते सामना करते भी हिचकिचाहट न होती थी। होते २ यह धृष्ट भाव इतना बढ़ा कि प-

‡ Drivery. ड्राईवरी

हले उसे समझाया गया, फिर डांटाभी गया पर कुछ सुफल न निकला। उद्दण्डता की यात्रा दिन पर दिन बढ़ती ही गई।

एक बार उसने एक गरीब ब्राह्मण की गाय जो उसने बटाई पर ले रक्खी थी बेच डाली और दूसरे दिन चोरों के खोल ले जाने का हल्ला मचा दिया। पर झूठ तो झूठ ही है, बात खुल गई ज़मींदार पर मामला आया। ज़मींदार के कहने सुनने पर वह उस बेचारे गरीब को दो चार गांव फिरा लाया और झाँसा दे दिया।

एक बार उसने इसी प्रकार एक और मनुष्य की भैंस बेचदी और तमाम रक़म डकार गया।

एक बार उसके सुअरों ने ज़मींदार के खेतों की ही बाड़ उखाड़ दी और आधा बीघा गेंहूं खराब कर दिये, पर ज़मींदार ने केवल धमकाकर छोड़ दिया उस धमकी का प्रभाव उसके कानों तक ही रहा।

एक बार उसका लड़का ज़मींदार के ईख के खेत में ईंख उखाड़ता पकड़ लिया गया, ज़मींदार ने उसकी वह ईख वाली गठरी रखवाली। उसमें घास भी थी। वह घण्टा भर रक्खी रही पीछे उसका बाप ड्योढ़ी पर से उठकर और माफ़ी मांगकर वह गठरी लेगया।

उसने ऐसे २ एक नहीं अनेक धृष्ठता पूर्ण कर्म्म किये, जिनको सुन सुनकर ठाकुर साहब के कान भरगये। आख़िर एक वह दिन आही गया जब उसका पाप घट पूर्णरूप से भरकर फूट गया।

भींकू कहीं बाहर से एक गाय लाया था। गाय अच्छी थी। कईएक आदमियों ने उससे पूछा कि गाय कहां से आई है सभी को उसने यह उत्तर दिया कि "समधाने से चरने को आई हुई है" पूछने पर उसने यह भी कहा कि 'अभी इसे मैं चराऊंगा बेचूंगा नहीं"।

अस्तुः—

एक दिन हल्ला मचाते हुए शंकर मिश्र आ पहुंचे और ठाकुर साहब से बोले—

"मैं बहुत पुराना होगया हूं पर ऐसा घोर पाप गांव में होते नहीं देखा, देखा भी तो उसे सहा नहीं पर अब आपके अमल में घोरतर पाप भी देखना और सहना होगा"।

ठाकुर साहब विस्मित होकर बोले—

"पंडितजी और तो कभी आप ऐसे नहीं बिगड़े। कहिए, क्या घोर अधर्म

हुआ कि आप इतना मानसिक कष्ट पा रहे हैं"।

पंडितजी बोले | आपके मुंह लगे भींकू ने अब धर्म पर आघात करना आरम्भ किया है। उसने अपनी वह सुन्दर गाय आज कसाई को बेचदी है। पूछने पर लड़ने को तयार होता है। एक भङ्गी का इतना हियाव पहले कभी नहीं देखा"।

ठाकुर साहब ने पंडितजी को शांत करके बिठाया, और चौकीदार को भीकू को बुलाने के लिये भेजा। इतने में वहाँ चारों तरफ से आदमी आआ कर जमा होने लगे। चौधरी दुर्जनसिंह, लाला रक्खामल, भिनका मिस्सर, रमला कहार आदि अनेक ग्रामीण आकर जमा हो गये इतने में भीकू भी आ पहुंचा ठाकुर साहब ने भीकू को सामने बुलाकर कहा—

'अरे हमने सुना है कि तूने अपनी गाय कसाई को बेचदी है क्या यह सच है?'

भीकू—"हां साहब बेच तो दी है। अपनी चीज इसीलिये होती है कि भूख ताख में काम आवे"।

ठाकुर साहब ने क्रोध दबाते हुए कहा—

"अच्छा, जाओ जैसे हो सके तैसे गाय ले आओ। उतने ही रुपये तुम्हें दे दिये जायेंगे। हम तुम्हारी भलाई के लिये कहते हैं।'।

भीकू—"हजूर गाय तो अब नहीं आ सक्ती"।

ठाकुर साहब ने कठिनता से क्रोध रोककर कहा—"क्यों नहीं आ सकती"?

भीकू—"हजूर गाय ले जाने वाले का नाम और पता मुझे मालूम नहीं"।

तब रमला कहार ने कहा—

"अरे तू झूठ क्यों बोलता है? तीन दिन से तो तू और तेरा बाप उससे सौदा किया करते थे तब आज सौदा पटने पर तू ने वह बेचदी फिर कहता है कि मैं नाम भी नहीं जानता"।

भीकू ने अपनी पुरानी अकड़ दिखाकर कहा—

"ज़मींदार अगर बिगड़ेंगे तो अपना गांव रक्खेंगे। हम और जगह जा बसेंगे। हमने फौज में देख लिया है ज़मींदार फांसी नहीं दे सकते"।

तब वह अपने आप से यह कहता हुआ चला गया कि- चलो हमें नौकरी नहीं करनी, न अब इस गांव में रहना है।

कहना न होगा कि वाप भी धीरे २ वहां से खिसक गया।

जिस कारण ठाकुर साहब प्रायः तरह दे जाते थे आज वही बात हुई। भङ्गी को इस प्रकार जाते देखकर उन्हें बड़ा क्रोध हुआ पर अदूरदर्शी न होने के कारण उन्होंने उस समय क्रोध का संवरण ही श्रेयस्कर समझा।

उन्होंने सब लोगों से कहा—

"आप लोग यह न समझें कि अब उसको क्षमा का कोई और अवसर भी दिया जायगा। आप लोग गाय को आस पास के देहात से खोजकर लावें। उस के मूल्य के लिये धर्मादे के चन्दे में से हम देते हैं। और भंगियों को बुलाकर हम भीकू का अभी प्रबन्ध कर देते हैं। उसे गांव से निकालने की भ-आवश्य-कता न होगी"।

उन्होंने अपना आदमी भेज कर सब भङ्गियों को बुलाया और उनसे कहा—

"कल से हम भीकू के सब ठिकाने तुम लोगों को देते हैं। तुम्हें कमाने होंगे। आपस में सलाह करके हमें उत्तर दो।

तब भंगियों में से कुछ देर अलग राय करके एक आया और ठाकुर साहब से हाथ जोड़कर बोला—

"हजूर मा बाप हैं। यह हजूर भी जानते हैं कि हम लोग किसी दूसरे के ठिकानों पर कमाने को नहीं जा सकते पर जब हजूर का हुक्म है तो ऐसा भी करने के लिये तैयार हैं। पर इसके साथ में यह आशा चाहते हैं कि एकबार हम लोग भी उस से पूछ देखें।

ठाकुर साहब ने कहा-"हां जरूर पूछ देखो। मगर यह याद रक्खो कि अब वह क्षमा नहीं किया जा सकता। इसलिये तुमको ही कमाना होगा"।

परन्तु भीकू के पाप का घड़ा अब ज़रा भी खाली नहीं था जो वह उन लोगों का समझाना भी मानता। प्रत्युत उसने कहा-"ज़मींदार का जोर तो देख लिया अब तुम तीर चलाओगे वह भी देखना है"।

तब सब भङ्गियों ने धीरे से जाकर ठाकुर साहब से कह दिया कि- " हम सब कमाने पर राजी हैं पर यदि आप अब क्षमा करेंगे तो हम कहीं के भी न रहेंगे " ।

ठाकुर साहब ने उनसे कहा-"तुम लोग विश्वास रक्खो ज़मींदार भङ्गी से झूठ नहीं कहेंगे "।

सब भङ्गी सन्तुष्ट होकर अपने घर गए। दूसरे दिन वह गाय भी समीपवर्ती ग्रामों से खोजकर मंगाली गई।

अगले दिन भीकू सब जगह कमाने से रोक दिया गया। सबने अपने २ घर की तरफ जाने को भी उसे मना कर दिया। तब भीकू की आंखें खुली। उस ने कहा यह तो धोखा हुआ। भाइयों ने बुरा किया नहीं तो जमींदार विवश हो कर मुझे बुलाते। उसने यह बात मन में ही नहीं रक्खी सारे ग्राम में कही और कही भी खूब शोर मचा कर, इस पर जिसकी उसकी ओर थोड़ी बहुत सानुभूति का भी भाव था वे भी खटक गये।

एक दिन बीता, दूसरा बीता, तीसरा भी निकल गया पर भीकू ने क्षमा याचना न की प्रत्युत अन्य भंगियों को मुकद्दमे बाजी की तथा पंचायत करके बिरादरी से गिरादेने की धमकी देता रहा। पर वह यह नहीं जानता था कि अब की बार जड़ गहरी रक्खी गई है और उसकी उद्दण्डता सीमा से बाहर निकल चुकी है। इसी तरह दो तीन दिन और निकल गये पर उसे उद्धार की कोई सूरत दृष्टि न पड़ी तब उसकी आंखों का परदा हटा पहले वह, फिर उसका बाप, फिर बेटा जमींदारके पास गये और बहुत रोये झींके पर कुछ फल न निकला। ठाकुर साहब ने उन्हें वहां से फौरन हटवा दियां और उन्हें वहां फिर कभी न आने की आज्ञा दीगई।

अब भीकू की कमर टूट गयी। उद्दन्डता और उलन्ठता का उसे पूर्णफल मिला। कहते हैं कि कलियुग में अंधेर है पर अन्धेर नहीं केवल देर है। जो बुरा करेगा सो बुरा पायगा। जैसा काम वैसा परिणाम। भीकू ने यह एक ही गाय नहीं, दो तीन गायें और भी इसी प्रकार बेची थीं। पहले भी उसे सिताया गया था पर उसे शिक्षा नहीं दी गई।

उसी का यह परिणाम था कि उसकी उद्दण्डता, उसके दुष्कृत्य नित्य प्रति अधिक होते गये और वह यह न सोच सका कि यह चेतावनी है। यदि इस पर ध्यान न दिया गया तो इसका फल बड़ा भयङ्कर होगा। अस्तु "जो जस करहिं सो तस फल चाखा"।

अन्त में सब प्रकार से निरुपाय होकर उसने पंचायत करने की ठानी। यही उसका अन्तिम आश्रय था, इसी पर उसकी सब आशा, भरोसा और जीविका निर्भर थी। बहुत सोच विचार कर, बहुत सिर मारकर उसने पंचायत के लिये दिन स्थिर किया।

द्वार द्वार पर ठोकर खाने के पश्चात् बड़ी कठिनता से भीकू ने वह दिन देखा जब सन्ध्या समय उस के घर के सामने वाले नीम के नीचे पंचायत बैठी। मट्टी का मोटा हुक्का उनके सर पंच के सामने रक्खा गया। सब मौन थे केवल वह हुक्का ही रह रह कर गड़ गड़ का शब्द करता था, वा सन्ध्या समय वृक्षों पर वास करने वाले पक्षी पंचों के सिर पर चहचहा रहे थे एक ओर कण्डों में से धुंआं उठ कर, सांसारिक बन्धन से मुक्त होकर स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर रहा था। ग्राम के प्रधान अतिथि सेवक श्वान भी एक तरफ चुपचाप बैठे हुए पञ्चायत का तमाशा देख रहे थे।

व्यक्तित्व में और जातीयता में वा कहिये कि व्यक्तिगत और जातिगत में बड़ा तारतम्य है। एक बात जो व्यक्तित्व में कुछ होती है जातीयता की लहर में पड़कर कुछ और ही रूप धारण कर लेती है। यद्यपि जातीयता का सङ्गठन व्यक्ति समूह से ही होती है पर दृष्टि-कोण विचार-बिन्दु और कार्य-प्रवाह में व्यक्तित्व और जातीयता का बड़ा अंतर पड़जाता है। नदी का वही जल जो उस में मीठा स्वादिष्ट और लाभदायक होता है समुद्र में अन्य सलिल-राशि के साथ मिल कर, खारा, अस्वादु और हानि-कारक हो जाता है। अस्तु जिन्हों ने भीकू को सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए पञ्चायत करने की सम्मति दी थी, उन्हीं लोगों के पञ्चायत में बैठकर भाव बदल गये। पक्षपात ने न्याय का रूप धारण किया। जिनके हृदय में एक न्या

पञ्चों का भाव था उन्हीं के हृदय में न्याय और सत्य का स्रोत बहने लगा।

सरपञ्च के प्रश्न करने पर भीकू ने कहा—"हजूर! मैं अ ने समधाने से एक गाय लाया था। बह मैं। चराई। मैं चाहता था कि वह यहीं बिक जाय पर कोई खरीदार न हुआ। आप जानते हैं ऐसी चीज तो भूख प्यास में काम आती ही है। खैर यह गाय, जब किसी ने न ली तब मैंने एक मुसलमान को बेच दी। उस मुसलमान को मैं नहीं जानता था, इसीलिये पूछने पर भी मैं नहीं बता सका। जमींदार ने मुझे बुलाकर मारा पीटा और मेरे सब ठिकाने छीन लिये। जो यह और सब भाई जमींदार के बुलाने पर न जाते और मेरे ठिकाने न कमाते तो जमींदार को लाचार होकर मुझ ही बुलाना पड़ता। अब आप सब पञ्चों को अख्तियार है, जैसे चाहे मेरे ठिकाने दिलवादें"।

भीकू इतना सब बिना कहीं रुके, जोर से एक ही बार में कह गया। मानों उसने वह सब कई दिन से रट रक्खा था। वह अपनी स्वभाविक उद्दंडता को पञ्चों के सामने भी न छिपा सका मानों पञ्चों को उसने इसी लिये एकत्रित किया था कि वे उसके ठिकाने दिलवा दें। इसी कारण अन्त में उसने ठिकाने दिलवाने का पञ्चों से आग्रह प्रगट किया। अर्थात् पञ्चों को क्या निर्णय करना चाहिये यह उसने स्वयमेव कह दिया।

पर "जहां पंच वहीं परमेश्वर" पूर्वजों की यह युक्ति कदापि असत्य नहीं हो सकती। पंच ने भीकू की गहराई को खूब समझकर उसे बैठ जाने के लिये कहा। फिर एक दो दम मट्टी के हुक्के में लगाकर उसने अन्य भंगियों से कहा—"भीकू की बात का तुम्हें क्या उत्तर देना है"। तब उनमें से एकने जिसने ज़मींदार से काम करना स्वीकार किया था-खड़े होकर यों कहना आरम्भ किया:—

"हजूर! भीकू ने जितनी बातें कही हैं वे सब झूठी और बनावटी हैं। उससे जब गाय के लिये पूछा गया तभी उसने जवाब दिया कि "यह तो चरनेको आई है कुछ दिन पीछे वहीं चली जायगी"। जिस कसाई को वह बेची गई तीन दिन से इससे सौदा किया करता था पर तीसरे दिन इनका सौदा पटा, तब वह गाय लेगया। हम सब जानकार भी इसलिये चुप रहे कि इससे लड़कर कहीं ज़मींदार का कोप भाजन न बनना

पड़ेगा इस के अतिरिक्त ज़मींदार के बुलाने पर इसने गाय को लौटाने के लिये उनके आदमी के साथ जाना तो दूर रहा उसका पता भी न बतलाया जिसे गाय वेची थी, और अपने पुराने स्वभाव के अनुसार, क्षमा मांगने की जगह वहां से अकड़कर चला आया। पीछे हम सबने इसे बहुत तरह समझाया कि क्षमा मांगकर गाय को लिवा लाने के लिये साथ जाना चाहिये पर कटुशब्दों को छोड़ कर हमें और कुछ फल न मिला। जब यह हम लोगों के किसी तरह समझाने से भी न माना, तब हमको विवश होकर कराने के लिये जाना पड़ा; क्योंकि ज़मींदार का काम और इसका हठ। अबजो पंचों को ठीक जान पड़े सो करें हम सब प्रकार से तैयार हैं"।

वह इतना कहकर बैठगया। भीकू का चहरा उस समय सुफेद होरहा था; क्योंकि पंचों के सामने उसने गढ़ी हुई बात कही थी।

तब सरपंच ने अन्य पंचों की राय मिलाकर इस प्रकार कहा:—

पंचों ने यह बात खूब समझली है कि इस मामले में भीकू ही दोषी है। एकतो अपराध तिसपर दुराग्रह। केवल ज़मींदार के सामने ही नहीं बिरादरी के सामने भी यह दोषी है। हमभी सब हिन्दु-धर्म पालते हैं; हिन्दू ही हैं हम भी गोहत्या के सहायक को किसी तरह अपने समाज का अंग नहीं बनाये रख सकते। पंचायतें किसी के पक्ष समर्थन के लिये नहीं होतीं। इस कारण हम उस समय तक भीकू को जाति-च्युत करते हैं जब तक यह जाति को भोज और ५०) दण्ड स्वरूप देकर प्रायश्चित न करे।

पंच इतना कहकर उठगये। भीकू काठमारासा वहीं रहगया। अन्य लोग न्याय और सत्य की जय बोलने लगे। भीकू की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। गया था छब्बा होने दुब्बा ही रह गया। चिरसंचित पाप का घड़ा फूट गया। जो होना चाहिये था, वही हुआ इसीको न्याय कहते हैं।

उच्च जातियां नीच जाति के इस न्याय—उदाहरण का आदर्श सामने रक्खें।

गरीबों को क्या करना चाहिये ?

हमारे समाज में दिनों दिन कन्या का मोल बढ़ जाने के कारण गरीबों को विवश हो पत्नी विहीन रहना पड़ता है। क्योंकि वे गरीब हैं धनवानों जितना पैसा वे कन्या को मोल लेते समय न देने के कारण वे अविवाहित रहते हैं। जब कोई कार्यकर्ता सुधार करने की नियत से जनता में जाता है तब वे लोग कहते हैं कि- तुम हमें उपदेश क्या देते हो समाज को बिगाड़ने वाले तो धन-वान हैं उनसे कहो । इधर धनवान तो यह बातें मानते ही नहीं। तब समाज सुधार की इच्छा रखने वालों को क्या करना चाहिए ?

यदि हम विचार पूर्वक देखें तो यह बात स्पष्ट है कि धनवान ही गरीबों पर अत्याचार करते हैं किन्तु उसके साथ यह भी भूल नहीं जाना चाहिए कि गरीबों के दुःखोंके कारण गरीब ही हैं। क्यों कि गरीबों को यह धनवान अपनी लड़की नहीं देते तब गरीब को ही क्यों उसे अपनी लड़की देनी चाहिए। वह मोहवश अपनी लड़की धन के लालच से देता है। और जिन गरीबों पर यह जुल्म होता है अप्रत्यक्ष रीतिसे धनवान उनके हाथ से एक लड़की खींच कर ले जाता है तब उसमें यह लोग शामिल क्यों होते हैं ?

क्या गरीब लोग ! क्या धनवान ! अपने दोष को न देख दूसरे को ही दोषी देखते हैं। बिना अपने दोष के हम कभी दुःखी नहीं बन सकते यह बात उन्होंको अपने हृदय में लिख कर रख देनी चाहिए। जब उनके पास धन नहीं है तो व्यर्थ खर्च कर क्यों बेटियां बेचने की नौबत लानी चाहिए। वे कहते हैं कि श्रीमान् लोग करते हैं वैसा हम भी करें क्यों कि हम गरीब तो हैं ही तिस पर यदि खर्च न करें तो हमारी इज्जत नहीं रहेगी। इस लिए हम खर्च करते हैं।

मेरी दृष्टि में श्रीमान् और गरीब दोनों भूल के रास्ते पर हैं। श्रीमानों की भी यही दृष्टि है कि हमें नामवरी मिले गरीबों की भी यही दृष्टि है कि हमें भी नामवरी मिले दोनों ही गलत रास्ते पर जा रहे हैं। और न इस रास्ते से नामवरी मिल सकती है। क्यों कि नामवरी कोई चीज़ ही नहीं है केवळ मोह है और उसके पीछे पड़ दोनों अपने हाथ से अपना नाश कर रहे हैं। यदि मैंने ज्यादा खर्च भी कर दिया तो क्या मेरी बदनामी नहीं हो सकती। हो सकती है इस लिये ही तो दूसरों को दोषी देखने की आदत हमें छोड़नी चाहिए।

जब गरीबों पर श्रीमान अत्याचार करते हैं तब वे गरीब भी तो उनके साथ होते हैं। इसलिए उन्हें चाहिए कि प्रथम अपने आपको इस काम से बचावें। अर्थात् मोह का संवरण करें। धन के लिए जो वे अपने भाइयों पर जुल्म करते हैं वह न करना चाहिए इसलिए वे कभी अपनी लड़की श्रीमान को न दें गरीबों को ही दें।

दूसरे उन गरीबों को जो कि इस कार्य में भाग लेते हैं श्रीमन्तों की इस पापमय गुलामी से छुटकारा पाना चाहिए। जब वे मानते हैं कि हमारे दुःख का कारण श्रीमान हैं तब उनकी गुलामी क्यों करते हैं। उनकी खुशामद करना क्या पापमय नहीं है। केवल वे खुश रहे इसलिए हमें क्यों पाप का भाग लेना चाहिए। क्या श्रीमान उनकी शादियां करवा देते हैं जो गरीबी के कारण क्वांरे हैं। क्या श्रीमान भूखी मरने वाली स्त्रियों को सहायता देते हैं क्या उनके अनाथ बच्चों का पोषण करते हैं। नहीं फिर यह खुशामद किस लिए करते हैं। इसलिए कि उनको अपने शक्ति पर विश्वास नहीं। यह बड़ी भारी दुर्बलता है और इसे छोड़ देना चाहिए।

समाज के गरीबों में जो शक्ति है वह शक्ति श्रीमानों में नहीं। क्योंकि आज सब गरीब श्रीमानों का साथ त्याग दें तो उनकी आंखें खुल सकती हैं पर टुकड़ों के मोहका संवरण भी

तो उन्होंको करना जरूरी है या नहीं। श्रीमान् बनाए किसने। जब गरीब अपने को गरीब समझता है तब श्रीमान् बड़ा बनता है इसलिये हमें चाहिए कि हम जब तक हमारे साथ सहयोग प्रेम पूर्ण सहयोग न करें तब तक उनका सहयोग नहीं करना चाहिए।

"गरीबोंको अपनी लड़की श्रीमानों को नहीं देनी चाहिए"

"किसी गरीबको यदि लड़की देनी हो तो उसमें शामिल न होना चाहिए"

"गरीब को किसी खर्च में श्रीमान की बराबरी न करनी चाहिए"

"जहाँ श्रीमान् कोई फिजूल खर्ची करता हो उसमें गरीब को शामिल न होना चाहिए"

हँस मुख रहने से लाभ।

डा० शेल्डन लेविट लिखते हैं कि व्यापार के लिये—बाह्य प्रभाव के लिये अथवा आरोग्य प्राप्ति के लिये हंस-मुख रहने की बड़ी आवश्यकता है।

एकबार एक रमणी ने मुझसे प्रश्न किया कि उसके सहवासियों में वह प्रसिद्ध क्यों नहीं होती? मैंने उसे स्पष्ट उत्तर दिया कि तुम्हारा मन प्रसन्न नहीं रहता। तुम सुकुमार हो, सुन्दरी हो, तुम्हारी आकृति आकर्षक है, लुभाने वाली हैं, परन्तु तुम्हारा मन सदा उदास रहता हैं।

लोग उदास मनुष्य से मिलना पसन्द नहीं करते। वे चाहते हैं प्रसन्न मन वाले मनुष्य को। मनुष्य में चाहे और कोई सद्गुण न हो परन्तु जिसका मन प्रसन्न और चेहरा हंस मुख रहता है वह अपनी आवश्यकताओं को सहज में सिद्ध करा लेता है।

सारा जगत उस विद्वान् और कुशिक्षित मनुष्य को चाहता है जो अपनी अलौकिक शक्तियों के साथ ही मिलनसार भी हो। ऐसा मनुष्य जहां कहीं

भी हो संसार उसे ढूंढ निकालता है। जो लोग सब लोगों से हेल-मेल नहीं रखते वे संसार में अपनी बड़ी हानि कर लेते हैं। लोगों से हेल-मेल रखने से अनेक ऐसे अनुभव होते हैं, जो जीवन में विजय प्राप्ति के लिये बहुत आवश्यक हैं।

तुम्हारी उदासी, अप्रसन्नता का कारण तुम्हारा अज्ञान तुम्हारी नासमझ है। तुम सदा नई नई इच्छायें पैदा करते जाते हो और उन इच्छाओं आवश्यकताओं के पूर्ण न होने से दूसरों पर दोषारोपण करते हो। अपने दोषों पर अपनी कमजोरियों पर कभी नजर नहीं डालते यही तुम्हारी उदासी और अप्रसन्नता का असली कारण है।

यदि तुम प्रसन्न रहना चाहते हो तो तुम्हारे से नीचे दर्जे के लोगों से तुम कितनी अच्छी दशा में हो इसका विचार करो और परमात्मा को अत्यन्त धन्यवाद दो कि उसने तुम्हें कितनी अच्छी हालत में रक्खा है।

कहते हैं कि फारसी के प्रसिद्ध विद्वान शेखशादी इतने दरिद्री थे कि जूतो का जोड़ा मोल नहीं ले सकते थे और इसी लिये वे हमेशा नंगे पांव घूमा करते थे। एकबार रास्ते में ठोकर लगने से उन्हें अपनी दरिद्रता पर बड़ा कष्ट हो रहा था कि इतने में एक मनुष्य पर उनकी दृष्टि पड़ी, बीमारी के कारण जिसके दोनों पांव निकाम होगये थे और वह अपनी कमर के नीचे के भाग से चला आरहा था। उसे देखकर उसी क्षण अपनी आरोग्य स्थिति के लिये परमात्मा को धन्यवाद दिया और अपने अनुचित विचारों पर पश्चात्ताप किया।

तुमसे भी नीची दशा में असंख्य मनुष्य संसार में हैं। उन्हें देखो और कभी अपने मन को अधीर और अप्रसन्न मत होने दो हर हालत में खुश रहो प्रसन्न रहो हंसते रहो तो दिन पर दिन तुम्हारी दशा उन्नत होती जायगी।

उदासी और अप्रसन्नता से बचने का दूसरा उपाय यह है कि तुम किसी और को भी उदास या अप्रसन्न मत करो। यदि किसी मनुष्य से तुम्हारा झगड़ा होजाय और वह तुमसे बात

चीत करना बन्द करदे तो तुम उसे देखकर कभी मुंह मत फेरो। जब वह तुम्हें रास्ते में मिलजाय तो हंसकर गले लगालो या उससे क्षमा मांगलो। यह मत समझो कि वह तुम्हें कायर या डरपोक समझेगा। मूर्ख मनुष्यही ऐसा समझते हैं। तुम्हारे ऐसे व्यवहार से उसका हृदय गद्गद् और प्रेम से पूर्ण हो जायगा। और वह जन्म भर के लिये तुम्हारा सच्चा मित्र बन जायगा।

करो न रिपुता काहुते,
सबके रहिये मीत।
जाते मन प्रफुलित रहै,
रहे न रिपु की भीत॥

यदि तुम्हारे घरेलू मामले में तुम्हें क्लेश मिलता हो, तुम्हारे स्त्री, पुत्र, पुत्री, माता, पिता; पति तुम्हें पीड़ा देते हों, तुम्हारा मालिक तुम्हें बहुत कष्ट दिया करता हो, तुम्हारे व्यापार में घाटा हो, तुम्हारे सम्बन्धी तुम्हें नीचा करना चाहते हों, तुम्हारे मित्र ने तुम्हें धोखा दिया हो, दगा किया हो, किसी अजनबी खर्च से तुम दब गये हो, और रोजगार के बिना तुम अत्यन्त दुःखी होरहे हो तो भी अपने मन को मत गिरने दो। तब भी हंसते ही रहो।

यद्यपि ऐसी हालतों में प्रसन्न रहना असम्भव नहीं तो महा कठिन अवश्य है। पर तुम्हें कष्टों से जल्दी छुटकारा पाना हो तो एक वीर पुरुष के समान अपने मन पर काबू बनाये रखो। शांति को हाथ से न जाने दो। इससे तुम्हारी दशा शीघ्र ही सुधर जायगी।

जापानी माता पिता अपने बालकों को सबसे पहिले यही शिक्षा देते हैं कि सदा प्रसन्न रहो और हंसते रहो। उनका कहना है कि सुख दुःख संसार में सबको आते हैं परन्तु जो मनुष्य अपने सब दुःखों को मन में दबाकर दूसरों से सदा हंसमुख होकर मिलता है। उसका अपने हृदय पर काबू है। वह वास्तव में योग्य मनुष्य है।

प्रसन्न रहने के लिये कुछ मानसिक प्रयोग इनको मनमें बार बार दुहराते रहने से दुर्बल मानशकि सबल होती है।

(१) सदा हंसमुख रहने का मैंने दृढ़ निश्चय किया है।

(२) मुझे ईश्वर की दयालुता में

प्रबल विश्वास है। इससे मैं सदा प्रसन्न रहता हूं।

(३) मुझे आरोग्य और ऐश्वर्य और उन्नति करने की शक्ति प्राप्त है। फिर मैं सदा प्रसन्न क्यों न रहूँ।

(४) मैं उदासी और अप्रसन्नता से अपनी शक्तियों को कदापि क्षीण न करूंगा। मैं सदा प्रसन्न मन और प्रसन्न वदन रहूँगा।

शारीरिक प्रयोग।

१-एक कांच के सामने बैठकर पहिले अपने उदास चहरे को खूब आंखलो फिर पाँच मिनट तक कांच में अपने चहरे को हंसता हुआ और प्रसन्न देखो। कुछ दिनों में तुम समझ जाओगे कि हंसमुख चहरा कैसा होता है।

२-यदि अकस्मात् किसी उदास मनुष्य की संगति में पड़जाओ तो अपने को मानसिक सजेशन देना आरम्भ करदो कि उसका तुम पर प्रभाव न होने पावे। और समझ सके तो उसेभी उसकी गलती समझादो।

३-घर में या आफिस में कभी उदास चेहरे से मत बैठो। कोई ऐसी आनन्द देने वाली बात छेड़दो जोसबके हित की और सबको प्रसन्न करने वाली है।

सबका सारांश यह है कि सब लोगों को अपना ही दुःख बहुत भारी है। तुम अपने दुःख सुनाकर उन्हें और भी दुखी मत बनाओ तुम्हारे मनमें कैसाही और कितनाही दुःख क्यों न भरा हो सबको दबाकर हंसते हुए चहरे से सबसे मिलाकरो। सभ्यता की सबसे ऊंची यही शिक्षा है। इसीसे लोग तुमसे मिलना चाहेंगे और तुम सर्व प्रिय — सुखी बन सकोगे।

अप्रार्थितानि दुःखानि,
यथैवाऽयान्ति देहिनाम्।
सुखान्यपि तथाऽयान्ति,
तत्र का परिदेवना॥

जैसे बिना बुलाये दुःख आते हैं। वैसेही सुख भी आते हैं इसलिये बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिये कि सुख दुःख में समान भाव रहे-कभी चिन्ता न करे।

दुःखेष्वनुद्विग्न मनाः
सुखेषु विगत स्पृहः।
वीतराग भय क्रोधः
स्थितधीः मुनि रुच्यते॥

जो दुःखों में घबराता नहीं और सुखों में अपनी इच्छाओं को वश में रखता है। जो किसी के मोह में अत्यन्त फंस नहीं जाता जो सदा निर्भय रहता है और जिसे कभी क्रोध नहीं आता वह अचंचल बुद्धिवाला और विचारवान् मनुष्य कहलाता है।

छत्रभुज-

बाल-विवाह

(लेखक-श्री० सोहनलाल जी डागा "विद्यार्थी" राजलदेसर निवासी)

हमारे प्राणों का संहार जिस जहरीली छुरी ने किया है। वह किसी ज़ालिम कसाई ने हमारे कलेजे में नहीं भोंकदी है। परन्तु अपने हाथ से ही हमने इस हत्यारी छुरी को छाती लगा-लिया है, वह छुरी बाल-विवाह है।

इन्सान का जानी दुश्मन, तन्दुरुस्ती का हलाहल जहर, सदाचार का भारी विरोधी, बाल्य-विवाह ही है। इसने जबसे संसार की मुकुटमणि जाति में अपना पैर बढ़ाया है, तभी से चौपट कर दिया है। मुकुट की मणि मुकुट से गिरकर पैरों से कुचली जानेलगी।

प्रायः देखने में आता है कि लड़कों की शादी ८ या १० वर्ष की उमर में करदी जाती है। बच्चा धोती पहिनना नहीं जानता और लड़की रोकर रोटी मांगती है। और वे इस नादानी की उमर में ही गृहस्थी की जबर्दस्त गाड़ी में अपने जालिम मां बापों द्वारा जोत दिये जाते हैं।

पन्द्रह सोलह साल की उमर हुई

है लड़का स्कूल में ऊंचे दर्जे पहुँचा है, दिमागी मेहनत का जोर है। उधर गौना होकर भी आगया है। बच्चे को जान पर बलैया लेने वाली उसकी मां आंचल पसार कर दांत निकाल कर गिड़गिड़ाकर कहती है। हे काली भवानी। हे चौराहे की चामुण्डा! अबतो पोते का मुंह दिखादे। यही नहीं उसकी त्यारी भी होने लगी दोनों जोड़ी एक कोठरी के अन्दर बन्द करदी गई। इधर पढ़ने का जोर, दिमागी मेहनत, उधर खाने की तंगी, घी दूध का नाम नही उधर पोते की लालसा, इन सबमें बच्चा पिस मरा। हाड़ की ठठरी रहगई। मां कहती है अजी! लड़के को क्या होगया पीला पड़ता जाता है किसी डाक्टर वैद्य को दिखलाओ।

बाप देवता बोल उठे, पढ़ने में मेहनत है, अब स्कूल न भेजेंगे बहुत पढ़ गया, इतना तो हमारे यहां कोई नहीं पढ़ा था। बस तालीम का द्वार बन्द होगया। रोग बढ़ता ही गया। थोड़े ही दिनों में "राम राम सत्य बोल गई!" गजब है घर में अपनाही खून करते हमसे कैसे बनता है। जिनके वंश में हम पैदा हुए जिनका खून हमारे शरीर में बह रहा है। वे कौन थे इसका कुछ भी विचार नहीं है। अगर विचार होता तो हमारे प्यारे बच्चे अकाल मौत क्यों मरते?

हमें अपनी दया का बड़ा भारी अभिमान है। पर सचतो यों है कि हमारी बराबर संसार में कोई कसाई और क्रूर नहीं है। छोटी २ कीड़ियां, मकोड़े, कौवे आदि के लिए हमारे पास दया का भंडार है। पर अपनी सन्तानों पर यह जुल्म कि उनकी सारी आशाओं को कुचल कर उनकी उठती जवानी पर भी तरस न खाकर उन्हें हाय! ऐसी बुरी मौत मार रहे हैं कि कसाई गाय को भी न मारेगा। कसाई गाय को एकही हाथ में मार देता है वह बेचारी दुःख से छूट जाती है। पर हमजो एक २ वर्ष की दूध पीती लड़कियों को विधवा बनाकर पापों की नदी बहा रहे हैं।

इतना होने पर भी हमारा पत्थर का कलेजा नहीं पिघलता। ये जो लाखों विधवाएं हमारी छाती पर मूंग दल

रही हैं। कोई चुपचाप सर्द आह भर-कर भारत को रसातल पहुँचा रही हैं, कोई कहार, धीमर, कसाई आदि के साथ मुँह काला करके अपने वंश की नाक कटा रही हैं।

अपने बुजुर्गों की तरफ तो देखो! जो लोग दीन दुखियों का आर्तनाद सुनकर भोजन और भजन छोड़ देते थे और दुखीजनों का दुःख दूर करके ही जलपान करते थे या जान दे देते थे। हाय उनकी सन्तान ऐसी अधर्मी हो गई। हजारों विधवाओं की बिलबिलाहट और हाहाकार सुनकर भी हमें सुख से नींद आती है।

ये गरीब अभागिनियां हमारे पाप से ही इस अंधेरी दुखभरी दुनियां में नाको पीसकर कुत्ते भी न खांय ऐसे सूखे टुकड़े खाकर दिन काटें जो हम जैसे दयावान ऋषि मुनियों की सन्तान होने का अभिमान रखते हैं। यही हमारी दया का नमूना है। यही हमारी सभ्यता का नमूना है। क्या यह सब घोर पाप नहीं है? क्या ऐसे अत्याचार किसी दूसरी जाति में बता सकते हो। कसाई को सबसे अधिक क्रूर और निर्दयी कहकर हम घृणा करते हैं, गाली देते हैं और उसका मुँह देखना नहीं चाहते; पर वे हमसे अधिक घृणित नहीं हैं। बिना सींगों की गायों पर, अपनी बहिन बेटियों पर उनकी छुरी नहीं उठती हिंसक पशु पक्षी सिंह आदि भी स्त्री बच्चों पर दया करते हैं। जंगली जाति भी स्त्री को नहीं सताती पर ओसवाल जाति के सपूत उन्हीं का गला घोटकर अपने लिए स्वर्ग का द्वार खोल रहे हैं। मनुजी कहते हैं कि—

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ॥

और सबसे ज्यादा अफसोस की बात तो यह है कि इस प्लेग और हैजे से भी भयानक रोग को भी हम सदा आनन्द स्वागत करते रहे हैं और कर रहे हैं।

इन सब बातों को सुनकर समझकर भी जो हम बालविवाह के पक्षपाती रहे तो सब कहेंगे कि सांप को गले लटकाये फिरते हैं। पल्ले में आग बांधकर रुई के गोदाम में घुसते हैं। सरासर जिस प्रथा ने हमें दीन दुनियां से

निकम्मा कर दिया है उसे हलाहल जहर समझकर भी जो हम आँख मींच कर उसी लकीर के फकीर बने रहे तो निस्सन्देह हमारे रक्त से हमारे रगरग से मनुष्यत्व निकल गया है। और हम मनुष्य नहीं रहे हैं।

दरिद्रता और उससे बचने के उपाय

(गतांक से आगे)

मनुष्य-जिसकी मानसिक प्रवृत्ति दरिद्रता के विचारों में हो रही है, या जो सदैव अपने दुर्भाग्य का और असफलता का ही विचार करता रहता है कदापि उस मार्ग पर न जा सकेगा, जो ध्येय की सफलता के स्थान में पहुंचाने वाला है।

मैं एक ऐसे युवक को जानता हूं, जो ग्रेज्युएट है, जो अच्छा जवान और वीर्यवान है। वह कहता है, कि उसके पास टोपी खरीदने को भी पैसे नहीं हैं, वह अपना पेट भरने जितना भी नहीं कमा सकता है, यदि उसका पिता प्रति सप्ताह पांच डालर उसके पास न भेजता रहे तो भोजन मिलना भी उसके लिए दुःसाध्य हो जाय।

यह युवक विचार, दरिद्रता और असफलता के विचारों का शिकार हो रहा है। वह कहता है:—"मुझे विश्वास नहीं होता कि संसार में मेरे लिए भी कोई सफलता है। मैंने कई काम करने प्रारम्भ किये, परन्तु एक भी पूरा नहीं हुआ।" उसे अपनी योग्यता में भी विश्वास नहीं है। वह कहता है, कि उसकी शिक्षा असफलता के सिवाय और कोई चीज नहीं है, बस इसीलिए वह कभी यह नहीं सोच सका कि उसके लिए भी संसार में सफलता है। वह सदा एक काम को छोड़कर दूसरे के पीछे लगता रहा, जिससे वह गरीब स्थिति से अपने आप को बाहिर नहीं निकाल सका। इसका कारण उसकी अन्तरंग भावनाएं हैं, उसका वास्तविक मार्ग की ओर रुख करके नहीं चलना है।

जिसे किसी कार्य में सफलता प्राप्त

करनी हो, उसे चाहिए कि वह सन्देह को हृदय से निकाल दे। हृदयका संदेह सफलता के बीचमें दीवार-का काम करता है, सफलता से दूर रखता है। अतः मनुष्य को अवश्यमेव विश्वास रखकर काम करना चाहिए। कोई मनुष्य उस समय तक धन की प्राप्ति नहीं कर सकता है। जब तक वह यह कहता रहता है कि मुझे नहीं मिलेगा। "मैं नहीं कर सकता" इस तत्व ज्ञान ने जितना कार्य कर्ताओं का नाश किया है उतना। अन्य किसी विघ्न ने आज तक नहीं किया। संसार में

आत्म-विश्वासही एक ऐसी जादू की कुंजी है कि जो सफलता के द्वार को खोल देती है।

हमने आज तक एक भी ऐसा मनुष्य नहीं देखा, जो कार्य को खराब होने की असफलता की बातें करता रहा हो और फिर उसका काम सफल होगया हो। क्षुद्रता की ओर देखने और क्षुद्र बातों का विचार करने की आदत उन्नति के मार्ग के लिए एक भभकती हुई आग है।

प्रकृति ने प्रत्येक मनुष्य को ऊपर देखने की आज्ञा दी है, नीचे देखने को नहीं, मनुष्य जन्म ऊपर चढ़ने के लिए हुआ है नीचे गिरने के लिए नहीं। संसार में कोई ऐसा विधाता-परमेश्वर नहीं है जो मनुष्य को गरीब रहने या दुःखदायी और घातक परिस्थितियों में रहने के लिए विवश करे।

एक युवकने, जो बहुतही योग्य है और व्यापारी दुनियां में जिसका अच्छा नाम है, थोड़े ही दिन हुए हमसे कहा था कि वह पहिले बहुत गरीब था और उसे उस समय तक गरीब स्थिति में रहना पड़ा था, जब तक कि उसने यह नहीं सोच लिया था कि वह गरीब रहने के लिए उत्पन्न नहीं हुआ है दरिद्रता वास्तव में मानसिक रोग है इस रोगसे प्रयत्न करने पर हरेक आदमी छुटकारा पा सकता है। उसने नित्यप्रति धनाढ्य होने का और धनका विचार करना प्रारम्भ किया। उसने अपनी आत्मा और अपनी योग्यता पर दृढ़तासे वि-

प्रयास करना शुरू किया। उसने निश्चय किया कि उसके अन्दर वह योग्यता-शक्ति-मोजूद है जिसके द्वारा मनुष्य संसार में नामांकित-बड़े आदमी-होते हैं। वह लगातार अपने हृदय से दरिद्रता के विचारों को निकालता रहता था, और नित्यप्रति यह भावना भाता रहता था कि इनके साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

वह "असफलता भी सम्भव है" इस विचार को कभी अपने हृदय में स्थान नहीं देता था। दरिद्रता और असफलता को हमेशा के लिए पीठ देकर उसने ध्येय की सफलता को पहुँचाने वाली सड़क पर चलना प्रारम्भ किया था। और वह कहता था कि निरन्तर किये हुए, असंदिग्ध विचारों का और हृदय की दृढ़ता का बहुत ही अद्भुत परिणाम हुआ।

वह कहता था:-"कुछ न कुछ बचा रखने के लिए मैंने कई तरहकी तकलीफें सहीं। मैं सस्तासे-सस्ता भोजन करता था और जितना भोजन करता था। और जितना भी हो सकता था थोड़ा खर्च करता था। मुझे चाहे कितना ही दूर जाना होता तो भी पैदल ही जाता था, मजबूरी के बिना गाड़ी बैठकर कभी किसीके यहां नहीं गया। तथापि मेरे पास द्रव्य नहीं हुआ। फिर मैंने अपने नवीन विचारों के साथ रहन सहन का ढंग भी बदला। मैंने एक अच्छे होटल में जाकर रहना प्रारम्भ किया, जहां खाने पीने और रहने सहने का पूरा आराम था। मैंने अच्छे २ उच्च और विद्वान् मनुष्योंसे मिलना प्रारंभ किया, और उन बड़े लोगों से मेल मिलाप बढ़ाना शुरू किया जिनसे कि मुझे सहायता मिलने की आशा थी।"

"जैसे २ मेरे विचार विशेष उन्नत और स्वतन्त्र होते गये वैसेही वैसे मुझे प्रत्येक प्रकार का सुभीता भी मिलता गया। मुझे वे वस्तुएं प्राप्त हुईं जिनके द्वारा मैं अपनी आर्थिक और मानसिक उन्नति करने में प्रवृत्त हो सका। और तब मुझे मालूम हुआ कि मैं दरिद्र था इसका कारण मेरे दरिद्रता और कृपणता के विचार थे।"

यद्यपि आजकल वह बहुत खर्चा

करता है और अच्छी तरह से रहता है तथापि वह कहता है:-"मैं जो द्रव्य खर्च करता हूँ उसका मिलान यदि मेरी आमदनी से-जो कि मेरे विस्तीर्ण विचारों और मनके परिवर्त्तन से होने लगी है-किया जायगा तो वह (खर्चा) उसके मुकाबले में बिलकुल ही तुच्छ मालूम देगा।

कृपण, और संकीर्ण मनवाले लोग द्रव्य को अपनी ओर नहीं खींच सकते। उनके पास जो कुछ द्रव्य इकट्ठा होता है, उसको वे खर्चा करने में बहुत तंगी कर, पाई पाई करके करते हैं; समृद्धिशाली बनने के जो नियम हैं उनसे नहीं। द्रव्य बाहुल्यता से उपार्जन करने के लिए स्वतन्त्र विचार और उदात्त मन की आवश्यकता है संकुचित और कृपण मन द्रव्य आने के द्वार को बन्द कर देता है।

मनको आशा-पूर्ण, प्रकाशित और प्रसन्न रखने ही से प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। प्रयत्न से कार्य अवश्य सफल होगा-ऐसा विचार आशावाद (Optimism) सफलता प्राप्त कराता है; और ऐसा विचार कि हमारे किये कुछ भी न बनेगा—निराशावाद (Pessimism) सफलता का विघातक होता है।

आशावाद (Optimism) बहुत बड़ी उत्पादक शक्ति है; यह जीवन की जड़ी है। इसके अन्दर वह प्रत्येक वस्तु मौजूद है, जो मानसिक अवस्था में प्रवेश करती है; जो लाभ पहुँचाती है और प्रसन्न बनाती है। प्रतिकूल इसके निराशावाद (Pessimism) एक बहुत बड़ी नाशक शक्ति है; जीवन का काल है। किसी मनुष्य का द्रव्य नष्ट होगया हो, स्वास्थ्य नष्ट होगया हो; यहां तक कि कीर्त्ति भी कलंकित होगई हो, तथापि उसे निराश नहीं होना चाहिये। उसे चाहिए कि वह दृढ़ता पूर्वक आत्म विश्वास रक्खे और उन्नत विचारों के साथ कार्य करता रहे। उसकी गत वस्तुएं उसे अवश्यमेव पुनः प्राप्त हो जायंगी।

(शेष फिर)

वीर्य को ऐसा बना डालता है कि जिससे सन्तान ही पैदा न हो फिर वे दवाई क्यों लेने लगे।

❀ ❀ ❀

स्था० कान्फरन्स का छठवां अधिवेशन मळकापूर में होने वाला है पर कहीं सभापतिके स्थान के लिए उम्मेदवार मिलेगा या नहीं क्यों कि सभापती के पद के रुपये भी तो बहुत लगते है।

❀ ❀ ❀

ओसवाळ समाज में भी बेकारी बढ़ रही है किन्तु ओसवाळ लोग कारीगीरी करने से ऊबते हैं क्योंकि वे कहीं ओसवाल से अस जाति के न बनजाय।

❀ ❀ ❀

नाई लोगों ने ओसवालों पर वहिष्कार डालने की ठानी है पर ओसवाल तो चुप क्योंकि हाथ से हजामतें करने लगने से पैसे की तो बचत होगी। यह भी क्यों न करें।

❀ ❀ ❀

ओसवाल धनवान समाज सुधारकों के पीछे इसलिए पड़े हुए हैं कि वे उनका सर्वस्व नहीं चलने देते क्यों कि वे आप को रावण का अवतार मानते है। फिर अपनी धन की बुद्धि को दूसरों को किस तरह बतावे।

❀ ❀ ❀

ओसवाल अपनी लड़कियों का धनवानों के घर में देना चाहते हैं फिर लड़की के योग्य लड़का न भी मिले तो चलता है क्योंकि धन मिल जाने पर पती की जरूरत थोड़े रहती है।

❀ ❀ ❀

ओसवालों की औरतें गोटे के पहनावा इसलिए बढ़ा रही हैं कि कपड़ों को जल्दी न धोना पड़े। क्यों न हो जैन धर्मी ही तो ठहरे ना पानी को छानना भी तो हिंसा है।

❀ ❀ ❀

ओसवाल की औरतें गहना ज्यादा इसलिए पहनती हैं कि उनकी गर्भ धारण करने की शक्ति नष्ट हो जाय क्यों कि सन्तति विरोध करने का भी आन्दोलन भारत में चल रहा है फिर औषधि न लेकर सन्तती विरोध करना भी बुद्धिमानी का काम है।

❀ ❀ ❀

सम्पादकीय विचार

अहमदनगर की पंचायत—

जेष्ठ बदी ७-८-९ को अहमदनगर जिले के ओसवालों की पंचायत होने वाली है। और भी इसलिए कि अपना सुधार कैसे हो यह बातें सोचकर काम में लाने के लिए। प्रयत्न स्तुत्य है और हम उसकी सफलता भी चाहते हैं किन्तु यह भय बना हुआ है कि कहीं यही पंचायत प्रस्ताव पास करके तो नहीं चुप्पो साध लेगी। सम्भव है ऐसा भी हो परन्तु आज के युग ने पलटा खाया है यह बात समझ कर हम उन बन्धुओं की सेवामें विनम्र निवेदन करते हैं कि वे इस पंचायत के प्रस्ताव को पालने तथा पलवाने के लिए पूर्ण प्रयत्न करें क्योंकि जो नगर जिला आजतक कन्या-विक्रय के लिए अगुवा रहा वहां कन्या-विक्रय कतई बन्द कराने के लिए पूरी शक्ति एकत्रित करने की जरूरत है और सत्ता भी। पंचायत में इतनी सत्ता भी होगी या नहीं यह आज नहीं कहा जा सकता किन्तु सत्ता का होना जरूरी है। साथही साथ हमको पंचायत के सामने आने वाले विषयों में एक बात की कमी देखी गई और उसका होना जरूरी था वह यह कि "कुंआरों का सवाल" क्योंकि गरीबों के साथ सहानुभूति रखने के बिना व उनकी सेवा किए बिना वे अपनाए नहीं जावेंगे और बिना उनके अपनाए सामाजिक कार्यों में यश नहीं मिल सकता। कुंआरे रहने के कारणों में विद्या का न पढ़ना भी है और इसलिये विद्या पढ़ाने के लिये क्या प्रबन्ध करना चाहिए यह बात सोचनी जरूर है आशाहै कि इस बात की तरफ हमारे बन्धुओं का ध्यान जाकर वे जरूर इस प्रयत्न में सफल होवेंगे ऐसा विश्वास है।

ओसवाल महासभा की नींद

ओसवाल महासभा का अधिवेशन होना चाहिये इस विषय पर कुछ दिन पहले हमारे एक दो मित्रों ने लिखा था

किन्तु आज देखते हैं तो फिर सुनसान। ओसवाल जाति दिनों दिन बिगड़ती जारही है फिरभी उन अकर्मण्यता की नींद छोए हुए ओसवाल बन्धु प्रयत्न क्यों नहीं करते। क्या उनके पास धन नहीं है? नहीं यह बात नहीं क्योंकि आजभी ओसवाल जाति हजारों रुपये उदारता पूर्वक खर्च करती है वह करेगी किन्तु दोष है कार्यकर्त्ताओं का जो अपने आपको जाति सुधार का ठेकेदार समझते हैं। केवल लेखों में लिखना तथा बातों में कहदेना ही पर्याप्त कार्य समझते हैं। क्या उन्हें यह मालूम नहीं कि यदि हमने प्रयत्न न किया तो जाति डूबने पर है फिर वे चुप क्यों बैठे हैं? उन्हें क्या जाति से सच्चा प्रेम नहीं है। यदि है तो फिर वे काम में क्यों नहीं लगते। उन्हें चाहिए कि वे कार्य करने के लिए आगे बढ़ें और ओसवाल महासभा का अधिवेशन शीघ्रही कर डालें। यह अधिवेशन करने के पहिले इतना आन्दोलन होजाना चाहिए कि भारतवर्ष में रहने वाले हरएक ओसवाल का ध्यान इस तरफ आकर्षित होजाय और इसलिए प्रथम हम ओसवाल कार्य कर्त्ताओं की एक मीटिंग होना जरूरी समझते हैं जिन्हें यह बात स्वीकृत हो उन्होंको इस सम्बन्धका पत्र व्यवहार मुझसे कर यह निश्चय कर लेना चाहिये कि यह सभा कब बुलाई जाय इसके लिये जलगांव यह स्थान ठीक है। और मुझे विश्वास है कि हमारे कार्यकर्त्ता बन्धु अवश्य इस ओर ध्यान देकर कार्यकर्त्ताओं की सभा इस मास से अवश्य बुलाने के लिए मुझे सम्मति देंगे। देखें ओसवाल महासभा की नींद तोड़ने के लिए आगे कौन २ बढ़ता है।

जैन स्थानकवासी कान्फ्रेंस—

जैन स्था० का० का छटवां अधिवेशन मलकापुर में होने वाला है। बड़े हर्ष की बात है कि कान्फ्रेंस इतने दिनों बाद फिर कार्य क्षेत्र में उतरने की इच्छा रखती है। हम उसकी सफलता चाहते हैं किन्तु कार्यकर्त्ताओं का लक्ष्य उस ओर खींचते हैं जिस कारण से कान्फ्रेंस आजतक मुर्दा जीवन बिता रही थी हमारी दृष्टिमें तो फूट पड़जानेकाकारण

यहीं है कि कान्फ्रेंस का धनवानों को विकजाना। धनवानों ने संस्था को सहायता देना अच्छी बात है किन्तु उसमें उस संस्था विकजाना को बुरी बात है आजतक यह स्थिति रही अब आशा है कि कार्यकर्त्ता इस तरफ ध्यान देकर कान्फ्रेंस का संचालन योग्य प्रकार से करके उसे सफल बनावेंगे। आज के इस नाजुक स्थिति में मलकापुर वालों ने साहस बतलाया वह सराहनीय है किन्तु उन्होंको सबसे सचेतकता सभापति के सम्बन्ध में रखना जरूरी है क्योंकि इस समय तटस्थ सभापति की आवश्यकता है और विना उसके मिले कान्फ्रेंस का सफल होना कठिन है।

स्त्री सुधार—

ओसवाल समाज की स्त्रियों का सुधार करना यही समाज का सुधार करना है किन्तु यह सरल बात हमारे अभीतक ख्याल में नहीं आती दिनोंदिन स्त्रियों के सम्बन्ध में दुर्लक्ष कर ओसवाल अपनाही सुधार करना चाहते हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि विना स्त्रियों के सुधरे बिना जो हमारी मातायें होंगी तथा हैं उनका सुधार हुए विना हमारा सुधार कैसे हो सकेगा। बचपन में जो संस्कार बालक के हृदय में होता है वही संस्कार बच्चे के हृदय पर कायम होता है फिर हम विनामाता के सुधार के उन बालकों का सुधार कैसे कर सकते हैं जो भविष्य में हमारी जाति के स्तम्भ होने वाले हैं। परन्तु हमारी बुद्धि उलटी होगई है हमको हानि के बदले में लाभ और लाभ के बदले में हानि दिखाती है तभी तो हम इस बात की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते। केवल स्त्रियों को विषय भोग की मैशीन समझकर उनमें सद्गुण भरने की बिलकुल चेष्टा नहीं करते। आज जो स्त्री-समाज की दुर्दशा है वह अत्यन्त शोचनीय है और उनपर होनेवाले अत्याचार सहनशक्ति के बाहर हैं किन्तु जब हम उनको कुछ समझें; तब न। हमतो यह समझते हैं कि स्त्री हमारी दासी–गुलाम है, हम जो कहें वैसा करना। उसे क्या अधिकार है कि वह कुछ भी बोल सके। हमारी आज्ञा को

न माने, हम चाहें जैसेहों किन्तु उसको हमारी आज्ञा मानना ही चाहिए। यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है और इसको सुधारना शिक्षापर अवलम्बित है हमको स्त्री सुधार के लिए निम्न लिखित बातें काम में लाना जरूरी है।

१—हम स्त्रियों को सुशिक्षित बनावें।

२—हमको स्त्रियोंके साथ वह सहानुभूति रखनी चाहिये जो कि मनुष्य के साथ रखते हैं। एवं उन्हें मनुष्य से कम न समझना चाहिये।

३—लड़कियों की कम उम्र में शादी न करना चाहिये।

४—परदा रिवाज को इतना कठिन न रखें कि जिससे वे अपने दुःखों को भी प्रकाशित न कर सकें।

इन बातों की तरफ ध्यान देने से वर्त्तमान स्त्री समाज की अवस्था सुधर सकती है और हम जो समाज सुधार का कार्य इतना कठिन समझते हैं वह सहज में ही होजायगा।

वाणिज्य व्यवसाय

देशी मीलें—

दिना दिन देशी मिलों की स्थिति विगड़ती जारही है। उनके माल की मांग बाजार में घटजाने के कारण सिलकी माल बढ़ती जारहा है। बम्बई शहर में ऐसी मिलें बहुत कम हैं जो आज के व्यहार से लाभ उठा सकें। इसलिए मिलें दिनों दिन बन्द होती जारही हैं कुछ मिलें रुई का भाव मन्दा होने की आशा से मुनाफा न रहते हुए भी चला रहे हैं। इस मास में गत मास के शिलक माल में १५००० गट्ठों की वृद्धि हुई यह केवल कपड़े की बात हुई इसके अतिरिक्त सूत की जो वृद्धि हुई वह अलग ही है। इसका मुख्य कारण यह बतलाया जाता है कि जापानी माल वालों का प्रतिस्पर्धिता है। आज जापान वालों के भाग से एक्सचेंज के भाव के फरक ने सहायता पहुँचाई है जहां १०० रुपये के १५०० येन (जापानी सिक्का) का भाव

थी वहां आज १०० रुपये के १०६ येन मिलने लगे हैं। यों भी तो विदेशी कपड़ा देशी मिलों की अपेक्षा सस्ता पड़ता है फिरभी यह सुभीता। जापानियों का इस प्रकार कपड़े के व्यापार में बढ़ना विलायतवालों को खटक रहा है और वे चाहते हैं कि जापानको पीछे हटावें और इसलिये रेलीब्रादर्स भारत के छोटे २ शहरों में अपनी दुकानें खोलने का विचार कर रही है। पर भारतवासियों को इससे क्या लाभ? उन्हें तो इससे हानि ही पहुंचेगी। तब फिर भारत की मिलों की स्थिति सुधारने के लिए क्या करना जरूरी है। और उन्हें क्या करना चाहिये तबयह स्थिति दूर हो सकती है। इसके पहले हमको यह देखना जरूरी है कि भारत की अपेक्षा विदेशी माल सस्ता क्यों पड़ता है। वहां तो हमारी अपेक्षा अधिक सस्ता माल न पड़ना चाहिए क्योंकि रुई यहां से ही तो वहां जाती है और मजदूरी की दर भी वहाँ यहांसे अधिक है फिर क्या कारण है कि जो वहांका माल सस्ता पड़ता है। हमारी समझ में दो कारण प्रमुखता से दीख पड़ते हैं। एक तो वहां कोई भी वस्तु मुफ्त में नहीं जाती क्योंकि वहां विज्ञान का यथेष्ठ प्रसार होने के कारण किस चीज से क्या लाभ उठाना चाहिये इस बात को लोग अच्छी तरह से जानते हैं और इस कारण से वहां की तत्परता यह एक माल सस्ता पड़ने का कारण है। दूसरी बात यह है कि वहांके मिल वालों की जाति की वहां राजसत्ता होने के कारण जितना हित किया जासके उतना करने के लिए तैय्यार रहती है। यहां वह बात ही है। नहीं तो क्या प्रस्ताव पास न करने पर की गई अर्जियों का देशी मिलवालों को उत्तर नहीं मिलता। आज हमारी सरकार जितना हित इङ्गलेंड वालों का देखती है उतना हमारा हित नहीं देख सकती इसलिये देशी मिल वालों को नीचे लिखी हुई बातों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्वदेशी आन्दोलन को एवं आजके राजनैतिक आन्दोलन को पूर्ण सहायता देनी चाहिये। उन्हें इस बात को ठीक तरह से समझ लेना चाहिए कि बिना
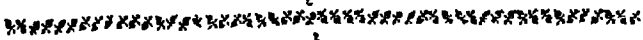
हमारे देश की सम्पत्ति बढ़े हमारी सम्पत्ति नहीं बढ़ सकती है और न सुरक्षित ही रह सकती है इसलिये देश की सम्पत्ति बढ़ाने के लिए हमको प्रयत्न करना चाहिए तथा देश का दूसरों के आधीन रहना यह हमारे लिए हितकर नहीं होसकता इसलिए इस आन्दोलन को पुष्टी देनी चाहिए। जब लोगों के हृदय में स्वदेशी का प्रेम होगा तब मंहगा भी माल लोग लेकर विदेशी माल न लेंगे।

देश की सम्पत्ति किस प्रकार बढ़ाई जा सकती है किन्तु उसे सुरक्षित रखना तथा बराबर भागों में बांटना यह काम व्यवस्थित न होने के कारण घट जाना स्वाभाविक है। आज व्यापारी लोग जनता की दृष्टि से पतित इस लिए हैं कि वे सम्पत्ति के लोभ के फन्दे में पड़कर परिश्रम मूल्य न तो बराबर चुकाते हैं और न उसे सुरक्षित रखते हैं मजूरों से कम मजदूरी देकर अधिक परिश्रम कराना यद्यपि लाभदायक बात दीखती है किन्तु इसका परिणाम बहुत उलटा होता है। मजदूर को हम अपनाकर प्रेम के बन्धन में नहीं बांध सकते वे केवल हमारे काम पर बाध्य होकर आते हैं क्योंकि हम न उनके स्वास्थ्य की तरफ देखते हैं और न उनकी उन्नति पर। इस प्रकार दिनोंदिन शक्ति घटकर देशकी सम्पत्ति नष्ट होती है वे भी काम बतलाने के लिए काम करतेहैं यदि उन्हें प्रेम से अपना लिया जाय तो वे अधिक परिश्रम कर सकते हैं और अधिक लाभ मिलको पहुंचा सकते हैं।

किसी भी वस्तु को काम में न लाकर नाश कर डालना देश की सम्पत्ति को घटाना है इसलिए जो वस्तुएं यों ही खराब होकर नष्ट कर देते हैं उसे न कर काम में लाने की चेष्टा करनी चाहिए। यदि इस बातकी तरफ ध्यान दिया जाय तो सम्भव है कि माल सस्ते दामों में पड़ सके।

सराफेका बाजार।

इस सप्ताह सराफे के बाजार में फिर कुछ तेजी दिखाई पड़ी है। यद्यपि इम्पीरियल बेङ्क के कैश में २८३ लाख बढ़े पब्लिक डिपाजिटमें भी २२४ लाख

की वृद्धि हुई साथ ही दूसरे डिपाजिट में ६१ लाख की कमी रही और परसेंटेज १९.५७ तक पहुंच गया और इम्पीरियल बेङ्क ने २ करोड़ रिण करेन्सी विभाग को दिया पर बाजार में रुपये की टान आ गई। गल्ले की लागत चारों ओर से रुपया मांग रहा है। रुपया धड़ाधड़ पश्चिम चला जा रहा है।

सोने चांदीका बाजार

सोने का बाजार इस सप्ताह फिर गिरा, कल बाजार २१॥≈ में बन्द हुआ, चांदी का बाजार भी गिरकर ७१॥=में बन्द हुआ। बम्बई वालों का कारनर फिस हो गया।

हमारी समझ में अभी ५-१० दिन यहां सोनेका बाजारमें विशेष अन्तर नहीं मालूम पड़ेगा। परन्तु मईके अन्त तक जिस समय गल्लेका पैसा बाहर गांवमें पहुंच जायगा, उस समय सोना और चांदीका दाम कुछ चढ़ना चाहिये। लोग कहेंगे कि एकसचेंज यदि मजबूत रहा तो भाव नहीं चढ़ सकता। परन्तु इस समय एक्सचेंज चढ़ने का नहीं, गल्लेकी हुंडियां निकलेंगी, इससे बाजारमें जरा टान आवेगी, आमदनी का मौसिम भी सामने ही तैयार हैं। उसके लिये रुपया विलायत भेजनेके लिये चाहिये। तो एकसचेंजको थोड़ा गिरना ही पड़ेगा और उसीके साथ २ सोना और चांदी में भी कुछ तेजी आयेगी।

भुसावल का ओसर—

अभी गत मास में सेठ गुलाबचन्द जी बम्ब का स्वर्गवास हुआ। आप एक धर्मनिष्ठ और उदार आत्मा थे। आप वृद्ध होते हुए भी आजकल के सामाजिक कार्यों से सहानुभूति रखते थे

आपकी मृत्यु से खानदेश में से एक धनवान उदार विचारशील तथा जाति प्रेमी की कमी हुई किन्तु उनकी कमी उनके बन्धु पन्नालालजी तथा उनके सुयोग्य पुत्र भैरूलालजी पूरी करेंगे ऐसी आशा है। क्योंकि गुलाबचन्द जी ने खानदेश में होने वाले सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों में जो प्रेम बतलाया था वही प्रेम उनके बन्धु बतलाये बिना नहीं रहेंगे। किन्तु अनुचित बात यह हुई कि—ऐसी उदार तथा धर्मनिष्ठ आत्मा का ओसर। मालूम नहीं ओसर में इतने रुपये खर्चकर पन्नालालजी तथा भैरूलालजी ने जाति का क्या लाभ देखा कि जब वे अपने आपको जाति-प्रेमी समझते हैं। उन्होंने जो कुछ धर्म दान किया उसमें जाति हित के लिए भी थोड़ा बहुत है। कहते हैं ५०० रुपये खानदेश एज्यूकेशनल सौसायटी को तथा १००० रुपये विधवा स्त्रियों को सहायता देने के लिए तथा ३००० रुपये एक उपाश्रय बांधने के लिए जहां स्त्रियों रात्री को पोषध आदि करें इसलिये और भी कुछ धर्मदान किया है किन्तु इस बात में यह बात तो जरूर खटकती है क्योंकि गरीबों के दिल पर इसका बुरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। हमही उन्हें "मोसर नहीं करना चाहिये" यों शिक्षा देते हैं और हमको अपने यहां काम पड़ने पर मोसर कर लेना बड़ा खटकता है और इससे दिनोंदिन लोगों का विश्वास उठता जाता है। हम उनसे नम्रता पूर्वक इस बात का विरोध करते हुए निवेदन करना चाहते हैं कि वे इस प्रकार रूढ़ियों के कायल बन जाति हित कार्य करने के बदले में अनहित न करें। आशा है हमारे इस निवेदन पर ध्यान देकर लोक निन्दा सहन करने की उन्हें शक्ति देकर भविष्य में ऐसा कोई काम न करेंगे जो अपनी आत्मा के विरुद्ध हो। हम, स्वर्गीय सेठजी के कुटुम्बियों के दुःख में समवेदना प्रकट करते हैं, और प्रभू से प्रार्थना करते हैं कि मृत आत्मा को शान्ती प्रदान करे।

श्री० लक्ष्मणदास जी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास

जलगांव निवासी सेठ लक्ष्मणदास जी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास अभी

कुछ दिन पहले हुआ। हमें इस बातको लिखते बड़ा दुःख होता है कि सेठजी की धर्मपत्नी का डेढ़ महीने के बालक को तथा सेठजी को छोड़कर चलाजाना बहुत बुरी बात हुई किन्तु भावी प्रबल है उसके आगे कुछ इलाज नहीं। हम सेठजी के इस दुःख से समवेदना प्रदर्शित करते हैं और परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि सेठजी को पत्नी विहीन रहने के लिये चाहने वाला बल प्रदान करे। आज सेठजी के पीछे लगने वाले बहुत हैं और वे यह चेष्टा करेंगे कि सेठजी विवाह करें किन्तु हमको दृढ़ विश्वास है कि सेठजी की धर्मनिष्ठा उन्हे फिर विवाह करने से रोकेगी और वे अपने हित शत्रुओं की बात नहीं मानेंगे। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह मृतआत्मा को शान्ती प्रदान करे और यह सदूइच्छा प्रकट करते हैं कि सेठजी दिनोंदिन अधिकाधिक धार्मिक कार्यों में लग जैन धर्म की सच्ची सेवा उनसे हो और वे अपना सच्चा हित करें।

बधाई—

ओसवाल संसार में यह समाचार बहुत आनन्द के साथ सुना जायगा कि आगरे के प्रसिद्ध सेठ जसवन्तरायजी के छोटे भ्राता सेठ अचलसिंह जी इस प्रान्त की लेजिस्लेटिव कौन्सिल अर्थात् कानून बनाने वाली सभा के मेम्बर चुने गये हैं। आपको इस पद के लिये यहां की स्वराज्यपार्टी ने प्रसिद्ध देशभक्त त्यागमूर्त्ति पं० मोतीलालजी नेहरू की सूचना अनुसार खड़ा किया था आपके प्रतिकूल दो महाशय और भी खड़े हुए थे।

समाचार।

—दक्षिण में औध नामक एक छोटीसी रियासत है जिसके महाराजा ने एक घोषणा की है कि जो अछूत मेरे राज्यान्तर्गत गोमांस भक्षण नहीं करेगा और न मदिरा पान करेगा वह अछूत अछूत नहीं समझा जायगा।

अनंग दिवाकर वटिका

यह वह औषधि है जिससे स्वप्न दोष का होना, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब व दस्त के समय वीर्य का निकलना, सम्भोग की इच्छा न होना, या होते ही तत्काल वीर्य का निकल जाना, इन्द्रियों का शिथिल पड़ जाना, किसी काम में चित न लगना, आंखों के सामने अंधेरा जान पड़ना कमर का दर्द, सिर का दर्द, साध्य प्रमेह धातु क्षीण, सुस्ती आदि रोग नष्ट हो कर शरीर हृष्ट पुष्ट बलवान हो जाता है। इस "अनंग दिवाकर" वटिका को सेवन करने वाला सदैव काम सुन्दरियों को अपने वश में रखता हुआ निर्भय निर्द्वन्द आनन्द करता है। ये "अनंग दिवाकर" कामी पुरुषों का परम मित्र, देही का रक्षक, और पुरुष का स्त्री के सामने मान रखने वाला ना मर्द को मर्द बनाने वाला बुढ़ापे में भी जवानी का मजा चखाने वाला, इन्द्रियों की टूटी व ढीली नसों को सख्त करने वाला, विलासी-पुरुषों को परम प्रिय और युवा पुरुषों की इच्छा पूर्ण करने वाला है। यदि आप सुन्दरियों से स्नेह का संग्राम करते हार जाते हो तो अनंग दिवाकर वटिका को मंगा कर सेवन कीजिये और फिर अपनी प्यारियों से स्नेह का संग्राम कीजिये मारे संग्रामी स्नेह के लपाटों से सुन्दरियें परास्त हो कर आपको सब दिन याद करती रहेंगी अगर ऐसा न हो तो दाम वापिस देंगे। लीजिये मंगाइये परीक्षा कीजिये। तीन महीने की खुराक दाम सिर्फ ६) एक महीने की खुराक का दाम केवल २॥) डाक-व्ययपृथक

रति संग्राम वटिका

स्त्री प्रसंग करते समय सिर्फ १ गोली "रति-संग्राम वटिका" को जब तक सेवन विधि अनुसार मुख में धारण करे रहोगे तब तलक वीर्य पात नहीं होगा। अधिक कहने की बात नहीं है मंगाकर परीक्षा कर देखिये दाम केवल ७) रु० डाक व्यय पृथक—

:—भारत सेवक कार्य्यालय, पो० दनखेड़ी G. I. P.

ऊपर छपी पाचों बिजलीकी अद्भुत चीजोंमें न तेलकी जरूरत है, न दीया-सलाईकी बटन दबा दीजिये, चटसे तेज रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी, जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें बेट्रीकी शक्ति भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लेम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाईं वर्ता जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेका तीनरङ्गा लेम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा कीजिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लेम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक खर्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है जो कोट में लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्शन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।≈) जुदा (नं० ५) यह कमीजके तीन बटनोंका सेट है जो रातमें प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भांति चमकता है इसका भी तार बैटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें रखा जाता है लोग देख कर आश्चर्य करते हैं भेटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी चीज है आज तक हिन्दुस्तान में नहीं आई हैं दाम ८) डाक खर्च ॥) जुदा।

पता—जे० श्री० पुरोहित एण्ड सन्स पोस्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता।

संसार के अद्भुत समाचार।

मौलाना मुहम्मदअली का 'हमदर्द'।

ढाई हज़ार रुपये मासिक की हानि।

मौलाना मुहम्मदअली के उर्दू के दैनिक पत्र 'हमदर्द' में प्रकाशित हुआ है कि पत्र को इस वक्त ढाई हजार रुपया मासिक नुकसान उठाना पड़ता है। इस सम्बन्ध में एक बड़े अग्रलेख में पत्र लिखता है कि 'हमदर्द' की नीति यह रही है कि प्रश्नों पर गम्भीरता के साथ मत प्रकट किया जाय और बुद्धिमत्ता के साथ तथा माकूल तरीके पर अपना मामला पेश किया जाय, दूसरों को गालियां न दी जायं और ऐसा रविश अख्तियार न की जाय जिससे और ज्यादा हालत बिगड़ जाय और फायदा कुछ भी न हो। याद रखना चाहिये कि अगर हम (मुसलमान) कमज़ोर हैं तो दूसरों को गालियां देकर ताकतवर नहीं बन सकेंगे, अगर हमारी आर्थिक स्थिति खराब है तो दूसरों को गाली सुनाकर हम धनी नहीं हो सकते बल्कि इसके लिये वह तरीका हमें अख़्तियार करना चाहिये जिससे हमारी गरीबी दूर हो। अगर हममें जहालत ज्यादा है तो तालीमी कोशिशों से ही दूर हो सकते हैं, दूसरोंपर रश्क करके हम शिक्षित नहीं बन सकते। और अगर हमारे यहां संघठन नहीं है तो संगठित होने की कोशिश करना चाहिये। हिन्दुओं को बुरा कहकर हममें तन्जीम [संघटन] नहीं पैदा हो सकता जैसा कि हिन्दू-संघठन वाले कर रहे हैं। यदि कुछ लोग हैं जो 'हमदर्द' की इस नीति को पसन्द करते हैं। तो हम उनसे दरख्वास्त करेंगे कि वह पत्र के प्रचार की ओर ध्यान दें। अखबार के इतने खरीददार हों कि वह नफाका ख़याल छोड़कर बिना नुक़सान उठाये जारी रह सके। तीन हजार स्थायी ग्राहकों के बिना नुकसान किसी तरह दूर नहीं हो सकता। नफेका न खयाल था और न आशा थी, लेकिन यह आशा

ज़रूर थी और है कि 'हमदर्द' अपने पैरों पर खड़ा रहे। अगर मौजूदा खरीदार एक-एक दो-दो नये खरीदार बढ़ावें तो कठिनाइयां दूर हो सकती हैं।

—अपने दोषी साथियों को दंड देने के लिये कौवे कमेटी करते हैं और उसमें विचार करके सज़ा ठीक करते हैं। फिर सब मिल के वही सज़ा दोषी को देते हैं।

—विलायत में एक आदमी ने मट्टी से साबुन बनाने की तरकीब निकाली है। इस मट्टी के साबुन में खर्च कम पड़ता है, फेन खूब ज्यादा आता है और वह साफ भी खूब करता है।

—वैज्ञानिकों का कथन है कि इस दुनियां का वजन ६,०००,०००,०००,०००,०००,०००,०००, टन है।

—ब्रिटिश म्यूजियम की लायब्रेरी में पचास लाख छपी हुई किताबें हैं और उनको क़ायदे से संजाकर रखने के लिये साठ मील लम्बे खाने उनको दिये गये हैं।

इन किताबों की सूची में केवल अक्षर के क्रम से किताबों के नाम दिये हुये हैं, लेकिन तब भी सूचीपत्र की बड़े साइज़ की १५०० जिल्दें हैं जो क्रम से सजाकर नब्बे गज लम्बे स्थान में गोलाकार अलमारियों के दोनों तरफ रक्खी हुई हैं।

लायब्रेरी के बड़े हाल का गुम्मद १०६ फीट ऊंचा है और १५० फीट गोलाई है। इसमें ५००० आदमियों के बैठकर पढ़ने की जगह है। ब्रिटिश साम्राज्य में जहां भी कोई किताब छपती है। उसकी एक प्रति मुफ्त यहां आती है, अस्तु इस तरह से प्रतिवर्ष १०००२० पुस्तकें इस लायब्रेरी को मिलती हैं।

—जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने एक ऐसा शीशा बनाया है जो पारदर्शी तो है मगर टूटने वाला नहीं। उसे धातु की तरह पी[illegible]र चौड़ा कर सकते हैं, कागज़ की तरह मोड़ सकते हैं। और लकड़ी की तरह [illegible] सकते हैं।

—खिपता नामक गांव में एक तहसील[illegible] के [illegible] विचित्र कुत्ता है। कहते हैं कि वह चन्द्र दर्शन, सत्यनारायण, एका[illegible] विशेष दिनों पर उत्तम भोजन देने पर भी नहीं खाता।

—उंगलियों के नाखून बनिस्बत जाड़े [illegible] गर्मी में अधिक तेजी से बढ़ते हैं।

—बन्दूक के छर्रे एक दिन में एक आ[illegible] तीन करोड़ तक ढाल सकता है।

—औसत में एक स्वप्न केवल पांच मिनट तक ठहरता है। (कैलाश से)

"Oswal" Reg. No. A. 1308

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान,
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे नर सब हैं मृतक समान॥

वर्ष ७ } मई सन् १९२५ ई० { अङ्क ५

विषय-सूची।

सम्पादक-श्री० ऋषभदासजी ओसवाल (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी० पी० से २॥।) { प्रति अङ्क ।)

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश--

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २॥।) रु० है एक प्रति का मूल्य ।) है।

३—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर-ओसवाल"

जोंहरी बाजार आगरा

धन्यवाद

गत अंक में प्रकाशित प्रार्थनाके अनुसार निम्नलिखित स्वजाति बंधुओं ने ओसवाल जाति के प्रतिष्ठित २ पुरुषों के पते लिख कर भेजे हैं जिसके लिये उनको धन्यवाद है।

(१) श्री सूआलालजी गजमलजी

(२) श्री कन्हैयालालजी

(३) श्री वीरसिंहजी लुनावत

ओसवाल का यह अङ्क पाठकों की सेवामें शीघ्रता के साथ भेजा जा रहा है, आगामी जून महीने का अङ्क जून में ही प्रकाशित हो जायगा।

सधवा सासु शृंगार कर रही है और विधवा वहु मूसल चला रही है.

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाजका, जिस से कुछ उपकार॥

वर्ष ७ } आगरा, मई सन् १९२५ ई० { अङ्क ५

पुरस्कृत रचनाएँ।

(लेखक-श्री० पं० लक्ष्मीधरजी वाजपेयी)

जातिमें जीवन-ज्योति जगाओ।

ऐक्य प्रचार करो सब जातिमें,
बैर विरोधको मार भगाओ।
वस्तु विदेशी न लाओ कभी,
सब भाँति स्वदेशीसे प्रेम लगाओ।
एक यही परमारथ स्वारथ,
भारतके हितमें चित लाओ।
गाओ स्वतन्त्रताके शुभ गीत,
स्वजातिमें जीवन-ज्योति जगाओ।

आन मरदानें की।

पर्वत अड़े रहें हजारों विघ्न बाधाओंके,
कुछ परवाह नहीं शत्रु के सताने की।
सामना करेंगे हम भावनाके बलसे ही,
मनमें विकलता हमारे नहीं आनेकी।
गावेंगे सुगीत वीरताके हम हिन्दवासी,
कला हमें आती है अचूकही निशानेकी।
प्राण चाहे जावें पर मान रहे भारतका,
शान यही वीरोंकी, औ आन मरदानेकी।

(मारवाड़ी अग्रवाल से)

एक विधवा युवति की पुकार.

[लेखका—सोनाबाई आगरा]

हाय! मैं इस असार संसार में होते ही क्यों न मरगई जो हाथ भर ही कफ़न लगता और इस वर्त्तमान जीवन की कड़ी २ कठिनाइयों से छुटकारा पाती, आज सुहागन के सामने विधवा वधू न कहलाती। मेरी सुसराल में मेरी सास आज दिन सुहाग का श्रृङ्गार कर रही है। मांग काढ़ सैंदूर भर, कजरा सार ता ऊपर बेंदा लगा रही है और मैं अनाथ चक्की लेकर अपने कर्मों को कोसती हुई घम्मर घम्मर कर रही हूं और सुबह से शामतक दासी बेदाम की बनी हुई हूँ। तिसपर भी चैन नहीं-हमेशा कुवचनों की बौछार मेरे ऊपर हुआही करती है। जब पीहर पहुंची तब क्या, भट्टी में से निकल कर भाड़ में आ गिरी की कहावत होगई, वहां सुहागिन माताजी भी मेरी सास से टीम टिमाक करने में कुछ कम नहीं हैं। यहां मेरे हाथ में चरखा कातने को पकड़ा दिया गया।

हमारी सरकार गवर्नमेण्ट ने सती होने की खुदकशी (यानी आत्मघात करने का एक बड़ा भारी पाप) को नियम बनाकर हमारी जिन्दगी को आज़ाद बनाने में तो दया प्रकट की परन्तु शोक कि बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय (जिनको हमारी जैनसमाज ने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रचलित कर रक्खा है) के रोकने के नियम बनाने के वास्ते क्यों आंखों से पट्टी बांधली। अब हमारे बुजुर्ग भाई क्यों न इस बात का नियम बनावे जिससे हमारा जीवन सुख शांति से व्यतीत हो। इस समय हमारी हालत पर यदि आप लोग विचार करें और ज़रा अपने २ कलेजों पर हाथ रख २ कर अपने दिलसे ही पूछे तो मृतक से भी गई बीती है। जिस प्रकार आप किसी आदमी को (जो एक बड़े जबरदस्त अजगर सर्प के मौत रूपी मुख में फंसा हुआ है) छुड़ाकर बगैर किसी प्रबन्ध के सुनसान जंगल

में ससक ससक कर मरने को छोड़ दें फिर आप यह दावा करें कि हम जीव दया पालते हैं। हमारे बड़े२ होशियारों और खुदगर्जों ने हमारी जिन्दगी तो बख्शी है लेकिन ऐसी जान बख्शी से लाभ भी क्या है। जब कि हमको जीवन भर सिवाय आहोजारी करने और अपने आपको जलील व बदनाम करने के किसी उचित प्रबन्ध करने की आज्ञा ही नहीं है। मेरे दिल में बार २ यह विचार उत्पन्न होता है कि यदि मेरे माता पिता या सास श्वसुर इसी बात पर तैयार हैं कि हम सारी उमर विधवा बनकर ही रहें तो अव्वल तो वोह समय नहीं है कि विधवा सती ही बनी रहें अबके हम देखती हैं कि सधवा ही नहीं मानती है तो हमारा तो भरोसा ही क्या है और हमने दुनियां को देखा भी क्या है। हम पुरुषों से ही प्रश्न करती हैं कि वह धर्म से शपथ खाकर कहदें कि किस २ के परस्त्री सेवन करने का त्याग है। दूसरे उनको (माता पिता) उचित है कि वह हमारे लिये आबादी से बाहर ऐसे स्थान में रहने का प्रबन्ध करदें जहां शहर की हवा टकराकर भी हमारे शरीर का स्पर्श न कर सके न किसी पुरुषकी सूरतही दिखाईपड़े, और माता पिता तथा सास श्वसुर के प्रेमालाप को देख २ कर हमारे चित्त में कोई विकार उत्पन्न न हो। वहां पर ही हम अपना जीवन भगवान की भक्ति में व्यतीत कर देवेंगी। हमारा कोई हक नहीं है कि हम वस्ती में रहकर अपने पड़ोस में गृहस्थाश्रम की छुल बल और शान शौकत तथा नाना प्रकार की कामचेष्टा उत्पन्न करनेवाली बातों को देख २ कर अपने दिलों को कमजोर बनावें, क्या यह सम्भव नहीं कि दूसरी सधवा युवतियों की गोद में नन्हे २ बच्चे खेलते हुये देखकर हमारे दिल की हसरतें गुद गुदायें, हाय ईश्वर को यह मंजूर न था कि हमभी बच्चे वाली होजातीं तो अपने दिल को बच्चों ही से बहलाया करतीं। फिर तुर्रा हमारी विपत्ति का यह कि हमारे ऊपर जवां बन्दी की ऐसी धारा ताजीरात हिन्द की लगादी गई है कि हम जीवन भर अपने कष्ट निवारणार्थ अपनी इच्छाओं को भी प्रकट न करें। खेद !

अब कसी बीमारी की हालत बेहोशी में हमसे बेपरवाही होजाती है तो हमारे घरवाले और रिश्तेदार वगैरः हमको इन ताने उलियों का शिकार बनाते हैं कि कमबख्त मरती भी नहीं, पति को भी खालिया और हया शर्म भी उठाकर रखदी, मौहल्ले वाले भी यही आवाज कसते हैं कि बड़ी बदकिस्मत है। हमारे इधर उधर बैठने उठने पर भी हमको दोष लगाये जाते हैं और दर-पर वा हमारी बुराइयां ही होती रहती हैं। यह जेरहम आदमी अपनी कुवा-सनाओं में फंसकर हमारे पवित्र मन को चलायमान करने में भरसक कोशिश करते हैं और बहुतसी तरगीवें देते हैं, परन्तु उन पर कोई अलजाम नहीं लगाया जाता और हमको ही बावजूदे अपनी पवित्र आत्मा को उनके पंजे से बचाते हुए सर कश समझा जाता है। हाय ऐसा क्यो; इसलिये कि हम विधवा हैं। हमारा संसार में कोई साथ नहींरहा। हे निर्दयी आकाश में रात्रि के समय सम्पूर्ण कलाओं सहित निकलने वाले और वृहनियों के विरह उत्पन्न करनेवाले चन्द्रमा तुझको भी हमारे ऊपर दया न आई। इसी कारण तेरे ऊपर विधाता ने स्याही की कालमस लगाई है जिसका हृदय स्वयं ही उजला नहींहै वह दूसरेकी प्रसन्नता का क्या उपाय कर सकता है। इसी प्रकार हमारे पंच भाई जिनकी आत्मा स्वयम् ही पवित्र नहीं है हमारी विपत्ति के दूर करने का क्या उपाय कर सकते हैं। सारी दुनियां में कोई देश ऐसा नहीं है जहां व लिहाज मजहब व कानून की रू से नौजवान युवतियों को (इस कसूर के बदले कि इनका पति उनको उठती जवानी में दागे जुदाई देगया है) हमेशा तनहा रहने पर मजबूर किया जावे और यह दोष आरोपण कर दिया जावे कि यदि उनके भाग्य में सुख नसीब होता तो उनका पति ही क्यों मरता। तो साहब चिलम पीते २ रेल निकलगई तो कसूर किसका कि अन्जन महाशय का; क्योंकि उसने सीटी दी और चलदिया। जब बीमारके भाग्य में जीना ही लिखा होगा तो अपने आप ही अच्छा हो जायगा चिकित्सा की फिर क्या आवश्यकता है। जब पति का मरनाही इस बातकी दलील है कि

सारी उमर ओछोछारी और रंजोगम में व्यतीत करें तो क्या यह नियम पुरुषों के वास्ते नहीं होना चाहिये जिनकी काम इच्छा स्त्री से $\frac{1}{8}$ ही होती है। उनको क्या हक़ है कि वह एक दो पत्नी के मरने पर भी बुढ़ापे तक में जाकर कन्याओं से शादी करते हैं और उस नवयुवतियों का जीवन सर्व नष्ट करते हैं जिसके यौवन के अंकुर भी नहीं निकलने पाये हैं। हाय! हम दुखियायें अपनी फ़रियाद किसके पास ले जायं। सब कानों में तेल डाल २ कर सोये हुए हैं सिवाय इसके कि हम ख़्वार होती फिरें। नक्कारे की आवाज़ में तूती की कौन सुनता है। हमारे प्यारे पिता भाइयो! हमारे कष्टों के ऊपर ज़रा से दो आंसू तो बहाओ और हम अबलाओं का सहारा पैदा करने का नियम बनाओ और हमारा सुधार करो। देखो, चोरी करना वही पुत्र सीखता है जिसके माता पिता उसको हाथ से खर्चा नहीं देते हैं। हजारहा युवतियां यही दुष्कर्म कराती फिरती; गर्भ गिराती तथा मुसलमान इत्यादि नीच लोगों के संग भाग जाती हैं। जिनके यहां इस बात की सख़्त मुमानियत है कि हैं ऐसा हाथों से प्रबन्ध करने में तो हमारी नाक कटती है और छुपक-छुपक के कुकर्म करा आवें तथा पेट डाल आवें तो हमारी मूंछें सादी सदा ऊंची ही रहे छीः छीः आपकी ऐसी मूछों पर और ऐसे अन्यायपर। शोक!!

मैं पूर्ण आशा करती हूं कि मेरी इस हृदय-विदारक कहानी को सुनकर वह कौनसा कठोर हृदय है जो न पसीजा होगा, और समाज हमारे कल्याणार्थ कोई उचित प्रबन्ध होजाने का नियम न बनायगी सारी बदनामियों से बचने का उपाय विधवा स्त्री को किसी योग्य पुरुष के आश्रय ही रहना उचित है।

मेरी दूसरी प्रार्थना यह भी है कि हर एक हिन्दी पत्र के सम्पादक महाशय मेरे ऊपर कृपा करके मेरी इस पुकार को एक दूसरे पत्र में से उद्धृत करके छापदें और हरएक के कानों तक पहुंचा दें। देखती हूँ कि मेरी आह में कुछ असर है या नहीं।

शैर—मरती हूं पति की चाह मे किसको ख़बर नहीं।
जिनराज मेरी आह में कुछभी असर नहीं!॥

दरिद्रता और उससे बचने के उपाय

(गताङ्क से आगे)

मनुष्य जब तक संदेह और असा-हलके विचारों में निर्गमन करता रहता है तब तक वह हतसफल होता रहता है। जिसे दरिद्रता से छुटकारा पाने की इच्छा हो, उसे चाहिए कि वह अपने मनकी स्थितिको उत्पादक और प्रवर्द्धक रक्खे। प्रति समय प्रसन्न, विश्वस्त और उत्तम विचारों के रखने से मनकी स्थिति स्वयमेव उक्त प्रकार की बन जाती है। किसी मूर्ति को बनाने के पहिले उसका नमूना तैयार किया जाता है, इसी तरह उन्नत जीवन में नवीन संसार में रहने के पहिले मनुष्य को चाहिए कि वह उसको देखले।

यदि मनुष्य-जो संसार में नीच समझे जाते हैं, जो पगडण्डी (Side-tracked) पर चल रहे हैं, जो समझते हैं कि उनकी संपत्ति सदा के लिए नष्ट हो चुकी है, जो समझते हैं कि अब हमारा कभी उत्थान न होगा-अपने विचारों के परिवर्तन की शक्तिको जान जायं; तो उनका उत्थान बहुत ही सरळता से हो सकता है।

मैं एक ऐसे परिवार को जानता हूं कि जिसके मेम्बरों ने, अपनी मानसिक प्रवृत्तिको परिवर्तन करके अपनी स्थिति को बहुत अच्छी बनाली है। जब तक उनको यह निश्चय रहा कि उच्च-स्थिति सफळता तब तक वे दूसरों के लिए है, जब तक वे हीन स्थिति में रहे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि विधाता ने उन्हें गरीब रहने के लिए ही उत्पन्न किया था, उनके घर और उनकी सारी परि-स्थितियां ध्वंस और असिद्धि की मूर्तियां थीं। उनके घर की प्रत्येक वस्तु अधः पात दर्शक थी। घर लीपा, पोता साफ नहीं था आंगन में बिछाने के लिए कोई चटाई या चद्दरा भी नहीं था; और घर में एक तस्वीर थी वह भी टूटी फूटी-अभिप्राय कहने का यह है कि एक भी चीज उनके घरमें ऐसी नहीं थी जिससे मनुष्य को आराम मिले या प्रसन्नता

हो। उस परिवार के सब लोग हताश दिखाई देते थे; घर अन्धकारमय; सर्द और आनन्दमय शून्य था। इसके अन्दर की प्रत्येक वस्तु दुःख उत्पन्न करने वाली थी।

एक दिन गृहिणी ने पढ़ा कि गरीबी मानसिक रोग है। यह पढ़कर तत्काल ही उसने अपने विचारों की रुख बदली और धीरे धीरे अपने हृदय में असाहस असिद्धि और निराशा के भावों के स्थान में इनके प्रतिपक्षी साहस सफलता और आशा के भावों को स्थान देने लगी; और बहुत सफाई और प्रसन्नता से रहने लगी उनका परिवर्तित जीवन ऐसा मालूम होता था कि मानों वह बहुत आला दर्जे का है।

इसके उक्त परिवर्तित प्रसन्न जीवन का प्रभाव गृह-पति और अन्य परिजनों पर भी हुआ। सारे परिवार ने उसका अनुकरण किया और सबके चहरों पर रौनक दिखाई देने लगी। आशावाद (Optimism) ने निराशावाद (Pessimism) का स्थान लिया। गृहपति ने अपने स्वभाव को पूर्णतया बदल दिया वह पहिले बिना बाल बनवाये; बिना बाल संभारे; मलिन पोशाक और फटे टूटे जूते पहिने बहुत बुरे ढंग से अपनी नौकरी पर जाता था उसके बजाय वह शरीर को स्वच्छ कर ढंग से अपनी पोशाक पहिन काम पर जाने लगा। अपने विचार और व्यवहार भी ऊंचे और सफलता के करने लगा। परिजन भी गृह-पति की भांति ही स्वच्छ होकर अपने कामपर जाने लगे। मकान की मरम्मत कराई गई; वह अन्दर और बाहिर से रंगाया गया; और उस कुटुंब ने दरिद्रता और असफलता की तस्वीर से-कल्पना से-सदा के लिए मुंह मोड़ लिया।

उक्त परिवर्तनों का यह परिणाम हुआ; कि यह लोग जिसे "सद्भाग्य" कहते हैं उसे खींच लाये। मानसिक वृत्ति के परिवर्तन ने और बाह्य हताशा के बजाय सफलता और प्रसन्नता दिखाने के परिवर्तन ने गृहपति के मन में नवीन आशा और साहस का संचार किया; उसकी योग्यता बढ़ाई; उसके काम में तरक्की कराई। अन्य परिजन भी गृहपति की तरह ही मानसिक वृत्तियों में परिवर्तन करके उन्नति कर गये। दो

या तीन वर्ष के अन्दर तो आशा और हिम्मत के उत्पादक और उत्साही वातावरण में रहने से वह परिवार एक दम बदलगया। समृद्धि शाली बनगया.

प्रत्येक मनुष्य को अपनी इच्छाओं का अभिनय-पार्ट-अवश्य करना चाहिए। यदि तुम किसी कार्य में सफलता लाभ करने का प्रयत्न कर रहे हो तो तुम्हें चाहिए कि तुम उसका अभिनय अच्छी तरह करो । यदि तुम अपने आपको ऐश्वर्यवान बनाने का प्रयत्न कर रहे हो तो अपने आपको एक धनाढ्य की भांति ही रक्खो; कमजोरी को निकाल कर, वीरता और उत्तमता से इस अभिनय को पूरा कर दिखाओ। तुम्हें अनुभव करना चाहिये कि मैं धनाढ्य हूं; तुम्हें सोचना चाहिए कि मेरे यहां द्रव्य की अभिवृद्धि होती जा रही है; तुम्हारे वर्ताव से लोगों को मालूम होना चाहिए कि तुम धनाढ्य हो। तुम्हारे आचरण, विश्वास पूर्ण चाहिए। अपने इस विश्वास पर तुम्हें दृढ़ता दिखाना चाहिए कि तुम स्वमेव अपना कार्य पूरा करने की योग्यता रखते हो; और उत्तमता के साथ उसे पूरा कर सकते हो। कल्पना करो कि एक नाटक का खेल है। उसमें प्रधान नायक एक ऐसा व्यक्ति है जिसने निज भुज बल से; धन; कीर्ति और उत्तम चरित्र प्राप्त किये हैं। उस प्रधान पात्र को पार्ट प्ले करने का काम एक एक्टर ने अपने जिम्मे लिया है। अब वह एक्टर यदि हतसफल मनुष्य की सी पोशाक पहिन कर स्टेज पर आयगा; अवलओं; फूहड़ों और आलसियों की तरह या मानों उसे कुछ इच्छा ही नहीं है; उसमें शक्ति या जीवन ही नहीं है; इस ढङ्ग से स्टेज पर चलने लगेगा; यदि लोग उसका दिखाव ऐसे ढङ्ग का होगा; जिससे यह प्रगट हो कि उसे विश्वास नहीं है कि वह द्रव्य उपार्जन कर सकेगा या उसे कभी व्यापार में सफलता प्राप्त होगी; यदि वह झिझकता हुआ; भीति पूर्वक स्टेज पर फिरने लगेगा; यदि लोग उसके चहरे पर इस प्रकार के भाव पढ़ सकेंगे:—"ओह! अब मुझे विश्वास नहीं रहा कि जिस कार्य साधन का प्रयत्न कर रहा हूं उस में मुझे कभी सफलता प्राप्त होगी; यह कार्य-भार मेरे लिए बहुत ज्यादा है।

यद्यपि दूसरे लोगों ने यह काम पूरा किया है; परन्तु मैं नहीं सोच सकता कि मुझे भी कभी सफलता होगी और मैं भी एक दिन धनी हो जाऊंगा। कुछ भी हो मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि अच्छे पदार्थ मेरे लिए नहीं हैं। मैं एक साधारण मनुष्य हूं। मुझे विशेष कुछ अनुभव नहीं है, मुझे अपने ऊपर विश्वास भी नहीं है; और न मैं यह अनुमान ही कर सकता हूँ कि मैं भी धनाढ्य बन जाऊँगा या संसार में मेरा भी कुछ प्रभाव हो जायगा।" तो बताओ कि दर्शकों के हृदयों पर उसका क्या प्रभाव होगा? क्या लोग उससे आत्मविश्वास करना सीखेंगे? क्या उससे लोगों के हृदय में शक्ति और उत्साह का संचार होगा? क्या लोग उससे यह सोच सकेंगे कि गरीब भी प्रयत्न करके धनी बन सकता है? क्या लोगों को उससे कोई ऐसा कार्य करने का साहस मिलेगा जिससे धन उपार्जन किया जाता है? क्या प्रत्येक व्यक्ति ऐसा नहीं कहेगा कि विचारे को अन्त में असफलता ही हुई? क्या लोग उसकी हताश होकर बीच में कार्य छोड़ देने की मूर्खता पर नहीं हंसेंगे।

मान लो कि एक मनुष्य धनी बनने का निश्चय करके किसी काम में लगा है। मगर अपनी गरीबी का उसे हर समय विचार रहता है बात २ में वह स्वीकार करता है कि मैं रुपया कमाने के योग्य नहीं हूँ; प्रत्येक मनुष्य के सामने वह कहता है:—"मैं अभागा हूँ। इसलिए मैं तो हमेशा गरीब ही रहूँगा।" क्या तुम सोच सकते हो कि वह मनुष्य धनी बन जायगा। जो मनुष्य गरीबी की बातें करता है, गरीबी के विचार करता है, गरीबी में रहता है, गरीबों का सा बर्ताव करता है, हतसफलों के समान पोशाक पहिनता है, और असभ्य कुटुंब में कभद्द दरिद्रियों से घर में रहता है, तो सोचो कि वह अपने कार्य को कितने समय में सफल कर सकेगा। यानी वह कितने काल में धनाढ्य बन जायगा।

जिस वस्तु को हमें प्राप्त करना है उसके लिये जितनी मानसिक क्रियाएं होंगी—जितना उसकी प्राप्ति का विचार किया जायगा—उतनी ही शीघ्र वह वस्तु हमें प्राप्त होगी। जो मनुष्य सफल

होना चाहता है उसे अवश्य यह सोचना चाहिए कि मैं प्रत्येक कार्य में सफलता लाभ करने के लिये उत्पन्न हुआ हूं, प्रसन्नता मेरा जन्म सिद्ध हक़ है। प्रत्येक के अन्दर एक दिव्य-शक्ति होती है, यदि मनुष्य उस पर विश्वाश करता है तो वह उसे अवश्यमेव सफलता के दिव्य प्रकाश में पहुंचा देती है।

झिझकन, भय, सन्देह और दरिद्रता व असफलता के विचार अपने हृदय से निकाल दो। जब तुम अपने विचारों के मास्टर बन जाओगे; जब तुम एक बार अपने हृदय पर अधिकार करना सीख जाओगे; तब उत्तम पदार्थ स्वयमेव तुम्हारे पास आने लगेंगे। निराशा, भय, सन्देह और अनात्म-विश्वास बहुत बड़े घातक कीड़े हैं। इन्होंने हजारों, लाखों मनुष्यों की सफलता और प्रसन्नता को मिट्टी में मिला दिया है—नष्ट कर दिया है।

यदि संसार भर के गरीब आदमी अपने अन्धकार पूर्ण और निराशोत्पादक परिस्थितियों की ओर पीठ दे सकें; यदि वे प्रसन्नता और प्रकाश की ओर रुख कर सकें तो वे थोड़े ही दिनों में आनंदित हो सकते हैं। यदि ज्यादा नहीं और वे इतना ही दृढ़ निश्चय कर लें कि हमारा दरिद्रता और खराबियों से कोई सम्बन्ध नहीं है, तो यह दृढ़ निश्चय ही कुछ काल के अन्दर उन्हें धनी और उच्च मनुष्य बना दे।

प्रत्येक बच्चे को सिखाना चाहिए कि सफलता उसके लिये है; संसार के उत्तम २ पदार्थ उसीके लिए बनाये गये हैं। बच्चा यदि इस प्रकार से शिक्षित किया जाता है तो उसको युवावस्था में उक्त प्रकार के दृढ़ विचार बहुत भारी सहायता पहुंचाते हैं।

द्रव्य पहिले मन में उत्पन्न किया जाता है; फिर बाहिर से उसकी प्राप्ति होती है; जैसे कि प्रत्येक काम को आचरण में लाने के पहिले उस पर विचार किया जाता है।

जब एक युवक डाक्टर-वैद्य-बनने का निश्चय करता है; तब वह अपने आपको यथा सम्भव डाक्टरी परिस्थितियों के अन्दर ही रखता है। वह वैद्यक

को ही विचार करता है; वैद्यक की बातें ही करता है; वैद्यक का ही अध्ययन करता है; यहां तक कि वह वैद्यक में ही गर्क हो जाता है। दूसरा यदि वकील बनना चाहता है तो वह अपने आपको कानूनी (Legal) वातावरण में रखता है और क़ानूनी का अध्ययन करता है; क़ानून की बातें करता है और क़ानून के ही विचार करता है। इसी तरह जो मनुष्य धनाढ्य बनना चाहता है-सफल होना चाहता है-उसे चाहिए कि वह द्रव्य की सफलता का विचार करे। दृढता पूर्वक विपत्ति या दरिद्रता की शक्ति का मुकाबिला करो. नहीं तो यह तुम्हें क्षुद्र बना देगी। लगातार हृदय में यह दृढता से जमाते रहो कि तुम परिस्थितियों से बड़े हो। विश्वास करो कि मैं वातावरण को अपने अधीन करने वाला हूं-मैं परिस्थितियों का स्वामी हूं दास नहीं।

जितनी भी शक्ति तुम एकत्रित कर सकते हो करो और निश्चय करो कि संसार में असंख्य उत्तम पदार्थ हैं। प्रत्येक मनुष्य उन पदार्थों में से जितने चाहे ग्रहण कर सकता है। मैं भी किसी मनुष्य को बिना कष्ट पहुँचाए या बिना पीछे धकेले उनमें से अपना भाग लूँगा। प्रकृति ने जिस समय तुम्हें उत्पन्न किया था उसी समय उसने निश्चित कर लिया था कि तुम्हें सफलता मिले; द्रव्य मिले; सफलता और द्रव्य तुम्हारे जन्म-सिद्ध स्वत्व हैं। तुम्हारा शरीर सफलता के परमाणुओं से बना हुआ है; प्रसन्न रहने के लिए तुम्हारा ढांचा ढाला गया है। तुम्हें चाहिए कि तुम अपने ईश्वरीय स्थान पर पहुंचने का प्रयत्न करो-अपने भाग्य को सर्वोत्कृष्ट बनाओ।

जब तुम यह निश्चय कर लोगे कि मेरा दरिद्रता के साथ यावज्जीवन कोई संबन्ध नहीं होगा; मुझे इससे कुछ कार्य नहीं है: मैं अबसे अपनी पोशाक पर, अपने शरीर पर, अपने वर्त्ताव में, अपनी बातों में, अपने कार्यों में और अपने घर में इसका कोई चिन्ह भी नहीं रहने दूंगा: मैं दुनियां को अपनी वास्तविक शक्ति बताऊंगा। मैं बताऊंगा कि

असफलता मेरे लिए कोई चीज़ नहीं है; मैंने सदा के लिए अपनी दृष्टि उत्तम पदार्थों की ओर कर दी है; सफलता और द्रव्य-प्राप्ति मेरे बायें हाथ का खेल है; मुझे दुनियां की कोई चीज अपने दृढ़-निश्चय से नहीं हटा सकती है; तब तुम्हारे अन्दर एक बड़ी भारी शासनकर्त्री शक्ति उत्पन्न होगी आत्म-श्रद्धा और स्वाभिमान बढ़ने लगेंगे और तुम आश्चर्य के साथ कहोगे कि यह परिवर्तन कैसे हो गया।

दरिद्रता के भद्दे चित्र की ओर पीठ फेरने से ही—यह निश्चय करने से ही कि दरिद्रता और असफलता के साथ मेरा कुछ लेना देना नहीं है—जो काम तुम करना चाहते हो वह आधा हो जायगा। अर्थात् तुम्हें यथा सम्भव अच्छी पोशाक पहिनना पड़ेगा; साफ़ और स्वच्छ रहना पड़ेगा; क्षुद्र बातों के बजाय उत्तम बातें करनी होंगी; मस्तक को अवनत रखने के स्थान में उन्नत रखना पड़ेगा और श्वानवृत्ति करने, सविषाद विलाप करने और भाग्य को कोसने के बजाय महत्ता के साथ संसार को देखना पड़ेगा, और ये बातें तुम्हें वह शक्ति प्रदान करेंगी जो सफलता और उच्चता के प्रकाश में पहुंचाने वाली हैं। हृदय में निराशा के स्थान में आशा का वास होगा और नवीन शक्ति और नवीन बल का अपने अन्दर संचार देख कर तुम रोमांचित हो जाओगे।

जब लोगोंने इस बड़े भारी सिद्धांत को समझा, कि मनुष्य लगा तार जिस वस्तुका विचार करता है उस की प्राप्ति के लिये उसकी निवृत्ति होती है और पूर्ण बल के साथ प्रयत्न करनेसे वह वस्तु उसे प्राप्त भी अवश्यमेव हो जाती है. तब उनमें से हजारों इस महान सिद्धान्त को आचरण में लाये और वे सदा के लिए दरिद्रता से छूट गये।*

---

* Peace, Power and plenty नामक अङ्गरेजी पुस्तक के Poverty नामक लेखका अनुवाद।

(ज्ञानि से)

बरगद की विशाल वृक्ष जिसकी शाखायें इस समय गगन का चुम्बन कर रही हैं एक समय पृथ्वी के पेट में राई के समान छोटा सा बीज था।

पण्डिता रमाबाई

हिन्दू समाज से ठुकराई हुई महिला ।

पण्डिता रमाबाई—अब इस संसार में नहीं हैं। सन् १९२२ के ५ एप्रिल को उनका देहान्त होचुका है उनका नाम सुननेसे ऐसा मालूम होता है कि वे हिन्दू थीं। पर नहीं वे अब हिन्दू नहीं ईसाई हो चुकी थीं। पण्डिता रमाबाई प्रेम, करुणा और त्याग की साक्षात् मूर्ति थीं। भारतीय महिलाओं का उन्होंने बड़ा उपकार किया है। पूना का विशाल शारदासदन उनकी अमरकीर्ति है।

पण्डिता रमाबाईका जन्म सिपाही विद्रोह के समके समय अर्थात् सन् १८५८ में हुआ था। इनके पिता पण्डित वासुदेव शास्त्री महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। संस्कृत साहित्य के अगाध और पारंगत पण्डित होते हुए भी आप स्त्री-शिक्षा के भयङ्कर पक्षपाती थे। इसी महा अपराध के कारण आपको आपकी जाति ने जाति से बाहर कर दिया था। आप अपनी धुनके पक्के थे। आपने अपनी स्त्री को संस्कृत-साहित्य की ऊंची शिक्षा देकर पण्डिता बना दिया। इससे महाराष्ट्र का ब्राह्मण समाज और भी बिगड़ उठा। समस्त वायुमण्डल कुपित होगया। अन्तमें लाचार हो पं० वासुदेव शास्त्री को गांव से बाहर जंगल में कुटी बनाकर रहना पड़ा। इसी समय सन् १८५८ में जब कि अभी सिपाही विद्रोह की अग्नि शान्त भी नहीं हुई थी, पण्डिता रमाबाई का जन्म हुआ। रमाबाई की विदुषी माता ने रमाबाई को संस्कृत साहित्य की शिक्षा दी और थोड़ेही वर्षों के परिश्रम से रमाबाई अपनी प्रखर और निर्मल बुद्धि के कारण पण्डिता हो गई। ९ वर्ष की अवस्था में लोगों ने उनका विवाह कर देने पर जोर दिया था। पर पं० वासुदेव शास्त्री ने इसे अशास्त्रीय तथा हिन्दू-जाति-संहारक बताकर मना कर दिया। रमाबाई जब १५-१६ वर्ष की हुई और उनकी बुद्धि परिपक्व होगई

तो विवाह के लिये वर तलाश किया जाने लगा। परन्तु उस समय हिन्दू समाज में धर्म और शास्त्रों का नाम लेकर बड़ा अन्याय होता था। किसी महाराष्ट्र ब्राह्मण ने पण्डिता रमाबाई जैसी वयस-प्राप्त विदुषी से विवाह करना स्वीकार न किया। इसी समय पण्डिता रमाबाई के माता पिता और एक मात्र भाई का देहान्त होगया। निराश्रिता रमाबाई का कोई आश्रय न रहा। महाराष्ट्र के ब्राह्मण समाज से तिरस्कृत होकर उस जवानी की अवस्था में वे कलकत्ता आई' यहां स्त्री-शिक्षा और हिन्दू महिलाओं की रक्षापर उनके कई जोरदार भाषण हुए बङ्गाली समाज पण्डिता रमाबाई की विद्वत्ता और बुद्धि की प्रखरता को देखकर दङ्ग रह गया। बंगाल की विद्वत—परिषद् ने पण्डिता रमाबाई को "सरस्वती" की उपाधि से विभूषित किया। कलकत्ता में स्वर्गीय राममोहन राय ने रमाबाई की प्रवृत्ति को लोकसेवा की ओर आकर्षित किया। रमाबाई हिन्दू महिलाओं पर होते अत्याचार को देखकर दुःखितहो उठो थी। इन्हीं दिनों पण्डिता रमाबाईने विपिनविहारीमेधावी नामके एक वकील बङ्गाली ब्राह्मण से विवाह कर लिया। इसके बाद रमाबाई के गर्भ से मनोरमाबाईका जन्म हुआ जो ऊंची शिक्षा प्राप्तकर आजभी अपनी माता द्वारा स्थापित शारदासदनका सञ्चालन कर रही हैं और सैकड़ों अनाथ हिन्दू स्त्रियां सदनमें रहकर शिक्षा प्राप्त करती हुई आश्रय ग्रहण कर रही हैं।

मनोरमाबाई के जन्मके थोड़े दिनों के बाद पण्डिता रमाबाईके पति श्री विपिनबिहारी का देहान्त हो गया। पण्डिता रमाबाई फिर निराश्रित हो गईं। अब उन्होंने घरबारके सब काम-धन्धे छोड़कर अपनीही जैसी निराश्रिता हिन्दू महिलाओं को शिक्षा देकर स्वावलम्बिनी बनानेका काम हाथमें लिया। परन्तु धनाभाव, समाज से तिरस्कृत से खिन्न होकर रमाबाई कुछभी न कर सकी। कुछ लोगों का कहना है कि हिन्दू समाज से तिरस्कृत होकर एक बार विदुषी रमाबाई कलकत्तामें वेश्या-वृत्ति ग्रहण करने के लिये आई थी। परन्तु इसी समय रमाबाई का अन्तः-

नान्धकार दूर हो गया। उन्होंने कष्ट-मय जीवन बिताना स्वीकार कर लिया और नीचे की ओर फिसलता हुआ पांव रुक गया। यहां एक बात का उल्लेख कर देना औरभी आवश्यक है कि पण्डिता रमाबाई का चरित्र बहुतही ऊंचे दर्जे का था। उनके आचार पर जरासा भी धब्बा नहीं लगा। मालूम नहीं साध्वी और पतिव्रत धर्म परायणा दयामयी रमाबाई किन कारणों से विवश होकर धर्म से पतित होने लगी थी। परन्तु भगवान ने चेतावनी देकर रमाबाई को सचेत कर दिया।

अन्त में भारत में कुछ काम न बनता देख रमाबाई किसी तरह से इंगलैण्ड पहुंची। बालिका मनोरमा साथ थी। इंगलैण्ड में कुछ दिन रहकर पण्डिता रमाबाई ने अंगरेजी साहित्य का अध्ययन किया और इसके बाद वे अमेरिका चली गईं। वहां वे कई वर्ष रहीं। उनकी प्रखर बुद्धि और सात्विक जीवन तथा परिमार्जित विचारों को देख कर अमेरिका के उदारहृदय गुणग्राही लोग अवाक् रहगये। संस्कृत के अपूर्व पाण्डित्य ने लोगों को चमत्कृत कर दिया। वे सब तरहसे पण्डिता रमाबाई की सहायता करने को तैयार होगये।

पण्डिता रमाबाई ने जिस जाति में जन्म लिया था, उससे हमेशा तिरस्कृत हुई थीं। इसके सिवा भारत की निराश्रिता महिलाओं के पतन और हिन्दू समाज की अनुदारता को देखकर रमाबाई का हृदय चूर्ण विचूर्ण होचुका था। भारत के नारीत्व को जागृत करने के लिये जो उन्होंने भारत में उपाय किये वे तिरस्कार और घृणाकी दृष्टिसे देखे गये। धनाभाव ने मनकी उमंग को मनही में रहने दिया। परन्तु हिन्दू महिलाओं के भयंकर तिरस्कार और पतन ने दयामयी रमाबाई के विशाल हृदय में भीषण ज्वाला प्रज्वलित करदी थी। रमाबाई अन्त में ईसाई होगई। उन्होंने क्रिश्चियन धर्म को हिन्दू जाति से तिरस्कृत होने पर स्वीकार करलिया परन्तु इससे भी उनके मनको शान्ति और निराश्रिता हिन्दू महिलाओं को

शिक्षित और स्वावलम्बिनी बनाने के लिये धन की अपील की अमेरिका के गुणग्राही उदारचेता लोगों ने तीन लाख से भी अधिक का चन्दा करके उनको भारत के लिये विदा किया। बम्बई में आकर मातृ-जाति के कल्याण के लिये उन्होंने "शारदा-सदन" नामका आश्रम खोला जिसे पीछे वे पूना ले गईं। पूना में स्थापित इस आश्रम ने आज तक हजारों हिन्दू महिलाओं को आश्रय दिया है। पतित होती हुई हिन्दू महिलाओं को नर्क के मार्ग से हटाकर शिक्षिता और स्वावलम्बिनी बनाया। इस आश्रम पर किसी धर्म की छाप नहीं लगी है। इस आश्रम का द्वार सभी निराश्रिता महिलाओं के लिये खुला है। खेती बाड़ी और शिल्पकला तथा शिक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध है। आज भी सैकड़ों निराश्रिता अनाथ हिन्दू महिलायें इसमें आश्रय पाकर जीवन निर्वाह करती हैं।

एक बार स्वामी दयानन्द जी ने पण्डिता रमाबाई से भेंट होने पर उनसे फिर हिन्दू हो जाने को कहा था। परन्तु रमाबाई ने हिन्दू समाज द्वारा दुर तिरस्कार की बात कहकर स्वामीजी को साफ जवाब दे दिया।

(विश्वमित्र से)

कन्याओं के लिये बूढ़ों के खंजर से बचने के सहज और सरल उपाय।

कुंवारे भाइयो और बहिनो! जिन माता पिताओं ने तुमको पाल पोष कर बड़ा किया और जिन्होंने तुम्हारे पालन करने में अनेक प्रकार के दुःख भी सहे, वे ही आज तुम्हारे जीवन के शत्रु होने लग गए हैं। तुम्हारी गर्दन पर छुरा चलाया जाता है। तुम गौओं के समान गिनी जाती हो। गौ यदि कसाई के हाथ बेचदी जाती है तो वह बिचारी उसीके साथ होजाती है, डीडाड़े पाड़ पाड़ कर तथा आँसू बहा बहा कर रह जाती है क्योंकि वह बोल नहीं सकती, वह बिना ज़बान का जानवर है। तुमको गोले में से उठाकर झूले में सुलानेवाले भी तुमको रामगढ़ की तैयारी करने वाले किसी बूढ़े और अनाधिकारी खूसट को बेच देते हैं तो तुम भी उन गौओं के समान उनके साथ चली जाती

हो, क्योंकि तुम्हारी ज़बान में भी लोक लाज का ताला लगा हुआ है। तुमभी एक प्रकार से बिना ज़बान की जानवर ही हो। कहावत मशहूर है कि "गऊ और बेटी, जहाँ दी जावे वहीं बिना उज्र के चली जाती है, इस कहावत का आज बेजा इस्तैमाल होरहा है। जब तुम ५-६ वर्ष की होने लगती हो तभी से तुम्हारे माँ बाप तुमको कुए में ढकेलने का उपाय सोचने लग जाते हैं। बाज़ार में बकरी की भांति तुमको नीलाम किया जाता है, नीलाम की बोली के आगे जवान और कमाऊ कुँवारे लड़कों की गुज़र नहीं वे बिचारे दरवाज़ा ठोक ठोक कर और माथा मार मार कर चले आते हैं। वहाँ तो यह बात है कि जो अधिक रुपया दे वही तुम्हारे साथ विवाह करने का हक़दार समझ लिया जाता है, चाहे वह ४५-५० वर्ष का खुर्राट शादी होने के दो रोज बादही क्यों न मरजाने वाला हो। तुम्हारे माँ बाप तुम्हारा भला बुरा न सोचकर तुम्हारी क़ीमत के हज़ारों रुपए लेकर तुमको बूढ़े क़साइयों के हाथ बेच देते हैं, तुम शरम और लोक लाज के मारे नहीं बोल सकती हो। जितनी तुम लाज रखती हो उतना ही अधिक तुम्हारे साथ अन्याय होता जाता है। बूढ़े नालायकों ने तुम्हारे सुहाग पर खंजर भोंकने को कमर कस रखी है।

जिन पञ्चों से तुमको अपनी रक्षा का भरोसा होना चाहिए वे महापापी तो तुम्हारी बिक्री के लड्डू खाने की दो २ चार २ महीने पहले ही से बाट देखा करते हैं। बिरादरी की औरतें तुम्हारे गले पर छुरी चलाने की खुशी के बताशे इकट्ठा करने के लिए तीन २ महीना पहिले ही से बरतन खाली करने लगजाती हैं। बिरादरी वालों के पास तो हँसकर दाँत काढ़ने और घरमें बैठ कर एक दूसरे की चरचा करने के सिवाय कुछभी नहीं है। तुम इनसे अपनी भावी सुहाग रक्षा की आशा छोड़दो। अगर यह लोग अपनी ज़बानका चटोरापन छोड़ देवें और फ़ज़ूल खर्ची को तोड़ देवें तो न तो ब्याह में इतना रुपया खर्च हो और न इनके पेट में आग लगाने के लिए तुमको हज़ारों रुपयों में बूढ़े दादाजी साहब के साथ तुम्हारे ब्याही जाने की नौबत आवे। यह पापी पञ्च ही तो तुम्हारे आँसुओं की घुटकों से मोतीचूर के लड्डू, बुकती, जलेबी और सेव आदि गले में उतारते हैं। तुम्हारे पास कहने को आम तौर पर कोई

ऐसी नज़ीर नहीं कि अमुक स्थान के पंच अमुक वृद्ध विवाह और कन्या विक्रय में शामिल न हुए हों। भला मोटी बात है कि जिनने तुमको पाल पोष कर बड़ी किया वे ही जिन्दे मास को बेचते हैं तो इन हत्यारों को इतनी परवाह ही क्यों होने लगी। यह नालायक तो हमेशा लड्डुओं की धुन में सवार रहते हैं, इनको किसी जाति वाले के हानि लाभ से कोई सरोकार नहीं।

दुष्ट माँ बापों से तुमको भरोसा नहीं रहा, नालायक पञ्चों को तुम्हारी कोई परवाह नहीं है, अब तुम्हारे पास कोई उपाय नहीं है, सिवाय इसके कि तुम खुद बेजाँ लाज शरम छोड़कर अपने पावों पर अपने आप खड़ी होना सीखो। तुम्हारी लाज शरम उस हद तक ही वाज़िब है जब कि तुम्हारे माँ बापों और पञ्च प्रभुओं को तुम्हारे सुहाग की कुछ लाज हो और इस दुनियाँ के परदे पर तुम्हारी सुनवाई करनेवाला भी कोई हो।

देखो, कान लगाकर सुनो और जो कुछ तुमसे कहा जाय उसे गाँठ देकर अपनी सावलों (लूगड़ी) के पल्ले बाँधलो, तुम्हारी भी शादी अब होने वाली है। शादी के उम्मेदवार धनी बूढ़े लोग तुम्हारे दिलों को लुभाने तथा सबकी निगाह में जवान बनने के लिए अनेकानेक प्रयत्न करते हैं। जब यह सगाई की फिक्र में अपने घर से निकलते हैं तो दस पाँच रुपए तो यह हजामत के लिए लेकर निकलते हैं और सुगन्धित तेल के मालिश से दिन में तीन २ मरतबा हजामतें बना बना कर उस्तरे की रगड़ से अपने गालों को लाल चट्ट बना लेते हैं, मूछें कटा कर बसफसी करा लेते हैं, माथे के सफेद बालों पर रङ्ग चढ़ा लिया करते हैं, और ताक़तवर तथा हट्टा कट्टा बनने के लिए वैद्यों और हकीमों की तमाम शीशियाँ ऊंधी कर डालते हैं। क़लई की भड़क चढ़ा कर इन्हें अपने आपको जवान बतलाने की बहुत ही फिक्र रहती है। चाइना सिल्क का (रेशमी) कोट, बढ़िया चेक का कमीज़, कलकतिया धोती जोड़ा, सर पर बढ़िया पगड़ी; पावों में मखमली जूते और कुछ इधर उधर के जेवर माँगे तूंगे पहन कर यह शादी के उम्मेवार बूढ़े लखपती के पूत बने फिरते हैं। तुम्हारे माँ बाप धन के लोभ में आकर जवान बनने वाले इन बूढ़ों के पंजे में

फँस जाते हैं। तुम्हारे अगले जन्म के शत्रु गाँव गुरुजी महाराज भी किसी तरह से ग्रहगोत्र मिलाकर नजदीक का अच्छा सा सावा सा ढूंढ निकालते हैं। दिन रात गौमुखी में हाथ रखने वाले महाराज को दक्षिणा मिलते ही बूढ़ेजी के तिलक भी करा दिया जाता है। बताशों के भुखमरे पापी पञ्चड़े भी लग्न के दस्तूर में शामिलहो संसार भर की बातें बना बना कर चलतान होते हैं। चारों तरफ़ खुशी ही खुशी दीखती है। बापजी ने थैलियाँ लटकालीं—"अजी, कल्याणी की मा! आज तो चाँवल दाल करज्यो। आज आछ्या दिन उग्यो छे।" हा, हा, आज चाँवल दाल खाने को मिलेगा। धर्म के ठेकेदार गाँव गुरुजी ने भी हाथ साफ़ कर लिया है, विचारे भुकड़ों को भी आज बतासे मिले हैं, बड़ी मुश्किल से मीठा दूध मिलेगा, पटेलन स्त्रियाँ फुदक फुदक कर फिर रही हैं, घर में बैठी २ फोलरियाँ, आँवला, नेवरियाँ, बाजूबन्द आदि गहनों को वालों की कूंची से उजाल रहीहैं, क्योंकि ठाम ठाम के खूबसूरत बराती उनको निरखने के लिए आवेंगे। कोई २ जगह पड़ियाँ ही रगड़ी जा रही हैं। उधर बूढ़े की बरात में आने वाले लोगों मे भी तैयारी करली है, धोबी को कपड़े दे दिए गए हैं, पगड़ियाँ रँगने को डालदी हैं, बच्चों के भी कपड़े सिलाए जा रहे हैं, केशरञ्जन की शीशियाँ ख़रीदी जा रही हैं, चारों तरफ़ खुशी ही खुशी है। लेकिन मेरी धर्म की बहिनो! ये सब बाजे तुम्हारी छाती पर बज रहे हैं। तुम्हारे लिए कोई खुशी नहीं है। तुम्हारी ज़िन्दगी आज विक चुकी है तुम्हारे भावी सुहाग की गर्दन पर खञ्जर रख दिया गया है, अब सिर्फ़ 'बिस्मिल्लाह' होने की देर है। याद रखो जब इन बूढ़ों के तिलक होजाता है तो ये लोग सगाई के वक्त या सगाई से शादी तक के दरमियान में तुम्हारे लिए उम्दा २ सोने चाँदी के गहने बढ़िया २ सावलियाँ, चट्या पट्या की घाघरियाँ रेशमी और बेल बूटेदार कुड़तियाँ, खाने के लिए बम्बई के केले, कलमी आम, नागपुर के सन्तरे, बादाम, पिस्ता आदि मेवा वग़ैरः भेजकर तुम्हारे दिलों को चुराने

लगते हैं। तुम्हारी मा, तुम्हारी काकी, तुम्हारी भौजाइयाँ तुमको बड़े उमङ्ग से पहनने और खाने के लिए बूढ़े के वहाँ से आया सामान तुम्हें दे देकर उस बूढ़े कसाई की तरफ़ तुम्हारे दिलोंको खींचा करती हैं। तुम्हारे भावी सुहाग की गर्दन मरोड़ने वाली तुम्हारी माँ और भौजाई वग़ैरः खुद भी होने वाले जवाँई जी और ननदोईजी की तरफ़ से आए हुए फलों और मेवों को उनकी तारीफ़ कर करके खाया करती हैं तुमको तो यह भी याद नहीं है कि जिसके पल्ले तुमको बाँधा जारहा है वह शख्स कौन है? और किस तरह का है? तुमको तो लाज और शर्म के क़िले में बन्द कर रक्खा है।

मेरी प्यारी बाइयो और बहनो! तोड़दो इस सत्यानाशी लोकलाज के ताले को और फोड़दो इस बरबादी की शरम के क़िले की दीवारों को। आओ, मैं तुमको अपने पापी माँ बापों और भुखमरे पञ्चों की दुष्टता से बचने तथा शादी के उम्मेदवार बूढ़े नालायकों के बढ़ते हुए हौसले दबानेकी तरकीबें बतलाऊं। जबतक तुमनहीं चेतोगी तुम्हारे ऊपर छुरी चलती ही रहेगी। इसको अच्छी तरह समझलो और सोचलो:—

(शेष फिर)

"तब महिला कहलायेंगी"

(लेखक—श्री० हरस्वरूपजी त्रिवेदी)

ललनायें भारत की सच्ची 'तब महिला कहलायेंगी'।
विद्या की नूतन ज्योति से उन्नति-कमल खिलायेंगी॥
गृह कार्यों में दक्ष बनेंगी प्रेमामृत बरसायेंगी।
शील शान्ति श्रद्धा भक्ती से पतिव्रत धर्म सिखायेंगी॥

गार्हस्थ्य जीवन सुखमय हो उत्तम सन्तति पायेंगी।
कुन्ती मन्दालसा वीर विदुला सम मान बढ़ायेंगी॥
ललनायें भारत की सच्ची 'तब महिला कहलायेंगी॥ १॥
सीता सी सतवन्ती बनकर कठिन कष्टभी पायेंगी।
धर्म हेतु शैव्या रानी बन काशी में बिक जायेंगी॥
स्त्री शिक्षा अनुसुइया का उत्तम पाठ पढ़ायेंगी।
सरोजिनी सदृश भारत का नन्दन विपिन खिलायेंगी॥
ललनायें भारत की सच्ची 'तब महिला कहलायेंगी'॥ २॥
भाषा भेष भाव परदेशी मनसे सब बिसरायेंगी।
भारतीय सभ्यता पुरातन पुरुषों में फैलायेंगी॥
गृह देवियां लक्ष्मी बनकर कुलकी लाज रखायेंगी।
राम, कृष्ण, प्रहलाद, धर्म ध्रुव अवतारी प्रगटायेंगी॥
ललनायें भारत की सच्ची 'तब महिला कहलायेंगी॥ ३॥
काया पलट समय सतयुग सा कामिनियां जब लायेंगी
साक्षात देवी स्वरूपिणी सुन्दरियां बन जायेंगी।
'व्योपारे वसते लक्ष्मी' का मूल मन्त्र अपनायेंगी
कौशल मयी कलायें फैला जीवन ज्योति जगायेंगी।
ललनायें भारत की सच्ची 'तब महिला कहलायेंगी'॥ ४॥
देशभक्त केशरी बीर लालों को कंठ लगायेंगी।
राष्ट्रीय संग्राम मध्य जब हंस हंस शीश चढ़ायेंगी॥
'त्रिवेदी, राष्ट्रीय रंग की अनुपम झलक दिखायेंगी।
जय भारत, जय २ भारत कह विजय ध्वजा फहरायेंगी॥
ललनायें भारत की सच्ची 'तब महिला कहलायेंगी॥ ५॥

सुधार किस लिये

देश का सुधार-जाति का सुधार होना चाहिए ऐसा जरूरी मालूम पड़ता है पर यह क्यों होना चाहिए इससे तुझे क्या लाभ इस तरफ ध्यान जातेही तेरी दृष्टि फिर जाती है क्योंकि तू सुधार अपने लाभके लिए चाहताहै और वह लाभ भी तू प्रत्यक्ष और जल्दी और इतना कि जिसकी सीमा नहीं इतनी जल्दी प्राप्तकरना चाहताहै। और जाति सुधार से होने वाला लाभ तू जिस दृष्टि से प्रत्यक्ष देखना चाहता वह नहीं मिलता क्योंकि कितनेक कार्य्य ऐसे होते हैं कि जिसका फल-प्रत्यक्ष फल बहुत देर से मिलता है।

तू दान देता है-जिस धन को बड़े कष्ट से प्राप्त किया उसे मुफ्त में देता है। वह किस आशा से इस आशा से कि उसका अच्छा फल मुझे मिलेगा और वह इस जन्म में नहीं अगले जन्म में यह तू क्यों करता है इसलिए कि किए हुए पाप-बुरे काम उसके परिणाम से बचूं पर तू इतना उलटा अर्थात् औंधा कार्य्य क्यों करता है न मालूम प्रथम उस धनको कमाते समय बुरे काम क्यों करता है और अन्तमें उन बुरे कामों के परिणाम से छुटने के लिए उस धन तक को गमा देता है। तेरे इस क्रय विक्रय में न मालूम तू छूटता है या नहीं परन्तु करता जरूर है।

जाति का सुधार—बिगड़ी जाति का सुधार करना सहल नहीं है उसके लिए बड़े प्रयत्नों की जरूरत होती है बड़ी शक्तियों की जरूरत होती है वे सब शक्तियाँ तुझमें हैं किन्तु तेरे शत्रु तुझे मार्ग नहीं सूझने देंगे वे तुझे तेरी शक्ति का परिचय नहीं होने देंगे और यदि तुझे परिचय हो भी गया तो तेरा मार्ग भुला देंगे इसलिए प्रथम तू अपने शत्रुओं से छुटकारा पा और फिर जाति की तरफ ध्यान दे और उसका सुधार कर।

उसके सुधार में तेरा हित तू जो समझता है उसमें गलती है. उसे सुधार

क्योंकि जाति सुधार तू करना भी चाहता है तो अपने। शत्रुओं के फन्दे में पड़कर जिससे तुझे न तो सफलता ही मिलती है और न तेरा उद्देश ही सफल होता है। जाति सुधार का सच्चा उद्देश यह है कि "जाति की दशा देखकर हृदय में अशान्ति होती है उसे दूर करना।"

तू संसार के समस्त काम—जिसमें कि बड़े २ कष्ट भी भोगने पड़ते हैं यह क्यों करता है। तू धन कमाता है उसमें तुझे कितनी दिक्कतें सहन करनी पड़ती हैं अपने आपको भूल कर बुरे से बुरे काम तू करता है। यह किसलिए, इस लिए कि मैं शान्ती से रह सकूं। उस धनको तू खर्च करता है वह किस उद्देश से-केवल एकही उद्देश सामने रहता है और वह यह कि-हृदय को शान्ती मिले इसलिए।

परन्तु इस अशान्ती को आने ही क्यों देता है कि फिर तुझे शान्ती की जरूरत पड़े तो तेरे जीवन में अशान्ती के कारण हैं उन्हें ढूंढ और उसे निकाल डाल फिर तुझे शान्ती के लिये इतने प्रयत्न न करने पड़ेंगे जो कारण तेरेही द्वारा उत्पन्न हुये उन्हें समझ जो कारण जाति के बन्धनों से पैदा हुये उन्हें देख जो कारण देशकी परिस्थिति से पैदा होते हैं उन्हें समझ और उन सबके फलमें तेरा तू ही है इसे समझकर उसे दूर कर सुधार इसीलिये ही है और तू इसेही समझ जा।

तू इस बात को ठीक समझ चुका है कि सुधार दूसरे का करनें का नहीं है तेराही तुझे सुधार करना है-तेरे में जो बुराइयाँ आगई हैं उन्हें निकालना पर फिरभी मोह तुझे सूझने नहीं देता और न तू अपना मार्ग निकाल सकता है। मोह केवल बुरे मार्ग से लेजाकर ही तुझे नहीं फंसाता जब तू अच्छे मार्ग पर चलने लगता है तब वह भलाई के रूप में आता है उसे पहचानना अत्यन्त कठिन होजाता है जब तुझे सुधार करना ही है तो तुझे उसको समझने की चेष्टा करना चाहिये।

तू अपनी बुराई आसानी से देख सकता है और उसे तुही निकालने में समर्थ हो सकता है दूसरा तेरी कमजोरी नहीं पहिचान सकता और न दूसरे में इतनी शक्ति है। प्रथम तू देख

कि तेरे को जो सुख भोगने की लालसा है-अधिकाधिक वस्तुओं के भोगने की इच्छा है यह कैसी है यह तेरी बुराई एवं बुराइयों से अधिक शक्तिमान् एवं तेरे को अधिक पतित बनाने वाली बु-राई है। इसीके कारण ही तेरे अन्दर सभी बुराइयों का संग्रह होरहा है। जरा शान्त हो-इस संसार के झगड़े से बाहर आकर देख-तुझे क्या दीख पड़ेगा यही कि-अधिकाधिक वस्तुओं के उप-भोग की लालसा ने तुझे कितना पतित अपनी शक्ति को न पहचानने वाला बना रखा है।

तू किसी भी महान पुरुष के जीवन चरित्र का निरीक्षण कर-उनके उपदेशों का सार देख उन्होंने काल स्थिति के अनुसार अपने आपको संयमीत रखने एवं त्यागमय जीवन बिताने का ही उपदेश दिया है। त्यागमय जीवन को ही उन्होंने सुधार की कुञ्जी माना है। धार्मिक नियम नीति के कानून और सामाजिक प्रथायें इसी उद्देश से नि-र्माण हुई थीं कि-तू अपने जीवन को त्यागमय बनाकर अपनी बुराइयाँ दूर करे किन्तु आज तू ऊनके सहारे अपने जीवन को अधिक विलासमय बनाता जारहा है और इसका एक मात्र कारण है और वह यह कि-तूने त्यागमय जी-वन को दुःखमय समझ रखा है। और तू अधिक वस्तुओं का भोग यह सुख का कारण समझ रहा है। और तू इसीके सहारे अपने सुधार को बनाना चाहता है। इसीलिए तेरा सुधार दोष पूर्ण है और तू बारबार परास्त होता है।

तेरे इस सुधार से दुनियाँ तुझे अच्छा कह सकती है। लोग तेरी स्तुति पाठ गा सकते हैं। पत्रों में तुझे बहा-दुरी मिल सकती है पर तुझे शान्ती-आत्मिक शान्ती नहीं मिल सकती क्योंकि तू अपने आत्मा को ठगना नहीं चाहता है और दिनों दिन तेरी बुराइयाँ बढ़ती जाती है। घटती नहीं क्योंकि तेरा एक ध्यान बंध जाता है कि मैं अपनी बुराइयों को अच्छी तरह कैसे छिपा सकूं और तू दिनों दिन ऊसी प्रयत्न में लगता जाता है। यह बातें संसार के सामने चलजाती है तू संसार को चकमा दे सकता है-संसार धोका खा सकता है पर आत्मा को धोका देना बड़ी कठिन बात है तू आत्मा को

धोका नहीं दे सकता क्योंकि उस धोके का परिणाम तेरा तुझेही भोगना पड़ता है।

जो चीज़ तेरे पास नहीं है उसेही तू बताना चाहता है। तेरे पास धन नहीं है इसीलिए तू लोगों को मैं धनिक दीखूं जिसके लिए अधिक खर्चा कर कंगाल बनता है। तेरे पास सुधार नहीं है इस लिए तू बड़ी २ गप्पें हांक रहा है। तू आज कल का-इस कलयुग का आदमी है इसलिए तुझे आजकल के सुधार प्यारे लगते हैं उसमें तुझे रस आता है। तेरे को प्लेटफार्म पर चढ़कर व्याख्यान देने में जितना आनन्द आता है उतना करने में नहीं क्योंकि तेरे जीवन का सिद्धान्त ही सुधार के रास्ते से अलग है इसलिए तुझे अपना सुधार त्यागमय जीवन में है सीधा किन्तु यह कठिन समझी हुई बात तू कर नहीं सकता। पर जरा अपने जीवन के पीछे बीते हुए जीवन को देख क्या दीखेगा जो कुछ बिगड़ा है वह केवल असंयमीतपन से ही और उसके लिए एकही उपाय है संयमपूर्ण-त्यागमय जीवन का बिताना।

पर तेरे सामने की परिस्थिति तुझे यह न करने देगी। तेरे शत्रु तुझे अपना सुधार नहीं करने देंगे क्योंकि उन्हें तेरे सुधरजाने पर उच्छृंखलवृती से वे रह नहीं सकेंगे इसलिए उनका यह प्रयत्न रहेगा कि तू अपने मार्ग से वे तुझे गिरावेंगे उस समय तुझको धैर्य बतलाना चाहिए और उनको परास्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

यदि तुझे सुधरना होतो नीचे लिखी बातें हृदय पर अङ्कित कर:—

दूसरे की बुराइयां न देखकर अपनी बुराई ही देखूंगा।

बुराई देख लेने पर उसे दूर करने के लिए निर्बलता न बतलाऊंगा।

अपने जीवन को संयमीत बनाने का यत्न करूंगा।

बुराई को अपने अन्दर आने देने के लिए समयही न दूंगा अर्थात् निकम्मा न रहूँगा।

——:0:——

अगला मार्ग

हम आपको यह बात कईबार बतला चुके हैं कि-समाज का सुधार

करने के लिए "जो समाज की बुराई हो उसका त्याग हमको करना" इससे बढ़कर मुझे यह मार्ग पसन्द नहीं जो आजतक काम में लाया जाता है एवं व्याख्यानबाजी, प्रथम तो समाज में व्याख्यानबाजी का प्रेम बहुत घट गया है। आम जनता को यह खयाल पैदा होगया है कि-व्याख्यान देने वाले प्रायः धनवान लोग होते हैं और वे व्याख्यान केवल नाम के लिए देते हैं न कि हमारे सुधार के लिए क्योंकि जो काम वे आप बुरा कहकर उसकी निन्दा करते हैं वही काम प्रसंग पड़ने पर स्वयं करने लगजाते हैं। इससे हम गरीबों को क्या लाभ। यह विश्वास चाहे झूठा क्यों न हो परन्तु फैला हुआ जरूर है। तथा व्याख्यानबाजी से बातें बढ़कर प्रत्यक्ष काम कम होने लगता है इसलिए मेरी दृष्टि से बुराई का त्याग यही मार्ग ठीक है किन्तु व्यक्तिगत सुधार इस मार्ग से हो सकता है पर समाज सुधार होना यह बात हमारे तर्क शास्त्री को कठिन मालूम हुए बिना नहीं रहती और इसीलिये ही हम अगला मार्ग ढूंढने लगजाते हैं।

यद्यपि व्यक्तियों से समाज बनने के कारण व्यक्तियों के सुधार के साथही साथ समाज का सुधार हो जावेगा किन्तु फिरभी उपदेश देनेकी जिम्मेवारी से कार्यकर्त्ता नहीं छुट सकता और इसीलिए उसे दूसरे को मार्ग पर लाने के लिए उपदेश देना पड़ता है। क्योंकि आम जनता अज्ञानवश सच्चे मार्ग पर न हो तो जिसे मार्ग दीखता हो उसका मार्ग बतलाना यह फर्ज होजाता है। किन्तु यह उपदेश देने की प्रणाली आज की व्याख्यानबाजीसे दूसरेप्रकारकीहोनी चाहिए। मैं कभी इस बात को मंजूर नहीं कर सकता कि-जो व्यक्ति जिस बात का पूर्ण पालन न करता हुआ दूसरे को उपदेश दे। आज कल के व्याख्यान दाताओं में मैं इस बातकी कमी पाता हूँ और इसी कारण उस व्याख्यानबाजी को बुरा भी समझता हूँ।

मैं प्रत्येक कार्यकर्त्ताओं से प्रथम यही बात कहूँगा कि जो बात अपनी आत्मा को बुरी लगती हो उसका त्याग करो। इसबात को कर लेने पर ही सब बात पूरी नहीं हो सकती उसके भी आगे मार्ग है और मैं वह आज आपके

सामने रखूंगा किन्तु इस बात का आपको ध्यान रहना चाहिए कि-यह कार्य सार्वजनिक कार्य में अपने दिलको शान्ति देने के लिए कर रहा हूं न कि और किसी कारणसे। आजकल नाम के लिए काम करने की जो क्षणिक प्रवृत्ति हममें है वह न होनी चाहिए। आज हमारी दृष्टि में जरा फर्क आगया है और हम जाति का कोई भी काम करते समय हम यह जाति पर उपकार कर रहे हैं ऐसा जो मालुम पड़ने लगता है तब हमारा करना लोगों के भला बुरा कहने पर अवलम्बित रहताहै। यह वास्तव में बड़ी भारी कमजोरी है।

यह कमजोरी जब हममें से निकल कर हम निष्काम सेवा एवं अपने आपको शान्ती देने को अर्थात् हमारी बुरी प्रवृत्तियाँ न बढ़ें और हम स्वाभाविक ही अच्छे कार्यों में लगे रहे। तब फिर समाज की आजकी इस परिस्थिति में कौनसा कार्य किये जाने योग्य है इसका विचार हमको करना चाहिए। प्रथम हमको इस बात को ध्यान में रखना जरूरी है कि-प्रथम हमको उस कामको करना चाहिए जिससे दूसरों पर होने वाला अत्याचार दूर हो। आज समाज में वास्तविक देखा जाय तो कन्याओं पर बड़ा भारी अत्याचार होता है और उसे प्रथम दूर करना जरूरी है वह किस प्रकार से दूर किया जा सकता है। हम अपनी इतनी तैयारी तो कर चुके हैं कि-हम उस काम में शामिल न होंगे, पर इससे तो केवल हम उस पाप से बचते हैं जो होने वाला है पर इससे उस लड़की के उद्धार की तो कुछ आशा नहीं की जा सकती इसलिए तो हमको उस कार्य से उस वृद्ध का मन किस प्रकार फेर एवं उस कार्य को बन्द कैसे करें यह करना जरूरी है।

प्रथम हमको अपने आपके विचारों को इतना शान्त बना लेना जरूरी है कि चाहे जिस प्रक्षुब्ध वातावरण में भी हम अपने मनको काबू में रख सकें। क्योंकि मैं जिस मार्ग को बतलाना चाहता हूँ वह मार्ग प्रेम मार्ग है उसमें क्रोध को जराभी स्थान नहीं है। इस लिये अपनी इतनी मजबूती कर लेना जरूरी है। यह बात करलेने पर हमको अगली बात देखनी चाहिए।

प्रथम हमको इस कार्यके लिए कुछ

कार्यकर्त्ताओं का संगठन करना जरूरी है और इसलिए वृद्धविवाह रोकनेवालों की एक सभा स्थापित करना जरूरी बात है। इसके सदस्य वे ही लोग हों जो सत्य और अहिंसा पर पूर्ण विश्वास रखने वाले हों और उनका आचरण सत्य तथा अहिंसा मय हो। जब इस बात का पता संस्था के आफिस को लगजावे कि एक वृद्ध विवाह कर रहा तब वे लोग वहां जाकर उस विवाह को रोकने की चेष्टा निम्न प्रकार से करें।

प्रथम उस वृद्धको जो कि विवाह करता है उसे प्रेम पूर्वक समझाने की चेष्टा की जाय यदि न समझे तो फिर उस कन्या के बापको जो कि अपनी कन्या को बेच रहा है उससे यह पूछा जाय कि तुम लड़की किसी आपत्ति के कारण तो नहीं बेच रहे हो। यदि वह आपत्ति दूर करने योग्य हो तो दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इतने पर भी न माने तो गांव के लोगों को समझाना चाहिए कि इस विवाह को मत होने दो यदि फिरभी सफलता न मिली तो जाति के लोगों के पास जाना चाहिए तुम इस अन्याय को रोको यदि उनसे भीन रुक सके तो फिर हमको सत्याग्रह करना चाहिये।

यह सत्याग्रह पूर्ण अहिंसामय होना चाहिए। क्योंकि हम जिस बात को सत्य समझते हैं वही बात असत्य भी हो सकती है। इस लिए मारने की अपेक्षा मरना यही श्रेष्ठ मार्ग हो सकता है। हमको वहां पर बिलकुल शान्तवृती से यदि मार पड़े तो मार खा लेनी चाहिए और यदि हमें जेल जाना पड़े तो जाना चाहिए।

यह बात निस्सन्देह कठिन है किन्तु जिन्हें अपनी जाति के लिए यदि कुछ करना हो तो उन्होंने इस मार्ग को लेना चाहिए क्योंकि सिवा इस मार्ग के दूसरा मार्ग मेरी समझ में नहीं आता। मैंने इस बात को बहुत सोच लेने के बाद लिखी है और मेरा बिश्वास है कि त्याग से ही जाति का हित हो सकता है। जाति की सेवा बिना रक्त के नहीं हो सकती इसलिए हमको अपने रक्त का पानी कर समाज के कलँक को धोना चाहिए।

मैं अपने उन कार्यकर्त्ताओं को आमन्त्रण देता हूँ कि वे इस पवित्र कार्य में जुटें जिन्हें जाति के लिए त्याग क-

रना जरूरी मालूम पड़ता हो। जो त्याग में ही सुख मानते हों जिन्हें अपने अच्छे कार्यों के फलमें विश्वास हो वे अवश्य मेरे बतलाए हुए मार्ग को पसन्द कर इस मार्ग पर चलने की चेष्टा करेंगे।

इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये एक संस्था कायम करने का विचार है जो सज्जन चाहें वे मेरे से पत्र व्यवहार करें।

रिषभदास ओसवाल
जळगांव।

—:o:—

वीरवृती

समाज के लिए त्याग करना जरूरी बात है किन्तु हमारे त्याग से लाभ होगा या नहीं यह बात सामने आतेही हम अपने त्याग को फल के साथ तुलना करने लगजाते हैं और तर्क करने लगजाते हैं। तर्क के आगे त्याग की भावना टिक नहीं सकती वह लुप्त हो जाती है क्योंकी तर्क करना यह कार्य तामसी वृती रखने वालों का-जिनके हृदय में डरपोकपन है साहस नहीं है उनका होता है और कभी भी डरपोकों के हाथ से जिसके पास साहस नहीं है किसी भी कार्य के सफल होने की आशा रखना व्यर्थ है। ऐसे लोगों का ख्याल यही रहेगा कि मेरे किए हुए काम अर्थात् जिसे वह कर रहा है उनका अच्छा फल मैं देख सकूंगा या नहीं। वे वीर नहीं होते और न उनमें वीरता।

वीर मौत के मुंहमें जानेवाला वीर अपनी वीरवृती के कारणही समर में लड़ता है। वह यह नहीं देखता कि जिस देश के लिए मैं लड़ता हूँ वह देश स्वाधीन होगा या नहीं, मैं मर रहा हूँ मेरा नाम संसार लेगा या नहीं, मेरे मरने पर देश स्वाधीन होगा किन्तु मेरे को तो सुख मिलेगाही नहीं। फिर वह क्यों मरता है-अपनी वीरवृती के कारण, उसका मरना निष्फल नहीं होता किन्तु फलकी आशा से वह नहीं मरता। यदि उसने उस संग्राम में अपने प्राण न दिये होते तो क्या वह देश स्वाधीन हो सकता था कदापि नहीं। इसीलिए वीर वृती का महत्व है; और वीरवृती से ही जाति उठती है।

आज हमारे समाज से वीरवृती का लोप होगया है। समाज के काम करने

का नाम निकालते ही हमारे सामने घर का दृश्य आता है। हमको अपने सुखी संसार को क्यों बिगाड़ना चाहिए। हम यदि समाज के काम को करने लग जावेंगे तो पीछे हमारे बाल बच्चों का क्या होगा ? हमारे त्याग से समाज में उन्नति होगी या नहीं ? समाज में तो उत्साह है ही नहीं ऐसी अवस्था में मैं क्या करूंगा ? इत्यादि विचार आतेही वीर वृती का लोप होकर साहस नष्ट हो जाता है।

हमको इस बातकी ओर ध्यान देना चाहिये कि बिना हमारा बलिदान किये बिना हमको अपनी जाति के लिये रक्त सुखाये बिना उसकी उन्नति हो सकती है क्या ? हमको कभी इस बातकी तरफ ध्यान ही न देना चाहिए कि मेरा किया हुआ निष्फल होगा। क्योंकि यह तो नास्तिकताहै कि हमको अपने किये कार्य के फल पर विश्वास न रखना। फिर हम आस्तिकही कैसे। हमको एक बात खयाल में रखना चाहिए और वह यह कि "कर्त्तव्य पालन" चाहे उसके पालन में हमें अपने प्राणही क्यों न देने पड़ें किन्तु करना चाहिए। जब यह बात जाति के वीर समझकर करने लगते हैं तभी जाति की उन्नति होती है। बीज जमीनमें जब सड़जाताहै तभी वृक्ष होता है और सुमधुर फल मिलता है। वीर जब जाति के लिए अपना त्याग करते हैं तभी जाति का उद्धार होता है।

हमारी जाति में वीरवृती का ह्रास है। संसार को हम असत्य कह देते हैं। मृत्यु के समय निर्भय रहने की बातें हम कर सकते हैं, सुख लालसा झूंठी बतला सकते हैं किन्तु त्याग करने के समय हम इतने कायर होते हैं कि जिसकी सीमा नहीं। नहीं तो क्या जाति के उद्धार के मार्ग में धनकी लालसा सुख भोगने की इच्छा इतनी आगे आ सके कि हम चुपचाप बैठे रहें। जाति के उद्धार के लिए हमारे पूर्वजों ने युद्ध किए उस समय स्त्री और बाल बच्चों का खयाल उन्हें था क्या ? नहीं वे वीर थे और वीरवृती से मरना अपना कर्त्तव्य समझते थे तभी हमारी जाति उन्नति थी और आज अवनति। प्यारे युवको उठो वीरवृति को अपनाकर जाति का उद्धार करो।

——:o:——

जरा इधर भी ध्यान दीजिये

(ले०-श्री० रावतमलजी कटारिया बसारी)

प्रिय बन्धुओं, आज आपकी सेवामें मुझे कुछ निवेदन करना है। आशा है मेरे निवेदन पर आपका लक्ष्य जाकर आप मेरे विचारों से सहमत होकर जाति उत्थान के कार्य में भाग लेंगे।

आप देख रहे हैं कि अन्य जातियां सुधार की तरफ बढ़ रही हैं हमारी जाति ही एक ऐसी जाति है कि सुधार के युग में पीछे पड़ी हुई है। इसका मुख्य कारण मेरी समझ में तो अविद्या ही है। हमारी समाज में अविद्या के कारण ऐसे २ कुरिवाज प्रचलित हो गयेहैं किजो ओसवाल कहलाने वालोंके लिये कलंक स्वरूप है। क्या कन्या विक्रय, बाल लग्न, वृद्धविवाह और मोसर इत्यादि कुरिवाज हमारी जाति को शोभा देते हैं ? कदापि नहीं। इधर हमारे समाज में कुसंप बढ़ रहा है जिससे हम दिनोंदिन कमजोर बनते जा रहे हैं। यह सब शिक्षा के अभाव से होरहा है। हम बालकों को शिक्षा न पढ़ाकर व्यापार में लगाकर उनके जीवन को नष्ट कर डालते हैं। उनका इस प्रकार से होनेवाले जन्म का नुकसान देखकर आपका हृदय नहीं पसीजता। यदि पसीजता हो उनके भविष्यत की आपको चिन्ता हो तो उन बालकों की शिक्षा तरफ ध्यान दीजिये। --

प्यारे ओसवाल समाजके अगवानो और गुरुओ, क्यो आपको हमारी यह दशा देख तरस नहीं आता ? क्या आपने हमारे पापों को दूर करने का ठेका आपने नहीं लिया था ? फिर आप इस समय हमारे अन्दर घुसे हुए पापों को क्यों नहीं निकालते ? आपने ही तो पहले जब २ हमारी अवनति हुई, हम पाप मार्ग पर अग्रसर हुए थे तब २ हमारी उन्नति की हमें पुण्य मार्ग सु-

आया फिर आज स्वस्थ क्यों बैठे हैं? क्या आपको हमें सुधरे हुए देखकर आनन्द नहीं होता तो फिर देर न कीजिए उपदेशों के द्वारा हमारी कुरीतियां दूर कीजिए।

मोसर यह प्रथा हमारे लिये अत्यन्त कलङ्क की प्रथा है। क्योंकि जैन धर्म में मोसर को न तो कहीं स्थान है और न उसे करने के लिए पुण्य बतलाया है। यदि हम विचार करके देखें तो जैन धर्म की दृष्टि से यह पुण्य नहीं पाप है। इस पाप के कार्य में धन न लगाकर यदि यह धन जाति सुधार में लगाया जाय तो क्या हमारे सम्बन्धी मृतात्माओं को शान्ती नहीं मिलेगी। मृत आत्मा को शान्ती अच्छे कार्यों से मिलती है। इसलिए आप इस कुप्रथा को त्यागकर उस धनको जाति हित के कार्यों में लगाइए इससे आपकी और जाति की भलाई है। इस मोसर के कारण गरीबों को कितनी आपत्तियां झेलनी पड़ती हैं इसका क्या आपने कभी ख्याल किया है। जातिरूढ़ी का पालन करने के लिए उन्हें मोसर करना पड़ता है कर्ज लाकर मोसर करते हैं आजकल व्यापार डूब गया है जिससे उन्हें उस कर्जा चुकाने के लिए कन्या विक्रय करना पड़ता है। इसलिए ऐसे पापमय कार्य से हमको सदा बचना चाहिए।

अभी हाल में अखिल भारतवर्षीय श्वे० स्था० जैनकान्फ्रेंसका संचालन फिर उत्साह से करने की इच्छा हमारे बन्धु कर रहे हैं हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि इस समय मोसर निषेध का प्रस्ताव आगे आकर हमारे समाज से यह प्रथा समूल उठजावें ऐसा प्रयत्न हमारे नेताओंको करना चाहिए यह हमारी नम्र प्रार्थना है।

जो दूसरों पर दया दिखलाता है मानों वह खुद दूसरों को करुणा का पात्र बनाता है, लेकिन जो करुणा शून्य है वह दूसरों की दया का अधिकारी नहीं जैसे भेड़ के बच्चे की दुःख भरी आवाज़ पर बूचड़ को दया नहीं आती उसी प्रकार क्रूर मनुष्य का हृदय दूसरों का दुःख देखकर नहीं पसीजता।

ओसवाल जाति का उज्वल भविष्य

उन्नति के बाद अवनति और अवनति के बाद उन्नति यह प्रकृति का नियम है। हमारी जाति का पतन हुआ और खूब हुआ। वह अवनति के चरम सीमा तक पहुँची उसकी यह शोचनीय स्थिति भविष्यत के उज्वल प्रकाश की ओर संकेत करती है। और आज उसके बालक उसका मुख उज्वल करने की चिन्ता में चिन्तित हैं। उन्हें यह बात ठीक तरह से समझ गये हैं कि जाति का उद्धार हो सकता है तो एकता से केवल एकता में ऐसी शक्ति है कि वह शक्ति जाति की उन्नति अवस्था करने में समर्थ है यह उनके इस कर्मण्यों के ध्यान में आगई है कि जो जाति का हित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं यह बड़े हर्ष की बात है। जाति का कार्य करने वाले ही वास्तविक जाति का आधार और जाति का उनपर भरोसा है। इनमें कार्य करते समय मतभेद का होना स्वाभाविक है किंतु उस मतभेद का रूप आगे चल कर [illegible] द्वंद्व में परिणत हो जाता था। परन्तु धीरे धीरे वह बात हटकर उनमें निष्काम कर्म की भावना बढ़ने लगी है और जिससे काम करते समय आये हुए मतभेद दूर होने लगे हैं। यह बात जाति का उज्वल भविष्य बतलाने वाली है। हमारे मित्र बाबू इन्द्रचन्दजी नाहटा का यह पत्र पढ़ कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि मुनिजी ने [illegible] ओसवाल महासभा का दफ्तर नाहटा जी के देने को श्रीयुत पंचासिंहजी को लिखा है। अब दफ्तर प्राप्त होते ही नाहटाजी शीघ्र ही कार्यारम्भ कर देने वाले हैं। हम अपने उन महासभा प्रेमी मित्रों से नम्र प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे मित्र बाबू इन्द्रचन्दजी को महासभा का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिये सहायता दें क्योंकि आप लोगों की सहायता द्वारा ही महासभा का कार्य सफल होकर वह कुछ भी कर

सकेगी हमें विश्वास है कि हमारे ओसवाल बन्धुओं के हृदय में उठती हुई जाति हित की भावना अवश्य उन्हें ओसवाल महासभा के सफल बनाने में उत्साहित कर उनके हाथ से ओसवाल जाति का हित होगा।

स्त्री शिक्षा का स्तुत उपक्रम

स्त्री शिक्षण जाति सुधारक एक अंग है। हमारी ओसवाल जाति में स्त्रियों की कितनी उपेक्षा की जाती है उन्हें कितनी हीन श्रेणी में गिना जाता है यह किसी से छिपा नहीं है और इस उपेक्षा का परिणाम दिनों दिन जाति के लिये अहितकर हो रहा है। दिनों दिन विधवाओं की संख्या बढ़ कर तथा स्त्रियों की सामायिक मृत्यु के कारण लड़कियों की कीमत दिनों दिन बढ़ती आ रही है। इधर हमारे गृह सौख्यरूपी सूर्य का तो कभी का नाश हो गया है। हमारी अज्ञान स्त्रियां वस्त्रालंकार यही आनन्द का केन्द्र समझ हमारे जीवन को कैसा अशांत बनाती हैं इसका पता तो उन गृहस्थियों को है ही कि जिन्हें पत्नी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने नाकों दम आता है। हमारा विश्रांती स्थान स्त्रियों के अज्ञान के कारण किस प्रकार अशान्त बन गया है वहां शांति और आनन्द का नाम नहीं और इसी कारण काम काज से थके हुये मन को शांति न मिल कर वह अधिक दुःखित बनकर उसे संसार दुःखमय जचने लगता है। यह आपत्ति ८० की सदी घरों में पाई जाती है। इससे बचने का एक मात्र उपाय है स्त्री शिक्षा का प्रचार। यह बात दिनों दिन हमारी समाज के समझ में लोगों के ध्यान में आकर जहां तहां स्त्री शिक्षा का उपक्रम शुरू हुआ है। अजमेर से आए हुए समाचार से पता चलता है कि वहां के लोगों का इस बात की तरफ विशेष ध्यान जाकर वे इस काम की तरफ विशेष ध्यान देने वाले हैं बड़े हर्ष की बात है कि हमारे समाज के स्त्री सुधार के पक्षपाती बन्धुओं से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने यहां कन्या पाठशालो स्त्री पाठशाला इत्यादि पाठशालायें खोल कर स्त्री जाति के उन्नति के लिये सक्रीय प्रयत्नों में लगें। जब तक हमारी स्त्री जाति नहीं सुधर जावेगी तब तक हमारे सुधार की आशा व्यर्थ है इस लिये दूसरे कामों के साथ ही साथ इस काम की तरफ ध्यान देना जरूरी है।

हमारे साथ सहानुभूति

अंक ३रे में 'ओसवाल पत्र को घाटा' शीर्षक हमारा निवेदन पढ़कर जिन २ भाइयों ने हमारे साथ सहानुभूति प्रकट की उनके हम चिरकृतज्ञ हैं। साथ ही साथ हमारे कुछ मित्रों ने हमें सूचनायें दी हैं और उन सूचनाओं की तरफ ध्यान देना हमारा आवश्यकीय कर्त्तव्य होने के कारण हम उन पत्रों का मंतव्य पाठकों के सामने रख कर उस विषय का हमारी तरफ से खुलासा देते हैं।

'अगर ओसवाल पत्र अच्छा निकलने लग जाय उसमें उत्तम उत्तम लेख कवितायें प्रसिद्ध होती जावें तथा उसका प्रकाशन समय पर होता जावे तो ओसवाल जाति जैसी धनाढ्य जाति को पोषना एवं उसे उन्नति दशा में चलाना कठिन बात नहीं है। इसलिये हम आपसे यह अनुरोध करते हैं कि आप इस प्रकार का रोना न रोकर उसे उन्नत बनाइये।'

मैं यह बात स्वीकार करता हूं कि ओसवाल की उन्नति का मुख्य कारण उसके संचालक आदि होंगे किंतु उन संचालकों में पाठक और लेखक भी आजाते हैं। इतनी कम ग्राहक संख्या होते हुए भी 'ओसवाल' पत्र जिस स्थिति में निकल रहा है उसे देखकर यह कहना ठीक नहीं होगा कि उन्नति की तरफ हमारा खयाल नहीं है। हम दिनों दिन उसे उन्नत बनाने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं किंतु हमारे पाठकों को अपनी जिम्मेवारी को भूल नहीं जाना चाहिये क्योंकि ओसवाल पर जितना सत्त्व हमारा है उतना ही उनका इसलिये ओसवाल को उन्नति करना जितना हमारे हाथ में है उतना ही पाठकों के। अगर पाठक अपनी जिम्मेवारी को समझ कर ओसवाल की ग्राहक वृद्धि में सहायता दें तो आपके ओसवाल की अवस्था इससे उन्नत होकर वह आपकी सेवा अधिकाधिक कर सकेगा। आपही बतलाइये कि ओसवाल की ग्राहक वृद्धि हुए बिना उत्तमोत्तम लेखकोंके लिये लेख पुरस्कार देकर कैसे हम मंगावें। क्योंकी हजारे बिनती करने पर भी हिन्दी के सुलेखकों का ध्यान इस 'गरीब' की तरफ नहीं

जाता हमारे पास जो लेख आते हैं वे प्रायः प्रकाशित न होने योग्य ऐसे ही आते हैं। तिस पर भी हम उसे प्रकाशित न करें तो लेखक महाशय धमकी दिखाते हैं किंतु हम तो अपनी जिम्मेवारी का खयाल रख कर सब कुछ करना पड़ता है। हमारे ओसवालों में सुलेखकों की कमी नहीं है पर उनका ध्यान विशेष रूप से इस ओसवाल की तरफ नहीं जाता यह ओसवाल का दुर्भाग्य कहना चाहिए और क्या कहें।

'ओसवाल' का समय पर प्रकाशित न होना हमें खटकता है किन्तु अनिवार्य कारणों से ऐसा हो रहा है। हमने आशा की थी कि अप्रैल के अंक से ओसवाल समय पर प्रकाशित हुआ करेगा किंतु श्री पद्मसिंहजी के स्वास्थ्य ने बीच ही में धोका दे दिया अब उनका स्वास्थ्य सुधरता जा रहा है और मैं पाठकों को आशा दिलाता हूँ कि आप का प्यारा ओसवाल समय पर ही प्रकाशित हुआ करेगा। आप और कुछ दिन धैर्य रक्खें।

मुझे भी पाठकों के सामने रोना अच्छा नहीं लगता किन्तु वास्तविक बात कहना यह रोना रोने की अपेक्षा दूसरी बात है। ओसवाल की वास्तविक स्थिति आपके आगे मंडना मैं मेरा कर्त्तव्य समझता हूँ। और अब 'ओसवाल' पर की श्रद्धा पाठकों की उठ जावेगी तब कम से कम मैं भी तो 'ओसवाल' से अलग हो जाऊँगा। क्योंकि जबर्दस्ती करके आप लोगों के ऊपर खर्चा बढ़ाना मैं अपना कर्त्तव्य नहीं समझता। जब तक आप लोगों की मेरी सेवा लेने की इच्छा होगी तब तक आप की सेवा करूँगा जिस दिन आप की मेरी इस सेवा का बोझ होगा उस दिन मैं ओसवाल से नाता तोड़ और दूसरे किसी रूप से आपकी सेवा करने लगूंगा। अगर ओसवाल के पाठक उसे उन्नत बनाएंगे अपनी जिम्मेवारी नहीं समझेंगे तब मैं समझूंगा कि मेरी सेवा पाठकों को स्वीकार नहीं और ओसवाल को इस स्थिति में जिलाना मुझे भी तो कम से कम मंजूर नहीं यों कह कर मैंने अपने ऊपर ली हुई जिम्मेवारी का त्याग कर उसे पाठकों के ऊपर सौंप दूंगा। देखें ओसवाल के साथ तथा मेरे साथ पाठकों की कितनी सहानुभूति है।

श्री ओसवाल हितकारिणी सभा अजमेर की द्वितीय वार्षिक (संवत १९८१ चैत्र सुदी १ से चैत वदी ११ तक की)

संक्षिप्त रिपोर्ट

१-सभासद

वर्ष के प्रारम्भ में २५ सभासद थे इस वर्ष में ६ सभासद नवीन हुवे और ३ सभासदों के नाम उपस्थिती यथेष्ट न होने के कारण सभासदी से पृथक कर दिए गए इस प्रकार अब इस सभा के २८ सभासद हैं।

२-कार्यकर्त्ता

प्रधान श्रीयुत् मोतीसिंहजी कोठारी, उपप्रधान-श्रीयुत् कँवरलालजी बाफना, बी० ए० एल-एल० बी० वकील, मंत्री-मूलचन्द बोहरा, उपमन्त्री-श्री० भन-राजजी लूणिया तथा श्री० चन्द्रसिंहजी सिंघी, कोषाध्यक्ष-श्री० जेठमलजी साँड,

३-कोष

इस वर्ष की कुल आय ७६॥=)॥। हुई, पूर्व वर्ष का पोतै ४-)॥ इस वर्ष का कुल खर्च २०॥=)हुआ इस प्रकार इस वर्ष के अन्त में सभा के पास रु० ५६॥=)। पोतै हैं।

४-अधिवेशन

इस वर्ष में २३ साधारण और ३ विशेष इस प्रकार कुल २६ अधिवेशन हुये। १ साधारण अधिवेशन कोरम यथेष्ठ न होने से न हुआ।

५-उपस्थिति

उपस्थिति अधिक से अधिक २४ और कम से कम ११ सभासदों की रही।

६-महत्वपूर्ण प्रस्ताव और कार्य

(१) संवत् ८१ की ग्रीष्म ऋतु में अजमेर में जल की अत्यन्त कमी थी इस कारण एक समिति नियतकर ओ-सवाल गृहों में जल पहुंचाने की आ-वश्यकता की तहकीकात की गई। विशेष आवश्यकता प्रतीत न हुई इस कारण इस सम्बन्ध में कुछ कार्यवाही अधिक न की गई।

(२) सभाने प्रत्येक सभासद के लिए नित्य प्रति कम से कम १० मि-

निट तक व्यायाम करने को निश्चय किया है और माह में १ वार सर्व सम्मिलित हो एक स्थान परही व्यायाम करने का निश्चय किया है तदनुसार अधिकतर सभासद् वरावर व्यायाम कर रहे हैं।

(३) सभा ने निश्चय किया है कि प्रत्येक सभासद् अपनी २ पत्नियों को नित्य कमसे कम १० मिनिट स्वयं पढ़ाकर, वा पढ़ानेवाली रखकर शिक्षित वनाने का प्रवन्ध करें। परीक्षा होगी तव फल प्रगट होने से कार्य कितना हुआ कहा जा सकेगा।

(४) सभा ने निश्चय किया है कि प्रत्येक सभासद् को अपने २ पड़ोस के स्वजातीय असहाय स्त्री, पुरुष, वालक वालिकादि की सम्हाल सहायता स्वयं करना तथा आवश्यकतानुसार सभा से करवाना चाहिए इस विषय में जो कार्य हुआ उसकी साक्षी सभासदों की आत्माएं हैं।

(५) सभा ने उद्योग धन्दों के प्रचार के लिये एक समिति नियत करदी है जो स्वजाति में गोटा किनारी की दस्तकारी का प्रचार करने तथा प्रचार वड़ाने का प्रयत्न कर रही है उसका कोष प्रथक रहता है वार्षिक हिसाव इस सभा को दे देगी, स्त्रियों को सिखाने के लिए लैरगोला वुनना जानने वाली स्त्री की समिति खोज कर रही है मिलने पर तुरन्त यह शिक्षा कार्य भी आरम्भ हो जायगा।

(६) सभा ने अत्यन्त विचार पूर्ण तरीके से ऐसी तजवीज़ निश्चित की है जिसके अनुसार स्वजातीय सज्जनों को विवाह कार्यों के प्रवन्ध में सभा की सेवा से सहायता मिल सकती है इसी वर्ष दो विवाहों में उसी तजवीज के अनुसार सभा ने सेवा की।

(७) श्रावण माह में एक दिन अनेक प्रकार के व्यायाम पूर्ण खेल हुवे, प्रीति भोजन हुआ और वार्षिकोत्सव हुआ इन सव कार्यों में सभासदों के अतिरिक्त अन्य स्वजातीय सज्जन भी सम्मिलित थे उत्सव में श्रोता स्त्री, पुरुषों की संख्या अच्छी तादाद में थी श्रीमान् राय साहिव किशनलालजी साहिव वाफना वी० ए० जोधपुर नि-

वासी भी इन सब कार्यों में अत्यन्त उत्साह से सम्मिलित थे और आपने स्वजातीय संगठन पर व्याख्यान दिया था।

(८) सभा ने बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ सभासदों से तथा अन्य स्वजातीय सज्जनों से रु० १७१) संग्रह कर मथुरा सेवा समिति को भेजे।

(९) सभा ने अजमेरके ओसवालों की डाइरैक्टरी तैयार करलीहै जिसका संक्षिप्त विवरण शीघ्रही प्रकाशित किया जाने वाला है।

(१०) होली के मौके पर सब तरह की बुराइयों से स्वयं बचने तथा स्वजातीय भाइयों को बचाने के लिए सभा ने मिती चैत वदी १ को गत वर्ष की तरह जलसा किया जहाँ १२ वजे से ५ वजे तक उत्तम २ शिक्षाप्रद गायन गाए गए सभासदों के अतिरिक्त स्वजातीय अन्य सज्जनों की उपस्थिति भी अच्छी तादाद में थी। वगैर नशे की ठंडाई, पान, सुपारी, इलायची आदि से सबका सत्कार किया गया। इस जलसे से उत्तम गायनों का स्वजातीय गाने वालों में तथा अन्य लोगोंमें प्रचार हुआ है और इससे अश्लील गायनों का गाना बन्द होजाने की आशा है। उपयोगी गायनों को संग्रह कर प्रकाशित करने के लिए सभा विचार कर रही है।

भवदीय—

मूलचन्द बोहरा

लाखन कोठारी-अजमेर

श्री ओसवाल हितकारिणी सभा अजमेर के प्रयत्न से मिती वैशाख कृष्ण ४ रविवार को श्री खरतर गच्छ के उपाश्रय में यहाँकी स्वजातीय स्त्रियों में विद्या पढ़ने की रुचि बढ़ाने की इच्छा से ही यह सम्मेलन किया गया था। करीब ३० स्त्रियाँ उपस्थित हुई थीं। श्रीओसवाल कन्या पाठशालाकी कन्याएँ

तथा अध्यापिकाएँ भी बुलाई गई थीं।

प्रथम कन्याओं ने मंगलाचरण गा कर सम्मेलन का कार्यारम्भ किया।

पश्चात् कन्याओं की पढ़ाई का निरीक्षण स्त्रियों को अध्यापिकाओं ने करवाया।

तत्पश्चात् स्त्रियाँ कितना २ कौन २ पढ़ी हैं इसका निरीक्षण श्रीयुत मोतीसिंहजी साहब कोठारी की धर्म पत्नीजी ने किया तथा उपस्थित सर्व स्त्रियों को विद्याध्ययनमें विशेष रुचि रखने के लिए तथा अभ्यास में शक्ति भर प्रयत्न रखने के लिए उत्साहित किया।

पश्चात् कन्याओं के एक भजन गाने पर सम्मेलन कार्य समाप्त हुआ।

सभा में सर्व सभासदों को नित्य प्रति कम से कम १० मिनट निज पत्नियों को स्वयं शिक्षा देने के वा प्रबन्ध कर देने के लिए प्रस्ताव हुआ है और सर्व सभासदों को तदर्थ श्री रामदास गौड़ एम० ए० (प्रोफैसर श्री काशी विश्वविद्यालय) की लिखित पहली पोथी बाँट दी गई है।

खानदेश ओसवाल शिक्षण संस्था

खानदेश ओसवाल शिक्षण संस्था नामक एक शिक्षा प्रसार के लिए संस्था खानदेश के दो तालुके की जाति हितेच्छु सज्जनों ने निकाली है। इस संस्था को स्थापन हुए ३ वर्ष हुए। इस समय इसके पास स्थायी फंड ३२००० रुपया है। इसमें से खर्च न किया जाकर सिर्फ ब्याज की ही सहायता विद्यार्थियों को छात्रवृती के रुपए दिए जाते हैं। आज तक इस संस्था में से इस जिले की छात्रवृती लेने को एक ही विद्यार्थी तैयार हुआ बात संचालकों को खटकती है और वे बोर्डिंग हाउस भी खोलना चाहते हैं किन्तु अभी तक कुछ ऐसे अनिवार्य कारणों से वह कार्य न हो सका बाहरी सहायता पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या पाँच है। इस संस्था के संचालकों ने इस संस्था को इतने कम खर्च से चलाने का प्रयत्न किया शायद ही कोई संस्था ने किया हो। इस सभा के सभापति हैं श्री राजमलजी ललवानी और मंत्री पुनमचन्दजी नाहटा हम हमारे जाति हितैषी बन्धुओं से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने प्रांतों में विद्या प्रसार के लिए ऐसी संस्थायें ज्यादा से ज्यादा खोलें क्योंकि जब तक हमारे समाज में सार्वजातिक शिक्षा प्रसार न

काम तथा रतिशास्त्र सचित्र

(प्रथम भाग) (२५० चित्र)

पसन्द न आने पर लौटा कर दाम वापिस लीजिये

पुनः छप कर तय्यार होगई है ।

मूल्य वापिसी की शर्त है तो प्रशंसा क्या करें । पाठक तो प्रशंसा करते थकते नहीं । हिन्दी के पत्रों ने भी इसको ऐसी पुस्तकों में प्रथम मान लिया है । जैसे—

प्रसिद्ध पत्रों की समालोचना का सारांशः—

चित्रमय जगत् पूना ।

इस पुस्तक के सामने प्रायः अन्य कोई पुस्तक ठहरेगी या नहीं इसमें हमें शङ्का है । पंडितजी एक विख्यात और औषध-चिकित्सक हैं । आयुर्वेद हिकमत और एलोपेथिक के भी आप धुरन्धर विद्वान् हैं । यह पुस्तक हिकमत एलोपेथिक और आयुर्वेद के निचोड़ का रूप कही जा सकती है ।

श्री वेंकटेश्वर समाचार ।

काम तथा रतिशास्त्र अश्लीलता के दोष से रहित है । इसे कोकशास्त्र भी कह सकते हैं, परन्तु वास्तव में इसका विषय कोकशास्त्र से अधिक है जैसी खोज और परिश्रम से यह ग्रन्थ लिखा है उसको देखते ग्रन्थ की सराहना करनी होगी । जो हो हिन्दी में अपने ढङ्ग का यह एकही ग्रन्थ है ।

प्रणवीर ।

ऐसी दशा में पं० ठाकुरदत्त शर्मा जैसे अनुभवी वैद्य ने इस विषय पर ग्रंथ लिखकर परोपकार का कार्य किया है । उन्होंने ग्रन्थ लेखन में समय और औचित्य का पूरा पूरा ध्यान रक्खा है तथा विषय की केवल वैज्ञानिक दृष्टि से व्याख्या की है ।

तरुण भारत ।

जहां पुराने काल के विद्वानों की लिखी हुई काम-सूत्र आदि पुस्तकों से पूरी सहायता ली है वहां आधुनिक विद्वानों की सम्मतियों से भी सहायता ली गई है । हम शर्मा जी के इस प्रयत्न के लिये साधुवाद देते हैं ।

विजय ।

पुस्तक में रंगीले चटकीले और भड़कीले ५० चित्र हैं । भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, रूस, जर्मनी, इटली, फ्रान्स, और आस्ट्रेलिया तथा इस्पानियां की प्यारी २ और भोली २ खूबसूरत स्त्रियों के चित्र भी हैं । लेखक महाशयने पुस्तक को ऐसा बना दिया है कि एकबार हाथ में लेकर फिर उसे छोड़ने को चित्त नहीं चाहता पुस्तक सुनहरी जिल्द बंधी है ।

मूल्य ६) रु० पसन्द न आवे तो २ दिन के भीतर रजिष्ट्री द्वारा वापिस भेजिये, वहां पुस्तक देखकर कीमत लौटादी जावेगी ।

पता:-देशोपकारक पुस्तकालय, अमृतधारा भवन (१२०) लाहौर

ऊपर छपी पांचों बिजलीकी अद्भुत चीजोंमें न तेलकी जरूरत है, न दीया-सलाईकी बटन दबा दीजिये, चट्से तेज रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी, जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें बेट्रीकी शक्ति भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लेम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाईं वर्ता जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेका तीनरङ्गा लेम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा खींचिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लेम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक खर्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है जो कोट में लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्सन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।≈) जुदा (नं० ५) यह कमीजके तीन बटनोंका सेट है जो रातमें प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भांति चमकता है इसका भी तार बेटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें रक्खा जाता है लोग देख कर आश्चर्य करते हैं भेटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी चीज है आज तक हिन्दुस्तान में नहीं आई है दाम ८) डाक खर्च ॥) जुदा।

पताः—जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स पोष्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता।

३५ साल का परीक्षित भारत सरकार तथा
जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड.

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है.

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार पेटका दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लुएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डाक खर्च १ से २ तक ।=)

दादकी दवा

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घण्टे में आराम दिखाने वाली सिर्फ यही एक दवा है, मूल्य फी शीशी ।) आ० डा० खर्च १ से २ तक ।=) १२ लेनेसे २॥) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरस्त बनना होतो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।) डाक खर्च ॥)

पूरा हाल जानने के लिये सूची पत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा

यह दवाइयां सब दवा बेचने वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कं. मथुरा

हो जावेगा तब तक हमारी जाति की उन्नति होना कठिन है। और आज हमारी इस परस्थित में छात्रवृती देना छात्रालय खोलना इस से बढ़कर शिक्षा प्रसार के सुलभ मार्ग नहीं हैं। हम इस संस्था के कार्यकर्ताओं की सफलता के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जाति सुधार की उनकी योजनापूर्ण करने के लिए उन्हें बल दें।

सराफे का बाजार-

सराफे के बाजार की अवस्था वैसी ही है। इम्पीरियल बैंक यह दिखाने की चेष्टा करती है कि रुपये की टान नहीं है, पर वास्तव में इस समय रुपये की खूब टान है। सभी बैंकें रुपये के लिये मुंह फैलाये बैठी हैं। बम्बई में त्राहि २ मची है। मिलों में कपड़े का स्टाक ७॥ करोड़ पड़ा सड़ रहा है। बम्बई के मरचेन्ट चैम्बर ने वाइसराय को एक लम्बा चौड़ा तार भेजा है। बम्बई वाले चाहते हैं कि सरकार अपनी स्टर्लिंग की खरीद का कोई बिल प्रकाशित किया करे

इम्पीरियल बैंक के ११ मई तक के हिसाब के अनुसार कैश में १२१ लाख की और पब्लिक डिपाजिट में भी १२१ लाख की ही वृद्धि दिखाई गई है। २ करोड़ और भी करेन्सी का ऋण चुका दिया गया है परसेण्टेज २१.५० होगया है और डिरेक्ट डिमांड में २० लाख की कमी दिखाई गई है। अर्थात् बैंक रेट के और भी घटाने के सामान किये जारहे हैं। देखना है किस करवट ऊंट बैठता है।

सोना चांदी।

सोने चांदी के बाजार में कोई दम नहीं है। सोना ज्योंका त्यों २१॥) पड़ा है। आने आध आने की घट बढ़ हुई तो क्यों हुई। हां चाँदी फाटकियों ने कुछ गर्मी लादी है। ७१॥) की चांदी ७२) पारकर गयी। कल ७२-) में बन्द हुई। पर यह दर टिकाऊ नहीं है।

मारवाड़ी चेम्बर का निश्चय।

मारवाड़ी चेम्बर के मेम्बरों ने ४ महीने के लिये विलायती कपड़े का कन्ट्रक्ट करना बिलकुल बन्द कर देने का निश्चय कर बड़ी बुद्धिमानी का काम किया है। वास्तव में कपड़े की बाजार की अवस्था इस समय बड़ी नाजुक है। जरूरत से ज्यादा स्टाक भारत में मौजूद है और लंकाशायर की मिलों की गोदा में इतनी भरी पड़ी है कि मीलों को रखने रखने का स्थान न देने के कारण मिलें चलाना बन्द कर देना पड़ा है। कंट्राक्ट न होने से और दाम गिरने से धीरे २ यहां के माल की टान हो जायगी तब कहीं बाजार के सुधरने की कुछ आशा की जा सकती है।

भंयकर अत्याचार
पंचों इधर ध्यान दो

हमारे पास इगस इगतपुरी से १ लम्बा चौड़ा लेख प्रकाशित होने को आया हैं स्थान के अभाव से उसका मतलब हम संक्षेप में पाठकों की सेवा में रखते हैं।

इगतपुरी में सेठ केसरीचन्द जी चौरड़िया की सगाई अभी ३-४ दिन हुए होगई है आपकी उम्र अभी बहुत ही कम अर्थात् ६१ वर्ष को बताते हैं। खेद का स्थान हैं कि बुड्ढे बाबा क्यों धूल खा रहे हैं। सेठजी यह समझते होंगे कि चिता नहीं रुपये खर्च हों मेरे पीछे रोने को और जाति को रुलाने तथा कलंक का टीका लगाने को तो छोड़ जाऊंगा। हम बाबा साहेब से इतना निवेदन करना उचित समझते हैं कि आपका ऐसा ही विचार हो तो कृपा कर ५-१० आदमी भाड़े के करके भी आप रुला सकते हैं सेठजी जरा ध्यान दीजिये इतना धन खर्च करके आपकी पोती के समान जो लड़की है उसको तुम भ्रष्ट न करो। हे! जाति के पंचों क्या तुम्हारी संतान का मांस तीन रुपये तोला बेच कर उसकी दलालो में तुम लापसी उड़ाना चाहते हो खेद अपनी नींद को दूर करो और इस भंयकर अत्याचार का कुछ निर्णय करा कर बन्द करो। मैं इगतपुरी के पंचों को सेवा में जोर से प्रार्थना करता हूं कि जो इसमें सामिल होंगे उनको जरूर २ उस अबला के श्राप का फल भोगना पड़ेगा। सेठजी आप अपना पैसा खर्च करके क्यों कसाई समान यह काम कर रहे हो।

अन्त में विवाह का समय अत्यन्त निकट आजाने की वजह से मैं सभी महाशयों से और विशेष करके इगतपुरी के पंचों से निवेदन करता हूं कि वह इस ओर शीघ्र से शीघ्र ध्यान दें।

"OSWAL" Reg. NO. A 1282

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान।
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे नर सब हैं मृतक समान ॥

वर्ष ७ } जून सन् १९२५ ई० { अङ्क ६

विषय-सूची।

सम्पादक-श्री० ऋषभदासजी ओसवाल (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी० पी० से २॥) { प्रति अंक ।)

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश--

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २।) रु० और वी० पी० से २।।) रु० है एक प्रति का मूल्य ।) है।

३—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज़ पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जोंहरी बाजार आगरा

ओसवाल के स्थाई लेखकों की सेवामें पत्र बराबर भेजे जाने परभी उनकी की हुई प्रतिज्ञा अनुसार उनकी ओर से लेख नहीं मिलते हैं आशाहै लेखक महाशय इस ओर जरूर २ ही ध्यान देंगे।

वही धन्य हैं सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाज का, जिस से कुछ उपकार॥

वर्ष ७ } आगरा, जून सन् १९२५ ई० { अङ्क ६

मनो-कामना

[ले०--टीकमचन्द डागा "रमता राम"]

दयामय करदो वेड़ा पार।
देख दशा दयनीय हमारी हंसता है संसार॥ दयामय०॥
कब तक दुर्गति ऐसी होगी जीवन लगता भार।
सभ्य जगत के सन्मुख प्रभुवर होती है नित हार॥ दयामाय०॥
तन्द्रा तज कर जगे जाति मम, हो समाज उपकार।
निद्रित जगत जग लख इसको खुले उदय का द्वार॥ दया०॥
सोई हुई शक्ति पा फिर से करे दुख संहार।
विश्व विलोके विमल चक्षु से इसके सुख का सार॥ दया०॥
अनुदिन उन्नति पथ पर जावे होय न दुःख प्रहार।
उदय निरख उदयाचल को भी हो संकोच हजार॥ दया०॥
ओसवाल नैतिक वल पूरे हों मत करे विगार।
विश्व प्रेम टीकम हो ऐसा करे न कोई वार॥ दयामय०॥

समाज का न्याय

—:(ॐ):ॐ:(ॐ):—

[ले०--दुःखी आत्मा]

किसी किसी समय में अपने माता पिताओं का अपने हित का (उनकी दृष्टि से) काम भी सुख देने में समर्थ नहीं हो सकता। सुशीला का विवाह यद्यपि उसके पिता ने एक धनवान के घर किया था किन्तु उसे सन्तोष न था क्योंकि उसकी सास का स्वभाव अच्छा न होने के कारण वह उसे बहुत सताती थी। सुशीला का विवाह उसके पिता ने बड़े ठाट बाट से किया था क्योंकि उनके सुशीला के सिवा दूसरी संतान न थी दहेज भी अच्छा दिया किन्तु इससे उसकी सास सन्तुष्ट न हुई और वह सुशीला को बात बात में ताने दे कष्ट पहुँचाने लगी। सुशीला बड़े दुलार से पली हुई थी उसके पिता ने उसके प्यार के लिये कुछ न उठा रखा था इसी कारण से उसे यह बात असह्य मालूम होती थी किन्तु वहाँ क्या इलाज था। न वह अपने दर्द को किसी के पास कह सकती थी और न कहना ठीक था। क्योंकि घर में सिवा एक छोटी सी लड़की जोकि उनकी नन्द थी उसके और किसी से बोलने की सख्त ताकीद थी बस उसे चुपचाप सारे दिन भर घर का काम करने के और गालियाँ सुनने के कोई इलाज न था। उसके विवाह को दो वर्ष हो गए थे। किन्तु वह इतने दिनों में सिवा अपने पति के दूसरे का प्रेम न खींच सकी थी। उसका पति सुशिक्षित और समझदार युवक था किन्तु पत्नी की तरफदारी में बोलने का स्पष्ट बोलने का न उसमें साहस और न बोलना उचित समझता था क्योंकि उसके बोलने का परिणाम उसकी माता पर बुरा पड़े बिना नहीं रहता। सुशीला को वह बहुत चाहता था उसके गुण पर मुग्ध था किन्तु सुशीला के कष्ट को-उस कष्ट को कि जो

और शीघ्र से शीघ्र ध्यान दें।

उसके घरवालों से मिलता था उसे दूर करने से असमर्थ था किन्तु फिर भी सुशीला उसके साँत्वना पर शब्द सुन कर सब दुःखों का सहन करती थी। वह उसे बार २ यह आशा दिलाती था कि अब अपन अपनी दूसरी दूकान पर जावेंगे फिर वहाँ अपन अपना संसार स्वतन्त्रता से आनन्दपूर्वक कर सकेंगे। आज सुशीला का मुख बहुत मलीन दीख पड़ता है। वह धीरे धीरे अपने शयनागार की तरफ जारही है। उसके आने के रास्ते की तरफ दो चक्षु लगे हुए उसने जब प्रवेश किया तब माणिकचन्द ने बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा—

आज बहुत देर लगी ?

हाँ कुछ काम था इसी से देर लग गई। सुशीला ने यह वाक्य अत्यन्त उदासीन स्वर में कहे जिसे सुन कर माणिकचन्द चौंक पड़ा और पूछा—

आज तुम बहुत उदास दीख पड़ती हो क्या हुआ ?

कुछ नहीं यों ही।

तुम मुझसे न मालूम शंका क्यों रखती हो क्या मेरे को तुम अपना नहीं समझतीं।

क्यों नहीं आप से बढ़ कर मेरे दूसरा कौन है किन्तु उसे आपको मैं क्यों सुनाऊं मैं नहीं चाहती कि आपको कुछ कष्ट पहुँचे।

तो फिर कहो न सुनने से बेचेनी बढ़ कर ही मुझे अधिक कष्ट होता है।

आज मेरे हाथ से दूध छुंड गया क्या करूं मेरे घूंघट था और उसमें मैं कपड़े को न देख सकी और हाथ से दूध उतारने लगी तो हाथ से दूध छूट कर मेरे पाँव पर गिरा मेरा पाँव जल गया। मुझे जितना दुःख पाँव जलने का नहीं हुआ इतना बोलने का हुआ। उन्होंने मेरे को इतने कटु वाक्य कहे कि जिससे मेरा हृदय जल गया। यों कहकर सुशीला सिसक सिसक कर रोने लगी। माणिकचन्द ने उसे धैर्य दिलाया और कहा कि प्यारी और थोड़े दिन यह सब सहो मैं आगरे चलने का प्रबन्ध करता हूँ यों कह कर उसे अपने पास खींच लिया और उसके पीठ पर प्रेम से हाथ रखा वह अपने सब दुःखों को भूल गई। और दोनों वार्तालाप कर स्वर्गीय सुख का अनुभव करने लगे।

पिताजी आज कल आगरे की दूकान का हिसाब बराबर नहीं आता। लोगोंकी शिकायतें है तो वहाँ आप वा मेरा जाना जरूरी मालूम होता है।

हाँ बेटा पर तुम देखती हो मेरी प्रकृती इन दिनों ठीक नही रहती इस लिए मैं तो जा नही सकता और अब मेरे से खटपट के काम भी नहीं हो सकते।

पिताजी यदि आपकी आज्ञा हो तो चार छै मास तक मैं वहां पर रहूँ ऐसा कुछ दूर भी नहीं है महीने में एकाध चक्कर लगा आया करूंगा।

जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो।

फिर कल जाने की तैयारी करता हूँ

बहुत ठीक यों कह कर बाबू धनपत-रामजी घर में गए और इस विषय मे अपनी पत्नी की राय क्या है वह लेने के उद्देश से बोले—

माणिक कल आगरे जावेगा और चार छै मास वहीं रहेगा।

क्यों, क्या, उसके, बिना कार्य अटक रहा। यह वाक्य बड़े तेजी से गृहणी महाशया के मुख से निकले क्यों कि उनके हाथ से फंसी शिकार निकल जाने वाली थी। वे यह कब चाहती थीं कि सुशीला सुख से रह जाय। यह क्या भरोसा है कि लड़के को अपने वश में न करलें।

वहाँ मुनीम लोगों ने बड़ा झगड़ा फसा रखा है और इसलिए वहाँ उसका रहना बहुत जरूरी बात है।

इतना झंझट रखते क्यों हो वहाँ की दुकान क्यों नहीं उठा लेते कि जिससे आँख के तारे को दृष्टि के ओर में रखने का समय भी न आय।

इतना क्या दूर है बस मास में एकाध दफे आजाया करेगा।

तुम्हें तो कुछ नहीं पर माताओं का हृदय बड़ा कोमल रहता वे भला पैसे के लिए अपने पेट के गोले को आँखों की ओट में कैसे रख सकती है।

एक दो रोज में तो दूकान उठही नहीं सकती वहाँ का लेन देन साफ करके ही उठ सकती है इसलिए भी तो उसको वहाँ रहना चाहिए। इसलिए कल बहू की भी तैयारी करो वह भी उसके साथ रहेगी।

जब वह यहाँ आही जाया करेगा तब वहाँ उसके भेजने की क्या जरूरत?

अगर वह यहाँ रहेगी तो वह-यहाँ ज्यादा आया जाया करेगा।

नहीं यह बात नहीं हो सकती वहू को उसके साथ जाना ही जरूरी है। यों कह कर अपनी लड़की से बोले कम्मो बेटी जा तो अपनी भावी से कहो कि वह कल आगरे जाने की तैयारी करें गृहणी महाशया क्रोध में आकर वहाँ से चल दी। जब यह बात सुशीला को मालूम पड़ी तब उसे कितना आनंद हुआ जितना कि सुए को पिंजरे से छूटने से होता है। उसने अपने जाने की तैयारी की आज उसे सोने को जाने में बहुत देरी होगई थी माणिकचन्द उसकी प्रतिक्षा कर ही रहा था उसने शयनागार में प्रवेश करते ही बोला—

आज आगरे जाने के आनन्द में शायद मेरी याद भी भूल गई थी दीखती हो।

नहीं सामान के बांधने में बहुत देर लग गई थी। पर यह बताओ तुम्हें इस काम में सफलता कैसे मिल गई और वह भी इतनी जल्दी।

तुम्हारे प्रताप से।

जाओ मैं नहीं तुमसे बात करूंगी जब देखो तब ऐसी ही बातें।

पर क्रोध क्यों करती हो तुम कहोगी वैसा करेंगे।

माणिकचन्द तथा सुशीलाको आगरे आए ६ मास बीत गए। इस समय के जीवन में कितना आनन्द कितना सुख कितनी शान्ति। वे दोनों अपना यह समय स्वर्ग से भी बढ़कर समझते थे इसका एक कारण और भी था और वह उसके एक मित्र की मैत्री होना वह यह था। उसी के घर के सामने विनोदी-लाल नामक एक स्वजातीय सुशिक्षित युवक रहता था। यहाँ आने के पहले उसका थोड़ा परिचय था किंतु अब दृढ़ सम्बन्ध हो गया और उससे उसके सुख में वृद्धि हो गई यद्यपि मनोरमा ने प्रथम २ जाति रिवाज के अनुसार माणिकचन्द से पर्दा रखा था किंतु विनोदीलाल के कहने से अब दोनों कुटुम्बों में बिलकुल पर्दा नहीं रह गया था। सुशीला तथा मनोरमा दोनों सु-शिक्षित थीं। रात्री को दोनों मित्र तथा सखियाँ एक जगह बैठ कर किसी भी

ग्रन्थ को पढ़ा करते थे बीच बीच में वाद विवाद भी छिड़ जाता था। प्रथम प्रथम तो पुरुषों से वाद विवाद करने में स्त्रियों को संकोक मालूम होता था किंतु कुछ दिनों वाद यह वाद जाती रही और वे भी उसमें भाग लेने लगी। माणिचन्द को सुशीला में इतने गुण भरे हैं यह मालूम न था कि वह बड़ी बुद्धि-मान थी। उसने देखा कि स्त्रियाँ हमारे जैसी ही बुद्धिमान है। किंतु उनका क्षेत्र आज कल हमने संकुचित बना डालने के कारण वे विचारियाँ कुछ नहीं कर सकती। विशेष कर एक जगह रहने की कौटुम्बिक रूढ़ी आज कल अत्यन्त सदोष बन जाने के कारण उन्हें बहुत दुख उठाने पड़ते हैं और उनकी बुद्धिमानी का कुछ भी फल नहीं मिल सकता। आज कल के रीति रिवाजों में उसने बहुत सदोपता पाई क्योंकि उसने इस छै महीने में इस बात का पूरा अनुभव कर लिया था। उसे समाजके सदोप रिवाजों के स्थान पर अच्छे रिवाज प्रचलित करने की तीव्र इच्छा पैदा हो गई थी उसने अपने घर के जीवन से आज की तुलना करके देखी थी उसमें उस जीवन को बहुत नीचा पाया। घर पर स्त्री से दिन को बोलना जुर्म था तो फिर वाद विवाद करने को समय ही कहाँ। वेचारी सुशीला को कहाँ १०-११ बजे छुट्टी मिलती क्योंकि घर के कामों के अतिरिक्त अपनी सासके पैर दबाने में उसे बहुत समय लग जाता था ऐसी अवस्था में वे क्या बात चीत विशेषरूप से कर पाते थे क्योंकि यदि सुशीला बिचारी चार बजे न जाय तो उसे सास नन्दों के ताने सुनने पड़ते थे। सास काम लेने में जरा भी कसर नहीं रखती थी और गालियाँ देने में फिर भी वह अच्छी सास कहलाई जाती थी क्योंकि अच्छे कपड़े और गहनों को पहना देने से बढ़ कर और क्या अधिक प्यार हो सकता था। यह स्थिति अब उसे खटकने लगी। यह बात निःसंदेह है कि-यदि उसे उस मित्र का साथ न हुआ होता तो वह अपने जीवन के आनन्द को नहीं मिल पाता क्योंकि आज कल समाज की परस्थिति विशेष कर स्त्री जाति की अत्यन्त विसित्र हो गई है। स्त्रियाँ केवल गहने कपड़ों के इधर उधर की गप्पों के लड़ाने के तथा

र शीघ्र से शीघ्र ध्यान दें।

भीत गालियाँ गाने के और किसी में सुख ही नहीं समझती है। यदि कोई स्त्री इनके विरोध में खड़ी हो जाय एवं इनके कामों को जो वे करती हैं दिल चस्पी न लेकर दूसरे काम करे तो वे इस द्रोह को नहीं सहन कर सकती हैं और अपने ढीकस्त्र से उसे पराजित किए बिना नहीं रहती। स्त्रियों को जरासी बात क्यों नहीं किंतु स्त्री जाति ने कही हुई ही अधिक पसंद आती है। पुरुषों की बात जितनी नहीं मानती उतनी स्त्रियों की। इससे सुशीला ने यहाँ जो धारिष्ट्र बतलाया उसका कारण उसे एक सखी का मिलना था। नहीं तो वह कदापि पुरुषों में बैठ कर वाद विवाद करने तथा पोशाक को बदलने तक आगे नहीं बढ़ती। आज कल उनके रहन सहन में भी परिवर्तन न पड़ गया था। उन्होंनें अपने कपड़े तथा गहनों को आवश्यकतानुरूप बना डाले थे। गहनों को तो करीब करीब तिलाञ्जली ही दे दी थी और कपड़ों की भी चटक मटक जाकर सादगी ने कब्जा कर लिया था। यहाँ आने पर उन्होंने कई बातें सीख ली थीं। किंतु इन समाचारों को सुन कर माणिक की माता का हृदय जल उठा था और वह बार बार कहती थी कि वह तो राँड का रँडूआ बन गया अब मेरे किसी काम का नहीं रहा। वे दोनों मर क्यों नहीं जाते। तब उसके पिता कहते थे यही न माता का हृदय जो बेटे को ऐसे शब्द मुहँ से कहे चुप रहो ऐसे शब्द मुहँ से न निकालो। हाय! असुया से माता का हृदय भी कितना कठोर हो जाता है। यद्यपि उत्तेजनावश यह शब्द माणिक की माता मुहँ से निकालती थी किन्तु फिर भी माणिक पर उसका प्रेम था ही।

सुशीला के प्रारब्ध में यह सुख न था वह बुरे भाग लेकर आई थी। आगरे में प्लेग का प्रकोप हुआ और उसका प्रथम शिकार हुआ माणिकचन्द। माणिकचन्द को प्लेग होते ही सुशीला का चेत जाता रहा विनोदीलाल ने तथा मनोरमा ने उसे ढाँढस दिया किन्तु उनके ढाढस का विशेष परिणाम न हुआ। घर पर खबर पहुँची माणिकके माता पिता आ पहुँचे तब तक तो माणिक की स्थिति पराकाष्ठा तक पहुँच

गई थी प्रयत्नों की कमी नहीं थी। सुशीला, विनोदीलाल तथा मनोरमा इन तीनों ने शुश्रूषा को पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया किंतु फल कुछ न होकर प्रकृती अधिकाधिक अस्वस्थ होने लगी। सुशीला ने तो तीन दिन तक मुहँ में पानी तक नहीं लिया और क्षण भर न विश्रांती ली बस माणिक के पास ही बैठी रही। माणिक उसे बार बार कहा करता था कि तुम जाओ कुछ विश्रांती लो कुछ खाओ तब वह कहती थी नाथ मैं क्या खाऊँ और विश्रांती लूँ मेरा प्राण जब इस अवस्था में है तब मैं कैसे खा सकती हूँ और विश्रांती ले सकती हूँ। आखिर जो होना था सो हुआ निष्ठुर काल ने सुशीला का सौभाग्य सूर्य का अस्त कर शुशीला को अनाथिनी बना ही डाला।

शुशीला को अनाथिनी हुए एक वर्ष हुआ। इस बीच में आपत्तियों ने उसका पीछा ले लिया। कुछ रोज बाद उसके माता पिता की मृत्यु हो उसका रहा सहा आश्रय नष्ट हो गया। उसके पिता के पुत्र न था इस लिए एक लड़का गोद लिया गया था लड़का क्यों खासा युवा था पर इस मायाके भाई ने उसके भाई की कसर को पूरी नहीं कर दिया। ससुराल वालों को तो वह डाइन ही मालूम होने लग गई थी। उस घर के सास के अत्याचारों ने सीमा का उल्लंघन कर दिया था और मार पीट तक बारी आ गइ थी। घर में कोई भी इससे तिल मात्र सहानुभूति रखने वाला न था। उसके कष्ट यहाँ तक बढ़ गए थे कि जिसे मनुष्य कदापि सहन नहीं कर सकता। उससे इतना काम लिया जाता था कि नौकरों चाकरों से भी नहीं लिया जाता और खाने तक को पूरा नहीं दिया जाता था। उसके गहने तथा कपड़े छीन लिए गए थे। घरमें कोई भी इससे सीधी बात तक न करता था। जब वह अपने माय के अर्थात भाई के घर को गई तब उसकी भौजाई ने जो इसके पिता के धन पर गुलछर्रे उड़ा रही थी ऐसा अनुचित वर्ताव किया कि उसे अपने ससुराल के कष्टों को सहना वहाँ रहने की अपेक्षा अच्छा मालूम पड़ा। किंतु इस अवस्था में वह कितने दिन तक रह सकती थी क्योंकि इन कष्टों को सहना उसकी प्रकृती के

[illegible]
ओर शीघ्र से शीघ्र ध्यान दें।

सरल उपाय

(ले० ऐस० ऐल० आर० जैन)

सभी जातियां सोती और जागती हैं किन्तु हमारी ओसवाल जाति जैसी कुम्भकर्णी निद्रा शायद किसी जाति ने भूमण्डल में आजतक न ली होगी। हमारे जाति सेवकों ने हमको जगाया, हमारे मुनिवरों ने भी हमें चिताया पर उसका असर कुछ भी न हुआ, अगर हुआ तो वह कि हम थोड़े से भी जग भी गये तो क्या हुआ? हमने करवटें बदली और ख्याल किया अभी 'बहुत रात है और फिर सोगये—चोर, लुटेरों और चालाकों ने दाव पाकर हमारी असावधानी से अनुचित लाभ उठाया, हमारा धाम, धन, तेज बल और विद्या बुद्धि सब गई, केवल गई नहीं हमारी कुम्भकर्णी नींद? हम पड़े २ खुर्राटे ही लेते रहे हम सोते हैं परन्तु जागते नहीं; यद्यपि हम जागते हैं पर देखते नहीं, यद्यपि हम देखते हैं पर बोलते नहीं और बोलते हैं तो करते नहीं, मृत्यु आसन्ना ओसवाल जाति के नौजवानो! अबभी चेतो, सम्हलो और देखो तुम्हारे घरों की क्या दशा है? तुम्हारी जाति पर कैसी आपत्तियाँ हैं? हमारी सारी स्वतन्त्रता, कुल, लक्ष्मी और सम्पूर्ण शक्तियों के नाश होने पर भी हमने चित्त में झूठा सन्तोष किया था कि कमसे कम धर्म्म हमारा निरापद है, मगर आजकल तो दिन व दिन धर्म की हानि हो रही है—हमारे धर्म्मबन्धु विधर्म को अपना रहे हैं और अन्य जातियों कीजो हमपर श्रद्धा थी वह भी नष्ट होरही है—भला इससे भी बढ़कर और कोई दुरावस्था हो सकती है? ऐसी हालत में देश सेवकों की और मुनिवरों की चेतावनी नक्कारखाने में तूती

की आवाज हो तो आश्चर्य ही क्या है? हमारा हृदय यह जानकर विदीर्ण हो गया है इससे लेखनी उठाने की जरूरत पड़ी है। अब हमको इस अवनति का कारण ढूंढना चाहिये, जांच करने पर मालूम हुआ कि इन सब अवगुणों का कारण यह है कि हम अपने कर्म-पथ से गिरे हुए हैं इसका कारण जाति में कुरीतियों का चलना और फिजूल खर्च का होना ही है। इन कुरीतियों के नाम यह हैं:- १-बाल विवाह २-बेजोड़ विवाह, ३-वृद्ध विवाह, ४-कन्या विक्रय है जिनमें लाखों रुपये पानी की तरह बरबाद किये जाते है। हम इनमें से सिर्फ कन्या विक्रय को ही लेना चाहते हैं, अब यह सवाल उठेगा कि इसका मूल कारण क्या है? जबतक हम किसी बात का मूल कारण न जान जावें तब तक हम आगे कदम नहीं बढ़ा सकते हैं जैसे यह कहावत है कि दुनियां में चोरों कीसंख्या बढ़गई है हम इसको किस प्रकार से कम कर सकते हैं? इसका उपाय वह है कि हम चोरों की माताओं को पकड़लें ताकि आगे चोर न होने पावें इसी तरह हमारी समाज में कन्या विक्रय की संख्या दिन ब दिन बढ़ती है इसका मूल कारण मोसर ही प्रतीत होता है। यह इस तरह से कि कई देशों में ऐसा रिवाज पड़गया है कि जब तक किसी के घर में मोसर न हो जावे तबतक वह अपने लड़के लड़कियों का व्याह नहीं कर सकता, अगर वह धनहीन है तो भी यह बात लाजमी हो गई कि वह कैसे ही रुपया कमाकर मोसर करे। जब उसे कोई उपाय नजर न आता तो उसे अपनी प्यारी पुत्री को बूढ़े बाबा के हाथ बेचकर अपना काम करना पड़ता है-जिससे वृद्ध विवाह की पुष्टि हुई, जब हम कहते हैं कि वृद्ध विवाह को बन्द करना चाहिए जिससे अधिक विधवायें नजर न आयें, तो सबसे पहले हमको इस कुप्रथा को मेटनी चाहिए ताकि वृद्ध विवाह और कन्या विक्रय दोनों बन्द हो जांयगे जिससे विधवायें कम नजर आयेंगी। जब यह सब होजावगा तो बाल विवाह भी बन्द हो जायगा जिससे जाति में सब कुरीतियां बन्द हो जांयगी। अब यह सवाल होता है कि गरीबों को तो नहीं तो धनवान तो करें? सुनिये हमारी

गया ...

और शीघ्र से शीघ्र ध्यान दें।

जातियों को डुबाया है तो इन्हीं धन-वानों ने-और इस बात को जानेदीजिये, अब आप विचार सकतेहैं कि जो आज लक्ष्मीपति है वही कल कंगाल होजाता है क्योंकि किसी के दिन यकसां नहीं रहते, जो आज धनवान है उसकी सारी पीढ़ियां भी धनवान ही रहै यह बात प्रकृति के खिलाफ है, आज आपने जो मोसर किया तो कल आपके मरने पर आपकी सन्तान को आपका मोसर करना लाजमी होगया, चाहे वह धन-हीन ही क्यों न हो, उसको अपनी हाट हवेली यहांतक कि अपनी प्यारी पुत्री को भी बेचकर करना पड़ता है, और अपने आपको वचन रूपी बाणों से बचाता है। जिससे सिद्ध होगया कि मोसर करने वालों के कुल पर कन्या विक्रय का कलंक जरूर आता है जो सब कुरीतियों की जड़ समझली जाय तो क्या हरज है, अगर हमारे धनवान भाई इस लेख को पढ़कर इसपर अमल करे तो जाति की बहुत उन्नतिहो सकती है, अब आप सवाल करेंगे कि लड़के लड़कियों का व्याह तो करना हरएक का फर्ज है मगर हम हमारे पूर्वजों का नाम अमर रखने के लिये इतना भी न करे? और अगर न करेंगे तो हमारे पूर्वज राख में लोटेंगे? सुनिये साहबान संसार में किसका नाम अमर रहता है उसीका जो पाठशाला, विधवाश्रम, अनाथाश्रम, हुनरशाला खोलता है या जो उपकार का काम करता है जैसे औषधालय, पुस्तकालय, धर्मशाला, कुएं तालाब, नहर, खेली बनवाये या जानवरों को प्राण दान दे, या सती स्त्रियों के सतकी रक्षा करे, या अपने धर्म से डिगनेवालों को बचावे इत्यादि बातों से होता है। मगर मैं आपसे पूछता हूँ कि आजसे एक वर्ष, दो वर्ष एक महीने, दो महीने और दो दिन चार दिन के पूर्व आपने क्या खाया था। इसका जवाब यही देंगे कि हमें तो याद नहीं है, इसी प्रकार आपका यह पैसा लोगों को खिलाया हुआ याद नहीं रह सकता जिससे सिद्ध होगया कि इससे आपके पूर्वजों का नाम अमर नहीं रह सकता। इसलिए आप लोग इस पैसे को बचाकर धर्म की रक्षा में लगायें। अब हमको हमारा धर्म हमको बतलाता

है कि जब जीव जब एक खोली से दूसरी खोली में जाता है उसको तीन समय में तो दूसरी जगह पर अहार लेना ही पड़ता है जिससे सिद्ध होगया कि आपके पूर्वज राख में नहीं लोट सकते। (२) हम यह देखते हैं कि शमशान भूमि में तो हजारों मुर्दे जलते हैं और एक को मिट्टी पर कई २ जल गये जिससे सिद्ध होता है कि अगर आपके पूर्वज राख में लोटते तो वह फिर जल गये जिससे सिद्ध हुआ कि हमारे पूर्वज राख में नहीं लोट सके। (३) हम देखते हैं कि दाह क्रिया के बाद हम लोग उनके फूलों को ले आते हैं जिससे सिद्ध हुआ कि हमारे पूर्वज राख में न लोटकर हमारे घरमें ही विराजमान हैं। कई एक भाई उनको गंगा जमना में वहा देते हैं वह वहकर बंगाल की खाड़ी में गिर पड़ते हैं, अब मैं आपसे पूछता हूँ कि आप बड़ेरे २ पुकारते तो हैं मगर उनके मरे बाद उनको अपने घरों में थोड़ी देर के लिए भी नहीं रखते हो, और उनके फूलों को लाने पर भी उनको घर में न रखकर नदियों में वहा देते हो जिससे सिद्ध होगया कि आपके पूर्वज राख में नहीं लौटते हैं। अब आप यह सवाल करेंगे कि क्या हमारे बड़ेरे कम समझ थें जिन्होंने ऐसा रिवाज चलाया ? अगर इतिहास को देखा जाय तो आपको मालूम होगा कि यह रसम अपने पूर्वजों ने पहले तो हिन्दु धर्मावलम्बियों से सीखा उस समय वह मोसर न कर बारवां किया करते थे। और जब मुसलमान हिन्द में आये तो उनको देखादेख अपने पूर्वजों ने बारवां को उठाकर चालीसा करने लगे और होते २ यह रीति प्रचलित हुई है। अब मैं आपको अपने पुराने जमाने और नये जमाने का मुकावला कराना चाहता हूं जिससे आप लोग खुदही ख्याल कर लेंगे कि कौन कम समझ है, हम या हमारे पूर्वज।—

हमारे पूर्वजों की स्थिति—

प्राचीन समय में हमारे पूर्वजों का रहन सहन बिलकुल सादा था उनकी जीविका सब पशुओं और जमीनों पर निर्भर थी, जंगल खुले हुये थे, बारिस भी समय पर होती थी, अनाज दूसरे गांवों को भेजा नहीं जाता था, पशुओं

से उनके घरों में घृत, दूध, दही और मक्खन की कमी न थी जिससे वह और उनकी सन्तान हृष्ट पुष्ट नजर आती थी पशुओं का गोवर खात के लिए बड़ा उपयोगी होता था, किसीको खात मोल लाने की जरूरत न थी खात भी ऐसा था जिसके ऊपर बरसात का पानी नहीं पड़ा हो, जिससे जमीन भी अपना फर्ज अच्छी तरह से अदा करती थी एक खेत में लाखों ही मन अनाज होता था और कपास भी बहुत होता था और एकही फसल का अनाज कई वर्षों के लिए काफ़ी हो सकता था, वह अनाज कुछ तो उनके खाने में चला जाता था कुछ अपने अनाथ भाइयों को देते थे, जुलाहों को कपास देकर कपड़ा बनवा लेते थे, उनकी बुनवाई में अनाज ही देते थे, दर्जियों से उनको सिलवा लेते थे उनकी सिलाई में भी अनाज ही देते थे, गर्ज़ कि जितने काम आदमी की हाजत के लिए होते हैं सब अनाज ही से होते थे। ब्याह में उनको धन को कष्ट नहीं उठाना पड़ता था वह सब जमीन और पशुओ के जरिये से काम निकल जाता था। जब उनके घरों पर अतिथि आते तो वह उनका सत्कार तन और मन से करते थे, उनके दिलमें कोई ख्याल न आता था। लोग हथाइयों पर बैठे हुए न्याय भी करते थे और अपने गांव को सब कुरीतियों से बचाते थे और सबके दुःख सुख की बात पूछते थे, उनका मन पापों से बचा हुआ था उनका दिल साफ था सब सच बोलते थे (यह सारा वृतान्त मेगस्थनीज ने हिन्दुस्थान की प्राचीन हालत को लिखा है अब आप हिन्दुस्तान के इतिहास में देख सकते हैं) इसीसे देश गौरवशाली बना हुआ था और धन-धान्य से पूर्ण तथा अपने जाति भाई को अपने पुत्र से भी अधिक जानते थे यहांतक कि उनकी जितनी तारीफ की जाव उतनी ही कम है वह चादर देखकर पांव फैलाते थे यही उनका ग्राम्य जीवन था इसका अधिक वृतान्त हम इतिहासों से जान सकते हैं:—

हमारी वर्त्तमान स्थिति—

वर्त्तमान समय में रहन सहन में बहुत फर्क पड़गया है, हमारा जीवन पशुओं और जमीन पर निर्भर नहीं रहा

जंगलों पर कर लग गए, बारिश समय पर नहीं होती है, अनाज दूसरे देशों को बहुत भेजा जाता है, पशु न होने की वजह से हमारे घरों में घृत, दूध, दही, मक्खन की कमी है जिससे हम और हमारी सन्तान दुर्बल तथा कमजोर और रोगस्थ होरहे हैं; पशु न होने से खेती के लिए खात मोल लाना पड़ता है और वह खात भी बारिस से भीगा हुआ जिसमें अनाज पैदा करने की शक्ति कम होगई जिससे ज़मीन भी अपना फर्ज अदा नहीं कर सकती है। पैदावार बहुत कम होने लगी अनाज इतना भी नहीं आता कि हमारे घर खर्च के लिए काफी हो। और बाजार से मोल लाना पड़ता है जिससे हम अपने अनाथ भाइयों की मदद नहीं कर सकते हैं। इतना कपास पैदा नहीं होता जो हमारे अंग ढकने को काफी हो इससे कपड़ा भी बाजार से मोल लाने पड़ता है अब फैशनदेवी ने भी हमारे पर साम्राज्य जमा लिया है जिससे खर्च दूना होगया, कपड़ों की सिलाई बिना रुपये के नहीं हो सकती है गर्ज कि जितनी आदमी की हाजत है वह सब रुपयों से पूरी होने लगी। ब्याह में आर्थिक खर्च बहुत बढ़गया यहां तक कि बेटी का ब्याह ३०००) से और बेटा का २५००) बिना नहीं होता है अगर एक आदमी भी एक या दो दिन ठहर जाय तो दिल में बड़ा ख्याल पैदा होता जिससे ७ वर्ष के बालक से लगाकर ६० वर्ष के बूढ़े तक को हाय धन, हाय धन करना पड़ता है। हमारे में न्याय करने की शक्ति ही नहीं। हम अथाइयों को छोड़ ज्यादह पंचायत में भी नहीं जा सकते हैं जिससे हजारों कुरीतियों ने हमारे घर में प्रवेश कर दिया जिससे हम किसी के दुख दर्द की बात नहीं पूछ सकते हैं इससे देश का गौरव घट चला और कंगाल बनगया अपने जाति भाइयों को हम नीच से नीच समझने लगे काठे वस्त्रों का तो हमने बहिष्कार ही कर दिया, बीस कोस जाने की शक्ति रेल, मोटर, साईकिल आदि ने तोड़दी हमारी परिस्थिति बिलकुल बदल गई हमारी जाति में फिजूल खर्च इतना बढ़ गया कि हम माथा भी ऊंचा नहीं कर सकते हैं। फूट देवी ने तो हममें घर कर लिया है। इन खर्चों से इतने तंग

र और शीघ्र से शीघ्र ध्यान दें।
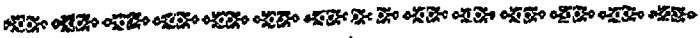
आगये हैं कि हमको परदेश जाना पड़ता है और कितनेही कष्टों का सामना करना पड़ता है, यहांतक कि हमको अपनी प्यारी पुत्री भी बेचनी पड़ती है हम धन के लिए ही अपने बालकों को ऊंची और धर्म की शिक्षा भी नहीं दे सकते हैं। हमारी विधवा बहनों का पतिवृत धर्म का पालना मुश्किल हो गया, उनके खाने पीने पहरने का ख्याल नहीं कर सकते और उनको विधर्मी होने से बचा भी नहीं सकते हमारे अनाथ भाइयों का भी बुरा हाल हो रहा है।

उपर्युक्त लेख से आप विचार सकते हैं कि कौन कम समझ हैं, हमको अपनी चादर देखकर पांव फैलाना चाहिए, कन्या विक्रय के बन्द करने का सिर्फ यही उपाय है कि न तो हम मोसर करें और न मोसर करने वाले के यहां जीमने जावें और जहां पर मोसर की रीति हो उसके मिटाने की कोशिश करें जब आप ऐसी प्रतिज्ञा करेंगे तो जाति में जितनी कुरीतियां है वह सब बन्द हो जायगी जिससे आप बड़े यश के भागी होवेंगे और अपनी जाति और धर्म को उन्नति पर ला सकोगे नहीं तो जाति रसातल को पहुँच जायगी और कलंक का टीका ओसवाल जाति पर रह जायगा।

——:o:——

—:(❀):❀:(❀):—

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

वृथा गर्व से बढ़कर और कौनसी चीज़ ऐसी है जो मनुष्य की आंखों पर पट्टी बांधती, और उसकी वास्तविक अवस्था को उससे छिपाती है? देख, जब तू अपने आपको नहीं देखता तब दूसरे बहुत अच्छी तरह तेरे गुप्त रहस्यों को देखते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जिस प्रकार पोस्त का फूल देखने में सुन्दर और उज्वल होने पर भी सुगन्धहीन और निष्प्रयोजन होता है वैसे ही वह मनुष्य है जो कोई उत्तम गुण न होने पर भी अपने आपको सर्वश्रेष्ट और परम बुद्धिमान् समझता है।

कन्याओं के लिये बूढ़ों के खंजर से बचने के सहज और सरल उपाय

(ले० श्री० मोतीलाल जी पहाड़्या कुनाड़ी कोटा

(गताङ्क से आगे)

(१) देखो, सबसे पहली बात यह है कि सगाई की चर्चा चलने लगे उसी वक्त तुम अपने मां बापों से कहदो कि वर को मुझे दिखाकर मेरा सम्बन्ध किया जाय। अगर वर को मुझे नहीं दिखाया जायगा तो मैं विवाह नहीं करूंगी। तेम अपना वर ऐसा पसन्द करो जो तुमसे ५-७ वर्ष बड़ा हो, कम से कम ड्योढ़ी और अधिक से अधिक दुगनी उम्र का हो। तुम उसके इस्त्रीदार कपड़े लत्तों और कान में पहने हुए भेलों या उसके गले की कंठी और गोप की तरफ मत देखो, तुम उसकी उम्र को देखो। गहने तो बतलाने के लिये मांगकर भी पहन आते हैं। तुमतो अपने सुहाग का ध्यान रक्खो। तुम्हारे भाग्य में जेवर लिखा होगा तो तुम्हारे लिए छप्पर फाड़कर आजावेगा। अपने से कम उम्र के वर को हरगिज भी मत पसन्द करो। बराबर उम्रवाले को भी नहीं; मत ख्याल करो कि उम्र बढ़ही जावेगी, उसकी उम्र के साथ तुम्हारी भी तो उम्र बढ़ेगी। ऊपर कहाजा चुका है कि वर अपने से ड्योढ़ी उम्र का तो जरूरी होना चाहिये।

(२) अगर तुम शरम की वजह से नहीं कह सकती तो लिखकर देदो। अगर पढ़ी लिखी नहीं हो तो अपने छोटे भाई बहन से या अपनी छोटी भाईलियों द्वारा अपने मां बापों से इशारो करवादो कि वे तुम्हारा मतलब समझ जावें।

(३) अगर वे इस तरह न मानें और तुमको बूढ़े के साथ अपना विवाह होने का पता लगे तो तुम गुप्त सस्था-

और शीघ्र से शीघ्र ध्यान ।

ग्रह करो। रोटी मत खाओ, किसी से हंसी खुशी के साथ मत बोलो। बूढ़े के यहां के भेजे हुए जेवर या कपड़े तुमको पहनने के लिये दिये जावें तो तुम उनको मत पहनो। गहनों को पत्थर से तोड़ डालो और कपड़ों को दियासलाई लगाकर उनको जलादो। बूढ़े के यहाँसे आई हुई मिठाई, फल या मेवा तुमको खाने के लिए दिया जावे तो हरगिज भी मत खाओ बल्कि सबके सामने बड़ी नफरत के साथ उसे दूर फेंकदो या कुत्तों को खिलादो ताकि तुम्हारे मां बाप किसी तरह तुम्हारे शुभ सत्याग्रह का भाव समझलें।

(४) यदि इससे भी तुम्हारा काम न बन सके और अगर तुम पढ़ी लिखी हो तो एक चिट्ठी तुम्हारे साथ शादी करने वाले बूढ़े के पास भेजो और उस चिट्ठी में 'राखी' भेजकर बूढ़े को धर्म का बाप बनालो। चिट्ठी में लिखो कि-"तुम मेरे बाप या बाबा की उम्र के हो, मेरा और तुम्हारा विवाह शोभा नहीं देता। मैं तुम्हारे पास अपने भावी सुहाग की रक्षा के लिए राखी भेजकर तुमको अपना धर्म का बाप बनाती हूं। तुम मेरे साथ विवाह करने का विचार छोड़ दो और जिस तरह तुमने मेरे साथ बुरा विचारा इस तरह दूसरी कन्या पर भी झटका चलाने की कोशिश मत करना—।" ऐसा पत्र लिखने से बूढ़ों के बढ़ते हुए हौसले मारे जायँगे और बूढ़े शर्मिन्दा होकर तुम्हारे साथ विवाह करने का विचार त्याग देंगे।

(५) अगर तुम पढ़ी लिखी नहीं हो तो अपने छोटे भाई से ही ऐसा पत्र लिखाकर उस कागज़ पर अपना अंगूठा चिपकादो। अगर कहीं पूंछताछ का काम पड़े तो फौरन मंजूर करलो कि यह चिट्ठी मैंने ही लिखाई है। डरो मत, हिम्मत रक्खो। अपनी रक्षा के लिए ऐसा करना कोई शरम की बात नहीं है और न यह कोई पाप है। शरमदार बूढ़ा तो फिर तुम्हारे साथ ब्याह करने का साहस नहीं करेगा।

(६) एक चिट्ठी अपने गाँव के पञ्चों को भी इसी मामले की लिखो तो कोई हरज की बात नहीं है। देखें पञ्चों की आँखें भी उघड़ती हैं या नहीं?

(७) तुम्हारे माँ बाप या पञ्च पटेल जब तुम्हारे पास होकर इधर उधर।

निकलें या तुम इनके पास होकर निकलो तो 'थू' करके इनके सामने थूको, यानी हर तरह से इनके प्रति घृणा प्रकट करो।

(८) अगर इतना करने पर भी तुमको पैदा करने वाले क़साइयों की अक़्ल ठिकाने न आवे और शादी के उम्मेदवार बूढ़े खूसट के कुछ शर्म पैदा न हो तो जिस रोज़ तुम्हारी शादी के विनायक बैठें उस रोज़ तुम कहीं घुस जाओ और विनायक पूजा में शामिल मत होओ अगर तुमको वर के बूढ़ा होने की बात बाद में मालूम पड़े तो तैलों के दिन तैल मत चढ़ने दो, घुस जावो, उस दिन को टाल दो। अगर नहीं घुस सको तो डोरड़ा मत बँधने दो। अगर डोरड़ा बाँध भी दें तो उसको तोड़ डालो। फिर देखें, हत्यारे माँ बापों को भी शरम आती है या नहीं?

(९) शादी होने के दिनों में मेंहदी मत लगाओ, फूल माला मत पहनो, पान मत खाओ और पीठी की मालिश मत करो। किसी के बनौरे में जीमने मत जाओ, घोड़ी पर मत बैठो और मौक़ा पाकर फौरन कहदो कि मैं इस बूढ़े के साथ ब्याह न करूंगी।

(१०) फेरों के वास्ते चंवरी बनाने के लिए आए हुए वासनों और कलशों को पत्थर से फोड़ डालो और चारों खूंटों पर वासनों के लपेटे हुए टूल के कपड़े में आग लगादो। लकड़ी के गड़े हुए मेंडाको उखाड़कर फेंकदो।

(११) इस दरमियान में अगर तुमसे होसके तो अपनी बिरादरी का अच्छा सा लड़का अपने दिलमें जमालो और किसी तरह से उसको बुलवाकर किसी अलहदा स्थान में उसकी रज़ामन्दी से उसके साथ फेरे पटकलो। आपत्ति के ऐसे समय में फेरा पड़ाने वाले किसी ब्राह्मण की राह मत देखो। फेरा पाड़ने वाला सच्चा ब्राह्मण तो तुम्हारे मन-मन्दिर में बैठा हुआ है। भगवान् के हाथ जोड़कर तथा अपनी आत्मा और धर्म को साक्षी बनाकर इसको अपना पति स्वीकार करलो और उसके साथ होजावो। ऐसी शरम किसी काम की नहीं जिससे तुम्हारा बुरा (अनिष्ट) होता हो।

(१२) अगर तुम लिख भी नहीं

सकतीं, बोल भी नहीं सकतीं और ऊ-पर बतलाए हुए मुताबिक़ भी उपाय नहीं कर सकतीं तो अब आख़िरी तरकीब तुम्हें बतलाई जाती है। तुमने इस वक्त भी शरम रखी तो तुम्हारा काम जाने और तुम जानो। हमतो तुमको रस्ता बतला सकते हैं। आख़िरी तरक़ीब यह है कि बूढ़े से फेरा पड़ने के समय तुम अपनी घाघरी के नेफ़ों में एक कतरनी (कैंची) छिपाए रखो। जब तुम्हारा गठजोड़ा (ग्रंह-जोड़ा) बुड्ढे के साथ जोड़ा जावे तो तुम फ़ौरन उसे कैंची से काटदो। ज्यों २ लोग जोड़ते जावें त्यों २ तुमभी उसे काटती जावो। अगर तुम्हारे हाथ से कैंची छीनली जावे तो दाँतों से काम लो। और जब तुम्हारा मामा तुमको फेरों के लिए गोद में उठावे तो तुम गोद में मत जाओ और मचल जावो। माथे पर बाँधा हुआ मोड़ तोड़कर हवन-कुण्ड में फेंकदो। तुमतो चुपचाप गठजोड़े को कतरनी से काटकर बूढ़े बीन की गोद में जा बैठो और उसको सब लोगों के सामने 'बाबा साहब' या दादा जी साहब कहना शुरू करदो। बूढ़े का मोड़ भी माथे पर से झपट कर तोड़ मरोड़कर हवन कुण्ड में फेंकदो। तुम्हारे दुष्ट माँ बाप, तुम्हारा पापी मामा फेरा पाड़ने वाला राक्षस गाँव गुरू दूसरे लोग तुमको बहुत बहकावेंगे, डरावेंगे, धमकावेंगे और गालियाँ दे देकर तुमको बुरा भला भी कहेंगे लेकिन तुम किसी नालायक की मत सुनो। डरो मत, गाढ़ी बनी रहो। तुम्हारी ओरसे बोलने वाले मददगार भी वहाँ बहुत से आजावेंगे। अगर तुम्हारा मन सच्चा है तो श्री भगवान् तुम्हारे साथ हैं। अगर गाढ़ी बनी रहोगी तो भगवान् जरूर तुम्हारे लिए अच्छा वर तलाश करके उसी वक्त भेजेंगे और तुम्हारी सारी मनोकामना सफल होगी। लेकिन भगवान् में मन लगाए रहो और इस शुभ सत्याग्रह पर डटी रहो। सत्याग्रह से सारे काम सफल होते हैं।

यह उपाय तुमको बूढ़ों के बढ़ते हुए हौंसले दबाने और अपने को उनके चंगुल से बचने के बतलाए हैं। जैसा समय आवें सुविधा के मुताबिक इनको काम में लाती रहो। अगर तुम इन उपायों को काम में न लाओगी तो

बूढ़ेजी तो स्मशान घाटी का टिकट लेकर चलतान बनेंगे और तुमको पीछे से विधवा बनकर अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ेंगे। तुम अगर निर्दोष भी बनी रहोगी तो भी दुनियाँ झूठा दोष लगाने में कसर न रखेगी। इसलिए हमारी ऊपर बतलाई हुई बातों को गाँठ देकर पल्ले बाँधलो। अगर लोगों में धर्म कर्म रहता तो तुम्हारे ताँई हमको ऐसे उपाय बतलाने की जरूरत नहीं थी। लेकिन मजबूर होकर ये उपाय तुम्हारे सामने रखने पड़े हैं, इसलिए कि जैसा २ मौक़ा आवे तुम इनको अमल में लाती रहो। यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि तुम किसी बूढ़े के चटक मटकदार कपड़े लत्तों पर मत रीझना। मैं धनवानके घर जाऊंगी तो सोने का जेवर (गहना) पहनूंगी, खूब खाने को मिलेगा, बढ़िया २ रेशमी कपड़ा लत्ता पहनने को मिलेगा, मोटर में बैठी २ फिरूंगी और सेठानीजी कहाऊंगी—ऐसा मत सोचना। यह सब झूठी बात है। तुम्हारे लिए तो सबसे बड़ी चीज़ सुहाग है। सुहाग ही तुम्हारे लिए संजीवनी बूटी है। प्राणों के रहते हुए भी तुमको अपने भावी सुहाग की रक्षा करनी चाहिए। अपने सुहाग की रक्षा के लिए तुम अगर थोड़ीसी फजूल शरम भी खोदो तो, ऐसी कोई बात नहीं है। बूढ़ेजी के सोने चाँदी के जेवर और रेशमी पोशाकें तुम्हारे सुहाग के सामने कोई चीज़ नहीं है। सोने चाँदी के जेवरभी तुमको बूढ़ेजी के जीते जी ही मिलेंगे, बूढ़ेजी के चल देने के बाद ही पहनने के लिए काली कुड़ती और काला पोमचा, खाने को रूखी रोटी और बासी सागही तुमको मिलेगा। तुम हँसी खुशी से नहीं बोल सकोगी, किसी मङ्गलीक कार्य में तुमको घँसने भी नहीं दिया जायगा सुहागन औरतें तुमसे बोलना भी पाप समझेंगी। इसलिए हमारी बातकों अच्छी तरहसे समझलो। स्त्रियों के लिए तो सुहाग ही सब कुछ है, अगर सुहाग नही है तो स्त्रियों का जीनाही मरने के बराबर है।

लेकिन अब आखिरी उपदेश भी सुनलो। वह यह है कि अगर तुम लाज शरम में रहीं या इतना करने पर भी कदाचित बूढ़े के साथ तुम्हारा व्याह

होचुका हो तो बाद में किसी प्रकार का क्लेस मत रक्खो, अपने कर्मों का दण्ड समझ कर सब्र करो। विवाह होजाने के बाद अपने पति ही को अपना ईश्वर समझो। पति की सेवा में किसी प्रकार की कसर मत रखो चाहे वह बूढ़ा हो या कैसाही हो। अवतो इसीसे सच्चा प्रेम रक्खो, दूसरे पुरुष को अपना बाप और भाई समझो, इसीमें तुम्हारी भलाई है। अगर इसके विपरीत चलोगी तो तुम्हारे पतिव्रत धर्म में और शीलता में दोष आवेगा। व्यवहार में तुम्हारी निन्दा होगी और तुम्हारा जीवन बिगड़ जावेगा अब तो तुम्हारा बुरा या भला पति ही तुम्हारे जीवन का आधार है। अब पतिव्रत धर्म के सिवाय तुम्हारे लिए कोई भी धर्म तुम्हारा जीवन बेड़ा पार लगाने वाला नहीं है अबतो कुंवारी पन की बातों को भूलकर पतिव्रत धर्म की जय बोलो।

भगवान् ! माता पिताओं की अक्ल ठिकाने आवे ! पञ्चों को सुबुद्धि प्राप्त होवे ! बूढ़े लोग बुढ़ापे में व्याह करने का विचार त्यागें। कन्याओं का भावी सुहाग सुरक्षित रहे ! और भारत में बढ़ती हुई विधवाओं की संख्या कम हो।

विजयी कौन

(ले०-एक मैम्बर जैनसभा व्यावर)

(१)

लाला घनश्यामदासजी एक नामी घराने में से थे यों तो आपका निवासस्थान मरुभूमि के पवाँरिया ग्राम में था मगर धन कमाने के लिये आप इस समय कोलार आदि नगरों में निवास करते हैं आपके पूरनचन्द व नेमीचन्द जो दोनों परममित्र थे बाह्य दिखावटी द्रव्य में आपका रहन सहन खर्च व्योपार लक्षाधीश से कम नहीं था, आपके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। पुत्रों के नाम पारसमल मानकचन्द नवरतनमल था और पुत्रियों के नाम चाँदा और कान्ता था, आपको अपने घराने व कुटुम्ब का पूर्ण अभिमान था यहाँ तक कि आप अपने को जाति धर्म आदि में-

अगुवा समझते थे और खुशामदी व मामूली स्थिति वाले सज्जन आपके धन्य धान्य का राग अलापा करते थे मगर प्रिय पाठको घनश्यामदास जी की असली हालत में यह रोचकता नहीं थी उसमें मानो दिन और रात्रि का अन्तर था।

(२)

आज घनश्यामदासजी के पिता का परलोकवास हुए दो दिन होगये हैं लोग सन्तोष दिलाने का नाम लेकर उनके पिता की तारीफ करते जाते हैं कि जिससे घनश्यामदासजी को रोना ही पड़ता है लोग चाहते हैं कि लाला घनश्यामदासजी अपने पिता का जल्द मोसर करें, मगर हमारे लाला घनश्यामदासजी तो घी खिचड़ी की बंदूक से ही कलेजा पकड़े बैठे थे। पाठको, परस्थिति जब ठीक होती है तो चिन्ता नहीं मगर घनश्यामदासजी की गणना ऊपरी लक्षाधीशों में थी इसलिये विचारे मान लेने को मन-रूपी घोड़ा मोसर-रूपी कीचड़ में भगा रहे थे-पूरनचन्द जी व नेमीचन्दजी भी सन्तोष दिलाने को आये लालाजी ने अपने मित्रों को देख अश्रुधारा बहानी शुरू की। मित्रों ने सन्तोष-रूपी जल से लालाजी का कलेजा ठंडा किया और बोले कि जितनी स्पर्शना थी उतनी होचुकी, आयुष्य के आगे ज़ोर नहीं। लालाजी को आज कहीं ऐसे सन्तोष दिलाने वाले वाक्य सुनने को मिले वरना सिवाय रोने के काम न था, लालाजी ने अपने मित्रों के लिये घी खिचड़ी का भोजन बनाने के लिये अपने पुत्रों को आज्ञा दी, यह सुनकर दोनों मित्र आश्चर्य में गोता खाकर बोले कि लाला साहिब कैसा घी खिचड़ी का भोजन? सुनिये, इस समय यह कार्य्य आप मानों दान पुण्य समझकर मृतक के पीछे हमारे लिये घी खिचड़ी करते हैं यह कदापि नहीं होगा हम आपके आर्तध्यान को हटाने के लिये सन्तोष-रूपी अमृत देने आये हैं न कि घी खिचड़ी उड़ाने। लालाजी अपने मित्रों के विचारों से व अपनी परिस्थिति से अनभिज्ञ न थे, मगर करते क्या थे पक्के मारवाड़ी, उनका यहाँतक खयाल था कि अगर मृतक के पीछे घी खिचड़ी या लड्डू या सीरा न उड़ाया जावे तो वो नहीं

खिलाने वाला और नहीं उड़ाने वाले दोनों पूरे सोलहों आने कपूत व निंद्य-कर्मी हैं उनका खुल्लमखुल्ला वाक्य था कि चाहे खुद गिरवीं रहो, चाहे तकलीफ देखो मगर कार्य्य तो होना ही चाहिये।

(३)

लालाजी के पिता साहिब को गुजरे आज बारह दिन पूरे हो रहे हैं लोग मोसर की आमन्त्रण पत्रिका की टोह लगाये हुए हैं लालाजी का दिल तो कोसों दौड़ता है मगर विचारे करें क्या परिस्थिति खराब, टट्टू नहीं चलता तो भी लालाजी चुप नहीं रहने पाते और न लोग ही चुप रहने देते। पाठको, मृतक भोजन में लोगों को कुछ चढ़ाना तो पड़ता ही नहीं है तो फिर वो क्यों हानि लाभ का हिसाब लगावें, उनके तो एक दिन का खर्च बचकर मीठे पकवान से मित्रता होती है कुछ भी हो लालाजी अपने अभिमान और लोगों की चाल में फँस चुके थे। अपने तीनों पुत्रों और दोनों मित्रों को बुलवाया और यह राम कहानी सुनाई। मित्र दंग होगये पुत्रों के हाथ पाँव फूल गये मनही मन विचारने लगे कि अभी हम सुख से गृहस्थावास के चलाने में भी उलझते हैं तो यह दो घाट साढ़े तीन हजार का चन्दा कैसे पूरा हो मित्रों ने हिम्मत बाँधी लालाजी को बहुत कुछ समझाते हुए कहने लगे कि पहिले आप अपने अनाथ भाई बहिनों का प्रबन्ध करने के लिये अनाथालय में एक हज़ार एक रुपैया अपने पिताजी के नाम से भेट कीजिये, फिर यह मोसर ओसर का गोता मारिये। मित्रों की वार्त्ता सुन लालाजी हँस पड़े और बोले कि अच्छे कपूत जन्मे पहिले मोसर फिर गृहस्थावासादि व उपकारादि कार्य्य हुआ करते हैं। हमने तो जैठ शुक्ला चौथ का मोसर मुकर्रर कर दिया है।

(४)

रात्रि का समय है दुलीचन्द व लालाजी व उनके तीनों पुत्र बैठे हुए कुछ पेचीदे मसले में मगज़ लड़ा रहे हैं दो पुत्र व दो मित्र मोसर न करने की डोर तान रहे हैं और एक पुत्र मानकचन्द व दुलीचन्दजी मोसर कर डालने की बात बैठाने में जी जान तन तोड़ परिश्रम कर रहे हैं तो पाठको है

गये दो दल, चलने लगी बहस कृपया आपभी इस मसले को सुनें और सोचें

दुलीचन्द-देखोजी ज़बान एक है लालाजी ने मोसर की हाँ भरली परवा क्या है लाखों का माल है मरते वक्त साथ नहीं चलता है जाति हितार्थ के कार्य्य में आप क्यों रोग अड़ाते हैं हम कहते हैं कुछभी नहीं चलेगी मोसर होगा।

मानकचन्द-हाँ भाई ठीक तो है इन लोगों की अक्ल गुम होरही है आखिर हैं तो नादान ही। इतना भी नहीं समझते कि लालाजी साहिब की ईज़्ज़त ही ऐसी बढ़ी इन्होंने हजारों के मोसर करा दिये तब कहीं हमारी तुम्हारी शादियाँ हुई हैं लड़ो मत करने दो दादा उद्धार व जाति उद्धार का कार्य्य-

पूरनचन्द-प्रथम तो पैसे का सवाल है?

दुलीचन्द-अरे भाई मानकचन्द इनको ज़रा थैलियां तो दिखादो यह अभी तक तो तुमको धनहीन ही समझ रहे हैं:—

मानक०-रुपैये गिनकर डेढ़ हजार तो हैं मगर खर्च दो घाट साढ़े तीन हज़ार का है बाकी रुपैया फौरन ले आयेंगे।

नेमीचन्द-देखा दुलीचन्दजी थाहम स्थिति से नजर हटा इधर देखिये। कहिये बाकी रुपैये कहांसे लाओगे क्या चोरी करोगे या कर्ज लोगे?

दुलीचन्द-लालाजी क्या यही रकम है?

लालाजी-(नीची गर्दन करते हुए) हां साहिब यही रकम!

दुलीचन्द-अरे भाई क्यों झूठ बोलते हो तुम गिरवी का धन्धा करते हो कसाई, भंगी, ऊंच नीच गोत्र के कपड़े व जेवर दो आनी, चारानी के सूद में गिरवीं रखते हो, कमसे कम दस हजार की साल निकालते हो फिर भी यों ही रहे क्या?

लालाजी-अरे भाई क्या करूं इज्जत के लिये खर्च रेशमी व चमकीले उमदा विदेशी वस्त्र व खाने को बढ़िया चीज़ चाहिये तिसपर भी हर साल ब्याह मायरा विनोरा पाहुना, सत्कार आदि मुझे घेरे रहते हैं बस इसीमें आमदनी चट होजाती है।

दुलीचन्द-अच्छा भाई सुनो रुपैये का मैं इन्तजाम करदूं।

पूरनचन्द-कैसे कर होगे क्या कोई अन्याय पर कमर बांधोगे?

दुलो०-नहीं जी-देखो लालाजी के एक पुत्री चांदा सोलह वर्षीय की शादी तो एक नौजवान हृष्ट पुष्ट कमोऊ सामान स्थिति वाले के यहां हो चुकी अब मैं दूसरी पुत्री कान्ता की शादी ला० उम्मेदीमलजी कोटाधीश के यहां करा दूंगा वहांसे थैलियां भर जावेंगी और कान्ता भी सेठानी बनकर सुखी हो जावेगी तुम डरो मत मैं दलाली तुमसे नहीं लूंगा और तुम्हारे मोसर का कार्य अच्छी रीति से करा दूंगा है न अच्छी तरकीब।

दुली०-हां हां वही है देखो वो है न धनाढ्य?

नेमी०-ओः! वोह तो पैंतालीस बरस का बुड्ढा है दांत गिर गये मरने में दो दिनकम पौने सात महीने बचेहैं उसके साथ क्या तुम मेरी प्रिय भतीजी कान्ता की शादी कराना चाहते हो अरे ऐसा काम हमारे जीतेजी कभी न होगा।

दुली०-क्यों कहो तो सही क्या हरज है?

पूरन०-गुस्से होकर क्या तुम कन्या को मांस खाना ठीक समझते हो अपने पूर्वज तो कन्या के घर का जल भी पीकर ऋणी न होना चाहते थे। क्या कान्ता के विधवा होने में देर रहेगी। अभी देखते नहीं हो पचास फी सैकड़ा इस समय पचास बरस से ज्यादा नहीं होने पाते कि गुपचुप रस्ता लेते हैं। अरे दुलीचन्द तुम क्या अन्याय कराना चाहते हो मेरी राय में तो ऐसा निन्दनीय कर्म एक कसाई भी करने में हिचकता होगा।

दुलीचन्द-क्या नौजवान नहीं मरते हैं?

नेमीचन्द-मरते जरूर हैं मगर बुड्ढा तो साक्षात् मौत का भानजा ही है उसके मरने में अचम्भा नहीं होने पाता।

लालाजी-भजी मैं अब समझ गया ऐसा निन्दनीय कर्म से तो मरना श्रेयकर है खैर इस बात को जाने दो मगर मैंने जो पंचों को मोसर जिमाने का कह

दिया वो वाक्य तो कभी नहीं हट स-
केंगे।

पारसमल-पिताजी आपने पंचों को
क्या कहा ?

लालाजी-भाई मैंने यह कहा कि
मेरे पिता गुजर गये इसलिये उनके
पीछे जब चणे की शक्ति मूजब आपको
मोसर में जिमाऊंगा गरीब हूँ पंच मं-
जूर करें।

नवरतनमल-पंचों ने क्या कहा ?
घनश्यामदास-बेटा उन्होंने यह कहा
कि आपकी बात मंजूर है बड़े आदमी
अपनी बड़ाई नहीं करते हैं सो बेटा
चाहे राजी होवो या नाराज मोसर तो
अवश्य होगा।

नेमी०—रुपैया तो कुल डेढ़ हजार
ही है और फिरभी यही फिकर ?

घनश्याम०—यही फिकर है. क्या
करूं !

दुलीचन्द—अजी मोसर तो हर त-
रह से जरूर करना होगा।

नेमीचन्द—चलिये पंचों को अर्ज
करें कह देंगे कि स्थिति नहीं है पंच स-
मझदार और क्षमा वाले हैं दुलीचन्द
जैसे खाने के लोभी नहीं हैं यह जरूर

दुलीचन्द-कदापि माफ न होगा
यह कहकर चला गया।

(५)

आज लाला घनश्यामदासजी के
मकान के रूबरू करीब सौ सवासौ स-
ज्जन बैठे हुए हैं लालाजी व पारसमलजी
व नवरतनमलजी व पूरनचन्दजी व
नेमीचन्दजी हाथ जोड़े खड़े २ अर्ज
करते हैं कि हमारी मोसर की शक्ति
नहीं माफ करें। इतने में सिवाय १२
आदमियों के सब पंचायत हाहाकार
मचाने लगी और खूब गुल शोर करने
लगे कोई की पगड़ी खुलगई तो कोई
का दुपट्टा उड़ने लगा कोई के पट्टे बि-
खर गये तो कोई का बोलते २ मुंह
सूजगया। सज्जनो मतलब यह कि ला०
जी की विन्ती मंजूर न हुई और क्योंकि
हा हुल्लड़ ज्यादा होगया (जैसा कि
हरएक बाबत में किया जाता है) और
लोग खड़े होकर और लम्बे २ हाथ कर
करके बोलते थे इसलिये वहां पुलिस
कानेस्टेबिल लाठियां लेकर आगये और
दंगा समझकर लाठियां भाड़नी शुरू
करदीं अब लोग दुम दबाकर और मार
खाकर चुपके २ खिसके सबकी मरम्मत
हुई मगर हमारे दुलीचन्दजी की मर-
म्मत भी नहीं मगर टांगकी हड्डी टूट

गई जब कानेस्टेबिलों को मालुम हुआ कि यह दंगा नहीं था पंचायत थी तब वह नौ दो ग्यारह करगये।

(६)

लालाजी व उनके दो पुत्र व दोनों मित्र असफल हुये तब इन्होंने कहा कि जैसे के साथ तैसा हो तब आनन्द आवे। पाठको अब देखिये यह बात तय पाई कि जब चणों का मोसर कर दिया जावे जिसमें लालाजी की ज़बान व इज्जत रह जावेगी। लो सज्जन मिती मुकर्रर थी वो आही गई जो चने की बोरियां मंगवा ली गई ठण्डा जल रखवा दिया न्यौते दिये गये मगर इस मुहल्ले के सज्जन बड़े असमंजस में हैं वो विचार करते हैं कि आज मोसर है न्यौते आ चुके मगर रसोई का धुआं नहीं दीखता इतने में दुलीचन्दजी बोल उठे कि वो सीधी रसोई हलवाई से ले आये मालूम होते हैं चलो बुलावा आगया जीमने में अगाड़ी और लड़ाई में पिछाड़ी वाली कहावत जल्द सिद्ध करो।

(७)

आज मोसर है क्या पुरुष क्या बच्चे सभी विदेशीय अशुद्ध चर्बी लगे हुए मगर चमकीले भड़कीले वस्त्र पहिनकर दमादम आकर बैठगये तिसपर भी स्त्रियों की छटा तो पाठकों को मालुम ही है वे मज़दूर की तरह बोझ से लदी हुई चटक मटक करती बिलकुल पतील कपड़े मानों वस्त्रहीन हो पहिने हुई रणकार झणकार करती हुई न्यात के नौहरे में आ बैठी हैं जब सब आगये तो ड्यौढ़ीवान ने नवरतनमलजी के कहने पर नौहरे का ताला लगा दिया और पारसमलजी ने जाति को कहा कि पिताजी ने जिस चीज़ की परवानगी ली वो अभी परोसी जाती है आप खूब जीमें मगर जो झूठन डालेगा उसकी लाठियों द्वारा पूर्ण खबर ली जावेगी सबने आश्चर्य दर्शाते हुए स्वीकार किया। लो पाठको वो ही अब चणे की बोरियां खुलीं सबको परोसागया लोग दांतों में उंगली डालकर टकटक देखने लगे तब नवरतनमलजी ने कहा कि मेरी रजा है जीमना शुरू करो यह देख सब पंच लजाये जब उनको लाठियां दिखलाई तो सिवाय दुलीचन्द के और सबने मोसर जीमने को ताजिंदगी त्याग कर दिया नोहरा खुलगया मोसर खतम हुआ लालाजी अपने पुत्र और मित्रों से बड़े प्रसन्न हुए तब नेमीचन्दजी ने अनाथालय की सहायता चाही लालाजी

ने कहा कि मानकचन्द से पूछकर पांच-सौ रुपये दूंगा।

(८)

शेखर का नाम निशान उस ग्राम से विदा हो चला अनाथालय खुलने की तय्यारी हुई सबके दिल हर्षित थे मगर दो चार अगुवाओं ने यह काम भी नहीं होने दिया उसमें खास खिल्ले-दार पाग बंधाने में वही दुलीचन्दजी ही थे दुलीचन्दजी ने पहिले तो यह विवाद किया कि अनाथालय की जरूरत ही नहीं है अपनी जाति में कोई अनाथ ही नहीं है अगर कोई है तो ऐसे चन्दे का पैसा कौन खावे मगर उनकी सब दलीलें हल्दी के रंग के समान ठहर न सकी तब सब सज्जनों की देखा देख दुलीचन्दजी ने भी ग्यारह रुपये देने का वादा किया मगर दुलीचन्दजी ने दो चार आदमियों को पक्ष में ले उस सवाल को ही हाल साहिब के कूए में गिरवा दिया मतलब यह कि लाला नेमीचन्दजी आदि की इस आशा पर कि अनाथालय किसी जंकशनवालों के बड़े नगर में खुलेगा बिलकुल निष्फल होगई लोग रखते पड़े।

(९)

लाला घनश्यामदासजी की दोनों पुत्रियों का विवाह होचुका उन्होंने अन्याय से पैसा कमाने व चर्बीदार वस्त्र पहिनने व कन्या के रुपये लेने व मोसर करने व झूंठेपक्ष व ली पंचायती करने का त्याग कर लिये नीति से धन कमा अल्प खर्च में अपने कुटुम्ब का भरण पोषण करते हुए अपने तीनों पुत्रों व दोनों मित्रों समेत जाति उन्नति व धर्म उन्नति व आत्म उन्नति में लग गये इस पर दुलीचन्दजी द्वेष करने लगे। देश में विधवा विवाह का समर्थन आर्य आदि दूसरे धर्म वाले ही नहीं वरन् कई नामधारी जैनी भी अज्ञान स्वार्थ व हट बुद्धि से करने लगे इसका खण्डन लालाजी आदि ने पूर्णरूप से किया यह देखकर दुलीचन्दजी समझने लगे कि अब मौका है हाथों से कई मर्तबा छूट चले मगर अब नाक में दम करने की ताकत रखता हूँ।

(१०)

पाठको आज लालाजी व दुलीचन्दजी का आपस में विधवा विवाह पर शास्त्रार्थ है लालाजी ब्रह्मचर्य के पक्के

प्रेमी और विधवा विवाह का खण्डन करने वाले थे और दुलीचन्दजी विधवा विवाह के मण्डन में थे मनुष्य हजारों की संख्या में एकत्रित हैं एक सभापति हारजीत के न्याय को तत्पर हो जनता सुनने को कान लगाये बैठी है लो पाठको दुलीचन्दजी कहें सो सुनिये—

दुली०-मेरे प्यारे सज्जनो हमारा मार्ग पृथ्वी तेज वायु वनस्पति स्थावर व कीड़ी आदि त्रस जीवों पर दया करने को खुल्लमखुल्ला उच्च स्वर से कह रहा है और हमारा जैन धर्म बतला रहा है कि अगर खुद सुखी होना चाहते हो तो हिंसा झूठ चोरी मैथुन आदि से दूर रहो। इस वक्त विधवाओं की संख्या अधिक होगई है उनके कामरूपी हृदय की ज्वाला पुनर्विवाह द्वाराही मिट सकती है अन्यथा नहीं। देखिये विधवा विवाह न होने से जाति घट रही है गर्भ गिरते है इसलिये विधवा विवाह जारी कीजिये।

घनश्याम-सज्जनो जो जैनधर्म के लिये हमारे जैनेतर दुलीचन्दजी ने कहा है वो मुझे और आप सबको मान्य है सचमुच जैनधर्म विश्वव्यापी पूर्ण अहिंसामयी प्राचीन व मुक्तीरूपी फल देने के योग्य ही है। विधवा विवाह के लिये जो आजकल मण्डन किया जाता है वो सर्वथा त्याज्य है सुनिये-अगर विधवा विवाह में ही जाति व स्त्रियों का फायदा होता तो आज उन जातियों की जिनमें कि विधवा विवाह प्रचलित है आज ऐसी हीन स्थिति क्यों होती आज उनकी स्त्रियां अपने पति को छोड़ अन्य के यहां जा बैठती हैं आज उनकी स्त्रियों में पति प्रेम नहीं। पति स्त्री को कहता है कि मैं तुझे निकाल दूंगा और स्त्री पति से कहती है कि जा मर तेरे जैसे मेरे छप्पन है। पाठको उन जातियों का कुटुम्ब होते हुए भी नहीं के समान है। विधवा विवाह की प्रणाली वेश्या की बड़ी बहन ब्रह्मचर्य की जानी दुश्मन है सो आप प्रत्यक्ष देखही रहे हैं यों तो जहाँ लाखों स्त्रियां शीलवान हैं उनमें से पति होते हुए भी कई व्यभिचारिणी निकल सकती हैं विधवा विवाह सर्वथा न्याय व जाति व धर्म व कुल से सोलहो आना विरुद्ध है जो कोई स्वार्थ व अज्ञानवश दीर्घ दृष्टि लगाये बिना इसका मण्डन करता

है वो कुशील व सब दुर्गुणों का इष्ट मित्र है।

पाठको शास्त्रार्थ खतम हुआ सभापति ने विधवाविवाह के खण्डन को न्याय युक्त और सत्य बतलाया जनता ने घनश्यामदासजी की राय पसन्द की उनको धन्यवाद दिया विधवा विवाह मण्डन की हार हुई दुलीचन्दजी ने टेक छोड़दी और विधवा विवाह खण्डन को स्वीकार किया और सभापति जी ने निम्न प्रकार अपना भाषण दिया:—

हे प्यारे मित्रो पहिले पूर्णरूप से ब्रह्मचर्य्य का पालन कराया जाता था इसी कारण यह देश उन्नत हुआ मगर हाय अबसे ब्रह्मचर्य्य का नाश होने में लोगों ने स्वार्थ व अभिमान वश धर्म का नाम लेते हुए सहायता दी है तबही से इस देश व जाति का अधःपतन हुआ है अगर जनता अबभी पाठशाला अनाथालय विधवाश्रम हुनरोद्योगशाला जारी करें बहिनों को शील का महत्व समझावे और बच्चों को बोर्डिङ्ग में रख ब्रह्मचर्य पालन करावे तो वो दिन दूर नहीं कि आपका व हमारा उत्थान न देखा जावे तृष्णा से कोई काम से अरुचि नहीं होने पाती इसका प्रत्यक्ष नमूना देखिये कि विधवा विवाहवाली जातियों में हजारों स्त्रियां ऐसी मिलेंगी जो चार छः आठ दस और बीस पति से वञ्चित रही हों अगर वही स्त्रियां अपने शील धर्म को समझती और उनको हुनर ज्ञान आदि से सहायता दी जाती और जाति विधवा विवाह होना महानीच व जाति व धर्म की जड़ खोने वाली समझती तो स्त्रियां ऐसा कुकर्म न करती अपने पति को छोड़ वेश्या की तरह न भटकती और सन्तोष द्वारा विद्वान बन आप लोगों के देश धर्म और जाति उन्नति में कुछ हाथ बटाती इस लिये जनता को चाहिये कि ऐसे निन्दनीय कार्य को सुन अपने कानों को अपवित्र न करे और अपनी बहिनों को शील धर्म का महात्म्य सिखलावें ज्ञान पढ़ावें धर्म के कार्य व हुनर आदि में लगावें उनके लिये खाने पीने व हुनर सीखने व शील आदि के गुण सुनने समझने और पालन करने के लिये अनाथालय, विधवाश्रम, हुनरुद्योगशाला, पाठशाला आदि का प्रबन्ध करें शील के गुणों से सम्पन्न बनावें। पहिले की

स्त्रियां इस शील के प्रताप से ही वि- दुषी कहलाती थीं उनमें शील धर्म था- वक्त पर जबान काट मरना कबूल किया मगर इस कुशील को अङ्गीकार न किया कई हजार स्त्रियां अपने पति के साथ सती होगई मगर विधवा विवाह जैसा निन्दनीय कर्म उन्होंने कानों तक नहीं सुना इसलिये जनता अगर अपनी ब- हिनों को सुखशान्ति में रखना चाहते हो तो मेरे इस उपदेश का प्रचार करें और विधवाओं की संख्या अधिक बढ़ने की जड़ बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बे- जोड़ विवाह व कन्याविक्रय को रोकें।

पाठको लीजिये सत्य की जय हुई जनता ने मोसर व कन्या विक्रय व अ- न्याय से पैसा कमाना व खर्चीदार वस्त्र पहिनने व पक्ष सहित पंचायत करना व बाल विवाह व वृद्ध विवाह व बेजोड़ विवाह करने और उसमें सम्मलित होने आदि व विधवा विवाह के प्रचलित करने में महा पाप समझा और विधवा- श्रम, दुःखद्योगशाला व पाठशाला आदि जारी की अगर हमभी इसे पढ़कर कुछ शिक्षा ग्रहण करगे तो सुखी होंगे।

मारवाड़ी पञ्चों डूबती कन्या को बचाओ।

कुछ दिनों पहले श्री नथमलजी बागरेचा मंगरूळ वाले जिन की उमर लगभग पचास के है उनका सम्बन्ध चुन्नीलालजी चोड़ी रामजी बम्ब की पुत्री से हुआ। उसकी उमर लगभग १२ वर्ष की है इस वृद्ध तथा बेजोड़ विवाह को रोकने का प्रयत्न वहां के पञ्च कर रहे हैं। उन्होंने कुंकुम गा- लने की परवानगी भी नहीं दी और

ता० १७-६ २५ को समस्त मारवाड़ी पञ्चायत एकत्रित कर निम्न लिखित प्रस्ताव पास किए हैं।

(१) श्री चुन्नीलालजी बम्ब इन्होंने अपनी लड़की का संबंध (सगाई) मांगरोल वाले नथमलजी बागरेचा के साथ किया है। मांगरोल वालों की उमर लगभग ५० वर्ष की सुनी गई है इसलिए यह विवाह समाज की दृष्टि से वृद्ध विवाह है और मारवाड़ी समाज इसे नाजायज समझता है।

(२) हम लासलगांव के पञ्च इस विवाह को रोकने के लिए यथा साध्य प्रयत्न करेंगे।

(अ) हम अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी बन्धुओं से विशेषतः ओसवाल बन्धुओं से प्रार्थना करते हैं कि वे इस विवाह में समिल्लित न होंवे और हमारे को इस कार्य में सहायता दें।

(ब) श्री नथमलजी को खुली चिट्ठी देकर विवाह के विचार से पराङ्मुख किया जाय।

(क) हम लासलगांव के लोग विवाह की किसी भी क्रिया में वर तथा लघु पक्ष को सहायता न देंगे।

(२) यह प्रस्ताव समाचार पत्रोंमें छपाकर तथा अन्य रीति से प्रसिद्ध किया जाय।

लासलगांव के पञ्चों ने तो अपना कर्त्तव्य किया किंतु अब हम उन लोगों से प्रार्थना करते हैं कि जो इस काम के लिए अभी तक तटस्थ हैं। वे लासलगांव के पञ्चों की हर प्रकार से सहायता करें और इस विवाह को रोक कर समाज के सामने आदर्श उत्पन्न करें और अपना नाम समाजोन्नती के इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखाइये। यह विवाह अगर बाहरी मदत मिले तो लासलगांव के पञ्च रोक सकते हैं। देखें इस बालिका के उद्धार के लिए आगे कौन २ बढ़ता है? और समाज से वृद्ध विवाह की प्रथा निकालने का पुण्य कौन प्राप्त करता है।

रिषभदास ओसवाल

श्री नथमलजी मंगरुल वालों को लासन गांव के पंचों की खुली चिट्ठी।

श्रीमान् सेठजी नथमलजी बागरेचा मंगरुल निवासी को सेवामें—हम नीचे सही करने वाले लासन गांव के समस्त मारवाड़ी पंचों की तरफ से निवेदन है कि:—

आपने हमारे यहां के श्री० चुन्नीलालजी धोंडीराम जी बम्ब की पुत्री से सम्बन्ध किया है और आप थोड़े ही रोज में विवाह भी करना चाहते हैं। आपको आज कल की स्थिति देखकर उक्त सम्बन्ध त्याग देना चाहिये क्योंकि आपकी उमर आपकी जातीय सभा तथा धार्मिक कान्फरन्स के प्रस्ताव से अधिक है इसलिये यह कार्य आप जैसे जाति हितेच्छु धर्म प्रेमी न्याय निपुण विचारवान तथा धार्मिक नियमों की पाबंदी करने वालों को शोभा नहीं देता।

श्रीमान् आपके पुत्र तथा पुत्री होते हुए भी विषय वासना के लिये एक अबोध बालिका का जीवन भ्रष्ट करना उचित नहीं। आप जाति की स्थिति को भली भांति जानते हैं समाज विधवा तथा विधुरों की आहों से सुस्त होरहा है। फिर आप इस अनुचित कार्य को करके उनके दुःखों को कैसे घटावेंगे? नहीं, हमें विश्वास ही नहीं किन्तु दृढ़ आशा है कि आप बालिका तथा समाज पर दया कर इस विवाह के विचार को त्याग देंगे। यदि आपने हमारे निवेदन तरफ लक्ष देकर इस प्रकार के विवाह को त्याग दिया तो सारे समाज के सामने आपका आदर्श होकर समाज का सुधार महत्व पुण्य मिले बिना नहीं रहेगा। आशा है श्रीमान् इन सब बातों पर विचार कर इस विवाह के विचार

को छोड़ कर अपना शेष आयुष्य समाज सेवा में लगावेंगे। हमें इस बात का बड़ा खेद है कि श्रीमान् ने सी० पी० बराड तथा खानदेशके ओसवाल सभा के प्रस्ताव तरफ भी ध्यान न देकर इस कार्यको करनेका विचार कायम रखा। अन्त में आपसे यह निवेदन है कि आप इस विवाह के कार्य को बंदकर समाज को कृतार्थ करें।

निवेदक श्रीमान के शुभचिन्तक
लासन गांव के मारवाड़ी पंच

ओसवालो कबतक सोते रहोगे ?

आज हमारी ओसवाल जाति की जो स्थिति होरही है उसका चित्र खींच कर आपके सामने रखने के लिए एक बड़े सख्त दिलवाले मनुष्य की आवश्यकता है। जो जाति की दशा होरही है उसको लिखते हुए हमारे तो हाथ धूजते हैं॥ जिस ओसवाल जाति के सपूतों ने अपनी आन रखने को तन मन और धन अर्पण किया आज वह स्वयं (अबतक तो वह बेटी को ही बेचते थे) अपनी स्त्री अर्थात् अपने शरीर के आधे अङ्ग को बेचने की तैयारी हीं नहीं कर रहे परन्तु बेचने का कार्य प्रारम्भ कर चुके हैं यह हमारे लिये कितने दुःख और लज्जा की बात है। हमारे ध्यान में तो और कोई दूसरी बात किसी जाति के लिये इससे अधिक कलंक की नहीं होगी। सवाल उठता है ऐसा क्यों होरहा है। इस प्रकार का सवाल उठाना व्यर्थ है क्योंकि आज संसार में पेट भरना मुख्य काम है साथ ही इज्जत के साथ पेट भरना और ऐसी हालत में जबकि जाति में चारों ओर औसर मौसर के फिजूल खर्चों का दौरा हो अत्यन्त ही कष्ट दायक होरहा है आज पेट के आगे कुछ नहीं सूझता क्योंकि किसी ने सत्य कहा है कि:—

भूखे भजन नहीं होय गोपाला।
रखलो अपनी कंठी माला॥

अर्थात् भूखसे पीड़ित जो २ पाप नहीं करे वहही थोड़ा है।

सुना गया है कि फलोदी के एक "ओसवाल" ने अपनी विवाहिता पत्नी को अहमदाबाद में बेची और उसको वहां के ओसवालों ने न्यात बाहर कर दिया। हमको यह पता अबतक नहीं

लगा कि उसने ऐसा क्यों किया परन्तु अनुमान से हम जानते हैं कि उसने यह अनर्थ इस पेट पापी के लिये किया होगा। अगर उसने यह अनर्थ इस पेट पापी के लिये किया और न्यात ने उसको इसलिये बाहर कर दिया तो हम कहते हैं कि उसने जो अनर्थ किया उससे अधिक जाति ने अनर्थ किया क्योंकि जब अनेकोंबार क्षुधा से पीड़ित लोगों की ओरसे यह घोषणाः—

कुछ जाति पांति न चाहिये,
यह सब रहें या जायरे।
बस! एक मुठ्ठी अन्न हमको,
चाहिये अब हायरे! ॥
इस पेट पापी के लिये ही,
हम विधर्मी बन रहे।
निज धर्म मानस से निकल,
अघ पंक में हैं सन रहे॥

हो चुकने परभी उनका काई सुप्रबन्ध न करने का अर्थ यह ही है कि इसमें जितना दोष उसका है उससे कहीं अधिक दोष उस जाति का है जिसके बच्चे जिन २ कारणों से आज विधर्मी बन रहे हैं या दूसरे २ ऐसे कुकर्म कर रहे हैं उनको दूर नहीं करती।

न्यातीय बहिष्कार।

फलोदी ओसवाल समस्त न्यात की तरफ से सूचना दीजाती है कि सर्राफ (ललवानी) कुंवरलाल वल्द मानमल सांकिन फलोदी ने अपनी विवाहिता पत्नी को अहमदाबाद-लेजाकर इस घोषणा के साथ कि वह कुंवारी है और रिश्ते में मेरी भतीजी है एक गुजराती के हाथ बेचदी है इस भारी जुर्म पर यहां की ओसवाल बिरादरी ने उन दोनों को जाति से बाहिर कर दिया है।

एक ओसवाल ईसाई हुआ और १ मुसलमान होगया।

सलवतपुर का एक ओसवाल ईसाई होगया दूसरा एक हमारा ओसवाल बन्धु जो सोजत का रहने वाला था वह मुसलमान होगया।

जैनअनाथालय आगराका प्रारंभ

जैन अनाथालय का कार्य प्रारम्भ होगया है जिसमें इस समय ७ अनाथ भरती होचुके हैं। अनाथ बालकों को अनाथालयके लिये [illegible] है

(महीने भरकी संक्षिप्त रिपोर्ट)

सराफे का बाजार।

सराफे का बाजार जैसा था वैसा ही पड़ा हुआ है। हां, बड़े बाजार सूतापट्टी और सराफे में चेटी के फेल हो जाने से अवस्था कुछ अधिक संगीन हो गयीसी दीखती है। चेटी के नीचे बाजार का ६-७ लाख रुपया दबगया। बाजार में इस अविश्वास की मात्रा बढ़ रही है। कोई किसीकी मदद करना नहीं चाहता। सभी रुपये मांग रहे हैं, देने वाले ही नहीं मिलते। बैंक भी थोड़े समय के लिये ५) सैकड़े में रुपये लेने को तैयार हैं, पर रुपये मिलते कहां हैं। हाँ, इम्पीरियल बैंक में रुपये का अभाव नहीं है। परसेन्टेज तो २१,६० गत सप्ताह के आस पास ही है पर गवर्नमेंट ने बहुत रुपये निकाले हैं बैलेन्स कुल २५ लाख ही रहा। दूसरे डिपाजिटों में कुछ वृद्धि हुई है। पर ट्रेड डिमाँड में ३३४ लाख की कमी दिखाई गई। ब्याज की दर ६) ही रही और हुंडियों के डिसकाउन्ट की दर ६॥) ही रही। यहतो हुई इसकी अवस्था पर सब ओर देखिये। कपड़े का बाजार ज्यों का त्यों पड़ा है, बल्कि दिनों दिन कुछ न कुछ गिरताही जाता है। बिक्री नहीं के बराबर है। देशी मिलके कपड़े का भी यही हाल है। जो मिल वाले दाम कम कर गला खलास करना चाहते हैं उनका माल सौ रुपये में तीन गज के हिसाब से खुदरिया ख़रीद लेते हैं, पर यों बिक्री नहीं सी है। दाम क़म होते हैं सही पर बहुत हिचक २ कर मिल वाले पैर रख रहे हैं सोने चांदी को कोई पूछता ही नहीं बाजार मन्दा ही है। चांदी कुछ बढ़ी भी सही पर उससे कुछ पैसा बनता बिगड़ता नहीं। युक्त प्रदेश की मांग दिनोंदिन कम हो रही है। जूट और हेशियन का भी मन्दा ही हाल है। बाजार में पैसा नहीं है। इससे काम काज भी क़मही होता है। पाट के बाजार की भी वही दशा है। पर वहां एक बड़ा मजा हो रहा है। तेजीमल और मन्दीमल की खूब होड़ लगी हुई है। हाथीमलजी बाजार को उठाने की सिर तोड़ चेष्टा करते हैं। पर बिझोमल तथा

बाजारवाले उठने नहीं देते हैं। हाथीमल का अनुमान है कि इस बारकी फसल ९५ लाख से ऊपर न जायगी और इसी के बलपर वह तेजी की तरफदारी कर रहे हैं। पर बाजारवालों की धारणा है कि इसबार की फसल १ करोड़ १२ लाख से कम न होगी, इसीलिये वह पाट को ६० पहुंचाने का स्वप्न देख रहे हैं। देखना है कौन जीतता है। मैमनसिंह और सिराजगंज को छोड़कर सर्वत्र फसल अच्छी ही बताई जाती है।

बम्बई की अवस्था पहले से कुछ सुधरी ही समझनी चाहिये। शेयर बाजार में जो भयानक अवस्था उत्पन्न हो गई थी उसके सुधरने के लिये सिर तोड़ परिश्रम किया जा रहा है। अवस्था काबू में आगई है। अब शेयरों की १००) रोज गिरने की खबर नहीं मिलती। दाम रुके हुए हैं। १०-२० के भीतरही खेलते हैं। आशा है कि शीघ्र ही अवस्था बहुत कुछ सुधर जायगी।

बाद की हालत—

सराफे के बाजार की अवस्था में कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ। इतनाही हुआ है कि इम्पीरियल बैंक के ब्याज की दर घटाने की जो आशा की गयी थी वह पूरी होगई। ब्याज की दर घटा कर ६) से ५) करदी गई। गत १९ जून तक इम्पीरियल बैंक के हिसाब से कैश में ४२५०००००) की बढ़ती हुई लोन और कैशक्रेडिट एक एक करोड़ की कमी रही। दूसरे डिपाजिटोंमें भी एक करोड़ की कमी रही और साथही ट्रेड डिमांड में तो २१००००००) की कमी रही। करेन्सी का १८ और २५ जून का हिसाब देखने से पता चलता है कि क्रमशः १२२०००००) और १६२००००००) रुपये की वृद्धि हुई। बैंकों को इम्पीरियल बैंक की कृपासे रुपये की टान नहीं है। इसलिये थोड़े समय के लिये रुपये का ब्याज बैंकों ने घटाकर ३।) २॥) कर दिया है यहतो हुई इम्पीरियल बैंक की अवस्था और व्यवस्था। पर बाजार में अबतक रुपये की छूट नहीं दिखाई पड़ती। कपड़े का बाजार एक प्रकार से कलकत्ते का प्रधान बाजार कहाजा सकता था, पर वहां तो बिलकुल उदासी सी छायी हुई है। मालकी कटती है पर नहीं के बराबर। इतने पर व्यापारियों के फेल होने के

इससे लोगों ने उधार व्यवहार का काम बहुत कम कर दिया है। सोना चांदी का बाजार भी मन्दा ही है। कोई भी बाजार मजे में नहीं चलता। इससे छूट की सम्भावना कैसे की जाय। युक्त-प्रदेश से कुछ रुपया लौटा है इसीसे इम्पीरियल बैंक की स्थिति में इतना परिवर्त्तन दिखाई पड़ा है। पर पाटमें लग्गन शुरू होतेही बाजार की अवस्था में गहरा परिवर्त्तन दिखायी पड़ेगा।

सोना चांदी।

स्टर्लिङ्ग एक्सचेञ्ज के मजबूत रहने का कारण सोने के बाजार में मन्दी खेलती रही। २१।=)॥। से बाजार गिर कर २१।)॥। तक पहुँचगया पर सप्ताह की समाप्ति तक बाजार ने फिर पलटा खाया और कल बाजार २१॥=) में तैयारी बन्द हुआ। बम्बई और कलकत्ता मिलाकर औसत दैनिक कटती ३० हजार भरीसे अधिक नहीं है। २५० हजार पाउण्ड का सोने का और २५० हजार पाउण्ड की गिन्नियोंका चालान इस सप्ताह भारत के लिये लण्डन से किया गया है।

चांदी के बाजार में इसबार भी खासी तेजी आयी। चीन चांदी खरीद रहा है। इसीपर फाटकिये बाजार बराबर बढ़ाये जारहे हैं, और भारतवाले खुदभी लण्डन के बाजार में चांदी खरीद रहे हैं। इसीलिये चाँदी में बढ़ी है। बम्बई, कलकत्ता मिलाकर औसत दैनिक कटती २७५ सिलों से अधिक नहीं है। २५० हजार पाउण्ड की चांदी भी इस सप्ताह लण्डन से भारत को रवाना की गयी है। कल बाजार तैयारी ७३।=) में बन्द हुआ।

व्योपार की अवस्था।

"मैनचेस्टर गार्जियन" में एक सज्जन लिखते हैं कि व्यापार की अवस्था जो लोग खराब चिल्लाते हैं वह भूलते हैं। व्यापारी लोग केवल व्यापार ही नहीं करते बल्कि दान भी करते हैं। लंकाशायर के एक शहर में अभी हाल में जूते की तीन दूकानें खुलीं। जिनमें पहले दूकानदार ने घोषणा की कि वह अपने ग्राहकों को फी जोड़ा जूते के साथ एक जोड़ा मोजा मुफ्त देगा। दूसरे ने हरएक जोड़ी जूता के साथ एक जोड़ी चट्टी मुफ्त देने का ऐलान किया। पर तीसरे ने केवल जूतेही बेचे।

तीनों का काम धड़ल्ले से चलता है।

बम्बई की मिलों की अवस्था।

एक समय था जब बम्बई की मिलों ने महायुद्ध के बहाने देशवासियों को मनमाना लूटा। शेयर होल्डरों को भी भरपेट डिवीडेन्ड मिला और मैनेजिंग एजेण्टोंने भी खासी रकमें बनायीं। पर सब दिन एकसा नहीं आते हैं। ज्वार भाटा आया ही करता है। इस समय बम्बई मिलों के भाठे का समय, अर्थात् घाटे का समय है। इस समय मिलों में आठ करोड़ का सूत और कपड़ा गुदामों में पड़ा सड़ रहा है बिक्री बिलकुल नहीं है। और जो है भी उससे घरमें टका आने को नहीं। मिल चलानाही घाटा बढ़ाता है। कई मिलोंने तो काम करनाही बन्द कर दिया है। बाकी की मिलें भी प्रायः इसी तैयारी में हैं। ओनर्स एसोसियेशन इस समय बड़ी तत्परता से काम कर रहा है। उसने सभी मिलों में नोटिसें चिपकायीं हैं कि आगामी जुलाई महीने के भीतर भीतर या तो मिलों में काम करने का समय घटा दिया जायगा और नहीं तो मजूरों की तनख्वाह में २० फी सैकड़े कमी करदी जायगी। कई मिलों ने तो अपने मजूरों को कम मजूरी पर काम करने को राजी कर लिया है। पर अभी मिलवाले राजी नहीं हुए हैं। अगर राजी होजायंगे तो यह नियम १ली अगस्त से काम में लाया जायगा। अवस्था बड़ी शोचनीय है। लक्षण अच्छे नहीं हैं। देखना है किस करवट ऊंट बैठता है।

रुई का बाजार।

बम्बई, २५ जून। बम्बई के बाजार में इस समय बड़ी सनसनी फैल रही है। इसका कारण यह है कि जापान माल भेजनेवाले व्यापारी इस समय बड़े जोरो में रुई खरीद रहे हैं और इसके फल स्वरूप बाजार भाव में ३५) की तेजी आगयी है। कहते हैं कि जापान के लिये अमेरिका में भी इसी तरह रुई खरीदी जारही है।

बम्बई बाजार में जापानी फर्मों के इस प्रकार दनादन रुई खरीदने के कारण तरह तरह की कल्पनायें की जारही हैं। बम्बई के कुछ मिल एजेण्ट बहुत रुक रुककर आवश्यकता के अनुसार इधर माल खरीद रहे थे क्योंकि उनको

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश--

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २॥।) रु० है एकप्रति का मूल्य।) है।

—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जौहरी बाजार आगरा

हर्ष से सूचित करने का अवसर मिला है कि श्रीमान् रणधीरसिंह बच्छावत कलकत्ता विश्वविद्यालय के बी. ए. की अङ्क शास्त्र की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। प्रथम तो पूर्व देश में अपने ओसवाल भाइ को संख्या भी अधिक नहीं है और उनमें उच्च शिक्षा का प्रचार कम है। ऐसी दशा में श्रीमान् की परीक्षा का फल एक असोचनीय विषय सा ज्ञात होगा। आप मुर्शिदाबाद-निवासी श्रीमान् बाबू पूरणचन्द्रजी नाहर एम, ए, एल, एल, बी, वकील हाईकोर्ट के दौहित्र हैं।

ऊपर छपी पाँचों बिजलीकी अद्भुत चीज़ोंमें न तेलकी ज़रूरत है, न दीया-सलाईकी बटन दबा दीजिये, चटसे तेज़ रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी, जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें बेट्रीकी शक्कि भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लैम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाईं टंगा जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेको तीनरङ्गा लैम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा खींचिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लैम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक ख़र्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है जो कोट में लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्सन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।≈) जुदा (नं० ५) यह कमीजके तीन बटनोंका सेट है जो रातमें प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भाँति चमकता है इसका भी तार बैटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें रखा जाता है लोग देख कर आश्चर्य करते हैं भेंटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी चीज है आज तक हिन्दुस्तान में नहीं आई है दाम ८) डाक खर्च ॥) जुदा।

पता:—जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स पोस्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता

मौलाना अब्दुलकासिम, मौ० अब्दुल मजीद, मौ० अबूमसूद उमर आदि काशी से मौलानाओं ने एक फतवा निकाला है। इसमें उन्होंने कहा है कि बकरीद में गायकी कुरबानी करना आवश्यक नहीं है।

मौलाना मुहम्मदअली ने अपने प्रभावशाली भाषण में कहा है कि ईश्वर के लिए कुरबानी करना ठीक है परन्तु हिन्दुओं से चिढ़कर ऐसा करना हराम है। मुसलमानों से उन्होंने अनुरोध किया है कि आप लोग गायकी कुरबानी न कर बकरे की कुरबानी करें जिससे हिन्दू भाई उत्तेजित न हों। देहली की स्थिति आशाप्रद होगई है जहाँ पहले दंगे की बहुत सम्भावना थी।

काशी के राय बहादुर बा० बटुकप्रसाद खत्री ने शिल्प और कला सम्बन्धी विद्यालय खोलने के निमित्त एक लाख रुपये दान दिये हैं। जिसकी नियमानुसार ट्रस्ट बनाकर रजिष्ट्री भी उन्होंने करादी हैं।

अमरीका में सन् १६२४ में मोटरों द्वारा १६ हजार आदमी मरे और ४॥ लाख घायल हुए।

रंगून हाईकोर्ट के जस्टिस मौगवा ने एक अङ्गरेज को एक स्त्री के जीवित रहते दूसरी स्त्री से विवाह करने के अपराध में ३ वर्ष की सजा दे दी।

देशभक्त जमनालालजी बजाज ने काशी हिन्दू-विश्व-विद्यालय को ३००,००) का दान दिया है। पहले भी आपने विश्वविद्यालय को २००००) दिए हैं।

सोलोन प्रान्त के एक स्थान में एक ऐसा बालक उत्पन्न हुआ है जिसकी शक्ल उल्लू और बन्दर से मिलती जुलती है। उसके शिर पर एक सींग है और पूंछ भी है। उसकी आँखें बिल्ली के समान हैं। सैकड़ों आदमी उसे देखने

पहुंच रहे हैं। वह देखने में बड़ाही बद-सूरत मालूम होता है।

डेनमार्क में अगर कोई जङ्गल का पेड़ काटता है तो उसे उतनेही स्थान में नये पेड़ लगाने पड़ते हैं।

अमेरिका के बेरन साहब ने अपने जीवन में एक करोड़ रुपये का दान किया है। वे कहते हैं कि देने में जितना आनन्द है, उतना धन बटोरने में नहीं।

एक जर्मन विशेषज्ञ का कथन है कि जमीन में रहने वाले कीड़े बहुत अच्छा गान करना जानते हैं।

स्वीजलैंड में तीन सौ वर्ष तक एक गांव के कुछ मकान डूबे रहे। अब वे फिर पानी के बाहर हुए हैं।

इङ्गलैण्ड और वेल्स के ७५ लाख परिवारों में आधे से ज्यादा ऐसे परिवार निकले जिनमें १६ वर्षसे कम उम्र को कोई सन्तान ही नहीं है।

अमेरिका में रेलवे गाड़ियों के साथ ऐसे डिब्बे जोड़ दिये गये हैं जिनमें स्त्रियों के लिये सिगरेट पीने की व्यवस्था है।

संसार में जितनी रुई पैदा होती है इसकी दो तिहाई अमेरिका में ही पैदा की जाती है।

केनाडा की ९२॥ लाख आबादी में २२ लाख स्कूलों में पढ़ रहे हैं।

नारियल के पेड़ १० वर्ष बाद आमदनी कराने लगजाते हैं।

समुद्र में ६०० फुट से नीचे कोई मछली नहीं पाई जाती।

फार्ड कम्पनी के स्वामी के पुत्र हवाई जहाज से पार्सलें भेजने लगे हैं और वे इस काम में सबसे आगे रहना चाहते हैं।

ता० २६ जून इतवार की रात को मसजिद बन्दर के पास भीड़ में दो मुसलमान गुण्डों ने छुरी द्वारा दो मारवाड़ियों पर आक्रमण किया। मारवाड़ी रुपयों के थैले ले जारहे थे, छुरी के कई वार होने पर उन्होंने थैले पटक दिये। किन्तु गुण्डे रुपये लेकर बहुत दूर नहीं जाने पाये थे कि भीड़ने उनको घेरकर पकड़ लिया, और सब रुपया वापस ले लिया।

ओसवाल नवयुवक महामण्डल जोधपुर की आज्ञानुसार
श्रीयुत पद्मसिंह सुराना, प्रिंटर एण्ड पब्लिशर
श्रीमज्जैन शास्त्रोद्धार प्रिंटिंग प्रेस जौहरी बाजार आगरा से प्रकाशित।

"OSWAL"   Reg. No. A-1308

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान।
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे [ ] पुत्र हैं मृतक समान॥

वर्ष ७ } जुलाई सन् १९२५ ई० { अङ्क ७

आवश्यकीय सूचनाएं।

१-जिनका मूल्य समाप्त होजाता है उन ग्राहकों को सूचना दी जाती है और जब उनकी ओरसे कोई उत्तर नहीं मिलता तब वी० पी० भेजी जाती हैं खेद है कि ग्राहकगण वी० पी० लौटा देते हैं जिससे पत्र को अत्याधिक घाटा सहन करना पड़ता है आशा है भविष्य में ग्राहकगण ऐसा नहीं करेंगे।

२-जिन ओसवाल जाति के सज्जनों की सेवामें नमूनाङ्क भेजा जाता है उनसे निवेदन है कि अगर उनको ग्राहक नहीं बनना हो तो पत्र द्वारा सूचना देदें नहीं तो आगामी [ ] पी० से भेजा जायगा

सम्पादक [ ] (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी० पी० से [ ] { प्रति अंक ।)

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश--

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१--यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा।

२--इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २।) रु० और वी० पी० से २॥) रु० है एक प्रति का मूल्य।) है।

--वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४--"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५--"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६--"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जोहरी बाजार आगरा

हर्ष से सूचित करने का अवसर मिला है कि श्रीमान् रणधीरसिंह बच्छावत कलकत्ता विश्वविद्यालय के बी. ए. की अङ्क शास्त्र की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। प्रथम तो पूर्व देश में अपने ओसवाल भाइ-यों की संख्या भी अधिक नहीं है और उनमें उच्च शिक्षा का प्रचार कम है। ऐसी दशा में श्रीमान् की परीक्षा का फल एक असंभावनीय विषय सा ज्ञात होगा। आप मुर्शिदाबाद-निवासी श्रीमान् बाबू पूरणचन्द्रजी नाहर एम, ए, एल, एल, बी, वकील हाईकोर्ट के दौहित्र हैं।

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाजका, जिससे कुछ उपकार॥

वर्ष ७ } आगरा, जुलाई सन् १९२५ ई० { अङ्क ७

धर्म-धुरन्धर

-लेखक-

(श्रीयुत्-रामचरित उपाध्याय)

(१)

धारे धर्म कर्म को करके मर करके भी हटे नहीं,
चाहे अस्थिर अंग कटे पर स्वयं स्वप्न में कटे नहीं।
प्रण-पालन में प्राण निछावर करता है कुछ खेद नहीं,
कठिन कार्य से धर्मधुरन्धर को होता निर्वेद नहीं॥

(२)

इन्द्रासन भी मरघट के सम जिसे धर्म के सम्मुख है,
ध्रुव सम रहे धर्म संकट में दुख में भी जिसको सुख है।

जिसे लाभ में हर्ष नहीं है जिसे हानि में क्षोभ नहीं,
धर्मधुरन्धर वही धर्म को छोड़ अन्य में लोभ नहीं ॥

(३)

पुत्र, कलत्र, धाम, धन, धरणी इनकी जिसको चाह नहीं,
डाह न उर में जिसके मुख से कभी निकलती आह नहीं।
किन्तु धन्य धार्मिक स्वत्वों पर मिटता है आप वही,
पाप कलाप न जिसके मन में क्यों सह सकता ताप वही !

(४)

सत्याग्रह से सत्य प्रेम है वही मनुज करनेवाला,
जो डरनेवाला न किसी से धर्म हेतु मरनेवाला।
जो हो मन में वही वचन में उसी बात पर अड़ा रहे,
धर्मधुरन्धर बलि होने को बलि-वेदी पर खड़ा रहे ॥

(५)

नश्वर देह हेतु ईश्वर की आज्ञा से जो मुरे नहीं,
जिसने काया-मनो-वचन से किये कर्म हैं बुरे नहीं।
धर्मधुरन्धर वही पुरन्दर को भी नाच नचाता है;
प्रलय मचाता है पल में पर अपना धर्म बचाता है ॥

(६)

जिसने अपने को छोटों से भी छोटा है मान लिया,
पर हित को धर्मोत्तम जिसने धर्म-बुद्धि से जान लिया।
धर्मधुरन्धर वही निरन्तर पर हित में है लगा हुआ,
जगा हुआ है घोर निशा में धर्म-सुधा में पगा हुआ ॥

(७)

आत्म-हनन से भी बढ़ करके धर्म-हनन को जो जाने,
सच्चा साथी सदा धर्म को उभय लोक में जो जाने।
ईश्वर का सहचर है वह उसका अनुचर बनकर रहिए,
कहिए उसको धर्मधुरन्धर उसके लिए दुःख सहिए॥

(८)

धर्मधुरन्धर नर को कोई कर्म कठिन है कहीं नहीं,
उसके हाथ हिलाने से क्या हिल सकती है मही नहीं?
पर उसको उपकार, अहिंसा, और सत्य का ध्यान रहे,
ज्ञान रहे जिसमें उस जन का क्यों न जगत में मान रहे?

(९)

धर्मधुरन्धर धर्म-हेतु ही तिल के सम पिस जावेगा,
पर-उपकृति में क्रम-क्रम से वह चन्दन सा घिस जावेगा।
पर वह निज कर्तव्य न जीते जी सपने में छोड़ेगा,
मोड़ेगा मुख दैशिक व्रत से या क्यों नाता तोड़ेगा?

(१०)

रंक-तुल्य हैं राजा जिसको पर्वत है सम राई के,
शत्रु-मित्र में भेद न जिसको कण्टक हैं सम भाई के।
धर्मधुरन्धरता की पदवी उसी मनुज को मिलती है,
हिलती है जिसके भय से भू, रज में नलिनी खिलती है॥

(११)

पतित पावनी गंगा सी हो प्रज्ञा अति निर्मल जिसकी,
सेवा करे करों को जोड़े अतिबल भी कलिमल जिसकी।

धर्मधुरन्धुर वही राम सा पतित जनों से स्वयं मिले,
खिले कमल सा उन्हें उठाकर खल-मण्डल से नहीं छिले ॥

(१२)

निपतित को उत्थित कर देना अधर्मों को उत्तम करना,
डरना नहीं कभी विघ्नों से चाहे अपना हो मरना।
धर्मधुरन्धर उसको कहिए जिसमें ये सब लक्षण हों;
शिक्षण होवे यदुपतिवाला रघुपतिवाला रक्षण हो ॥

(सरस्वती से उद्धृत)

"समस्याएँ"

(लेखक—महात्मा गान्धी)

एक मित्र लिखते हैं—

"सत्याग्रह-सम्बन्धी विवेचन करते हुए आपने कहा है कि सत्याग्रही यदि अनुचित तौरपर सत्याग्रह करे तो भी चिन्ता नहीं, क्योंकि उसके फल-स्वरूप कष्ट या संकट तो खुद उसीको भोगना पड़ता है। इस विषय में अनेक शंकायें पैदा होती हैं। ऐसे भी अवसर आते हैं जब सत्याग्रह करने से अकेले सत्याग्रही को ही दुःख भोगना पड़ता बल्कि जिसके साथ सत्याग्रह किया जाता हो उसे भी भोगना पड़ता है। ऐसे प्रसंग पर यदि सत्याग्रह गलत तौर पर किया गया हो तो सत्याग्रही के सिर पर भीषण जिम्मेदारी रहती है।

"उदाहरण १-एक सज्जन के एक नन्हा लड़का है। उनके मां बाप जीवित हैं। मां बापने अपने इस पुत्र की सगाई उससे चार पांच साल बड़ी कन्या के साथ कर डाली। इससे उन महाशय को बड़ा दुःख हुआ और

उन्होंने गुस्से में आकर अपने माँ बाप से कहा कि यह सगाई तोड़ डालिये। मां बाप कहते हैं कि सगाई तोड़ने से हमारी इज़्ज़त में फर्क आता है, हमारी जिन्दगी मटियामेट हो जायगी। इसलिये सगाई तोड़ने की बात मुंह से न निकालो। अगर हमारी मरजी के खिलाफ सगाई तोड़ोगे तो हम कुए में गिरकर या अफीम खाकर आत्म-हत्या कर लेंगे। इसका पाप तुम्हारे सिर। उस सज्जन ने मां-बाप को समझाने के बहुतेरे उपाय किये; पर उन्होंने न समझा और आत्मघात करने की ज़िद पर अड़गये हैं। अब ऐसे मौके पर क्या करना चाहिये-सत्याग्रह करके मां-बाप को मरने देना चाहिये-या क्या? कोरी धमकी देकर रह जाने वाले मां-बाप की बात नहीं है, बल्कि सचमुच ही प्राण-त्याग कर डालनेवाले पुराने संस्कार के मां बाप की बात है।"

इस भाषा में सुधार करने की आवश्यकता है। मुझे यह कहीं याद नहीं पड़ता कि गलत तौर पर सत्याग्रह करने से भी चिन्ता की बात नहीं। गलत तौरपर की गई बात के विषय में भय अवश्य है। पर हां, मैंने यह जरूर कहा है कि सत्याग्रही के आग्रह में भूल हो तो उसका दुःख खुद उसीको भोगना पड़ेगा, और यह यथार्थ है। जिसके साथ सत्याग्रह किया गया हो उसे यदि दुःख हो तो उसका जिम्मेदार सत्याग्रही नहीं हो सकता। सत्याग्रही का यह उद्देश्य ही नहीं होता जो प्रतिपक्ष को दुःख दे। प्रतिपक्षी यदि अपने आप दुःख मान ले या दुःखी हो तो सत्याग्रही को उसकी चिन्ता न करनी चाहिये। मैं यदि शुद्ध भाव से उपवास करूं और उससे मेरे साथियों को दुःख हो तो उसे मुझे सह लेना लाजिमी है।

इस उदाहरण में कहा गया है कि "बाप ने गुस्से में आकर..." सो सत्याग्रही को गुस्सा आता नहीं, अनिच्छा से आजाय तो जबतक चला न जाय तबतक वह गुस्सा पैदा करने वाले के खिलाफ कोई कारखाई नहीं करता। फिर बहुत विचार करने के बाद भी यदि मां बाप का काम दोषयुक्त मालूम हो तो अवश्य उसे सुधारे और ऐसा करते हुए-सोलहो आना विनय का पालन करते हुए भी यदि मां बाप आ-

स्मघात करें तो सत्याग्रही निशंक रहे। मां बाप यदि अज्ञान के आधीन होकर खुदकुशी करें तो उसके लिये जिम्मेदार वे खुद हैं। मां बाप जब खुदही दुःख मोल लेते हैं तो उसके लिये बेटा ज़िम्मेदार कैसे हो सकता है? मां बाप जब बेटे को पापाचरण के लिये कहते हैं और लड़का उसके अनुसार नहीं करता है और इसके फलस्वरूप मां बाप आत्महत्या करें तो लड़केका क्या दोष? प्रह्लाद राम नाम जपता था। इससे हिरण्यकश्यप नाराज हुआ और अन्त को नाशको प्राप्त हुआ। इसकी जिम्मेदारी प्रह्लाद पर नहीं। रामने पिता के बचन का पालन किया। उससे दशरथ की मृत्यु हुई। उसका दोष रामके सिर नहीं। प्रजा दुःखसागर में डूबरही थी, फिरभी रामने अपना हृदय कठिन करके अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। सत्यवती के बेहद रोती होने पर भी भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। इसमें याद रखने लायक बात यह है कि सत्याग्रही का धर्म किसीके सिखाये नहीं सीखा जा सकता। वह स्वयंस्फुरित होना चाहिये। राम ने गुरुजनों से पूछकर बनवास स्वीकार नहीं किया। यह कहनेवाले धर्माचार्य मिलजाते कि बनवास को जाना पाप है, न जाना पाप नहीं। फिर भी उन्होंने बन जाने के धर्म का पालन करके अपना नाम अमर किया। हमारे इस दुखी देशमें कायरता इस हद तक बढ़ गयी है कि बात बातपर लोग मरने की और अन्न-जल त्याग की धमकियां देते हैं। ऐसी धमकियों की परवाह नहीं की जा सकती, भलेही हम यह क्यों न जानते हों कि धमकी के सच हो जाने की सम्भावना है। सत्याग्रही उपवास और दुराग्रही उपवास का भेद मैं 'नवजीवन' में बहुत बार बता चुका हूं।

वही मित्र नीचे लिखे अनुसार दूसरा उदाहरण पेश करते हैं।

"दम्पती सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बाई को विदेशी कपड़ों से बड़ा प्रेम है। पति को उससे बड़ी घिन है। बात यहाँतक बढ़गई कि पत्नी कहती है मुझे ५०००) के विदेशी कपड़े न ला दोगे तो मैं प्राण दे दूंगी। अब पति को क्या करना चाहिए? बाई किसी तरह समझाये नहीं समझतीं।

यह कहती हैं कि मेरी इतनी बात भी आप न मानेंगे ?"

पति का धर्म है कि वह मर्यादा के अनुसार और यथाशक्ति पत्नी के रहने, खाने और पहनने का प्रबन्ध करे। धनिक अवस्था में पति जो ऐश आराम करा सका है वह गरीब होने पर नहीं करा सकता। मूर्छित अवस्था में यदि पति नाच रंग, आमोद प्रमोद करे करावे, शराब पिये पिलावे, विदेशी वस्तुएें पहने पहनावे तो ज्ञान होजाने पर वह खुद सुधार करे और करावे। यहां विवेक के लिये स्थान है। दुनियाँ में यह सामान्य व्यवहार देखा जाता है कि पत्नी को पति के विचार के अनुकूल रहना चाहिए। परन्तु पति पत्नी पर अथवा पिता अपनी सन्तान पर बलात्कार नहीं कर सकते। जब खुद खादी पहने तब यदि अपनी पत्नी को अथवा बालिग पुत्र को जबरदस्ती खादी पहनावे तो यह पाप है। परन्तु खुद विदेशी वस्त्र खरीदकर लाने के लिये वह बाध्य नहीं है। जवान पुत्र तो यदि न बनता हो तो अलग हो सकते हैं।

परन्तु पत्नी का प्रश्न नाजुक है। पत्नी एकाएक अलग नहीं हो सकती। अपनी जीविका प्राप्त करने की शक्ति उसमें नहीं होती। अतएव ऐसे प्रसंग की कल्पना मैं कर सकता हूं जब कि पत्नी न समझे तो उसके लिये विदेशी वस्त्र खरीदने का धर्म प्राप्त हो। विदेशी वस्त्र का त्याग धर्मान्तर करने के बराबर है। पति जितनी बार धर्मान्तर करे उतनी ही बार पत्नी को भी धर्मान्तर करना चाहिए यह नियम नहीं, न होना चाहिये। पति को उचित है कि वह पत्नी का और पत्नी को उचित है कि वह पति का विधर्म सहन करे। इस लिये यहाँ पति पत्नी के लिये विदेशी वस्त्र खरीद दे तो वह धमकी से डर कर नहीं बल्कि यह समझकर कि पत्नी पर बलात्कार नहीं किया जा सकता। फर्ज कीजिये कि पत्नी केवल खुदही विदेशी कपड़ा पहनना नहीं चाहती, बल्कि यह भी चाहती है कि पति भी पहने और यदि पति उसकी बात न माने तो वह मरने की धमकी देती है तो पति को चाहिए कि उसकी धमकी को हरगिज न मानें।

तीसरा उदाहरण इस तरह है:-

"एक पिता पुत्र से कहते हैं कि मेरे जी जी तू अछूत से न छू। अछूतों के महल्ले में न जा। नहीं तो मैं अपनी जान दे दूंगा। पुत्र बेचारे को क्या करना चाहिए? 'वज्रादपि कठोराणि' की तरह हृदय करके पिता को मरने दे?"

मेरे मनमें इस बातपर जराभी सन्देह नहीं है कि पिता को अपार दुःख होता हो तो भी पुत्र को उचित है कि अछूतपन को छोड़दे। यहां भी उस चेतावनी को याद रखना चाहिए जो मैं ऊपर कह चुका हूं। मुझ जैसे के लेखों को पढ़कर अस्पृश्यता को महापाप मानने वाले के लिए यह वज्र वाक्य नहीं लिखा गया है। पर उनके लिए जिन्हें खुदही यह सिद्ध होगया है कि अस्पृश्यता एक महापाप है। इसका यह अर्थ हुआ कि जबतक अकेली बुद्धि हमारी इस बात की कायल हो पायी है तबतक पिता की आज्ञा के पालनसे, जो कि हृदय का गुण है, नहीं मोड़ा जा सकता। यदि किसीके कहने से प्रहलाद ने रामनाम जपा होता तो उसका धर्म था कि पिताके मना करने पर उसका जप छोड़ देता।

चौथा और आखिरी दृष्टान्त यह है:—

"एक सुखी दम्पती के चार पुत्र हुए। चारों मर गये। अन्तको पतिने ब्रह्मचर्य्य रखने का निश्चय किया। पत्नी ने एक पुत्र और होने की इच्छा प्रदर्शित की, पतिसे अपनी अभिलाषा पूर्ण करने की प्रार्थना की। दोनों हो तो गये हैं निर्विकार, परन्तु बाई को सन्तान की वासना रहगई है। पति को इसमें दोनों का अकल्याण दिखाई देता है। परन्तु यह वासना इतनी तीव्रहै कि यदि पति उसकी इच्छा का पालन न करे तो वह शरीर छोड़ देगी। हमेशा उदास रहती है, आंसू बहाती है, शरीर को सुखा रही है। इस स्थिति से बचने के लिये पति को क्या करना चाहिये? सब प्रयत्न करने के बाद यह भावना रखकर सन्तोष धारण करे कि ईश्वर कभी न कभी उसे (पत्नी को) सद्बुद्धि देगा, या पत्नी के शरीर क्षीण होता हुआ देखे और उसके साथ अपना शरीर सुखावे? यदि कहीं पत्नी मरगयी तो उसकी ह-

स्या का पातक-भागी पति होगा या नहीं ?"

मैं यह नहीं मानता कि पति पत्नी का यह धर्म है कि एकके विकारके अधीन होकर दूसरा भी विकार के वशीभूत हो। एकके विकाराधीन होनेपर वह दूसरे को भी विकार में सम्मिलित करे तो बलात्कार है। पति या पत्नीको बलात्कार का अधिकार नहीं है। विकार आगकी तरहहै। वह मनुष्यको घासकी तरह जलाता है। घास के ढेर में एक तिनके को सुलगा दीजिये, बस सारा ढेर सुलग जायगा। हरएक तिनके को अलहदा अलहदा जलाने का कष्ट हमें नहीं उठाना पड़ता। एक के मनमें विकार उत्पन्न हुआ तो उसका स्पर्श दूसरे को होता है। दम्पती में एकके विकार उत्पन्न होनेपर जो दूसरा निर्विकार रह सकता हो उसे मैं हजार बार प्रणिपात करता हूं। "आज"

जाति में संगठन की आवश्यक्ता

आबाल वृद्ध सभी इस बातको जानते हैं कि संगठन ही में शक्ति है और इसकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि मकान बनाने में नींव की। अंगरेजी में भी कहावत है-United we stand; Divided we fall इसका भावार्थ यही है कि संगठित होंगे तभी खड़े हो सकते हैं अन्यथा नहीं।

जैन ग्रन्थों के देखने से पता चलता है कि किसी कारणवश किसी के कुल में कलंक लगजाय और जाति च्युत हो जाव किन्तु धर्म से न डिगे तो तीसरी पीढ़ी पर वह फिर अधिकारी हो जाता है। भावार्थ द्विजाति तथा उच्च वरण हो जाता है, इसका मतलब यही है कि अपनी जाति में मिल सकता है। तब क्या सजातीय भाई एक नहीं हो सकते या रोटी बेटी का व्यवहार नहीं कर सकते ? इसका विचार पाठक ही करें। भाइयो! अब समय ह्रास का है दिन ब दिन जाति की कमी होती जाती है अतः एव बिना संगठन के जाति का नाम निशान भी न रहेगा।

जिस तरह द्रव्य में अनन्त गुण होते हैं, उसी तरह जैन जाति में भी अनेक विभाग हैं। अनन्त गुणों के समुदाय को ही द्रव्य कहते हैं, इसी तरह जैन

जातियां एकही पिता की सन्तान होने से अनेकों होते हुए भी एक हैं। क्योंकि आगम प्रमाण से इक्ष्वाकु जाति (वंश)के ही दो विभाग सूर्य और चन्द्रवंश हुए। फिर जैसे २ प्रतापी राजा हुए उन्हीं के नाम से वंश तथा कुल जाति हुए। जैसे रघुवंश, हरिवंश, यदुवंश। यह सब क्षत्री कुलोत्पन्न सब आपस में रोटी बेटी व्यौहार करते थे। जाति शंकर या वर्ण शंकर दोष नहीं माना जाता था। संकर दोष तभी होगा जब जैन अजैन से तथा क्षत्री वैश्य से बेटी व्यौहार कर सन्तान पैदा हो। जैसे गधे घोड़े से खच्चर होता है। मगर मां जैन बाप जैन तब शंकर दोष कैसा? जो जैन जातियां आजकल वैश्य कहलाती हैं क्या वह क्षत्री नहीं हैं? जैसे ओसवाल क्षत्री ओसिया गांव के, जैसवाल जैसलमेर के, लवेंचू भी क्षत्री राजा लुकचन्द्र की सन्तान, अगरवाल राजा अग्र की सन्तान हैं। इसी तरह औरभी जैन जातियें हैं, फिर हम नहीं समझते कि संकर दोष कैसे आता है। जाति पांति मेटने के सवाल पर विचार यह होता है कि जब कन्या सप्तपदी फिरने के बाद वधू हो जाती है, उसी समय उसके पिता के गोत्र को छोड़कर पति के गोत्र की होजाती है। इसीसे भूत-काल में वानर जाति राक्षस जाति, सूर्य-वंश, हरिवंश, कौरव पांडव यदुवंश सबही आपस में रोटी बेटी व्यवहार करते थे। क्या जब कोई आजकल का सा विद्वान् संकर दोष बताने वाला नहीं था, सो ऐसा नहीं है। हमारे पूर्वजों ने जो कार्य किए वह धर्म को लक्ष्य में लाकर ही देश के रीति रिवाजों का प्रचार किया था और महावीर स्वामी के समय तक ही नहीं किन्तु जम्बू स्वामी अन्तिम केवली तक इसी तरह होता रहा। इसके साक्षी अनेक ग्रन्थ हैं

वर्ण तथा जातियां हमेशा से हैं, हमेशा तक रहेंगी। जो चीज़ कभी न थी वह कभी नहीं हो सकती। जैन सिद्धान्त है तब यह कहना कि जाति अनादि है वर्ण पीछे, हमारी समझ में नहीं आता. या यह कहना कि भोग भूमि में अभाव होजाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि इसका अस्तित्व न हो भोग भूमि में भी एक जाति और एकही वर्ण भोग भूमियों के होता है।

भोग भूमियां भी तो एक मनुष्य जाति है देव भी अनेक जाति तथा वर्ण के होते हैं तब अभाव या प्रादुर्भाव कैसा? यह पण्डितगण ही जान सकते हैं। हमेशा से जातियां होने पर भी रोटी बेटी व्यौहार होता था जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है।

कोई २ कहते हैं उच्च वर्णों में बेटी व्यवहार हो सकता है विजात में नहीं। साथही यह भी कहते हैं कि जाति माता पिता से सम्बन्ध रखती है और वर्ण आजीविका पर। अब हमारा सवाल यह है कि एक भाई नौकरी करता है दूसरा वनिज करता है तीसरा पण्डित है इत्यादि तबक्या नौकरी करने वालेको शूद्र समझ कर बेटी व्यवहार नहीं किया जावे। क्योंकि आजीविका से वह नीच वर्ण है किन्तु ऐसा कहीं देखा नहीं। इसके सैकड़ों प्रत्यक्ष उदाहरण हैं कि बेटी व्यवहार होता है। एक वर्ण में कई जाति हैं जैसे क्षत्रियों में पमार चौहान ढाकरे। सब बेटी व्यवहार करते हैं एक वर्ण होने से विजाति नहीं समझे जाते। हां! यदि क्षत्री जाति के वैश्य जाति में बेटी व्यवहार करें तो संकर दोष आजायगा। इसीसे कोई नहीं करता। ऐसी ही आज तक परम्परा से चली आई, सामाजिक तथा धार्मिक रीति रिवाजें प्रचलित हैं।

भावार्थ यह है कि एक जाति में चारों वर्ण नहीं समझे जाते प्रत्युत एक वर्ण की कई जातियां समान समझी जा सकती हैं और उच्च वर्णों में बेटी व्यवहार पण्डितों को भी स्वीकार है तब फिर कार्यरूप में नहीं लाने। अन्त में हम पाठकों से साग्रह निवेदन करते हैं कि निरपेक्ष होकर हमारे विचारों पर अपनी २ सम्मति प्रगट करें, यदि कोई धर्म विरुद्ध लिखा गया हो तो सप्रमाण ओसवाल में प्रकाशित करें हम पुनः विचार करने को तैयार रहेंगे।

(जसवाल जैन से)

जो मनुष्य बदला लेने का विचार करता है वह मानो उस क्षति से सन्तुष्ट नहीं जो उसे पहुँच चुकी है।

लासलगांव के पराभव से क्या निष्पन्न हुआ ?

(लेखक—श्री० प्रतापमलजी कोचर)

यह बात निश्चित हो चुकी है कि खुले बाजार में लड़कियों की बिक्री नाशिक और अहमदनगर जिले के सिवाय कहीं भी नहीं होती और यहभी बात निश्चय है कि ऐसे कुकर्मी इने गिने लोगों ने दोनों जिलों को बदनाम कर डाला, बिना मिहनत धन पाने की आदत पड़रही है, लोग भले बुरे का ध्यान न कर अपनी लड़की को कुएं में डाल देते हैं, द्रव्य लोभी बेटियों को खुले बाजार में बेचनेवाले तथा सौदा कराने वाले दलालों की कमी हमारे जिले में नहीं है तथा ५०–६० वर्ष में ब्याह करने में अपना सौभाग्य मानने वालों की संख्या वराड खानदेश में कमी नहीं है।

वास्तविक देखाजाय तो न वे पिता अपनी लड़की की भलाई सोचते हैं जो बूढ़ों को परणाकर अपनी थैली भरते हैं और न वे बुड्ढे ५०–६० की आयु में विवाह करने से सौख्य मानते हैं न लड़की उस बूढ़े से सौख्य भोगती है।

कई लोग कहते हैं बूढ़ा भलेही हो; है तो धनवान, वहां क्या कमी है ? खाने पीने, कपड़े लत्ते आभूषणों का कितना मज़ा ? यह मज़ा गरीब के यहां कैसे मिल सकता है ? हमारे अनुभव से तथा सूक्ष्म निरीक्षण करने से हम कहते हैं यह कल्पना झूंठी है। प्रकृति साम्यता चाहती है एक नवयुवा स्त्री बूढ़े से कैसे सच्चा प्रेम करेगी जितना कि एक नवयुवक के साथ। यह बात सब जानते हैं कि स्वर्ण की छुरी कोई पेट में नहीं मारते। अस्तुः—

लासलगांव और लोणवाडी इन दो गामों ने हमारे जिले का ध्यान आकर्षित करलिया, लोणवाडी में तो सफलता मिली पर लासलगांव में पराभव हुआ इसका क्या कारण ? और इन दोनों विवाहों से जो समाज में खलबली मची है वह क्या बतलाती है ? क्या निष्पन्न हुआ है ? इस बात पर विचार करने का समय उत्पन्न हुआ है।

हमारे विचार से निम्न लिखित बातें निष्पन्न हुई हैं:—

१–लासलगांव का पराभव भविष्य के विजय की सूचना है।

२-लासलगांव का पराभव संघ शक्ति की आवश्यकता बतलाता है।

३-लासलगांव का पराभव सेवग ब्राह्मणों का बहिष्कार करना बताता है।

४-लासलगांव का पराभव समाज का सड़ा हुआ जो अवयव है उसको आपरेशन कराना चाहता है।

५-लासलगांव का पराभव सूचित करता है जो सात्विक गरीब या मामूली स्थिति के लोग हैं धनवान को अपनी लड़की न दें और जो धनवान हमारे साथ हैं वे भी अपनी लड़कियों को किसी सुयोग्य गरीब को देने का प्रण करें।

६-लासलगांव का पराभव बतलाता है कि आपसी फूट का अन्त करदो।

७-लासलगांव का पराभव कहता है भारत भर में यह आन्दोलन मचना चाहिये और कानून होना चाहिये कि ४० वर्ष से ऊपर कोई विवाह नहीं कर सके।

८-धनवानों से सहयोग करना छोड़ देना चाहिये।

९-स्त्री शिक्षा की आवश्यकता बतलाता है।

१०-महासभा का कार्यारम्भ शीघ्र ही दोनों सभा एकही तथा कार्यक्रम जो जोरदार हो बनाना चाहिये।

११-जातीय वकीलों को अपनी राय वृद्धविवाह के बारे में कानूनी प्रमाणों द्वारा जाहिर कर देना चाहिये।

गृह जीवन की सुन्दरता।

लें०—श्रीमती सावित्री देवी

दो एक बातें।

पाठक तथा पाठिकागण! आज मैं आप लोगों के सामने वह विषय लेकर उपस्थित हुई हूं जिसके लिये साधारण से साधारण मनुष्य को भी इच्छा होती होगी। वास्तव में संसार में वही जीवन उच्च, शान्त, सुखद तथा हर एक विषय में परिपूर्ण हो सकता है जिनका गृह-जीवन सुन्दर हो। सुन्दरता केवल धन, बल, गाड़ी, मोटर तथा आभूषणों द्वारा नहीं हो सकती। जिस सुन्दरता का मैं वर्णन करने चली हूं वह सुन्दरता ऊपर लिखे हुए पदार्थों से प्राप्त नहीं हो सकती। इस सुन्दरता के लिये आज कितने जीवन प्यासे होरहे हैं,

किन्तु प्राप्त नहीं होती उसके कारण तथा उपाय बताने के लिये ही मैंने लेखनी को उठाई है। मेरे जीवन में यह पहलाही समय है जो ऐसे साधारण किन्तु महत्वपूर्ण विषय पर दो अक्षर लिखूं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज समय के हेर-फेर ने हमें इस विषय पर विचार करने का मौका दिया है। आज इस भारतवर्ष में कितने कुटुम्ब होंगे जिनको इस विषय के खोज करने की आवश्यकता न होगी। जिधर आंख उठाकर देखिये त्राहि त्राहि की पुकार सुनने में आती है। एक समय वह था जब गान्धारी आँखों के होते हुए भी चक्षुहीन पति का साथ देने के लिये आजन्म आँखों पर पट्टी बाँधे रही। किन्तु आज उसके विपरीत हमारे सामने क्या है? इसका जीता-जागता स्वरूप श्रद्धेय महात्मा गाँधी ने अपनी लेखनी द्वारा सामने रखा है जो अक्षरशः आप लोगों के सामने उपस्थित करना अनुचित नहीं समझती।

एक ब्राह्मण महाशय ने महात्माजी के पास एक पत्र भेजा है जिसमें उन्होंने महात्माजी से अपने गृह कलह के मिटाने में सहायता माँगी है। गृह-कलह का मुख्य कारण यह है कि ब्राह्मण महाशय स्वयं कट्टर असहयोगी हैं और खादी पहनते हैं किन्तु उनकी स्त्री खादी नहीं पहिनती अकसर विलायती कपड़े पहन लेती है जिससे इन्हें बड़ा दुःख होता है और कभी २ लड़ाई झगड़े की सम्भावना भी पैदा होजाती है। महात्मा जी इस पत्र का उत्तर देते हुए लिखते हैं:—

"मैं समझता हूं कि जैसी इन भाई की दशा है वैसेही बहुतेरे पुरुषों की होगी। स्त्री पुरुष का पारस्परिक संबंध इतना नाज़ुक है कि तीसरा पुरुष बीच में पड़कर शायद ही कुछ सेवा कर सके। सत्याग्रह शुद्ध प्रेमका चिन्ह है। दम्पति-प्रेम जब बिलकुल निर्मल होजाता है तब प्रेम पराकाष्ठा को पहुंचता है तब उसमें विषय के लिए गुंजायश नहीं रहती-स्वार्थ की तो उसमें गंध तक नहीं रहजाती। इसीसे कवियों ने दम्पति-प्रेम का वर्णन करके आत्मा की परमात्मा के प्रति लगनको पहचाना है और उसका परिचय कराया है। ऐसा प्रेम विरला ही हो [illegible]ता है।

विवाह बीज आसक्ति में होता है। तीव्र आसक्ति जब अनासक्ति के रूप में परिणत होजाय और शरीर स्पर्श का ख्याल तक न लाकर, न करके जब एक आत्मा दूसरी आत्मा में तल्लीन होजाती है तब उसमें परमात्मा के प्रेम की कुछ झलक हो सकती है। यह वर्णन भी बहुत स्थूल है। जिस प्रेम की कल्पना में पाठकों को कराना चाहता हूं वह निर्विकार होता है मैं खुद अभी इतना विकार-शून्य नहीं हुआ जिससे मैं उसका यथा-वत् वर्णन कर सकूं। इससे मैं जानता हूं कि जिस भाषा के द्वारा मुझे उस प्रेम का वर्णन करना चाहिए वह मेरी कलम से नहीं निकल रही है। तथापि शुद्ध हृदयवाले पाठक उस भाषा को अपने आप सोच लेंगे।

जहाँ दम्पतिमें में इतने निर्मल प्रेम को सम्भवनीय मानता हूं वहां सत्या-ग्रह क्या नहीं कर सकता यह सत्याग्रह वह वस्तु नहीं है जो आजकल सत्याग्रह के नाम से पुकारी जाती है। पार्वतीने शंकर के मुक़ाबिले में सत्याग्रह किया था अर्थात् हज़ारों वर्षतक तपस्या की। रामचन्द्र ने भरत की बात न मानी तो वे नन्दिग्राम में जाकर बैठगये। रामभी सत्य पथ पर और भरत भी सत्य पथ-पर थे। दोनों ने अपना प्रण रखा। भरत पादुका लेकर उसकी पूजा करते हुए योगारूढ़ हुए। रामकी तपश्चर्यामें वहारकी आनन्द की सम्भावना थी। भरतकी तपश्चर्या अलौकिक थी। राम को भरतको भूलजाने का अवसर था। भरत तो दल-वल राम नामका उच्चा-रण कर्ता था। इससे ईश्वर दासानुदास हुआ।

यह शुद्धतम सत्याग्रहकी मिसाल है। दोमें से किसीकी जीत न हुई। यदि कोई जीता कहा जाय तो वह भ-रत। यदि "भरत-जन्म न हुआ होता तो राम-महिमा न होती" यह कहकर तुलसीदास ने प्रेम का रहस्य हमारे सामने प्रकट कर दिया है।

पत्र-प्रेषक सज्जन यदि स्थूल प्रेम को भूलकर दम्पति-प्रेम में छिपे सूक्ष्म प्रेम को धारण कर सकें—मैं जानता हूं कि वह धारण करने से धारण नहीं होता, वह तो प्रकट होना हो तो हो जाता है—तो मैं निश्चय पूर्वक कहता हूं कि उनकी धर्मपत्नी अपने

कपड़ों को उसी दिन जलादे। पर एक छोटी बात के लिये मैं इतना भारी उपाय क्यों बताता हूं? कोई यह सन्देह न करें कि मैं तारतम्य नहीं रखता। बात यह है कि छोटी घटनाएँ हमारे जीवन में जो परिवर्त्तन करती हैं वे जानबूझ कर लाये गये प्रसङ्गों और बड़ी मानी जानेवाली दुर्घटनाओं के द्वारा नहीं हो सकती।

दम्पत्तिके बीच संभवनीय सत्याग्रह की बीसों मिसालें मैं अपनी अनुभव-पुस्तक से दे सकता हूं। पर मैं जानता हूं कि इन सबका दुरुपयोग भी हो सकता है। मौजूदा वायुमण्डल मुझे ज़हरीला मालूम होता है। ऐसे समय में उन अनुभवों की मिसालें पेश करके मैं इन भाईको, जिन्होंने शुद्ध भाव से प्रश्न किया है, भ्रमित करने का पाप अपने सिर लेना नहीं चाहता। इससे मैं उच्च से उच्च स्थिति का वर्णन करके यह भार उन्हीं पर सौंप देता हूं कि वे उसमें से जो उन्हें उचित दिखाई दे अपने संकट निवारण का मार्ग खोज लें।

स्त्रियों की स्थिति नाज़ुक है। उनके लिये ज़राभी कुछ करने से बल प्रयोग की सम्भावना रहती है। हिन्दू-संसार कठिन है। इसीसे वह औरोंकी अपेक्षा अधिक स्वच्छ रह सका है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रति केवल वही प्रभाव डालने का अधिकार है जो शुद्ध प्रेम के द्वारा डाला जा सकता है। यदि दो में से कोई एक भी विषय-वासना को जड़से काट सके तो रास्ता सरल होजाता।

मेरा दृढ़ मत है कि स्त्रियों में जो कुछ खामिआं पुरुषों को दिखाई देती हैं उसकी यदि सारी नहीं तो मुख्य जवाबदेही पुरुषों पर है। स्त्रियोंको सज-धज का मोह वेही लगाते हैं। बढ़िया बढ़िया कपड़े वही पहनाते हैं फिर स्त्री उनकी आदी होजाती है और जब पति में परिवर्त्तन होता है तब वे तत्काल उनका साथ नहीं दे सकतीं। इसमें दोष पुरुष का ही है, स्त्री का नहीं। यह समझकर पुरुष को धीरज रखना लाजिम है। हिन्दुस्तान में यदि शान्त उपायों से स्वराज्य मिलनेवाला होगा तो स्त्रियों को उसमें पूरा पूरा योग जरूर देना पड़ेगा। स्त्रियों को जबतक विलायती मिलके तथा रेशमी कपड़ों का मोह

रक्षा करेगा तबतक स्वराज्य दूर ही रहेगा।"

महात्माजी के विचार वास्तव में अमृतविन्दु हैं। परन्तु वह उसीके लिये हैं जो इच्छुक होकर न केवल पढ़ें किंतु मनन भी करें। वास्तव में महात्माजी ने अपने अनुभव का खासा ख़ाका खींचा है। किन्तु कई एक बातें ऐसी भी हैं जो सम्भवतः महात्माजीने समयाभाव किंवा स्थानाभाव से प्रकाशित न की हों वास्तव में हमारे गृह जीवन के आनन्दों में कितनी बाधायें आ पड़ती हैं जिनका विचारना हमारे लिये अति आवश्यक है, किन्तु यह सब बातें आजही आप लोगों के सामने रखना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

हमारी विलासिता का परिणाम

(लेखक—श्री० फूलचन्दजी अग्रवाल, तोयल)

(१)

माधोपुर बड़ी वस्ती नहीं, किन्तु स्वास्थ्य वर्द्धक जल-वायु के कारण समस्त प्रान्त में प्रसिद्ध है, यहां की जन संख्या लगभग १५ हजार है। डाक्टर बनर्जी यहां के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं जिनकी पहुँच प्रत्येक घर में है, इसका मुख्य कारण यह है कि डाक्टर बनर्जी मैडिकल में उत्तीर्ण न होने के कारण सरकार के मैडिकल विभागकी सर्विस में नहीं, प्रत्युत सी० आई० डी० के आप इन्सपैक्टर हैं, परन्तु इसका किसी को भी ज्ञान नहीं और इसी कारण भेद निकालने के ख्याल से आप घर २ में जाया करते हैं साथही मित्र, भाव दर्शाकर जनता में दवा भी किया करते हैं, यही मुख्य कारण है जो आपकी ख्याति सज्जनता और परोपकारता के नाम से होरही है और इसीसे आप प्रत्येक घर में प्रवेश कर सकते हैं।

वास्तविक बात यह है कि डाक्टर बनर्जी का उद्देश्य केवल भेदियों का काम ही नहीं बल्कि विषयी होने के कारण परोपकार की ओट में अपनी

कामवासना पूर्त्ति करते रहते हैं और सदा इसीकी खोज किया करते हैं। कुछ दिन से डाक्टर साहब की मित्रता सेठ सीताराम से होगई है।

यहांपर परस्पर की मित्रता का कारण भी प्रकट कर देना अप्रसांगिक न होगा। मित्रता का कारण यह है कि एकबार सेठ सीताराम की बड़ी पुत्री गुलाब बीमार हुई, उस समय उसके जीवन की भी आशा नहीं रही थी तब डाक्टर बनर्जी की औषधि ने बड़ा काम किया। यद्यपि डाक्टर को कई दिन रात सेठजी के घर रहना पड़ा, परन्तु परमात्मा की दया से वह मृत्यु के मुख से बचगई तबसे समस्त घर वाले डाक्टर के आभारी हैं, तभीसे घरमें जाने आने की कोई रोक टोक नहीं रही। गुलाब के निरोग होने पर डाक्टर ने उसे पौष्टिक औषधियों का सेवन कराया पश्चात् उसका रूप-लावण्य देख उसपर आसक्त होगया और गुलाब से डाक्टर ने अपना अनुचित सम्बन्ध कर लिया तभीसे गुलाब एकवर्ष महीने दो महीने को सासरे जाती है अन्यथा पिता के घर रहती है। कहते हैं गुलाब का चरित्र अति-भ्रष्ट होगया था, उसकी काम-वासना कभी तृप्त नहीं होती थी और इसी अनुराग में उसका शीघ्रही शरीरान्त होगया।

गुलाब के शरीरान्त के पूर्व ही उसकी छोटी बहन केशर ग्यारह वर्ष की होचुकी थी और उसके व्याह के पूर्वही डाक्टर की उसपर भी कुदृष्टि पड़ चुकी थी अतैव व्याह से पूर्व ही उसका शील भ्रष्ट कर दिया गया। किन्तु यह बात अधिक दिनों छिपी नहीं रह सकी। सेठजी को इस रहस्य का पता लगने से मनही मन बहुत पछताये और डाक्टर की मित्रता का अन्त करने के साथही केशर का भी व्याह कर दिया।

(२)

सेठ सीताराम बड़े विलास प्रिय व्यक्ति हैं, आपने विलासिता में लाखों की सम्पत्ति स्वाहा करदी, किन्तु एक बात विशेष उल्लेखनीय है वह यह कि सेठजी को अपने पिताकी सम्पत्ति में से एक पैसा भी अप-व्यय को नहीं मिला। इसी कारण सेठजी युवावस्था

से ही माता पिता आदि से पृथक कोठी बनाकर रहते हैं। अपनी कोठी सेठजी ने प्रचुर धन लगाकर सुसज्जित की है। बहुधा आप कोठी पर ही रहते हैं अलबत्ता भोजन के लिये केवल एक बार घर पर जाते हैं या जब कभी विश्राम के लिये मां के विशेष आग्रह करने पर, किन्तु आपकी धर्मपत्नी रमाबाई सती-साध्वी स्त्री है जो अपने पति के दुर्गुणों की ओर कभी ध्यान नहीं देती और किसी भी प्रकार अपना मनमारे सासू ससुर के पास रहती है।

सीतारामजी की विलासिता सीमा पार है। कईबार कितनी ही स्त्रियों से बलात्कार करने के कारण आपकी अप्रशंसा होचुकी है। हां, अब कई वर्ष से बुढ़ापे के कारण आपकी विलासिता में शिथिलता अवश्य आगई है, इसका उन्हें महान् खेद है साथही एक चिन्ता उन्हें और भी घेरे रहती है, कि उनकी लक्षों की सम्पत्ति का कोई भोगने वाला नहीं। यह भी भगवान की विचित्र लीला है कहीं पर एक सन्तति के लिये लोग तरस रहे हैं और इसीकी सिद्धि के लिये हजारों रुपये गंडे, डोरे, दान और धर्म में खर्च करके भी निराश होते हैं बल्कि इसी आशा के भरोसे अनेकों साध्वियां अपने सतीत्व की आहुति भी दे देती हैं, कहीं पर आर्थिक कठिनाइयों के सामने होते हुए भी ऊपर तले संतति देखने में आती हैं जिनके खाने को भोजन नहीं और शरीर ढकने को वस्त्र नहीं।

यह बात नहीं कि सेठ सीताराम के कोई सन्तति नहीं वरन् दो पुत्रियाँ है, परन्तु पुत्र नहीं जिससे कुटुम्ब का दीपक प्रज्वलित रहे। सेठजी को अब जीवन का भी भरोसा नहीं इसीसे एक पुत्र खरीद लिया और उसकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध कर दिया ताकि पुत्र सच्चरित्र बने नकि दुश्चरित्र जैसे प्रायः मोल गोद के देखने में आते हैं।

(२)

वर्षाऋतु की काली निशा है, बादल गरज रहे हैं, बिजली कड़क रही है, समय अर्द्ध रात्रि का है, इस समय केशर अपने सजे सजाये कमरे में सिसक २ कर रोरही है, उसके नेत्रों में नींद नहीं, जब उसे पलंग पर

लेटे २ चैन नहीं पड़ा तब वह उठ कर एक कुर्सी पर बैठगई मानो किसी के आने की बाट जोह रही हो, कभी उठकर द्वार से बाहर झांकती है फिर हार कर बैठ जाती है ठीक इसी समय एक युवक ने इसी कमरे में प्रवेश किया जिसे देख केशर स्वागत के लिये उठ कर खड़ी होती है-दोनों एक दूसरे से आपस में प्रेमालिंगन करने लगते हैं।

मित्रो ! यह केशर के कमरे में प्रवेश करने वाला कौन था आप कदाचित नहीं जान सके होंगे। यह वही खरीदा हुआ गुलाम सेठ सीताराम का पुत्र है, और डाक्टर के प्रवेश बन्द होने पर केशर से उसका अनुचित सम्बन्ध हो गया है, किन्तु कई मास पश्चात् यह बात सेठजी को विदित होगई और स्वतः सेठजी ने अपने नेत्रों से देख लिया तब केशर को उसके सासरे भेज दिया जहांपर चौथे महीने उसके पुत्र ने जन्म लिया।

सज्जनो ! हम पुत्र गोद लेने के विरोधी नहीं; किन्तु हम चाहते हैं कि अयोग्य पुत्र लेना तथा पुत्र लेकर भी उसे योग्य न बनाने से अपनी सम्पत्ति किसी जाति तथा देश के काम में दान देना श्रेयस्कर है। हम इसके पक्ष में नहीं कि गूंगी बावली कैसी भी हो संतति तो है। हमारे विचार से ऐसे बदनाम से नाम का लोप होना ही अच्छा है।

समाज में लड़कियों के भगाने का नया रोग

(ले०—श्री० प्रतापमलजी कोचर)

नासिक जिले के लोणवाडी के मोतीलालजी धोका ने अपनी बेटी का सगपन नलवाडी वाले मुलतानमलजी कावड़िया के बेटे से लगभग ५-६ वर्ष पहले किया था उस समय रीत के ठहराये रुपयों में से २५०० रुपये मोती-

लालजी को दिये गये। लेकिन कुछ दिन हुए मोतीलालजी की नियत बिगड़ गई और नलवाडी वालों को धता बताकर दूसरे किसी के पाससे रुपये ले उसे अपनी लड़की परणा देने के उद्योग में लगे।

आखिर करते २ आषाढ़ मास में खानदेश के रोटावद् वाले दुलीचन्दजी को अपनी लड़की व्याह देने का निश्चय किया, दुलीचन्दजी की उम्र इस समय ५० वर्ष के लगभग होकर दांत सब गिर गये और नई बतीसी बिठाई है, नाक में आगर नामका रोग है जिससे स्पष्ट बोला नहीं जाता, यद्यपि मोतीलालजी ने इन्हें साता आदि कुछ नहीं दिया तथापि सुना जाताहै कि १५००)रु० साई के मोतीलालजी को दे दिये, और यह भी सुना जाता है कि मोतीलालजी ने अपनी लड़की को लोणवाडी से ला रोटवद् में व्याह कर देना और राति के ११ हजार रुपये ले लेना, यह भी सुना गया है कि दुलीचन्दजी से एक ब्राह्मण दलाल ५००) रुपये लेगया है।

मोतीलालजी का यह कार्य गुप्त रीति से चल रहा था लेकिन पाप का घड़ा फूटना था जिसे रोटावद् के पास धरणगांव वालों को संदिग्ध बातों का पता लगा, वे इधर आये और नलवाडी वालों को सावधान करदिया, धरणगांव तथा नलवाडी वाले आपसमें रिश्तेदार हैं।

यद्यपि नलवाडी वालों को सावधान किया था तथापि इकले नलवाडी वाले क्या कर सकते थे? उन्हें आसपास वालों को सहायता की जरूरत थी, वे आसपास के गांवों में फिर सहायता का आश्वासन मिलाया और लोणवाड़ी के एक कोस के फासले पर पालखेड के १-२ प्रमुखों को ले मोतीलालजी के हाल चाल पर निगाह रखने लगे, धोकाजी ने दोवार धोखा देकर रेल में बैठने का प्रयत्न किया लेकिन वह व्यर्थ हुआ।

रोटावद् के दूत आते जाते तो थेही वे और मोतीलालजी इन्होंने एक बड़ा भारी षडयन्त्र रचा था जिसका वर्णन हम आगे करेंगे। समाज में हलचल मची, और धोकेजी की धोकाबाजी का निषेध करने लगे। आखिर आषाढ़ शुक्ला ७ रविवार को समाज ने यह

फ़ैसला किया कि ७ हजार रुपये नलवाडी वालों ने धोकाजी को देना और धोकाजी ने अपनी लड़की का विवाह मुलतानमलजी के बेटे से कर देना, यह न्यायसमाजने धोकाजीकी बड़ी खुशामद कर दिया, इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं था, गांव वालों को मोतीलालजी ने,पहले अनुकूल करलिया था परन्तु पीछे से पालखेड दावचवाडी तथा पिपलगांव वालों के आनेपर गांव वाले नलवाडी वालों की तरफ होगये।

पंचायत होते ही कुंकु गाल दिया, सोमवार तक रोटवद वाले आते जाते रहें लेकिन मंगलवारो पहटको १ प्रहर रात पहले क्या देखते हैं कि—पांच मोटरें खड़ी होकर उसमें करीब ४०-४५ मनुष्य होंगे, उसमें से दो मनुष्य कहते हैं एक तो खास बिन्दणी का भूखा दुलीचन्दजी,था उतनी रातको मोतीलाल जी के घरके अगवाडे पछवाडे के किवाड़ खटखटाने लगे। मोतीलाल जी उस रात को घर नहीं थे उनके भाई ने न्हांसे निकाल दिया, कहतें हैं दुलीचन्दजी को नलवाड़ी पक्ष के १—२ व्यक्तियों ने अच्छा समझाया। यह खबर मोटरें आने की। दिन उगतेहीं पालखेड के भाई सुनते ही २५ आदमी १५ मिनट के अन्दर लोणवाड़ो सड़क पर मोटरों के पास आये और उन डाकुओं की बेशर्मी को; मोटर में लड़की को बिठाकर भगाने वाले चोरों की खूबही बेइज्जती की अच्छी तरह से नाक कटाई होनेपर वे मोटरें वहां से भागी और पिपलगांव आ ठहरीं।

लोणवाडी से पिपलगांव २ कोस है वहां अदालत है वकील मार्फत अदालत से विवाह बन्दी का नोटिस निकाल लेकर एक मोटर में: दुलीचन्द जी, १ वेलिफ, २ रोहिले, २-३ पटेल बैठकर लोणवाड़ी दिनके ५ बजे के लगभग आये; लेकिन मोतीलालजी तथा उनकी लड़की का वहां पता नहीं था, दो घण्टे ठहर तलाश कर वहांसे वापस चले गये इस वार हमारी मुलाकात दुलीचन्दजी से हुई थी आपका कहना था कि—ऐसा होना तो हम क्यों झगड़े में पड़ते? नाहक हमारे तीन हजार रुपये पानी में चले गये, पहले सगपन हो चुका है ऐसा हमें ज्ञान नहीं

था, अब हमको दिये हुए पन्द्रहसौ रुपये हमको दिलवादो तो हम चुपचाप चले जाते, हमने कहा-आपको पहले अर्थात् दूतों का आना जाना चला था उस वक्त ही धरणगांव वालों ने कह दिया था कि आप दूसरे की मांग परणने का क्यों प्रयत्न करते हैं ? आपको अदालत की मना हुक्म की नोटिस भी लग चुकी है फिरभी आप लड़की उड़ाने का प्रयत्न करते हैं यह कितना अन्याय है ? तुम खानदेश वालों ने क्या इधर पोलही समझी है ? आप कहते हैं रुपये दिलवादो, पर आपने रुपये भोकाजी को दिये या नहीं दिये हमें क्या मालूम ? आपके पास कोई लेखी प्रमाण हो तो दिखलाइये, आपके त्रिदणी हाथ आती न देखकर आप कुभांड करते होंगे, रात को लड़की भगाने वाले का विश्वास क्या ? निरुत्तर हो चलबसे !

इनके जाने पर नमालुम मोतीलालजी कहाँ थे, लोणवाडी में आगये और नलवाडी के छोकरे के साथ व्याह आज (आषाढ़ शुक्ला ६ मंगलवार) रात को करदिया । समाज में मोटरों द्वारा लड़कियां भगाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है । श्रीमानों को लड़कियां भगाने की बातें हमने सुनी है श्रीमानों को सावधान रहना चाहिये कि जितना दारिद्र्य नाशिक जिले में है उतनाही साहस है ।

कुण्डलिया ।

(ले० श्री कुं० चन्द्रप्रताप सिंह जी)

मतवाला माने नहीं, कहुं काहु की बात,
इत-उत घूमत वह फिरत, सदा लगाये घात ।
सदा लगाये घात बात सूधी नहिं बोले,
इत उत देखि सकात सदाँ गलियनमें डोले ।
भाषै 'चन्द्रप्रताप', सदा से वाही हाला,
जो आवै यही भाँति ताहि जानहु मतवाला ।

निद्रा व निद्राग्रह

मनुष्य जीवन स्वस्थ और सुखी ब-नाने के लिए निद्रा की बड़ी भारी आ-वश्यकता मानी गई है। डाक्टर लोगों का कहना है कि निद्रा बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता क्योंकि निद्रा से श्रम से थकीत गात्रों में नव जीवन का संचार होकर उनमें फिरसे काम करने का उत्साह आता है। इस बात का अनुभव हमें पग पग पर होता जाता है। यदि हम एक दिन जागृण करें तो दूसरे दिन आंखें भारी पड़ जाती हैं काम करने का उत्साह बिल-कुल नहीं रहता और जब तक हम नींद नहीं ले लेते तबतक बेचैनी ज्यों की त्यों बनी रहती है। किन्तु अधिक निद्रा लेने से भी शरीर की स्वस्थता नष्ट होती है आलस्य का संचार होकर काम करने का उत्साह बिलकुल नहीं रहता। इसलिए निद्रा न तो कम या बिलकुल न लेना अच्छा है और न ज्यादह लेना। फिर नींद कैसी लेनी चाहिये और किस नींद को लेने से हम अपने शरीर को स्वस्थ और मनको उल्लासीत रख सकेंगे इस बात का विचार करना ब-हुत जरूरी बात है। क्योंकि दैनिक व्यवहार की क्षुल्लक बातें ही हमारे सुख का कारण बनती हैं और उन्हीं पर हमारा सुख दुख अवलम्बित है।

आजकल हमारे प्रत्येक काम में दोष आकर उसका मूल स्वरूप विकृत होगया है इसलिए उसमें सुधार करने की आवश्यकता है। नींद में भी आज-कल जो दोष आगये हैं, उससे हम उसके सच्चे उद्देश की पूर्त्ति नहीं कर पाते और आजकल निद्रा पद्धति की सदोषता के कारण हम उससे मिलने वाले सुख और आनन्द से वंचित र-हते हैं। रात्रि के बारह बजे तक इधर उधर की गप्पें हांकने, नाटक सीनेमादि मनोरंजन खेल देखने, नाच तमाशे
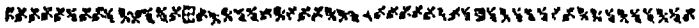
प्रत्येक रीति रिवाज लज्जा को महत्व देकर बने हैं और लज्जा को प्रथम पद देने के कारण दूसरी आवश्यक बात छूट गई हैं। निद्रागृह हमारे प्रायः एकान्त कोठरी को किया जाता है इस बात का कभी ध्यान नहीं दिया जाता कि यहाँ हवा आती है या नहीं? खिड़कियां निद्रागृह में रखना इसलिए पाप है कि वहाँ पति पत्नी एकत्र सोते हैं। वहाँ स्वच्छता है या नहीं? गादियें तथा चादरें स्वच्छ हैं या नहीं? इसकी तरफ शायदही ध्यान दिया जाताहो। वास्तव में हमको अपना धन खर्च करते समय इन बातों की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए था किन्तु हजारों रुपये ओसर मोसर में खर्च करनेवाली त्यागी जाति को इन बातों की तरफ ध्यान देने के लिये समय कहां है। अपने स्वास्थ के लिये और सुख के लिए मानो उनका जीवनही नहीं है वे तो केवल दूसरों के लिए ही जीते हैं। जीता रहना भी कहां वे जल्दी असार संसार का त्याग करते हैं क्योंकि वे तो सच्चे वेदान्ती ठहरे न, जब सुख मिथ्या है तब उनके पीछे कैसे लगेंगे।

यदि हमें संसार में अपना जीवन सुख तथा सफलता पूर्वक विताना हो तो हमें अपने प्रत्येक कार्य में सुधार करना चाहिए। इसी तरह निद्रा तथा निद्रागृह जैसी साधारण दीखनेवाली किन्तु आवश्यक बात में भी सुधार करना चाहिए। हमारे निद्रागृह जो आज खटमल तथा मच्छरों के घर बनकर नींद लेना हराम करते हैं उसे सुधार कर हम भरपूर सुखसे नींद ले सकें ऐसे बनाना चाहिए। निद्रागृह में सजावट करने की अपेक्षा स्वच्छ रखने की ज्यादे जरूरत है। हम दो तीन बातें लिखकर यह लेख यहाँ समाप्त करते हैं और आशा करते हैं कि पाठक इस तरफ पूर्ण ध्यान देंगे।

१-रात्रि को ९ बजे सोकर ४ बजे उठना चाहिये।

२-एक घरमें भी पति पत्नि का बिस्तर अलग लगाना चाहिए।

३-सोने के घरमें खूब हवा होनी चाहिए।

४ सोने के घरमें स्वच्छता का खूब ध्यान रखना चाहिए।

५-सोने के बिस्तर साफ और सुथरे चाहिए।

देशबन्धुदास—

हमें यह लिखते हुए अत्यन्त दुःख होता है कि इस मास में भारत माता का अनूठा रत्न कालने छीन लिया। संसार में यों तो कौन नहीं मरता किंतु मरना उनकाही वास्तव में सच्चा मरना है कि जो मरकर कीर्त्ति छोड़कर अपने को चिरंजीव बनाजाते हैं। कौन कहता है देश बन्धु मरगए जबकि आज उनके सिद्धान्त पर हजारों युवा आगे बढ़ रहे हैं। भारत आज देश बन्धु के आदर्शों को लेकर आगे बढ़ेगा तब उनकी मृत्यु ही कैसे हो सकती है। हम अपने जातिय बन्धुओं के सामने उनका चरित्र रखकर आशा करते हैं कि हमारी ओसवाल जाति भी देशबन्धु के आदर्शों को लेकर आगे बढ़ेगी।

देशबन्धु का जन्म दास नामक उदार परिवार में सन् १८७० में हुआ था। उनके पिता उस समय के नामी मुख्तारों में से थे किन्तु दास परवार उदारता जन्म सिद्ध होने के कारण उनकी आय की अपेक्षा व्यय ही अधिक होता था। इसलिए उनको आर्थिक कष्ट सहन करना स्वाभाविक था। देशबन्धु के पिता ने दास बाबू की शिक्षा के लिए आर्थिक कष्ट होते हुए भी खूब धन खर्च किया। उनकी भारतमें शिक्षा समाप्त होते ही वे विलायत भेजे गये वहाँ कितना खर्चा होता है सो शायद ही हमारे बन्धु जानते हों। वहाँ उन्हें पास करने में १५ हजार से कम रुपये न लगे होंगे। आर्थिक कष्ट होते हुए भी देशबंधुदास के पिता ने अपने बालक को शिक्षा दी। इससे क्या हमारे जातिय बंधु शिक्षा नहीं ग्रहण कर सकेंगे? आज अपने बालकों को विद्या न पढ़ाकर घरेलू कामों में लगाकर हम जो शक्ति का नाश कर रहे हैं बस यही कारण है कि हमारी जाति पिछड़ी हुई है आज हमारी जाति देशबंधु जैसे वीर नहीं कर सकती। देशबन्धु यद्यपि वहाँ पै आई. सी. ऐस. की परीक्षाके लिए गए हुए थे तथापि उनका हृदय देशप्रेम से परिपूर्ण होने से आई० सी० ऐस० की परीक्षा पास होने पर भी उनका नाम रजिष्टर से निकाल दिया गया। बाद में उन्होंने बैरिष्टरी की प-

आदि राग रंग को देखने में लगाकर हम ८ बजे सोकर उठते हैं। जिस समय में हमें प्रातःकाल के नित्य कर्मों का आनन्द उठाना चाहिये वहाँतक सोना कितना असंगतता! न हम प्रातः समय में ईश्वर का भजन का आनन्द उठा सकते हैं और न प्रातःकाल के वायुरूपी अमृत का सेवन। आलस्यमय खेदित और बिगड़ा हुआ मुख लेकर आधिनखों पर खीजते खाजते पैखाने की सुगन्धि का आनन्द उठाने के लिए उसमें प्रवेश करते हैं। जिस मनुष्य का प्रातःकाल में ऐसा अशान्त वर्त्तन हो वह दिन भर में शान्ति और आनन्द कैसे प्राप्त कर सकता है।

प्राचीन वैद्यों से लेकर आधुनिक डाक्टरों का इस सम्बन्ध में एक मत है कि निद्रा जल्दी लेकर उसका त्याग जल्दी करना चाहिए किन्तु कई कारण हमारे लोभ से तथा कई रीति रिवाजों से निकलकर आजकल जल्दी नींद नहीं ली जा सकती।

प्रथम तो हम लोगों में यह आदतसी पड़जाने के कारण हम लोग इस बात को भूलही जाते हैं कि स्वास्थ्य का महत्व कितना है और हमको उसकी तरफ़ कितना ध्यान देना चाहिए। यहाँ तक कि हम अपनी दुकानों से १० बजे तक लौट नहीं पाते हम लोगों को अपने हरएककाम में अनियमितता लाने के कारण बजाय लाभ के हानि अधिक होती है। हमको अपनी दुकानों से बराबर ऐसे समय पर लौट आना चाहिए कि जो समय हमारे स्वास्थ की ओर दुर्लक्ष्य न कराता हो, यदि आप कुछ दिन नियत समय तक दुकान खुली रक्खें तो आपके ग्राहक उस समय तकही आजाया करेंगे और आपको भी स्वास्थ की ओर ध्यान देने के लिए समय मिलेगा। खैर हम इस विषय पर तो फिर कभी लिखेंगे किन्तु लोभ के कारण जो नींद को खोटी करते हैं इसके लिए यहां पर इस बात का उल्लेख किया है।

आप यदि अपने रीति रिवाजों की तरफ़ से नींद जल्दी न लेने देने वाले रिवाजों की ओर ध्यान देंगे तो प्रथम आपको अनुचित लज्जा जो कि परवा

प्रथा से पैदा हुई है यही दीख पड़ेगी। आपको यह बात स्पष्ट नहीं दीख पड़ती किन्तु इन रिवाजों के कारण हमारा स्वास्थ्य खराब होते होते हम इतने निर्बल होगए हैं कि जिसका अनुभव करना भी आज कठिन है फिर भी आप न मालूम इन्हें क्यों नहीं त्यागते। घरके आदमी सोए बिना अर्थात् १० बजे पश्चात् बहू को पति के पास सोने के लिए भेजा जाता है और यदि उसने में जरा देरी लगजाय तो हजारों गालियाँ सुनाई जाती हैं। इससे तो यही ठीक है कि उसे पति के पासही न भेजाजाय क्योंकि उस समय पति के साथ न वह बात कर सकती और न विचार ही परिवर्तन हो सकते हैं क्योंकि उसका सारे दिन की महनत से शरीर थककर उसे नींद आने लगती है। आजकल बूढ़ों के पीछे लड़कियों के जाने का कारण शायद यह तो न हो कि हमारा जीवन सुख से कटेगा। क्योंकि आजकल बहुओं के अत्याचार इतने बढ़गये हैं कि जिसका अन्दाजा लगाना कठिन है नमीतो बेचारी का सदी २३ अठारह वर्ष की अवस्था में ही परलोक वासी होती हैं। इसलिए या तो बराबर सोने के समय में वह शयनगृह में चलीजानी चाहिये नहीं तो उसे पति के पास जाने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि इस एकत्र सोने की प्रथा से बहुतही खराबियां पैदा होती हैं। केवल हमारे समाज में परदा प्रथा के कारण पति बोल नहीं सकता इसलिए इस बात पर इतना जोर दिया गया होगा किन्तु जब हम इस बात को हानि लाभ के तराजू पर तोलें तो हानिकारक ही प्रतीत होती है। इससे न तो पुरुषों को ही लाभ मिलता है और न स्त्रियों को हाँ हाँ हानि अवश्य प्रतीत होती है। इसलिए कुछ चुने हुए दिनही इस काम के लिए नियत कर देना चाहिए जिस समय कि वे एकत्र हो सकें। इससे निद्रा में खलल न पहुंचेगा और हमारा बिगड़ता हुआ स्वास्थ्य कुछ अंशों में सुधरेगा।

इस एकत्र सोने की प्रथा के कारण निद्रागृह भी खास तरफ ध्यान न देकर ही बनाए गए हैं। हमारे समाज के

अहमदनगर पँचायत—

इस मास के आरम्भ में अहमदनगर जिला पंचायत श्री० मोतीलालजी बालमुकन्दजी मूंथा सतारा वालों के सभापतित्व में हुई। हम पंचायत की सफलता पर वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देते हैं। यद्यपि वहाँ के कार्यकर्त्ता अपनी इच्छानुसार काम इस कारण से नहीं कर सके कि समाज बहुत पिछड़ा हुआ है जब हमको समाज का साथ लेकर काम करना हो तबतो हमको अहमदनगर वालों की नीति को ही ग्रहण करना चाहिए। यद्यपि इस पंचायत के ठहरावों को देखते यह बात दीख पड़ती है कि पंचायत ने अभी कार्य के पथपर पग दिया है अभी बहुत कुछ करना बाकी है। हम वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को नम्रता पूर्वक सूचित करते हैं कि वे अब इस कार्य को करने के लिए जिस प्रकार आगे बढ़े हैं वैसेही उसे कर बतावें और इसका एकही उपाय है समाज में जागृति करना। समाज में जागृति करने के लिए अब आपको देहातों में घूमकर व्याख्यानों द्वारा तथा लेखों द्वारा अपने सिद्धान्तों का फैलाव करना होगा तभी आप समाज सुधार का कार्य कर सकेंगे। आपका ग्रहण किया पथ कठिन और इस कठिन पथ पर चलने के लिए आपको अपनी तैयारी कर लेनी चाहिए जब आप यह कर लेंगे तो आप अपनी जाति का सुधार करके जाति उत्थान के इतिहास में अपना नाम सुवर्णाक्षरों से लिखायें बिना नहीं रहेंगे। और इसलिए आप अब अभी से काम में लगकर अन्य जिलों के लिए आदर्श पैदा करें।

स्थानक० जैन कान्फरेन्स—

बारह वर्ष से रुका हुआ स्थानकवासी जैन कान्फरन्स का अधिवेशन मलकापुर में सफलता पूर्वक होगया। हम इस सफलता के लिए कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देते हैं यद्यपि कार्यकर्त्ताओं ने कान्फ्रेंस की पुरानी रीतियों को छोड़ने का प्रयत्न किया था तो भी वे सफल न होसके और कान्फ्रेंस पुराने

रिवाजों के अनुसार ही हुई तथापि जागृति यथेष्ठ थी। हमें तो अब विश्वास होगया कि यह समाज भी आगे बढ़ना चाहता है। अभी नींद खुलने के कारण उसकी आंखों में जड़ता होना स्वाभाविक है और यह बात क्षमनीय भी है। यद्यपि फंड वसूल करने का तरीका ठीक नहीं मालूम होता था तथापि विद्यालय की आवश्यकता को देखते वह बात जरूरी भी थी। हमें इस बात का अनुभव वहाँ होगया था कि समाज का एक अंग अब आगे बढ़ना चाहता है और वह अङ्ग शीघ्रही समाज में जागृति करेगा। यद्यपि कान्फ्रेंस की धीमी चाल उसे सुधार तक पहुंचा नहीं सकती किन्तु अब शीघ्रही इन कान्फ्रेंसों के मेलों में से एक दल आगे बढ़ेगा और उससे आशा की जाती है कि वह अवश्य समाज में क्रांति करेगा। सभापति महोदय का भाषण विचारपूर्ण था। सभा के ठहराव अवश्य शिथिलता लिये थे और उसके पालन में शिथिलता होगी ऐसा प्रतीत होता था। शायद् कान्फ्रेंस के कार्यकर्त्ता अब आगे बढ़कर समाज को उन्नत बनाने के लिए अधिक प्रयत्न करेंगे। और अपने प्रस्तावों का पालन कराने के लिए समाज में जागृति करेंगे।

जैन श्वेताम्बर कनवेशन के समय महात्माजी का भाषण—

महात्माजी ने जैन श्वे० का० के अवसर पर पधारकर जो भाषण दिया था वह अत्यन्त महत्वपूर्ण था और उसमें जैन समाज आज देश सेवा कैसे कर सकता है इसका भली भांति दिग्दर्शन कराया था। उन्होंने इस बात पर विशेषरूप से जोर दिया था कि:—

जो सिद्धान्त आमतौर से सारे संसार को मंजूर हो वह सामान्य धर्म और दूसरा धर्म के अरुपी और मामूली सिद्धान्तों को अमल में लाने की कार्यवाही करना यह विशेष धर्म। जो सिद्धान्त सर्व धर्म मानते हैं उसका पालन करना चाहिए। इससे जाहिरा धर्म की उन्नति होती है किन्तु विशेष धर्म के पालन में इतनी ज़िद न करनी चाहिए कि जिससे कर्म बंधन को मौका मिले। आज इस बात को हमारे भाई समझें तो वे अपना तथा देश का कल्याण कर सकते हैं। दूसरो

क्षा पास की। वैरिष्टरी की परीक्षा पास कर वे भारत लौटे। कुछ दिनों बाद यहाँपर भारत के सुप्रसिद्ध देश-भक्त बाबू अरविंद घोष पर सरकार ने मुकदमा चलाया उस समय देशबंधु दास ने पैरवी करके अपनी बुद्धि का जो परिचय संसार को दिया था उससे वे भारतके नामी वैरिष्टरों में गिने जाने लगे और उनकी वैरिष्टरी भी चल पड़ी कहते हैं कि उनकी आमदनी ६० हजार रुपये मासिक तक पहुंच गई थी। किन्तु इतनी आमदनी होजाने पर भी वे धनका संग्रह न कर सके क्योंकि उदारता तो उनके पुश्त से चली आई थी और इसीसे ही उन्होंने अपने धन का बड़ा हिस्सा दान में खर्च किया। देशबन्धु ने जो दान किया था वह समयोपयोगी होने के कारण आज उसका उज्वल स्वरूप हमारे सन्मुखहै। उन्होंने देखा कि सच्चा जाति अङ्ग नवयुवक हैं और उन्हें सुधारना ही जाति को सुधारना है उनका सुधार केवल शिक्षा से हो सकता है इसलिए उन्होंने शिक्षण-प्रसार के लिए अपने धनका अधिक वियोग किया। बंगाल का दौरा करते हुए महात्माजी ने कहा है कि मुझे बंगाल में जितने विद्यार्थी मिले उनमें से प्रायः सभी विद्यार्थियों को दास बाबू ने कुछ न कुछ सहायता दी है और यही कारण था कि देशबन्धु की हांक सुनते ही हजारों बंगाली युवा स्कूल त्यागकर देश सेवा के व्रती बने और सहर्ष उनके साथ जेल गये। आज बंगाल का मुख उज्वल है, बंगाल को छोड़ना महात्माजी को कठिन होता है वह इसी कारण से कि देशबन्धु ने जो दान दिया था वह समयोपयोगी था। हम जैसा नहीं था, आज कोई हमारी जाति का विद्यार्थी पढ़रहा हो उसे सहायता पहुंचाने की अपेक्षा हम उस दान को अधिक महत्त्व देते हैं जो आज बिलकुल समयोपयोगी नहीं है जिसकी आज दर असल में कुछ जरूरत नहीं है, नहीं तो आज ओसर मोसर तथा विवाह शादियों में हजारों रुपये खर्च करने वाली जाति की इतनी शोचनीय अवस्था क्यों होती। दासबाबू ने कहते हैं कि पंजाब हत्याकाण्ड के समय ५०

हजार रुपये मासिक खर्च करके पंजाबियों को सहायता पहुंचाई थी। देशबन्धु का अन्तिम दान बड़े महत्त्व का है उन्होंने कभी इस बात की ओर ध्यान न दिया कि-मेरे बाल-बच्चे क्या खांयँगे यदि मैं उनके लिए पूंजी न छोड़ जाऊंगा। हमारे जाति के लोगों को दासबाबू के इस अपूर्व दान से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। उन्होंने अभी मृत्यु के समय अपनी सभी पूंजी को दान में दे दी थी वह पूंजी भी कम नहीं थी करीब दस लाख के थी। उन्होंने अपने महल का त्याग कर दिया था और वे एक झोंपड़ी में रहते थे। यह तो होगई दास बाबू के दान की बात, उनका साहस कितना था उस सम्बन्ध में अब हम लिखते हैं। वे बचपन से साहसी और शूर थे यह जब विलायत में थे तभी स्व० दे० दादाभाई नौवरोजी को सहायता देकर सरकार की कृपा दृष्टि से अपने आपको वंचित रखा था। आप सोच सकते हैं कि वह युवक जबकि उसके सामने विषय भोग की लालसायें मौजूद रहती हैं उसे उस समय सरकारी नौकरी का मोह कितना रहता है यह बात सभी अपने जीवन की घटनाओं से जान सकते हैं किन्तु दासबाबू ने साहस के साथ यह कार्य किया। आगे चलकर उनके साहस का विकास अरविंद बाबू के तरफ से काम चलाने के समय हुआ। उस समय इन क्रान्तिकारी युवकों का पक्ष लेना बड़े साहस का काम था क्योंकि यह कार्य सरकार से विरोध रखने वाला था। सरकार का उस समय विरोध करना बड़ा कठिन काम था किन्तु जो सच्चे वीर होते हैं वे कभी नहीं डरते। बाद में बड़े साहस का कार्य असहयोग आन्दोलन के समय किया उन्होंने बैरिष्टरी पचास हजार रुपये मासिक की बैरिष्टरी त्यागकर जो अपूर्व वीरत्व और साहस बतलाया शायदही ऐसा उदाहरण भारतवर्ष में मिले उसके बाद में उन्होंने युवराज के आने के समय अपूर्व साहस बतलाया जिससे उन्हें सरकार का मेहमान बनना पड़ा। और उस समय से ही उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था और उन्हें असमय इस भारत की सेवा से वंचित होना पड़ा। हमारे ओसवाल बन्धुओं से हम प्रार्थना करते हैं कि वे दास बाबू का उज्वल चरित्र दृष्टि के सन्मुख रखकर जाति के उत्थान के लिए आगे बढ़ें।

बात उन्होंने यह कही कि—आप लोग खटमल मच्छर आदि जीवों की रक्षा के लिए प्रयत्न करते हैं। ठीक है यह बात तो सभी मानते हैं। हिंदू-जाति आति गऊ रक्षा की शक्ति होने पर भी नहीं कर पाती इस तरह आप करते हैं। यदि आप लोग सफाई रखो तो खटमल ही पैदा नहीं हो सकते अब खटमल पैदा करके उनकी रक्षा करना अच्छा था उसे पैदा न होने देकर रक्षा करना अच्छा? यह बात हमारे लिए अत्यन्त मनन करने योग्य है। आज हम जिस गलत रास्ते पर आकर अपनी अधोगति कर रहे हैं उससे बचने का यह उपाय है उन्होंने कहा जो छोटे जीवों की दया तरफ इतना ध्यान रखता है उसको सभी प्राणी मात्र की दया तरफ ध्यान रखना चाहिए यदि सीधी भाषा में समझाया जाय तो यह है कि-मनुष्य मात्र पर दया रखनी चाहिए। उन्होंने आगे चलकर कहा कि धर्म का सिखलाना व्याख्यान देकर नहीं होता पालन करके होता है। मेरे लिए तो मुक्ति का दरवाजा जीव दया का पालना ही है। इसलिए मैंने ऊंच नीच का भेद हिंदू-मुसलमान को एक बनाना सीखा है। मैंने आपके सामने बातें नहीं रखी। यह खाना और यह नहीं इसका बारीक ख्याल भी मैंने किया है और इसका पालन भी मैं करता हूं।

तुमभी खास २ सब्जियों का त्याग करते होंगे। जो आदमी जितना संयम पाले उतनाही कम है। परन्तु इतनेही में नहीं पडे रहना चाहिए:—

आपको स्वराज्य के लिए बहुत कुछ करना पड़ेगा उन्होंने सबसे बढ़कर खद्दर पर ज़ोर देते-हुए कहा कि अपने भाई के प्रेम के खातिर भारत की रुई से ही कपड़ा बनाया जावे। सभापतिजी मिलके मालिक हैं इसलिए वह कहेंगे कि हमतो यह कार्यवाही करते ही हैं परन्तु मैं पूछता हूं कि—दो सौ रुपये दो सौ भाइयों की जेब में डालो वह अच्छा है या अपने कीसे में रखो वह अच्छा हिन्दू के जीवन में नाश के लिए मिलें चलें तो मैं नहीं चाहता। यद्यपि किसी हद तक मिलें अपनी गर्ज

पूरी कर सकेंगी परन्तु मैं तो चाहता हूँ कि हाथ से कातना और बुनना मिल के मालिकों को करना चाहिये। भारत व्यापारियों की बदौलत ही पराधीन हुआ और उनके त्याग से ही वह फिर हरा भरा हो सकता है इसलिये मैं आप लोगों का ध्यान इस तरफ खींचता हूँ। यद्यपि महात्माजी ने अपनी वक्तव्यता में जैन जाति को मार्ग बतला दिया किन्तु उनकी वह बड़ी बात शायद ही हमारे क्षुद्र हृदय बनाए रखने वाले जैन भाइयों के हृदय में उतरे।

लासलगांव का विवाह—

लासलगांव का विवाह होगया कार्यकर्त्ताओं ने प्रयत्नों में कसर न रखी किन्तु धनसे उन्मत्त धनिकों ने मनुष्यता को त्यागकर पंचायत के प्रस्तावों को कुचलकर एक अबोध बालिका का जीवन भ्रष्ट कर ही डाला पाठक इस अङ्क में लासलगांव सम्बन्ध के अन्य लेखों को पढ़कर देखलें कि यह विवाह क्या था? यद्यपि कार्यकर्त्ता इस विवाह को रोकने में सफल न हो सके तथापि उनको जो विजय हुई वह बड़ी भारी है। अब उनको अपनी शक्ति का परिचय होगया वे अब अपने को अनुचित विवाहों को रोकने में समर्थ पाते हैं। वृद्धों में भी इन उद्यमी छोकरों की धाक बंधगई है। धनवानों ने भी यह देख लिया कि अब हमारे अत्याचार बहुत दिन तक न चलेंगे क्योंकि हम जिन गरीबों को पैसों से अपनी हाथों की कठपुतलियां समझते थे वे गरीब अब हमारे अत्याचारों से उकता कर संगठन कर रहे हैं। इस समय यदि वे समझदारी से काम लें तो ठीक है नहीं तो सभ्य संसार से जो धनवानों के नामपर कालमी लगी हुई है उसमें वृद्धि होगी। अब वे गरीबों को अपनावें और उनके अत्याचार दूर करें उनकी तकलीफों को अपनी तकलीफें समझें तो ही समाज का भला है नहीं तो इन दोनों के झगड़े में न मालूम उसकी क्या दशा होगी।

तब क्या किया जाना चाहिये

जो लोग अन्यायी हैं जिन्होंने गरीबों पर अत्याचार किए हैं उन्हें अब धनवानोंका साथ नहीं देना चाहिए अब

पक्षपात का त्याग करके सत्य पर दृढ़ रहना चाहिए, इन नथमलजी ने पंचायत को न मानकर विवाह किया इसपर विचार किया जाना चाहिए, हम जानते हैं कि नथमलजी के पक्ष में सारा धनवान समाज हो जावेगा। गरीबों की कुछ न चलेगी समाज में फूट फैलकर हानि के बजाय लाभ अधिक न होगा किन्तु फिरभी वे धनवान हैं उनके पक्ष में सारे धनवान होंगे इसलिए डरजाना कायरता है। यह कायरता समाज को लाभ नहीं पहुँचा सकती और इसे रखने से समाज में नवजीवन का संचार भी नहीं हो सकता। हम चाहे गरीब लोग एक तरफ होजांय हमें धनवान सहायता न दें। नहीं तो भी क्या डर है। हम एक तरफ रहेंगे हमारी प्रगती करेंगे किन्तु इस अन्याय को अब सहन नहीं करेंगे। धनवान यदि हमारे पक्ष में मिलकर इस अन्याय का प्रतिवाद करें तो अच्छा नहीं तो हम विनय-पूर्वक उनका साथ छोड़दें। हम उनके साथ सहयोग न करें उनका सहयोग करने में भी लाभ नहीं है। आज वे हमारी लड़कियां ले जाते हैं हम गरीबों को लड़कियां देते नहीं। इसलिए हम लासलगांव के पंचों से प्रार्थना करते हैं कि वे इसपर अवश्य विचार करके नथमलजी के अन्याय का प्रतिवाद करें।

यदि यह न हुआ तो—

पंचायत टूट जावेगी पंचायत को जैसे आज धनवान धनके मद पर नहीं मानते वैसेही अब गरीबोंको संगठन कर संख्या के बलपर नहीं मानना चाहिए। क्योंकि जब पंचायतें सच्चा न्याय न देकर पक्षपात करती हैं तब या तो उनमें सुधार किया जाय यदि सुधार न होता हो तो उनका तोड़ना ही आवश्यक है। आज हम अपनी इस स्थिति में कौनसी बात हितकर है यह जबतक नहीं कह सकते तब तक पंचायत का सुधार करने में असफल बनें। जब हम असफल बन जावेंगे पंचायत के सुधार से निराशा हो जावेगी तब उसी मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा। पंचायतें तोड़कर उनकी जगह हमारी महासभा को पंचायत बनावेंगे दोनों कामों के लिए

संगठन की जरूरत है। पंचायत का आजतक जो सरिश्ता चला आया वह इस समय को देखते लाभप्रद नहीं है। हमारी पंचायतें व्यवस्थित कार्य न करने का उसपर दोष है अब हमको संगठन कर पंचायत का सुधार करना चाहिए या उसे तोड़कर महासभा ऐसी शक्तिशाली बनानी चाहिए। संगठन कैसे किया जाय, जब हम धनवानों का सहयोग त्याग देंगे तब संगठन कैसे हो सकता है क्योंकि धनवानों से विरोध करने से द्वेष की जड़ जमकर हमारे समाज में दुही फैल जायेगा। इससे तो समाज को हानि पहुँचेगी। नहीं ऐसा नहीं होगा:—

क्योंकि क्रांति से ही समाज का उत्थान होता है—

हमें समाज के उत्थान के लिए यह क्रान्ति करनी पड़ेगी। यद्यपि क्रान्ति करते समय हानि दीखती है तथापि समाज को—नीचे गिरे हुए समाज को क्रान्ति किए बिना—क्रान्ति में त्याग की आहुती दिए बिना उत्थान हो ही नहीं सकता। आप किसी भी जाति के इतिहास को लीजिये आपको यही दीख पड़ेगा। क्रान्ति के नाम से डरने की कोई जरूरत नहीं शायद हमारी अहिंसा क्रान्ति का नाम सुनकर हमसे चली न जाय यह आपको भय नहीं होना चाहिए। आप अहिंसात्मक तत्वों से क्रान्ति कर सकते हो। और अब समय बहुत नजदीक आगया है इसलिए आपको तैयार होजाना चाहिए तथा कार्य में लगजाना चाहिए। आप लोग धनवानों के विरोध में खड़े रहने से संगठन करने से आपकी शक्ति घटेगी नहीं बढ़ेगी। संघर्ष से परस्पर संघर्ष से आप दोनों दल के लोग आगे बढ़ेंगे। किन्तु आपको अपने अन्दर क्षुद्रता न आने देनी चाहिये। आपको उदारता से काम लेने ही से इस संघर्ष से जाति को हानि न पहुँचकर लाभ होगा। इसलिए आप न डरें और बेखटके आगे बढ़ें।

स्व॰ बुद्धिसागर सूरीजी—

इस मास में जैन धर्म के महान् व्यक्ति को काल हरण करगया। स्वर्गीय बुद्धिसागर सूरीजी जैन समाज को ही परिचित नहीं थे उन्हें भारत का अध्या

त्मिक जगत भली भांति जानता है। जिन्हें उनके लेखनी से निकले हुए ग्रन्थों के स्वाध्याय करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वे इस बात को भली भांति जान सकते हैं कि सुरीश्वर की अध्यात्मिक शक्ति किस दर्जे तक बढ़ी हुई थी। उनकी मृत्यु से जैन समाज की ही नहीं किन्तु अध्यात्मिक संसार को भी बड़ी भारी क्षति हुई है। हम सुरीजी के आत्मा को शान्ति प्राप्त हो इस लिए दयानिधि से प्रार्थना करते हैं। और ऐसे रत्न के खोजाने के कारण हृदय में खेदित होते हुए ऐसे नर रत्न को इस समाज में से प्रकट करने को शासनदेव से विनती करते हैं।

खेद प्रकाश—

हमारे खोसलगांव के विवाह रोकने की चेष्टा में समजाने के कारण गत अङ्क की टिप्पणियां नहीं लिख सके और यह अङ्क भी जैसा चाहिए वैसा न निकाल सके। इसके लिए हम पाठकों से अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए क्षमा चाहते हैं हमारे प्रेमी तथा उदार पाठक हमें क्षमा करेंगे ऐसी आशा है।

सम्पादक

सराफे का बाजार—

इस सप्ताह सराफे के बाजार में कोई गहरा परिवर्त्तन नहीं दिखाई पड़ा। गत १८ जुलाई तक के इम्पीरियल बैंक के विवरण से मालूम पड़ता है कि बैंक का रिजर्व फण्ड बढ़ाकर १५३ लाख कर दिया गया है। केश बैलेंस में ३६४ लाख की वृद्धि हुई और वह करीब २ ४१ करोड़ तक पहुँचा दिया गया है। सरकारी और दूसरे डिपाजिटों में भी क्रमशः १२३ और ६३ लाख की वृद्धि हुई है। बाजार में विशेष काम काज नहीं हुआ। थोड़े समय के लिये बैंक १॥, २ से अधिक ब्याज देने को तैयार नहीं हैं। जूट में रुपये की लागत कुछ कुछ शुरू होगयी है। जूटकी फसल में थोड़े ही अर्से के बाद अधिक लागत लगेगी। उधर बर्मा में चावल की फसल रुपया पीने के लिये तैयार होरही है। इधर युक्त प्रदेश में गल्ले की फ-

सल में भी खासी लागत लगने वाली है। चारों ओरसे रुपये भी माँग पढ़ने पर इम्पीरियल बैंक अपने व्याज की दर ४) सैकड़ा और हुंडियों के डिसकाउन्ट की दर ४॥) सैकड़ा बनाये रख सकेगी या नहीं यही देखना है।

भीतर बाजार में रुपये के बाजार में कोई विशेष परिवर्त्तन इस सप्ताह नहीं दिखाई पड़ा।

सोना चांदी—

सोना चांदी का बाजार एक प्रकार से ज्यों का त्यों ही पड़ा है। कोई विशेष घटा बढ़ी नहीं हुई और न ऐसी कुछ होने की आशा ही की जाती है। २१ =) में सोने का और ४१=) में चांदी का बाजार बन्द हुआ।

(स्वतन्त्र)

जिस प्रकार युरुप में नोबल प्राइज दी जाती है उसी प्रकार भारतवर्ष में हिन्दी नोबल प्राइज की एक योजना श्रीमान् गायकवाड़ सरकार ने प्रगट की है।

ग्वालियर महाराजा का ता० ५-६-२५ के दोपहर को चार बजे पेरिस में देहान्त होगया अन्तिम न्युमोनिया की बीमारी ने काल के ग्रास किये। इनका अग्निदाह पेरिस में ही हिन्दु-धर्म के अनुसार किया गया। इनके कुटुम्बी जनों के अतिरिक्त बड़ोदा महाराजा तथा आगाखान अग्नि संस्कार में शामिल थे।

रेलवे बोर्ड ने साउथ इण्डियन रेलवे के एजेन्ट को मेल और एकसप्रेस ट्रेन के तीसरे दरजे का प्रतिमाइल आधी पाई कम करने की सिफारिश स्वीकार की है।

ग्वालियर महाराज के स्वर्गवास हो जाने से रियासतों की रीति के अनुसार इनके महाराज कुमार प्रिन्स जार्ज जयाजीराव को गादी पर बैठाने की आज्ञा पत्रिका प्रगट की गई है ऐसा सुना जाता है।

ट्रावनकोर के रिजेन्ट महाराणी साहिबा ने एक आज्ञा प्रकट की है कि सारे राज्य में सरकारी मन्दिरों में पशुओं का वध नहीं करना।

सेकरेमेन्टो (अमेरिका) में वहां की गवरमेन्ट से यह आज्ञा घोषित हुई है कि सब पुरुष अपनी डाढ़ी बढ़ने दें। यदि इसके विरुद्ध कोई करेगा उस पर २॥ शिलिंग दण्ड होगा।

खम्भात के दरबार ने बाललग्न प्रतिबंधक कानून जारी किया है। जिसमें कन्या की उमर की हद १२ वर्ष और लड़के की उमर १६ की निश्चित की है। इससे पहिले लग्न करने की आज्ञा प्रार्थनापत्र द्वारा प्राप्त करना चाहिये। यदि बिना आज्ञा लग्न होंगे तो उन पर रु० २००) का दण्ड दिया जायगा।

रूशिया में एक नियम ऐसा है कि पुरुष चार बार से अधिक और अस्सी वर्ष के ऊपर व्याह कर नहीं सकता। क्या अकलमन्दी का नियम कर रखा है।

बोलता पोष्टकार्ड-जर्मन के एक शोधक ने ऐसी हिकमत निकाली है कि जिसके द्वारा पोष्टकार्ड का लिखने वाला साक्षात् पढ़ रहा है। यह यन्त्र फोनोग्राफ की भांति का है, पाकेट में रह सकता है।

सवा तीस करोड़ का मुनाफा—फोर्ड मोटर कम्पनी वाले को गई साल में सवा तीस करोड़ का मुनाफा हुआ है। तो भी फोर्ड साहब कहते हैं कि मोटर का प्रचार अभीतक सेर में छटांक भी नहीं हुआ।

असली शहद की परीक्षा-शहद की बूंद को पानी से भरे हुए ग्लास में डालो। यदि बूंद बिना गले हुये ज्यों की त्यों ग्लास के पेन्दे में बैठ जाय तो शहद असली होगा।

पांच वर्ष का बालक व्याख्यानदाता-बर्मा में एक बालक जिसकी उमर पांच

वर्ष की है बड़ी बड़ी सभाओं में प्लेट-फार्म पर खड़ा होकर व्याख्यान देता है।

चूहों को भगाने की तरकीब-जिस स्थान पर चूहों का अधिक आवागमन हो उस स्थान पर कार्बालिक को पानी में भिगोकर छिड़क देने से वे पास तक नहीं आवेंगे और वहांसे भाग जायगे।

खटमलों को भगाने की तरकीब-जिस खाट, पलंग वा बिस्तरे में खटमलों की मीटिंग जमगई हो तो कपूर को उसमें फैलादो सब वहांसे भाग जायँगे और जबतक कपूर की सुगन्धि बनी रहेगी पास न आवेंगे।

नवीन मिश्रण-चिकागो में एक महाशय ने ऐसा मिश्रण तैयार किया है कि जिसको घरकी दीवालों पर लगाने से ठण्ड की मौसम में मकान गरम रहता है और गरमी के दिनों में मकान ठण्डा रहता है।

प्लेग की गांठ का ग्रामीण उपाय-धतूरे के फूल को अफीम के साथ तेल में पीसकर प्लेग की गांठ पर लगाने से गांठ बैठ जाती है।

मैल निकालने में केरोसिन तेल का उपयोग-मैले कपड़े साफ करने में घासलेट तेल अत्यन्त उपयोगी है। इसकी तरकीब इस प्रकार है:-एक साधारण मिट्टी का बर्तन लेवे जिसमें करीब दो मन पानी समाजावे उसमें पानी भरकर आधा सेर साबुन डालना चाहिये। जब पानी अच्छी तरह उबल जावे तो दो चमचे केरोसिन तेल डालना चाहिये। बादमें मैले कपड़े उसमें डालो। आध घण्टे तक उबलने दो। फिर निकालकर साफ पानी में धोओ तो कपड़े साफ हो जायेंगे।

चार हजार पन्नों का चोपड़ा-लोरीएन्जलस के व्यापारी मण्डल का नोंधवही को एक बहुत बड़ा चोपड़ा है जिसमें चार हजार पाने हैं। कहते हैं कि दुनियां में सबसे बड़ा चोपडा यही है।

काम तथा रतिशास्त्र सचित्र

(प्रथम भाग) (२५० चित्र)

पसन्द न आने पर लौटा कर दाम वापिस लीजिये

पुनः छप कर तय्यार होगई है।

मूल्य वापिसी की शर्त है तो प्रशंसा क्या करें। पाठक तो प्रशंसा करते थकते नहीं हिन्दी के पत्रों ने भी इसको ऐसी पुस्तकों में प्रथम मान लिया है। जैसे——

प्रसिद्ध पत्रों की समालोचना का सारांशः——

चित्रमय जगत पूना

इस पुस्तक के सामने प्रायः अन्य कोई पुस्तक ठहरेगी वा नहीं इसमें हमें शङ्का है। पंडितजी एक विख्यात और योग्य चिकित्सक हैं। आयुर्वेद हिकमत और ऐलोपेथिक के भी आप धुरन्धर विद्वान् हैं। यह पुस्तक हिकमत ऐलोपैथिक और आयुर्वेद के निचोड़ का रूप कही जा सकती है।

श्री वेंकटेश्वर समाचार।

काम तथा रतिशास्त्र अश्लीलता के दोष से रहित है। इसे कोकशास्त्र भी कह सकते हैं, परन्तु वास्तव में इसका विषय कोकशास्त्र से अधिक है जैसी खोज और परिश्रम से यह ग्रन्थ लिखा है उसको देखते ग्रन्थ की सराहना करनी होगी। जो हो हिन्दी में अपने ढङ्ग का यह एकही ग्रन्थ है।

महावीर।

ऐसी दशा में पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा सरीखे अनुभवी वैद्य ने इस विषय पर ग्रंथ लिखकर परोपकार का कार्य किया है उन्होंने ग्रंथ लेखन में समय और औचित्य का पूरा २ ध्यान रखा है तथा विषय की केवल वैज्ञानिक दृष्टि से व्याख्या की है।

तरुण भारत।

जहां पुराने काल के विद्वानों की लिखी हुई काम सूत्र आदि पुस्तकों से पूरी सहायता ली है वहां आधुनिक विद्वानों की सम्मतियों से भी सहायता ली गई है। हम शर्माजी के इस प्रयत्न के लिये साधुवाद देते हैं।

विजय।

पुस्तक में रंगीले चटकीले और भड़कीले ५० चित्र हैं। भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, रूम, जर्मनी, इटली, फ्रांस और आस्ट्रेलिया तथा इस्पानियां की प्यारी २ और भोली २ खूबसूरत स्त्रियों के चित्र भी हैं। लेखक महाशय ने पुस्तक को ऐसा बनादिया है कि एकवार हाथ में लेकर फिर उसे छोड़ने को चित्त नहीं चाहता पुस्तक सुनहरी जिल्द बंधी है।

मूल्य ६) रु० पसन्द न आवे तो २ दिन के भीतर रजिस्ट्री द्वारा वापिस कीजिये, यहां पुस्तक देखकर कीमत लौटादी जावेगी।

ऊपर छपी पांचों बिजलीकी अद्भुत चीजोंमें न तेलकी ज़रूरत है, न दीया-सलाईकी बटन दबा दीजिये, चटसे तेज रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी, जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें वैट्रीकी शक्ति भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लेम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाईं बर्ता जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेको तीनरङ्गा लेम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा खींचिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लेम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक खर्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है जो कोटमें लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्सन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।≈) जुदा (नं० ५) यह कमीजके तीन बटनोंका सेट है जो रातमें प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भांति चमकता है इसका भी तार वैटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें रक्खा जाता है लोग देख कर आश्चर्य करते हैं भेटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी

—जादस (र यबरेली) में ताजिया नहीं गाड़े गये। इससे शिया लोगों को अत्यन्त मानसिक कष्ट है। कमिश्नर के यहां उन्होंने अपील की है।

—सोमवती अमावस्या के दिन नीमसार में गोमती नदी में यात्रियों से लदी हुई दो नावें डूब गईं। कोई ४० स्त्री-बच्चे नदी के गर्भ में चले गये।

—इलाहाबाद हाईकोर्ट के एडवोकेट डा० कैलाशनाथ काजू राजा मोतीचन्द वाली जगह के लिए कौंसिल आफ स्टेट की मेम्बरी के लिए खड़े हो रहे हैं।

न्यूयार्क के जोसेफ़ शाकर एण्ड सन्स के लेखानुसार संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की वर्तमान सम्पत्ति ३ खरब ३० अरब डालर है।

प्रयाग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के आगामी निर्वाचन की प्रत्येक जगह के लिए स्वराज्य पार्टी ने अपने मेम्बर खड़े करने का निश्चय किया है।

—इलाहाबाद, देहली, लाहौर, अमृतसर, मुलतान, बम्बई, लखनऊ, गाज़ीपुर, बनारस आदि स्थानों में मुहर्रम शान्ति पूर्वक समाप्त हो गये।

—शेख़ मुशीरहुसैन क़िदवई ने अपने मित्रों से बड़ी व्यवस्थापिका सभा के सभापतित्व के लिए मि० पटेल को वोट देने की प्रार्थना की है।

—सर नलिनी रंजन चटर्जी बङ्गाल के स्थानापन्न चीफ़ जस्टिस नियुक्त हुए हैं।

—बम्बई मिलों के मालिकों की ओर से एक डेपूटेशन लार्ड रीडिङ्ग से शिमला में मिलेगा।

—ब्रिटिश गायना से ४९२ प्रवासी भारतवासी भारत के लिए लौट रहे हैं। २८ अगस्त को वे कलकत्ता आ जायँगे।

श्री० के० श्री निवास आयङ्गर मद्रास के बाग़ के एक कुएँ को साफ़ करते समय दम घुट जाने से ३ आदमी मर गये।

—कम वेतन और अन्य कष्टों के कारण इन्सीडो (बर्मा) आरा मिल के १००० कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी है।

—सूत के व्यापार की घटती के कारण सिवरी (बम्बई)-स्थित जुबिली मिल पहली सितम्बर से बन्द हो जायगी और १२०० मज़दूर बेकार हो जायंगे। अब तक भिन्न भिन्न मिलों के ५००० मज़दूर बेकार हो चुके हैं। शीघ्र ही मज़दूरों का एक डेपूटेशन प्रान्तीय गवर्नर के पास जाने वाला है।

—तैमिल नायडु प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने अपनी सभा करके देशबन्धु दास के स्वर्गवास पर शोक प्रकट किया; तामिल नायडू और समस्त कांग्रेस संस्थाओं से अखिलभारतीय दास स्मारक वाली अपील के अनुसार काम करने की प्रार्थना की और कानपुर कांग्रेस के सभापतित्व के लिए श्रीमती सरोजिनी देवी, श्री० श्री निवास आयङ्गर और डा० अन्सारी के नाम पेश किये।

—मि० रंगाअय्यर बड़ी व्यवस्थापिका सभा में इस आशय के प्रस्ताव पेश करेंगे कि लार्ड बर्किनहैड के भाषण ने सम्मानपूर्ण सहयोग को मुश्किल बना दिया है; मुडी मैन कमेटी

Reg. No. A 1303

"OSWAL"

ओसवाल

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान।
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे नर सब हैं मृतक समान॥

वर्ष ७ } अगस्त सन् १९५ ई० { अङ्क ८

विषय-सूची।

सम्पादक-श्री० ऋषभदासजी ओसवाल (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी० पी० से २॥|) { प्रति अंक ।)

के अल्पमत की रिपोर्ट का अस्वीकृत किया जाना भारतीय जनता का अपमान करना है और यह सभा भारतीय सेना में भारतवासियों की भर्ती और सिविल सर्विस के भविष्य के सम्बन्ध में भारत सचिव द्वारा प्रकट की गई सम्मति का विरोध करती है।

—कुछ दिन पहले हरद्वार म्यूनिसिपल बोर्ड ने कानून बनाकर गंगाघाट पर पुस्तकों और समाचार पत्रों के बेचने की मनाही कर दी थी। सर्वसाधारण के विरोध करने पर भी यह आज्ञा वापिस नहीं ली गई। अब तक १० व्यक्तियों को इसी अपराध में जुर्माने का दण्ड मिल चुका है। स्वा० परमानन्द पर भी १०) रु० जुर्माना हुआ था परन्तु उन्होंने यह कह कर जुर्माना देने से इन्कार कर दिया कि हिन्दू तीर्थ में गीता, रामायण और हिन्दू पत्र बेचने की मनाही की आज्ञा मानने के लिए मैं तैयार नहीं। अतः उन्हें १ सप्ताह की सजा का दण्ड देकर सहारनपुर जेल भेज दिया गया। एक सार्वजनिक सभा में म्यूनिसिपल बोर्ड की निन्दा की गई और स्वामी जी को बधाई दी गई।

—ता० २५ जुलाई को, कोपागंज के मुसलमानों ने, वहां के आर्यसमाज के मन्त्री तथा अन्य पड़ोसी हिन्दुओं को लूट लिया। १० आदमी घायल हुए।

—पटियाला नरेश लन्दन पहुँच गये। वहां से वे भारतीय नरेशों के प्रतिनिधि के रूप में जेनेवा में होने वाले राष्ट्र-संघ के अधिवेशन में शामिल होने के लिए रवाना होंगे।

—कानपुर कांग्रेस की स्वागत कारिणी समिति के मेम्बर बनाने के उद्देश से प्रान्त के भिन्न भिन्न स्थानों में डेपूटेशन भेजे जा रहे हैं। सम्भवतः सीसामऊ में कांग्रेस कैम्प बनाया जायगा।

—श्रीमान खान बहादुर जाफर कौंसिल आफ स्टेट के अधिवेशन में इस आशय का प्रस्ताव पेश करेंगे कि भारतीय रुई की मिलों के उद्योग-धन्धे की स्थिति की जांच की जानी चाहिए।

—ता० ३ अगस्त को कलकत्ते में केएडा-वर्मन पेट्रोलियम डिपो का एक दरबान १४५० रुपया लिये जा रहा था। इतने ही में बाइसिकिलों पर चढ़े हुए दो बंगाली पिस्तौल से डराकर उससे रुपया छीन कर भाग गये।

—दरभंगा स्कूल का एक मारवाड़ी छात्र कबूतरों का शिकार कर रहा था। दैववश एक गोली लछमन तुनियां नाम के लड़के के जा लगी। वह मर गया। अपराधी भाग गया है। उसके नाम वारंट जारी कर दिया गया है।

ओसवाल नवयुवक महामण्डल जोधपुर की आज्ञानुसार
श्रीयुत पद्मसिंह लूणावत, प्रिंटर ऐण्ड पब्लिशर
श्रीमज्जैन शास्त्रोद्धार प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार आगरा।

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार।
हो कुल जाति समाजका, जिससे कुछ उपकार॥

वर्ष ७ } आगरा, अगस्त १९२५ ई० स १ { अङ्क ८

धीरता

लेखक—

(श्रीयुत्-धीरजमल जी बच्छावत)

कार्य सम्पूर्ण सदा हों धीरता से जो करे।
विघ्न बाधायें भले हों धीर नर क्यों कर डरे॥
संकल्प से विचलित न हो पस कार्य पै रहना डटा।
आपत्तियां मग में सुसम्भव यत्न से लेना हटा॥
न्याय पथ रत धीर नर कुमार्ग में चलते नहीं।
धन आवे या जावे कभी यह ध्यान में धरते नहीं॥
छोड़कर बकझक वृथा "धीरज" से करते कार्य जो।
कर दिखावें कार्य वे उद्देश यह अनिवार्य हो॥

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र ।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश--

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम ।

१--यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा।

२--इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २।॥) रु० है एक प्रति का मूल्य ।) है।

३--वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४--"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ़ कागज़ पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५--"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६--"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्योहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जोंहरी बाजार आगरा

श्री श्वेताम्बर जैन

आगामी विजय दशमी तक आगरे श्री श्वेताम्बर जैन नामका पाक्षिक पत्र श्री जवाहरलाल जी लोढ़ा द्वारा संपादित होकर प्रकाशित होगा पत्रका वार्षिक मूल्य २॥) रु० है मिलने का पता

श्री जवाहिरलाल जी लोढ़ा

मोतीकटरा आगरा।

लिए दूर रखते हैं किन्तु इससे उनका शरीर स्थिल बनजाता है। उससे काम करने का उत्साह बिलकुल नहीं रहता। उन्होंने खाए हुए जड़ान्न का पाचन न होने के कारण मेदा बढ़ कर उनके पेट बड़े हो जाते हैं उनमें शारीरिक श्रम का काम करने की शक्ती बिलकुल नष्ट हो जाती है। उनके शरीर में हुवा हुवा मळ का संचय शरीर के बाहर न निकलने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ कर वे रोगी बनते हैं, इस लिए उन्हें चाहिए कि शुद्ध हवा में खूब पसीना आवे वहां तक व्यायाम करे। पसीने द्वारा शरीर का मल बाहर निकलता है और शरीर आरोग्य बनता है।

दूसरा कर्तव्य खानपान सम्बन्धी विचार,

दूसरा कर्तव्य है खानपान सम्बन्धी विचार, हमारे देश में व्यायाम न मिलने के कारण लोगों को भूक अच्छी नहीं लगती इससे वे अन्न को स्वादिष्ट बनाकर खाते हैं इसका हमारे स्वास्थ्य पर बुरा परिणाम पड़कर हम रोगी बनते हैं, हम अन्न को स्वादिष्ट बनाकर इतना खाते हैं कि जिससे हमारे को रोगी बनकर शीघ्र ही असार संसार का त्याग करना और स्वर्ग लोक सिधारना पड़ता है. हमारे समाज में फी सैकड़ा ७५ लोग खाने की बिमारियों से बीमार पड़ते हैं, हमारे लोगों का खान पान यदि सुधर जाय अर्थात् हम अधिक खाना बन्द कर सादा भोजन आरम्भ करदें तो स्वादिष्ट खाने में लगने वाले पैसे की बचत करें तो अवश्य हमारे देश के लिए एक इतना बड़ा फाएड हो सकता कि जिसकी सँख्या अन्य देशों के फण्डों से अधिक हो जाय, यदि इस खानेसे हमारा स्वास्थ्य अच्छाहोता हो व यह बात लाभदायक हो तो अवश्य करना चाहिए किंतु इस खाने से हमारा स्वास्थ्य खराब होता है फिर इस सोने की छुरी को पेट में मारने को बुद्धिमानी क्यों बतानी चाहिए, मीठा तथा स्निग्ध हम ज्यादा खाते हैं उससे मेदा बढ़कर हमारा शरीर खूब मोटा हो जाता है और मसालेदार चीजें खाने वालों की

हम नीरोग कैसे बनेंगे।

हम देख रहे हैं कि हमारे देश के लोगों की आयु दिनों दिन कमती होती जारही है ? अच्छे अच्छे होनहार युवा अकाल ही मृत्यु के मुख में जाकर हमको दुखी बनाते हैं, इसका कारण क्या ? यही कि हम रोगी रहते हैं अपने को आरोग्य नहीं रख सकते। हम रोगी क्यों होते हैं इससे कि प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करते हैं, वैसा फल भोगना पड़ता है हम अपने हाथों से ही विपत्ति को बुलाते हैं, इसलिए हमने इस सम्बन्ध में अपने आपको दोषित समझना चाहिए जब हम प्रकृति के विरुद्ध काम करते हैं, तब वह हमें नोटिस द्वारा सूचना देती है कि तुम अबभी ठीक रास्ते पर आवो नहीं तो तुम्हें अधिक कष्ट उठाना पड़ेगा किन्तु उसकी सूचना की तरफ ध्यान नहीं देते तब बड़े बड़े रोगों का शिकार बनना पड़ता है, इसलिये हमें प्रथम से ही प्रकृति के नियमों से चल कर अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखना चाहिए।

प्रथम कर्तव्य व्यायाम।

व्यायाम से हमारा शरीर तथा शरीर के अवयवों को चलन चलन मिल करके दृढ़ और मजबूत बनते हैं नही तो हमारा शरीर बंधे पानी की तरह निर्बल बनकर निकम्मा बनजाता है। हमने प्रत्येक अवयवों संचालित करके मजबूत बनाना चाहिए। हम देखते हैं कि हमारे व्यापारी बन्धू इस लिए व्यायाम नहीं करते कि उनका समय व्यर्थ न चला जाय, विद्यार्थी बन्धु परीक्षा पास करने की धुन में व्यायाम करना यह व्यर्थ समय खोना समझते हैं, किन्तु जब वे बीमार पड़ कर उनका शरीर काम करने योग्य नहीं रहता तब पछताते हैं उन्हें चाहिए कि वे अपने शरीर की तरफ उचित ध्यान दे, दूसरे हमारे समाज के सभ्यलोग व्यायाम करना असभ्यता का लक्षण समझते हैं। क्योंकि खेलना कूदना यह काम गरीबों लोगों का है न कि श्रीमानों का। श्रीमान लोग व्यायाम से अपने बच्चों को भी इसी

लिए दूर रखते हैं किन्तु इससे उनका शरीर स्थिल बनजाता है। उससे काम करने का उत्साह बिलकुल नहीं रहता। उन्होंने खाए हुए अन्नाज का पाचन न होने के कारण मेदा बढ़ कर उनके पेट बड़े हो जाते हैं उनमें शारीरिक श्रम का काम करने की शक्ती बिलकुल नष्ट हो जाती है। उनके शरीर में हुवा हुवा मल का संचय शरीर के बाहर न निकलने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ कर वे रोगी बनते हैं, इस लिए उन्हें चाहिए कि शुद्ध हवा में खूब पसीना आवे वहां तक व्यायाम करे। पसीने द्वारा शरीर का मल बाहर निकलता है और शरीर आरोग्य बनता है।

दूसरा कर्तव्य खानपान सम्बन्धी विचार,

दूसरा कर्तव्य है खानपान सम्बन्धी विचार, हमारे देश में व्यायाम न मिलने के कारण लोगों को भूक अच्छी नहीं लगती इससे वे अन्न को स्वादिष्ट बनाकर खाते हैं इसका हमारे स्वास्थ्य पर बुरा परिणाम पड़कर हम रोगी बनते हैं, हम अन्न को स्वादिष्ट बनाकर इतना खाते हैं कि जिससे हमारे को रोगी बनकर शीघ्र ही असार संसार का त्याग करना और स्वर्ग लोक सिधारना पड़ता है हमारे समाज में फी सैकड़ा ७५ लोग खाने की बिमारियों से बीमार पड़ते हैं, हमारे लोगों का खान पान यदि सुधर जाय अर्थात् हम अधिक खाना बन्द कर सादा भोजन आरम्भ करदें तो स्वादिष्ट खाने में लगने वाले पैसे की बचत करें तो अवश्य हमारे देश के लिए एक इतना बड़ा फाएदा हो सकता कि जिसकी संख्या अन्य देशों के फाएदों से अधिक हो जाय, यदि इस खानेसे हमारा स्वास्थ्य अच्छाहोता हो व यह बात लाभदायक हो तो अवश्य करना चाहिए किंतु इस खाने से हमारा स्वास्थ्य खराब होता है फिर इस सोने की छुरी को पेट में मारने को बुद्धिमानी क्यों बतानी चाहिए, मीठा तथा स्निग्ध हम ज्यादा खाते हैं उससे मेदा बढ़कर हमारा शरीर खूब मोटा हो जाता है और मसालेदार चीजें खाने वालों की

पाचन शक्ति बिगड़कर अपचन अजीर्ण अतिसार तथा संग्रहणी इत्यादि रोगों के शिकार बनना पड़ता है, हमारे भोजन में तो शाकें बनती हैं उनमें घी और मसाला इतना होता है कि लाल रक्त का घृत उन शाकों के ऊपर तैरने लगता है, इससे स्वास्थ्य ही नहीं बिगड़ता किंतु रूप भी बिगड़ जाता है इसलिए हमें चाहिए कि हमारा भोजन सादा और सात्विक बनावे, इसका लाभ स्वास्थ्य को ही नहीं होगा किन्तु विचारों को भी होकर स्वास्थ्य सुधारने के लिए चाहने वाली शान्ति प्राप्त होगी,

बिना वायु के हमारे प्राण नहीं रह सकते। वायु यह प्राण रक्षक वस्तु है। इसकी तरफ यदि हम ध्यान नहीं देंगे तो हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता। हमारे देश के लोग इस बात की तरफ बहुत कम ध्यान देते हैं। इसीलिए हमारे घर, गली, कूचों में जहां की हवा दुर्गन्ध युक्त होती है वहांही रहा करते हैं, हमारे देश के लोग पैसे के आगे शुद्ध हवा की इतनी कीमत नहीं समझते। इसलिए अपने रहने के स्थान भी कम भाड़े से मिले इसलिए तंग गलियों में लेते हैं इससे हमारी औरतों को बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं उनका स्वास्थ्य बिलकुल खराब हो जाता है। हमको अपना स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए शुद्ध हवा मिलने का प्रयत्न करना चाहिए। जंगल की शुद्ध हवामें प्रातःकाल को तथा संध्या समय घूमने। यह स्वास्थ्य के लिए बड़ी हितकर बात है। हम लोग पैसे के अनुचित लोभ में पड़कर अपने को निकम्मा बनाकर पैसा कमाने की आशा रखते हैं। किन्तु उनके यह बात ध्यान में नहीं आती कि हम बिना स्वास्थ्य के कुछ भी नहीं कर सकते। हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा तभी हम अच्छी तरह से दुकानदारी का कामभी कर सकेंगे नहीं तो कुछभी नहीं होगा। इसलिए अपने समय को स्वास्थ्य सुधार की ओर लगाना चाहिए। हम स्वच्छ हवा को अन्न जल से भी महत्व की वस्तु समझकर जितना ध्यान खाने पीने की वस्तुओं की ओर देते हैं उससे अधिक हवा की तरफ देना चाहिए।

चौथा कर्त्तव्य स्नान।

हम स्नान तो करते ही हैं किन्तु वह स्नान वास्तव में स्नान कहाने योग्य नहीं है क्योंकि हम जल्दी से आकर एक या दो लोटे पानी डालकर "भीजे काल हुआ स्नान" वाली कहावत चरितार्थ करते हैं। हमने यह ठीक तरह से समझ लेना चाहिए कि स्नान किस उद्देश्य से किया जाता है। शरीर को भिगाना ही अगर हमारा उद्देश हो तो फिर हमारा कुछ कहना ही नहीं किन्तु स्वास्थ्य के लिए अगर हम स्नान करते हैं तो फिर हमको स्नान करती समय शरीर का मैल उतारने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमारी त्वचा में सूक्ष्म छिद्र होते हैं उनमें हमारे शरीर में जो मल होता है उसे पाकर वे बन्द होजाते हैं इससे उनके ऊपर जमा हुवा मैल निकालना ही चाहिए। हम इस बात का अनुभव करते हैं कि यदि हम एक-आध रोज स्नान न करें तो हमारा अङ्ग चिकना बनकर उसमें एक प्रकार की दुर्गन्ध आने लगती है। इसलिए हम अपने अङ्ग को खूब मलकर साबुन वा अन्य मैल निकालने वाली वस्तु से धोना चाहिए और बादमें टविल या खद्दर के साफ अंगोछा से पोछ डालना चाहिए। स्नान से हमारे शरीर में उत्साह का संचार होकर काम करने में स्फुर्त्ति आती है। ठीक स्नान न करने से खरूज घजकर्ण इत्यादि त्वचा के रोग पैदा होते हैं।

पांचवाँ कर्त्तव्य वस्त्र सम्बन्धी सचेतकता।

हम आजकल कपड़ों को अच्छे दीखने के लिए पहनने लगगये के कारण उससे मिलने वाला स्वास्थ्य को लाभ वह नहीं मिल सकता। हमारे देश में रंगीन कपड़े इसलिए ही अधिक पहने जाते हैं और इन कपड़ों में मैल जम जाने के कारण स्वास्थ्य को लाभ पहुँचाने से वंचित रहते हैं। हमारी स्त्रियों के कपड़े तो रंगीन और गोटा किनारी लगे रहने के कारण ठीक धुल नहीं सकते और उसका परिणाम यह होता है कि उनमें बू आने लगती है और उससे स्वास्थ्य को बड़ी हानि पहुँचती है। इस प्रकारसे कपड़ों में हमारे लोग

हजारों रुपये दिखावट के लिए लगा कर स्वास्थ का बिलकुल ही ध्यान नहीं रखते यह बात बड़ी खेद जनक तथा अज्ञानता सूचक है। हम विवाह शादियों में मूल्यवान कपड़े दूसरों को दिखाने के लिए पहन के आते हैं और घर पर वेही मैले कुचैले कपड़ों को पहनकर स्वास्थ को हानि पहुंचाते हैं। हमने कपड़े पहनने का मूल उद्देश जो स्वास्थ रक्षा है उस तरफ विशेष ध्यान देकर बाहरी दिखावट को निकाल डालना चाहिए। हमारे कपड़े सदा साफ सुथरे और सादगीयुक हों। जिससे हमारे स्वास्थ को लाभ भी पहुंचता हो ऐसे होने चाहिए। हम दिखावट के लिए जाड़े के मौसम में पहनने लायक कपड़े गर्मी के मौसिम में तथा गर्मी की मौसम के कपड़े जाड़े के मौसम में पहन कर अज्ञानता का परिचय देकर जो स्वास्थ की हानि उठाते हैं उस भूल को दुर करके कपड़े को स्वास्थको लाभदायक ऐसे बनाना चाहिए।

छठा कर्त्तव्य 'प्रातर्विधि'

प्रातर्विधि में शौच निवृत्ति तथा मुख मार्जन इन दो बातों को लेंगे। शौच निवृति यद्यपि बाहर से साधारण काम दीख पड़ता है तथापि उसका आरोग्य की दृष्टि से बड़ा महत्व है। हम समय पर शौच निवृति का कार्य न करने के कारण हमें रोग का शिकार बनना पड़ता है यह बात प्रायः सभी लोग जानते हुए होकर भी इस काममें कितनी उदासीन वृती बतलाते हैं इसका अनुमान लगाना कठिन है। क्योंकि समय पर शौच निवृति करने वाले लोग अपने देश में बहुत कम मिलते हैं और यही कारण है कि उन्हें पेट के दर्दों से रोगी बनना पड़कर वे वैद्यों की शरण लिया करते हैं। थोड़ा २ स्वास्थ के विमुख किया हुआ कार्य ही आगे चल कर बड़े रोग का रूप लेता है। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने शरीर में रोग को स्थान ही न दे। हम बराबर समय पर शौच निवृति करें। जब हमें शौच की इच्छा हुई कि त्वरीत सब कामों को छोड़कर उसके लिए जाना चाहिये। प्रातःकाल के समय शौच निवृति न करके जो लोग असामायिक शौच निवृति करते है उन्हें रोग का शिकार बनकर डाक्टरों की शरण लिए

बिना काम नहीं चल सकता। मुख-मार्जन कर हमने अपने दांतों और मुंह का सम्बन्ध पाचन शक्ति से होने के कारण हमारे दांत यदि मजबूत न होंगे तो हम अन्न अच्छी तरह से चबा नहीं सकेंगे और उससे वह अन्न जल्दी नहीं पचेगा। दाँतों को स्वच्छ न रखने के कारण जो मल पेट में जाता है वह बड़ा हानिकर होता है मुंह साफ न धोने के कारण दांतों के मसोड़े में विकार पैदा होकर उसमें से रक्त बहने लगता है। वह पेट में जाने से अपचन का विकार पैदा होता है। इसलिए हमको मुंह तथा दांत स्वच्छ रखने के लिए दातुन से उन्हें साफ घिसकर धोना चाहिए। और दांतों से चबा चबाकर लार से मिश्रित अनाज पेट में आने देना चाहिए जिससे उस अन्न का पाचन अच्छी तरह से शीघ्र हो। इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम दोनों कामों को करके स्वास्थ की रक्षा करें।

सातवां कर्त्तव्य नींद

हमने अपने आपको रोग से बचाने के लिए नींद के सम्बन्ध में पूरा खयाल रखना चाहिए। क्योंकि यदि हम नींद को ठीक तरह से न लेकर शरीर की थकावट दूर नहीं की तो सम्भव है कि हमारा स्वास्थ बिगड़ जाय। हमको समय पर सोने की तथा सोकर उठने की आदत डालनी चाहिए रात को ज्यादे देर तक जग के दिनको देरी से उठना यह स्वास्थ हानिकर है। नींद के सम्बन्ध में गत अङ्क में बहुत कुछ लिखा जाने के कारण इस बात को यहांही सम्पूर्ण करना उचित समझते हैं।

आठवां कर्तव्य स्वच्छता

आखरी और महत्व का कर्त्तव्य स्वच्छता यह है हमको अपने स्वास्थ रक्षा के लिए स्वच्छता की तरफ विशेष ध्यान देना जरूरी है। क्योंकि बिना स्वच्छता के कोई भी किया हुआ काम लाभदायक नहीं हो सकता। हमारे खान पान कपड़े लत्ते घर दुकान सभी बातों में स्वच्छता इतनी होनी चाहिए कि जिससे हमारा मन सदा उत्साह से पूर्ण तथा आनन्दी बना रहे क्योंकि स्वास्थ का आनन्दी मनोवृती के साथ बहुत बड़ा सम्बन्ध है। इसलिए हमने

अपनी आनन्दीवृती रखने के लिए तथा अस्वच्छता से पैदा होने वाले रोगों से बचने के लिए सफाई को विशेष काम में लाना चाहिए। हम लोग अपने स्वास्थ के लिए पैसा खर्च करना उचित न समजकर अपने धनका उपयोग नाम पाने के लिये ओसर मोसर में खर्च करते हैं यह हमारी अज्ञानवृती है क्योंकि जबतक हम अपना शरीर निरोग नहीं रखखेंगे तब तक कुछ नहीं कर सकते हमारे पूर्वजों ने भी कहा है कि "पहला सुख निरोग काया" इसलिए यह प्रथम सुख पाने के लिए हमको सचेतकता रखनी चाहिए। मारवाड़ में जल कम होने के कारण लोगों की आदतें अस्वच्छ रहने की पड़ गई थी दो दो चार चार दिन तक स्नान नहीं करते थे किन्तु अब हमको उन पुरानी बातों को छोड़ समय को देख अपना बर्त्ताव करना चाहिए। हमारे देश में स्नान न करना पुण्य समझा जाता है इससे हमारे बहुतसे भाई स्नान नहीं करते उन्हें चाहिए कि वे अहिंसा के इस सूक्ष्म भेद तक पहुँचने के बदही इस कामको करें क्योंकि हमारे शरीर का रक्षण करने के लिए हमें अभीतक कुछ कम पाप नहीं करना पड़ता है। परन्तु इस पाप को छोड़ने के पहले अपने वृत्तियों के सुधारने की जरूरत है हमारी हिंसा करने की इच्छा न होते हुए हमारे जीवन निर्वाह के लिए होने वाली हिंसा यह वृत्तियों हिंसामय बनाकर की जाने वाली हिंसा नहीं होती। जैसे डाक्टर को आपरेशन करते करते यदि किसी मरीज की मृत्यु होजाय तो सजा नहीं होती वैसेही हमारे सम्बन्धमें समझना हमारी यह इच्छा नहीं है कि किसीकी हिंसा हो पर यदि जीवन निर्वाह के लिए हिंसा हो भी जाय तो वह हिंसा भयानक हिंसा नहीं है, इस प्रकार तो हम हिंसा त्याग ही नहीं सकते। स्वच्छता न रखने से जो हिंसा होती है वह भयानक है। क्योंकि खटमल मच्छर जूं इत्यादि जीवों की पैदायश कर उसका रक्षण करने की अपेक्षा उसे पैदा न होने देनाही बुद्धिमानी का काम है और वास्तव में यही सच्चा अहिंसा धर्म समझना है।

यदि हम ऊपर लिखी हुई बातें अपने जीवन में लावेंगे तो अवश्य ही हमारा शरीर निरोग होकर हम अपना जीवन सफल बनाए विना नहीं रहेंगे।

आगे बढो !

हमारा देश दिनों दिन अवनत होता जारहा है उसमें बुराइयां घटने के बजाय बढ़ रही हैं। क्योंकि हमारे प्रयत्न इन बुराइयों को दूर करने में उतने शक्तिमान नहीं हैं जितनी कि बुराइयां शक्तिमान हैं। इसका कारण भी है बुराई हर मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति है। बुराई की ओर मनुष्य आप ही आप झुकजाता है उसके लिए प्रयत्न करने की कोई जरूरत नहीं, प्रयत्न तो इसलिए करना पड़ता है कि हम बुराई को छोड़ें। हम संसार में इस बात का अनुभव करते ही हैं कि बुरी आदत पकड़नी जितनी सहल है उतनी ही छोड़ना कठिन है।

इसी प्रकार देश बुराइयों की ओर जारहा है बुरी आदतें उसमें आपही आप बढ़रही हैं और वे दिनों दिन बढ़ेंगी। यदि हमें देश को सुधारना है तो हमारे लिये बड़े प्रयत्नों की जरूरत है आपको जरासी बुराई छुड़ाने में जब इतनी देरी लगती है तब देश की बुराई छुड़ाने में कितनी देरी, कितना परिश्रम लगाना पड़ेगा इसका अनुमान कर लेना चाहिये। किन्तु हमतो आजकल कोरे सिद्धान्तों में कर्म फल का विश्वास रखकर कर्म न करने, कर्त्तव्य न करने में कर्मवाद के पूरे अनुयायी बनकर कर्मफल के लिये इतने अधीर बन गये हैं कि काम की गहराई को न देखकर थोड़ा कुछ किया न किया कि उस काम के फल को इतने बड़े फल को पाने की आशा करते हैं कि जिसका अनुमान करना तक कठिन होजाता है। इससे हममें निराशा आजाती है हमें आत्मग्लानि आजाती है। देश सुधार का कार्य २-४ लेख लिखने से या दस पांच व्याख्यान देने से हो जावेगा ऐसा नहीं है। इसलिये

तो हमारे रक्तकी आवश्यकताहै हमें अपने रक्त का पानी करना होगा हमारी कई पीढ़ियोंके यह काम करने पर कहीं यह काम हो पावेगा। हम खुद कई वार फिसलजाते हैं इसलिये हमको बहुत बड़ी तैयारी करनी पड़ेगी।

आज बहुतसे लोग यह सवाल करते हैं कि क्या सभा सोसाइटियों ने कुरिवाज मिटा डाले जो इतने दिन उन्हें चिल्लाते होगए? यदि नहीं मिटा कर उलटे बढ़ाये हैं तो फिर हमको उसमें सम्मिलित होकर व्यर्थ अपना समय धन क्यों खर्च करना चाहिए। इस बात को कहने के पहले यदि हम इस बात को समझलें कि-सभा सोसायटियएं बुरा क्या करती हैं बाद में फिर यह देखेंगे कि उनसे लाभ क्या है सभा सोसायटियों में यह कहते हुए हमने नहीं देखा कि लड़की के रुपये ज्यादे लेना चाहिए वा लड़कों की कम उम्र में शादी कर उन्हें पढ़ने नहीं देना चाहिए? फिर उसके तरफ दोष कैसे आ सकताहै। सभी सोसायटियों के अच्छी २ बातें कहने परभी हमनहीं मानते यह दोष हमारा है या सभा सोसायटियों का हम दूसरों के दोषों को वताकर अपनी दुर्बलता छिपाना चाहते हैं। यदि सभा सोसायटियों में जाकर जाति को हानि पहुंचाने वाली बातें होती हैं यह सिखलाया जाता है कि तुम बुराइयाँ छोड़ो यदि वह बुराइयाँ हम न छोड़ें तो दोष हमारा है न कि सभा सोसायटियों का और सभा सोसायटियों में जाने वाले यदि यही चाहें कि बस हमको तीन दिन यहाँ गँवाए और जाति की बुराई दूर न हुई तो फिर यह बड़े दुःख की बात है हमको फिर क्यों यहाँ आना चाहिए। तो फिर यह कार्य होना कठिन है क्योंकि यदि हम समाज सुधार के इतिहास को देखें तो हमें यह दीख पड़ेगा कि समाज सुधार करने के लिए बहुत बलिदान करना पड़ता है। हमने कुछभी न किया और फल बड़ा माँगने चले, तो कहाँ से मिल सकता है।

अब रही दूसरी बात सभा सोसायटियों से लाभ क्या पहुंचा तो आप यह देख सकते हैं कि इन सभा सोसा-

यटियों से विचारों में कितना परिवर्त्तन पड़गया है। आज जो लोग, कुरीतियों को घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं। उसका एकमात्र कारण यह अन्दोलन है। इस समय हमारी जाति में जो कुछ भी जागृति दीख रही है वह आन्दोलन के कारण ही। आज वृद्ध विवाह करते समय शंका लाते हैं तो केवल आन्दोलन से ही। हमने जितना काम किया उतना फल मिलही गया काम करना था ज्यादे किया कमी इससे हम चाहते थे उतना फल नहीं मिला। जैसा कि एक मनुष्य दिन भर में दस रुपये खर्च करता है और कमाता दो रुपये ही यदि आखीर साल में हिसाब लगाने से उसे नुकसान आया तो दोष व्यापार को या आय को देना जितनी बुद्धिमानी नहीं समझी जाती उतनाही हमारा ऊपर का कहना विचारपूर्ण नहीं कहा जाता।

अब हमको इस धीमी चाल से चलने से हमारा काम नहीं चलेगा। जैसे एक मनुष्य कर्जदार तो है ही और ज्यादा खर्च करके कमाता नहीं है उसे तो विना दिवालिया बनने के और कोई चारा नहीं। यदि हमभी समाज का सुधार न कर विगाड़तेही चले जावेंगे तो सिवाय हमारे समाज के डूबने के और कोई कारण ही नहीं। इसलिये हम लोगों को अब आत्मग्लानि न लाकर जोश से आगे बढ़ना चाहिए। इसीमें हमारा तथा हमारी जाति का कल्याण अथवा कर्त्तव्य पालन है।

यह तो जबर्दस्ती संयम है।

(लेखक—महात्मा गान्धी)

एक बाल विधवा जिसनें अपना नाम गाम लिखा हुआ है वह अपना दुःख रोती है:—

"यह एक हिन्दू समाज के भीषण अन्याय से कचरती हुई अनाथ विधवा की पुकार ध्यान में लीजिए।"

मैं कड़ी प्रान्त के एक देहात की रहने वाली हूं। मेरी जाति गुजरात में अव्वल दर्जे मशहूर ऐसी पाटीदार की है, मैं गुजराती साधारण पढ़ना लिखना जानती हूं, इस समय मेरी उम्र पच्चीस वर्ष की है। मेरे पिता अच्छे किसान थे, किन्तु दैवयोग से उन्हें

युवावस्था में ही हम तीनों जनों को मेरी माता, छोटा भाई तथा मैं हम लोगों को छोड़कर ईश्वर ने बुला लिया। हमारे ऊपर बहुतसा कर्ज़ा था वह हमने ज़मीन इत्यादि देकर चुकाया और सुख दुःख में दिन व्यतीत करने लगे इस प्रकार पाँच सात साल व्यतीत होगए। हमारी जाति में विशेष करके हमारे कड़ी प्रान्त में आटा साटा (लड़की का लड़की से बदला) कन्या विक्रय, बाल लग्न का कुरिवाज विशेष है। मैं भी इस रिवाज के बलि छोटी उमर में दी हुई। मेरे पिता ने दो विवाह किये थे। उसमें एक समय का साटा बाकी था अर्थात् एकवार के विवाह में उन्हें एक लड़की का कर्ज़ा था। मैं थोड़ी चलने फिरने लगी कि उस साटे वाले के आँखों में आई और वह दर्वाजे आकर बैठा। "लड़की छोटी है" यह सबब बतलाकर मेरी माँ ने मुझे ग्यारह वर्ष की की और ग्यारह वर्ष की उम्रमें मेरा विवाह करडाला। मेरे पति ने मेरे साथ दूसरा विवाह किया था इससे उनकी उम्र ३८-४० वर्ष की थी। आप पूछेंगे कि कैसे जोड़ा मिला सुसराल में कोई छोटा बड़ा न होने के कारण संसार को प्रारम्भ करना पड़ा और ज्ञान के बलि होना पड़ा। मेरे पति देहाती और उमर में पहुंचे हुए, मेरी उमर बिलकुल छोटी ऐसी स्थिति में जिसे संसार मँडने का अनुभव आया होगा वही मेरी हालत को जान सकता है। इस प्रकार मेरे तीन वर्ष गुजरे मेरी उमर चौदह वर्ष की हुई। एक दिन मेरे पति को सहज में बुखार आया और वह दो तीन दिन रहा। बस उनको बुलौआ आया और वे पधार गए! चौदह वर्ष की उमर में मैं विधवा हुई! उनके देहान्त को १५ दिन नहीं हो पाये कि देवर जेठों ने मेरी मिल्कियत को जप्त करली, हिस्से किये रहने का घर तक भी रुदान न रहने दिया। ६ मास पश्चात् मुझे जाने की बक पंचात पड़ने लगी और उसमें भी जो कुछ कर्ज़ा था वह चुकौती देना पड़ा। मेरे हिस्से पर पांच बीघा ज़मीन आई थी उसमें से २ बीघा ज़मीन देकर कर्ज़ चुकाया किन्तु जेठ मुझे सुखसे रहने देने वालों

में के नहीं थे मेरे पास थोड़ी सी चीजें थीं वह भी छिन गईं थीं इसलिए मारना शुरू किया। एक दो समय तो मार सहन न करने के कारण आत्मघात करने के लिए तैयारी की थी किन्तु समझदार लोगों ने आकर समझाया। इस प्रकार सुख दुःख में दिन निकाल मेहनत मजूरी करके पेट भरती हूं।

हमारे इस पाँच गाँव के समूह में कन्या दीजाती हैं; बाल लग्न ने तो यहाँ सत्यानाश कर डाला है उसमें खास करके बेजोड़ विवाह ने पुरुष से स्त्री की उमर तिहाई या चौथाई छोटी होती है अर्थात् फी सदी ८० स्त्रियों की मेरी जैसी हालत है। हमारे इन पाँच गाँवों में १५ हजार की वस्ती है उसमें पांच हजार विधवा हैं उसमें तीन हजार तो पाँच से पन्द्रह वर्ष के भीतर विधवा हुई ऐसी हैं। और विधवा होने के बाद वह चाहे जितनी प्यारी क्यों न हो किन्तु उसके कितने बेहाल होते हैं सो तो आपसे कहने की जरूरत नहीं क्योंकि आपभी एक समय संसारी थे और आपने भी संसार का अनुभव लिया हुआ है। इन तीन हजार में से कितनीकतो ऐसी हैं जिन्हें यह पूछा जाय कि तुम्हारा विवाह हुआ था या नहीं उस समय यहीं उत्तर देंगी कि मुझे मालूम नहीं। इसमें से बहुतसी उमर में आने पर संयम न रख सकने के कारण अनीति के रास्ते चलकर परपुरुषों के पीछे चली जाती हैं। ऐसे उदाहरण इन हरएक गाम में हरसाल पांच से कम नहीं होते उस समय उनके माँ बापों को शिर नीचा करना पड़ता है? इन बातों का अन्त कब आवेगा? इससे पुनरलग्न हो तो क्या बुरा? जो पवित्र होंगी संयमी होंगी वे तो अवश्यही अपनी इज्जत का रक्षण करती हुई बैठी रहेंगी, किन्तु यह तो जबर्दस्ती संयम है। आज तक इज्जतदारों के घरमें ही यह बातें हुई हैं तो भी आंखें नहीं खुलती। आजकल हर जगह इस बात का उहापोह होता है किन्तु यहाँ तो कुछ भी नहीं।

मेरा लिखने का उद्देश यह है कि आप इस सम्बन्ध में कुछ लिखिए तथा बतलाइये, इस समय तो समाज के नेता आपही हैं। आपका थोड़ा किया हुआ प्रयत्न भी सफल हुए बिना नहीं

रहेगा। आपके पत्र में भी यह करुण-कहानी आनी चाहिए ऐसी मेरी तथा मेरी हजारों बहनों की इच्छा है? हमारे दुःखों को आप नहीं देखेंगे तो फिर देखेगा ही कौन? काठियावाड़ तथा सूरत जिले के पाटीदारों में पुनरलग्न का रिवाज है इससे वे क्या हलके समझे जाते हैं? वहाँ अधर्म भी कम हुआ होगा।

हमें इस अवस्था में रखकर समाज उच्च स्थान पर नहीं पहुंचने का या प्रजा की उन्नति नहीं होने की है। यह प्रश्न बिलकुल ही उपेक्षणीय ही नहीं है मेरी जैसी लाखों ही नहीं किन्तु करोड़ों का यह प्रश्न है उसकी सुलझान बिना आप जैसे अन्त्यजों की समस्या की सुलझान बिना प्रजा एक पैर आगे नहीं बढ़ा सकती यों कहते हो वैसे ही यह समस्या है।"

ऐसे पत्र आया ही करते हैं ऐसा ही नहीं किन्तु जहाँ जहाँ मैं बाल विधवाओं को देखता हूं असंख्य बहनों के सम्बन्ध में आने से उनका दुःख मैं समझ सकता हूं उनके दुःख में पुरुष जितनी सम्पूर्णता से भाग ले सकता हो उतनी सम्पूर्णता से भाग लेने के लिए मैं स्त्रियसमान बन रहा हूं, विशेष बनने का प्रयत्न करता हूं। बहुतसी बहनों की माता की कमी को पूरी करने का प्रयत्न करता हूं इससे इन बहनों का दुःख पूर्ण रीति से समझ लेता हूं।

बाल विधवा जैसी विरोधी वस्तु ही न होनी चाहिए ऐसा मेरा अभिप्राय दृढ़ होता जारहा है। वैधव्य यह धर्म नहीं, संयम यह धर्म है। जबर्दस्ती और संयम यह विरोधी बात है। एक मनुष्य को नीचे गिराती है तो दूसरी ऊपर चढ़ाती है। जबर्दस्ती पाला हुआ वैधव्य यह पाप है, स्वेच्छा से पालाहुआ वैधव्य यह धर्म है, आत्मा की शोभा है, समाज के पवित्रता की ढाल है। पंद्रह वर्ष की बाला समझ पूर्वक वैधव्य को पालती यह कहना उद्धटपन तथा अज्ञानही है। पन्द्रहवर्ष की बाला को वैधव्य की वेदना की क्या मालूम है! उसे ब्याह देने की सर्व व्यवस्था मा बाप का कर देना धर्म है। दुष्ट रिवाज़ के वश होना पामरता है, उसका विरोध करने में पुरुषार्थ है।

पाटीदारों के लग्न विधी सम्बन्ध में और उनके अन्दर पड़े हुए कुरिवाजों के सम्बन्ध में खूब सुना है इसलिये इस बहिन के लिखे हुए पत्र में अतिशयोक्ति जैसा कुछ भी मालूम नहीं पड़ता।

युवा विधवाओं को मैं क्या सलाह दूं ? इसका विचार करते मेरी अशक्ति का माप आही जाता है उन्हें विवाह करो यह कह देना सहल है किन्तु उन्हें व्याहे कौन ? पती कौन ढूंढे ? जाति बाहर विवाह करें ? ढूंढने से पती मिलजाय ? क्या विज्ञापन देकर विवाह करें ? विवाह यह क्या सौदा है ? जहां लोकमत विरोध करता उदासीन है वहाँ बाल विधवा को पती ढूंढने से मिलना असम्भव है। योग्य पती न मिलने पर चाहे जैसे के पीछे बँधजाओ यों सलाह मेरे से कैसे दी जावे ?

इसलिए मुझे तो बाल विधवाओं के वृद्धों को ही विनती करनी रही उनके हाथ में यह लेख जावे कैसे ! क्योंकि वे तो बहुताँश पत्रों को पढ़ने वाले ही नहीं होते यह तो एक धर्म संकट है।

विधवाओं को मैं इतनी सलाह तो दे सकता हूं कि वे शान्ति से दुःख सहन करें वे पुरुष वा स्त्री वृद्ध कुटुम्बी के पास अपना हृदय खुला करना और अपनी सर्व इच्छा मंडना वरके वृद्ध न समझें वा वैसा न हो तो निश्चित रहना और लायक पती मिले तो उन्होंको विवाह कर लेना चाहिए। ऐसा योग्य पती मिलने के लिए जैसा दमयन्ती ने सावित्री ने तथा पार्वती ने तप किया वैसा उन्होंको भी इस युग के अनुकूल और इस युग में शक्य ऐसा तप करना चाहिए। तप यह अभ्यास है। विधवा के लिए अभ्यास—शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक-जैसी दूसरी मनको स्थिर करने वाली वस्तु नहीं। शारीरिक तप वे चर्खे को एक एक क्षण देकर करें, मानसिक तप वे अक्षर ज्ञान मिला कर करें और आध्यात्मिक तप वे आत्म शुद्धी कर आत्मा की पहचान करें। इन तीनों कामों में घरके वृद्ध रोकेंगे नहीं तीनों वस्तु का अधिकार सभी को है और वह न मिलें तो विधवा सत्याग्रह करें।

यह उपाय भी कठिन है यह मैं जानता हूं किन्तु सद्उपाय मात्र कठिन मालूम होते हैं किन्तु अन्त में कठिन नहीं है ऐसा भगवद् वाक्य है।

बृद्ध नहीं समझेंगे वे पछतावेंगे क्योंकि हर जगह में दुराचार का अनुभव कर रहा हूं। विधवा के ऊपर जबर्दस्ती करने में उनकी, कुटुम्ब की तथा धर्म की रक्षा तीनों का नाश अपनी दृष्टि के सन्मुख होता हुआ मैं देख रहा हूं।

पुरुषवर्ग जिनके आश्रय में बालविधवा है, वे समझें।

कलयुगी बुखार

अर्थात्:—

बुढ़ापे का विवाह।

(लेखक-डा० बलवन्तसिंह वर्म्मा, Comp. जैन प्रेस आगरा)

दृश्य—प्रथम।

[स्थान-सेठ लखमीचन्द की बैठक]

लखमी०—(आपही आप) देखो! आज बहू को मरे हुए ठीक ढाई महीना होगया, परन्तु अबतक कहींसे मेरी सगाई तक नहीं हुई! क्या कहें भाई कुछ कहा नहीं जाता, देखो! नाई को भी भेजे हुए आज कई दिन बीतगये, परन्तु उसने अबतक फिरकर मुँह भी नहीं दिखाया, न मालूम कहाँ चला गया।

(लालचन्द का प्रवेश)

लालचन्द-जै गोपालजी सेठजी!

लखमी०-जै गोपालजी की, आईये, कहिये क्या हाल है। आजकल कैसी गुज़रती है?

लालचन्द-खूब मज़े में गुज़रती है, पूछिये मत! अब आप बतलाइये कि आपका कहींसे मामला तय हुआ या नहीं।

लखमी०-अरे—भाई! क्या कहें, अभीतो कहीं से कुछभी जवाब नहीं आया। नाई को भी भेजे आज कितने ही दिन होगये, अभीतक कोई ख़बर नहीं!

लालचन्द-सुनिये! आपके लायक

एक घर है, लेकिन वह कससे कम ६ हज़ार में राज़ी होगा। यदि आप कहें तो हम आपकी वहाँसे बातचीत करादें।

लखमी०-भाई तुमतो ६ हज़ार की ही कह रहे हो, मैं तो १० हज़ार देने को तैयार हूं, पर कहींसे कराओ तो सही।

लालचन्द-(मनही मन) यार अच्छा उल्लू पाले पड़ा है, जहाँतक हो सके, वहाँतक शीघ्रही इसका व्याह मानकचन्द की वेटी से कराना चाहिये, क्योंकि इसमें हमें भी बहुतसा रुपया मिल जावेगा, और इस समय मानकचन्द को भी रुपये की आवश्यकता है क्योंकि उसने अभी अपने स्वर्गीय पिता का मोसर करना है, इसलिये सहजही में काम वन जायगा। (प्रकट) मेरी समझ में तो लाला मानकचन्द की वेटी ही आपके योग्य है।

लखमीचन्द-(आश्चर्य से) कौन मानकचन्द?

लालचन्द-अजी वही जो कि सराफे का व्यापार करते हैं।

लखमी०-(कुछ विचार कर) हाँ! ठीक, अब याद आगई। यार है तो ठीक, मगर करना कराना आपके हाथ है।

लालचन्द-अजी! आप घबराते काहे को हैं, मैं सब ठीक ठाक कर दूंगा, नाई का क्या भरोसा। अच्छा तो अब आज्ञा है, फिर मिलूंगा-जै गोपालजी की। (जाता है)

(बलराम का प्रवेश)

बलराम-वन्देमातरम्-लालाजी,

लखमी०-जै गोपालजी की, आइये बैठिये।

बलराम-(बैठकर) कहिये लालाजी क्या हाल है?

लखमी०-अरे भाई क्या कहें; जबसे हमारी वहू मरी है, तबसे हमारी अकेले तबियत ही नहीं लगती। और न अभी तक दूसरे व्याह की ही.........

बलराम-(बीचही से बात काटकर) वाह सेठजी! खूब सूझी, अभी तक आपको व्याह की ही आवश्यकता है। आपकी आयु इस समय लगभग ६५ वर्ष के है और आप फिरभी शादी करना चाहते हैं। मेरे विचार से तो अब आप शादी न कीजिये, और भगवान का भजन कीजिये।

लक्ष्मी०-अरे भाई भजन किसका करूं! यहाँ तो दूसरे ही भजन की पड़ी हुई है। देखो भाई बलराम-इतना धन दौलत मेरे पास है यह किसके काम आवेगी!

बलराम-सेठजी! धन दौलत को क्या आपने इसही लिये संग्रह किया है कि एक नादान बालिका की गर्दन पर छुरी फेरी जाय। अगर ऐसाही है तो मैं भगवान् से प्रार्थना करूंगा कि ऐसे लोगों को धन कभी न दीजिये, कि जिससे ये लोग ऐसे अत्याचार कर सकें।

लक्ष्मी०-(क्रोधयुक्त होकर) मैं आपसे सलाह लेना नहीं चाहता, जाइये आप अपना काम कीजिये, हमें जो सूझ पड़ेगा वही करेंगे।

बलराम-(मनही मन) भाई सच्ची कहने वाला हमेशा बुरा लगता है। (प्रगट) खैर आपकी इच्छा-इतना कहकर बलराम एक ओर बैठगया।

(नाई का प्रवेश)

नाई-सेठजी साहब को जैरामजी की।

सेठजी-जैरामजी की—अबे इतने दिन कहाँ विताये, कहीं से तजवीज़ लगाई या नहीं।

नाई-सेठजी! तमाम देशों में फिर आया, परन्तु आपके लायक़ कोई घर ही न मिला, बड़ी मुश्किल से एक घर मिलाभी, सो दस हजार मांगता है।

सेठजी-अच्छा भाई तो उससे पक्की कर आया है या नहीं।

नाई-जी हाँ, मैं सब पक्की कर आया हूं, और साथ में नाई भी लाया हूं।

सेठजी-अच्छा बुलाओ कहाँ है।

नाई (बाहर आकर नाई से कहता है) देखो भाई, सेठजी बुलाते हैं, अब सब बात तुम्हारे हाथ है, जो कुछ लिया जाय तो ले लो, फिर समय बार बार नहीं मिलना।

(दूसरा) नाई-आप देखते तो जाइये कि मैं किस तरह उल्लू सीधा करता हूं।

यह कहकर वह सेठजी के सामने आया और उन्हें देखकर कहने लगा कि भाई, उम्र तो बड़ी मालूम होती है, मैं यहाँ सगाई कैसे पक्की करूं! यह

सुनते ही सेठजी के होश उड़गये, और कहने लगे:—

सेठजी-भाई मैं जो ब्याह करना चाहता हूं सो कोई ऐश-आराम के लिये नहीं, बल्कि अपनी सम्पत्ति की रक्षा के लिये।

यह सुनकर बलराम को बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ और यह कहता हुआ बाहर चला गया:—

बलराम-(क्रोध से) सेठजी! लानत है तुम्हारे धनको, मानको, प्रतिष्ठा को। लानत है तुम्हारे ब्याह करने को। लानत है, लानत है, सौबार लानत है, हजार बार लानत है, करोड़बार लानत है, लानत है तुम्हारी जिन्दगी को!!!

सेठजी यह सब चुपचाप सुनते ही रहे, परन्तु उनसे कुछ उत्तर न बन पड़ा। अस्तु जो कुछभी हो। नाई को घी बूरा जिमाया, कि झट नाई राह पर आया, उसने फौरनही टीका चढ़ाया, इधर उधर न्योता पठाया, घरमें मङ्गलाचार कराया, लोगो! देखो!! बूढ़े ने ब्याह रचाया!!!

दृश्य-द्वितीय।

(स्थान-चम्पापुरी-महादेवजी का मंदिर, सायंकाल का समय है, लोग दिन भर काम करके शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान ध्यान में मग्न होरहे हैं। मैं भी स्नान ध्यान से निवृत्त होकर बैठा था कि यकायक मुझे बाजों का घोर शब्द सुनाई दिया। देखातो एक बरात बड़ी धूमधाम से शहर की ओर आरही है, मैं भी देखने के लिये पहुंचा। देखाकि सबसे आगे आठ-दस ऊंट जिनपर नक्कारे लदे हुए हैं, बाद दो-तीन जोड़ी तासे वाले, और भरतपुर, धौलपुर, आगरा इत्यादि ५-६ बैंडबाजे, तत्पश्चात् दूल्हाजी की मोटर सामने आई, ६०-६५ वर्ष का बुड्ढा सिरसे मौर बाँधे, बिज्जू की सी आँखें चमका रहा है, उसके पीछे घोड़ा गाड़ी, ताँगे आदि। थोड़ी देर में बरात निकलगई, परन्तु मुझे अभी यह ज्ञात ही न हुआ कि यह बरात किसके यहाँ जायगी, पूछने पर ज्ञात हुआ कि लाला मानकचन्द के यहाँ बरात जायगी। पश्चात् लड़की की उम्र पूछी तो मालूम हुआ

कि लड़की की उम्र अभी चौदह साल की है, मैं इतना सुनते ही विचार में पड़ गया।

मैंने विचार किया कि, यह बुड्ढा उस कन्या का जीवन भ्रष्ट करेगा, यह बुड्ढा उसको सदा के लिये रोता हुआ छोड़ जायगा। निश्चय किया कि चलकर मानकचन्द को ही समझावें ताकि वह अपनी कन्या को इस मुए बुड्ढे के गले न बांधे। यह विचारकर मैं तुरन्त ही मानकचन्द के मकान पर आया और उन्हें बाहर बुलवाकर इस प्रकार समझाने लगा:—

सदानन्द—भाई मानकचन्द ! आपने जो अपनी कन्या को इस तरह कुए में गेरना विचारा है सो क्यों? क्या आपको मालूम नहीं कि यह बुड्ढा थोड़े ही दिनों में स्वर्ग को पधारेगा, और आपकी कन्या सारी उम्र आपको अथवा इस बुड्ढे को रोवेगी शायद ऐसा भी न हो कि जो आपके नाम में भी कलंक-कालिमा लग जाय?

मानकचन्द—भाई मैं क्या करूं, मैंने जो कुछ किया अथवा कर रहा हूं, यह सब जान बूझकर ही किया है। परन्तु इसके लिये मैं लाचार हूं, आप जानते ही हैं कि मोसर का समय बीते कुछ ही दिन हुए हैं कि अब यह एक काम और आपड़ा, इतना धन मेरे पास नहीं कि जो मैं इस भारको सहन कर सकूं' पंचों को लडडू कचौरी चाहिये ही, उनके लिये चाहे पाप करें या पुण्य!

"भाई मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैंने यह काम पंचों के अत्याचार से किया !!!

सदानन्द—(मनही मन) देखो! यदि संसार में मनुष्य जीवन को भ्रष्ट करने वाली कोई वस्तु है तो केवल "स्वार्थ" है। जिस समय यह मनुष्य के अन्दर आता है, उस समय मनुष्य अपने आपको भूलकर स्वार्थ सिद्धि के लिये बड़े २ पाप करते लजाता नहीं, ठीक! उसी तरह आज इनके पंच भी स्वार्थवश होकर अन्याय अत्याचार कर रहे हैं। यदि पंच चाहें तो इस प्रथा को रोक सकते हैं, परन्तु नहीं! नहीं!! लड्डू कचौरी कहां पावेंगे!!! पिता चाहें तो रोक सकते हैं, परन्तु नहीं! सम्मान कहां पावेंगे!!! (प्रकट)

भाई तुमने जो कुछ इससे रुपया लिया है वह सब इसको वापस करदो, अगर नहीं है तो मैं दिलाय देता हूं, तुम इस बूढ़े को वापिस लौटावो, और एक अज्ञान बालिका का जीवन भ्रष्ट मत करो।

मानक०-भाई अब क्या हो सकता है, जो होना था सो होगया, यह कहता हुआ मानकचन्द चलदिया।

(पटाक्षेप)

दृश्य—तृतीय।

(स्थान--सेठ लखमीचन्द का मकान)

घरमें आये शान्ती को आज पूरे ६ महीने व्यतीत होगये, जिस दिन से शान्ती घरमें आई है, उस दिन से वह सदा उदास ही रहती है। सेठजी बूढ़े होने पर भी अपनी भर शक्ति उसके सुखी रहने का उपाय करते हैं परन्तु क्या कहीं गई हुई अवस्था प्राप्त होती है। अस्तु:-

चन्द दिन बाद यकायक सेठजी के शूल का दर्द उठा, डाक्टर, को बुला यथोचित चिकित्सा की व्यवस्था की, परन्तु कुछ लाभ न हुआ।

आज रोगी की अवस्था बहुत शोचनीय है, मैं भी वहीं बैठी हुई उनकी सेवामें लगी थी कि शाम को डाक्टर ने मुझसे कहा कि रोगी की अवस्था बहुत सोचनीय है और अब इनके बचने की कोई आशा नहीं है, मैं यह सुनकर घबरा गई।

थोड़ी देर के पश्चात ही सेठ जी ने एक जम्हाई ली, और मेरी ओर प्यार पूर्वक देखकर फिर आंखे बन्द करलीं?

सेठजी सोगये! मैं भी उठकर अपने घरके काम-काज में लगगई परन्तु मेरे मनमें बराबर यह प्रश्न उठने लगा कि क्या सचमुच सेठजी सोरहे हैं या हमेशा के लिये ही सोगये। मुझसे न रहा गया, मैं इसकी परीक्षा के लिये सेठजी के पास आई, देखा तो सेठजी अपनी संसार यात्रा सचमुच ही पूर्ण कर चुके।

अब क्या था, मैं दहाड़ मारकर रोने लगी, मेरा रोना सुनकर और लोग दास दासियां आदि आ एकत्रित होगई, वह सब लोग भी मेरी ही तरह आंसू बहाने लगे

(शेष फिर)

बाल-विवाह

[लेखक-श्री० "विद्यार्थी" सोहनलाल डागा राजलदेसर निवासी]

हमारे प्राणों का संहार जिस जह-रीली छुरी ने किया है वह किसी जा-लिम कसाई ने हमारे कलेजे में नहीं भोंक दी है, परन्तु अपने हाथ से ही हमने इस हत्यारी छुरी को छाती में घुसेड़ लिया है, वह छुरी बाल्य-विवाह है।

इन्सान का जानी दुश्मन, तन्दुरुस्ती का हलाहल जहर, सदाचार का भारी विरोधी, बाल्यविवाह ही है। इसने अब से संसार की मुकटमणि जाति में अ-पना पैर बढ़ाया है तभी से चौपट कर दिया है। मुकट की मणि मुकट से गिर कर पैरों कुचली जाने लगी है।

प्रायः देखने में आता है कि लड़कों की शादी ८ या १० वर्ष की उमर में करदी जाती है। बच्चा धोती पहिनना नहीं जानता और लड़की रोकर रोटी मांगती है। और वे इस नादानी की उमर में ही गृहस्थी की जबर्दस्त गाड़ी में अपने जालिम मा बापों द्वारा जोत दिये जाते हैं।

पन्द्रह सोलह साल की उमर हुई है लड़का स्कूल में ऊंचे दर्जे पहुंचा है। दिमागी मेहनत का जोर है। उधर गौना होकर भी आगया है। बच्चे की जान पर बलैया लेने वाली उसकी मां आं-चल पसार दांत निकाल गिड़गिड़ाकर कहती है। हे काली भवानी! हे चौराहे की चामुण्डा! अबतो पोते का मुंह दिखादे। यही नहीं उसकी तयारी भी होने लगी दोनों जोड़ी एक कोठरी के अन्दर बन्द करदी गई। इधर पढ़ने का जोर, दिमागी मेहनत, उधर खाने को तंगी, घी दूध का नाम नहीं उधर पोते की लालसा, इन सब में बच्चा पिसकर हाड़ की ठठरी रहगई। मां कहती है अजी! लड़के को क्या होगया। पीला पड़ता जाता है किसी डाक्टर वैद्य को दिखलाओ।

बाप देवता बोल उठे, पढ़ने में मेह-नत है। अब स्कूल न भेजेंगे बहुत पढ़ गया। इतना तो हमारे यहां कोई नहीं

पड़ा था। बस तालीम का द्वार बन्द होगया। रोग बढ़ता ही गया। थोड़े ही दिनों में राम राम सत्य बोलगई। गजब है घरमें अपना ही खून करते हमसे कैसे बनता है। जिनके वंश में हम पैदा हुए जिनका खून हमारे शरीर में बह रहा है। वे कौन थे इसका कुछ भी विचार नहीं है। अगर विचार होता तो हमारे प्यारे बच्चे अकाल मौत क्यों मरते।

हमें अपना दया का बड़ा भारी अभिमान है। पर सच तो यों है कि हमारी बराबर संसार में कोई कसाई और क्रूर नहीं है। छोटी छोटी कीड़ियां मकोड़े कौवे कबूतर आदि के लिए हमारे पास दया का भण्डार है। पर अपनी सन्तानों पर वह जुल्म कि उनकी सारी आशाओं को कुचल कर उनकी उठती जवानी पर भी तरस न खाकर उन्हें हाय! ऐसी बुरी मौत मार रहे हैं कि कसाई गाय को भी न मारेगा। कसाई गाय को एकही हाथ में मार देता है वह बेचारी दुख से छूटजाती है। पर हम जो एक एक वर्ष की दूध पीती लड़कियों को विधवा बनाकर पापों की नदी बहा रहे हैं।

इतना होने पर भी हमारा पत्थर का कलेजा नहीं पिघलता। ये जो लाखों विधवायें हमारी छाती पर मूंग दल रही हैं। कोई चुपचाप सर्द आह भर कर भारत को रसातल पहुँचा रही हैं, कोई कहार, धीवर, कसाई आदि के साथ मुंह काला करके "ओसवाल" वंश की नाक कटा रही हैं।

अपने बुजुर्गों की तरफ तो देखो। जो लोग दीन दुखियों की आर्तनाद सुनकर भोजन और भजन छोड़ देते थे और दुखीजनों का दुख दूर करके जल पान करते थे या जान खो देते थे। हाय उनकी सन्तान ऐसी अधर्मी होगई कि हजारों विधवाओं की बिलबिलाहट और हाहाकार सुनकर भी उसे सुख से नींद आती है।

यह ग़रीब अभागिनियां हमारे पाप से ही इस अंधेरी दुखभरी दुनियां में चक्की पीसकर कुत्ते भी न खांय ऐसे सूखे टुकड़े खाकर दिन काटें। हम लोग दयावान ऋषि मुनियों की सन्तान होने का अभिमान रखते हैं; क्या यही हमारी दयाका नमूना है; क्यायही हमारी सभ्यता का नमूना है। क्या यह सब घोर पाप

नहीं है ? क्या ऐसे अत्याचार किसी दूसरी जाति में बता सकते हो। कसाई को सबसे अधिक क्रूर और निर्दयी कह कर हम घृणा करते हैं, गाली देते हैं और उसका मुंह देखना नहीं चाहते पर वह हमसे अधिक घृणित नहीं है। बिना सींगों की गायों पर, अपनी बहिन बेटियों पर उनकी छुरी नहीं उठती हिंसक पशु पक्षी सिंह आदि भी स्त्री वर्ग पर दया करते हैं। जंगली जाति भी स्त्री को नहीं सताती पर ओसवाल जाति के सपूत उन्हीं का गला घोटकर अपने लिए स्वर्ग का द्वार खोल रहे हैं। मनु कहते हैं कि:—

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।

और सबसे ज्यादा अफसोस की बात तो यह है कि इस प्लेग और हैजे से भी भयानक रोग को भी हम सदा आनन्द स्वागत करते रहे हैं और कर रहे हैं।

इन सब बातों को सुनकर समझ कर भी जो हम बाल विवाह के पक्षपाती रहे तो सब कहेंगे कि सांप को गले लटकाये फिरते हैं। पहले में आग बांध कर रुई के गोदाम में घुसते हैं। सारांश जिस प्रथा ने हमें दीन दुनियां से निकम्मा कर दिया है उसे हलाहल ज़हर समझकर भी जो हम आंख मींच कर और लकीर के फकीर बने रहे तो निःसन्देह हमारे रक्त से हमारे रग रग से मनुष्यत्व निकल गया है। और हम मनुष्य नहीं रहे हैं।

जैसे बसन्त का हाथ पृथ्वी पर फूल और कलियां बखेरता है, जैसे ग्रीष्म की कृपासे फसलें पक कर तैयार होती हैं, वैसे ही करुणा की मुसकराहटें विपत्ति में फंसे हुए लोगों के लिये सुख का कारण होती हैं।

* * *

जो दूसरों पर दया दिखाता है मानों वह खुद को दूसरों की करुणा का पात्र बनाता है; लेकिन जो करुणा-शून्य है वह दूसरों की दया का अधिकारी नहीं।

* * *

जैसे भेड़ के बच्चे की दुःख-भरी आवाज़ पर बूचड़ को दया नहीं आती उसी प्रकार क्रूर मनुष्य का हृदय दूसरों का दुःख देख कर नहीं पसीजता।

भारतीय देशभक्तों के सुवर्ण वाक्य

(संग्रहकर्त्ता प्रतापमल कोचर)

"मेरे प्यारे देश भाइयो, तुम्हें मेरा अन्तिम हार्दिक संदेश यह है कि—आपस के क्षुद्र भेदभाव को भूल कर एक हो जाओ, प्रयत्न की शिकिस्त कर स्वराज्य मिलाओ, आज भारत में लाखों लोग दरिद्रता, दुर्भिक्ष व प्लेग से मर रहे हैं वे स्वराज्य मिलने से बच सके हैं, करोड़ों जीव जो भूखे मर २ तड़फते हैं-मरते हैं-वे स्वराज्य मिलने से बचेंगे और संसार के किसी भी राष्ट्र समान श्रेष्ठ दर्जा तुम्हारी मातृभूमि-भारत-को स्वराज्य मिलने से पुनः पूर्ववत् होगा, अतः भाइयो स्वराज्य मिलाओ।"

--महर्षि दादा भाई नौरोजी
कलकत्ता कांग्रेस १९०६

"स्वराज्य मेरा पैदाइसी हक़ है और उसे मैं जरूर लूंगा"

राष्ट्र सूत्रधार लोकमान्य तिलक

"अगर हमें कभी स्वराज्य मिलेगा तो अपनी ही ताकत से मिलेगा, भीख की शकल में कभी नहीं मिलने का। ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास पर नज़र डालिये, अँगरेज़ चाहे कितनेही आजादी पसन्द हों-फिरभी व आजादी चाहनेवालों को अपने आप उन्होंने आजादी नहीं दी।"

--भारत भूषण महात्मा गान्धी।

"भारत पर मेरा प्रेम है और उसे समय पर सावधान करने का मैंने साहस किया है इसलिए मेरे भाग्य में यह जेल आरही है किन्तु इज्जत गँवाने की अपेक्षा मुझे जेल में रहनाही अधिक पसन्द है। स्वातन्त्र्य, स्वाभिमान, इज्जत, देशाभिमान और महत्वाकाँक्षा इन्होंका साथ हो तो जिन्देपन में सच्चा सुख है और सच्ची मनुष्यता है। मेरी अब वृद्धावस्था है तो भी मैं अपनी आँखें मींचने के पहिले भारत को स्वराज मिला हुआ देखूंगी ऐसा मुझे विश्वास है, यह महद्भाग्य प्राप्त होने के कार्य में जो मेरा जरा भी हाथ लगा हो तो मेरे अन्तरा-

त्मा को भारी समाधान होगा, ईश्वर भारत का कल्याण करे, वन्देमातरम्।

—ऐनीबीसेन्ट, जेल के पूर्व।

"अगर तुम्हारी पु.ार कोई नहीं सुनता तो तुम अपने रास्ते पर अकेले ही चलते जाओ, अगर सबलोग तुमसे डरते हैं और तुमसे कोई बात नह करना चाहता-तो, ओ अभागो, अपने दुःख की कहानी तू आपही कह और जंगल के दरख्तों को सुना। अगर वियाबान में सफर करते हुए तेरा साथ सब छोड़दें-या सब तेरे खिलाफ हो जायें-तो उनकी कुछ परवाह मत कर, चलाचल, कांटों को रौंदता हुआ अपने पैरों को अपने खूनसे निन्हाले, जिससे चुभने वाले कांटे तेरे खून की नमी से नरम होजाय। अगर रात भयानक अंधेरी है और सबने अपने घर के दरवाजे बन्द कर लिये हैं-तो अपने दिल को छोटा न कर, बल्कि अपने सीनेकी हड्डी निकालकर उसे बिजली की आग से जला और उस रोशनी में चलाजा-

—कविवर रवीन्द्र ठाकुर।

बड़े पुरुष क्या कहते हैं ?

(संग्रहकर्त्ता-श्री० प्रतापमलजी कोचर)

१-संसार में सत्य के सिवाय संग्रह करने योग्य और कोई चीज नहीं है। —चौसर।

२-प्रसन्नचित्त या हर्षयुक्त स्वभाव सर्व श्रेष्ठ शक्तिवर्द्धक औषधि है। —मारिस।

३-सहिष्णुता दैव को भी जीत लेती है। —कम्पवेल।

४-नेत्रों को संकटों को देखने की आदत होजाय तो बहुतसा भय कम होजाता है। —बर्क।

५-जो कार्य हम करते हैं उनसे आदत बनती है, आदत से स्वभाव, स्वभाव से भवितव्यता बनती है। —बोर्डमन।

६-किसी में बुद्धिमांद्यता का दोष हो तो वह उद्योग से दूर हो सकता है। —मार्कस आरेलियस।

७-सुखों का त्याग करने से वे आपही पीछे २ चले आते हैं। —कॉकलिन।

कर्ष होने के लिये धैर्य की ज़रा है। —सिसिरो।

धन के आदि में मूर्खता व अन्त में परिताप है। —मोन्टेर।

१० स्वावलम्बन का भाव ही प्रत्येक मनुष्य की उन्नति का मुख्य कारण है। —स्माइल्स।

११-सद्गुणों से बड़े २ लाभ होते हैं। —लार्ड चेस्टरफील्ड।

१२-वह मनुष्य स्वतन्त्र नहीं है जो अपने आपको काबू में नहीं रखता। —पीथा गोरस।

१३-मैं ऐसे मनुष्य को नहीं चाहता जो झूठ से घृणा नहीं करता है। —पर्थिस।

१४ तुच्छ से तुच्छ फूल भी हमारे लिए शिक्षा और नीतिका भंडार है। —वर्डसवर्थ।

१५-तुम्हारा शरीर पवित्रात्मा का मन्दिर है इसकी मनमानी हानि करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। —सेंटपाल।

१६-जो मूर्ख है उसे अपना मुँह बन्द करते नहीं आता। —सालोमन।

१७-वकील को काम पर नहीं लगाना, यदि लगाया तो वहम नहीं रखना चाहिये। —कानफ्युशस।

१८-सर्व बुरी बातों का बीज अज्ञान है। —मॉर्टन।

१९-विद्या के सिवाय और कोई श्रेष्ठ दान नहीं है। —फुलर

२० इस विश्व में सर्वांग सुन्दर परिपूर्ण ऐसी क्या वस्तु है? विद्या। —प्लेटो

२१ अपने बच्चों को कुमार्ग पर पहुंचाना या ऐसा अवसर देना जिनकी अपेक्षा उसकी कमर को पत्थर बांधकर समुद्र में डाल देना अच्छा है। —सेंटल्यूक

२२-ज्ञान तन्तुओं को दृढ़ करने वाली रामबाण दवा सिवाय नींद के और कोई नहीं है। —सर एडवर्ड कोक

२३-पुस्तक पढ़ने से जो सुख प्राप्त होता है उसके आगे सब सुख तुच्छ हैं। —मेकाले

२४-दूसरों के दोष निकालने की

आवश्यकता हो तो उस समय बहुत प्रेमसे बोलना और दोष देना हो तो खानगी में, किन्तु प्रशंसा करना हो तो जाहिर में करना। शेक्सपिअर

२५-मनुष्य को कभी निकम्मा नहीं रहना चाहिये, क्योंकि शरीर और मन निकम्मे पाये गये कि कामादि शत्रु चढ़ाई करने के लिए तैयार रहते हैं। मानसिक स्वास्थ, शरीर सम्पत्ति, निकम्मापन, यह होनें से मनुष्य को पापाचरण का मोह उत्पन्न होता है कुवासना उत्पन्न न होने के लिए श्रम का बड़ा भारी उपयोग है।

—मिचेल एजंलो

२६-तरुणावस्था में मनुष्य थकजाते हैं उन्होंका उत्साह कम होकर उन्होंके हाथ से जैसा चाहिए वैसा काम नहीं हो सकता, इसका कारण यह है कि उन्हें ज्यादह खाने की आदत लगी रहती है किन्तु वे व्यायाम मानों कभी करतेही नहीं।

—सुप्रसिद्ध शोधक, एडिसन

२७-अखिल विश्व का धर्म एकही है, उस धर्म का आदि मध्य और अन्त प्रेमही है, सर्वत्र प्रेम, सिवाय प्रेम के और कुछ नहीं, सच्चे भाव से अन्तःकरण पूर्वक परमेश्वर पर प्रेम करो वैसाही उनके प्रत्येक पुत्रों पर करो। इस संसार में बुरों से अच्छे का सर्वस्व अधिक है, यह पूर्णतया ध्यान में रक्खो, इतना किया तो स्वर्ग की चावी मानों तुम्हारे ही हाथ में है।

—बिशप बरोकस

२८-जिस मनुष्य का बच्चों से प्रेम नहीं, जिसका हृदय बच्चों के मीठे स्वर से गद्गद् नहीं होजाता वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

—महात्मा ईसा

२९-स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मनसे बढ़कर कोई आनन्द नहीं है, जिसका शरीर निरोगी व मन स्वस्थ है वह अवश्य सुखी है। —लार्ड बेकन

३०-यदि झूठ बोलकर तुम्हें लाख रुपयें भी मिलें तो तुम उन्हें खाक समझो। यदि किसीकी बेजा खुशामद करके तुम्हे उच्चपद मिलता हो तो ऐसे पदसे पद-हीन रहना अच्छा समझो। धर्म और न्याय से कमाया हुआ एक

पैसा चोरी और पापाचार के एक रु-पये से अच्छा है परन्तु बेईमानदारी से दूध मलाई तक के खाने को धिक्कार है।

—कावेट

अर्द्धांगिनी

यह शब्द संस्कृत व हिन्दी साहित्य में सदासे प्रसिद्ध है। इसी प्रकार प्राण-वल्लभा, प्राणेश्वरी आदि और भी अनेक स्त्रीवाचक शब्द हैं, परन्तु पति पत्नी के सम्बन्ध में अर्धांगिनी शब्द सबसे महत्त्वशाली व अद्वितीय है, क्योंकि इसने स्त्री पुरुष के द्वैतभाव को जड़-मूल से उड़ा दिया है।

विवाह से पहले न कन्या अर्द्धांगिनी है और न पुरुष ही अंग का देनदार होता है, परन्तु विवाह होते ही दोनों को एक रस्सी में बंधने वाला और अभिन्न सम्बन्ध से जकड़ने वाला यह शब्द प्रकट होजाता है।

पूर्वाचार्यों ने स्त्री पुरुष के मिश्रणा-त्मक सम्बन्ध को देखकर ही इस शब्द को जन्म दिया होगा, परन्तु खेद की बात है कि वर्त्तमान समय में अर्द्धांगिनी शब्दाडम्बर मात्र रह गई है। वास्तव में देखा जाय तो पति की एक उंगली के समान भी स्त्रियाँ नहीं समझी जातीं, आधे अंग की बात तो दूर रही।

क्योंकि उंगली में मैल लगजाय या काँटा लगजाय तो मनुष्य उसको धो-कर और निकालकर ही बाहर जाता है, परन्तु अर्द्धांगिनी पत्नी पर चाहे जितना अविद्या का मैल चढ़ा हो, या मलीन वायुसे बीमारी होती हो, कोई युवा पर्वाह नहीं करता, रोटी खाई और बा-जार का रास्ता लिया, पतियों का प्रायः यही काम रह गया है। रात्रि में घरपर रहना तो बहुत नेक युवकों का काम है, वरन् आधीरात बाजारों के कोठों पर ही बीतती है, ऐसी अवस्था में बेचारी अर्द्धांगिनी का दुःख कौन सुन सकता है।

कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उनका आचरण अच्छा है, वे घरही में समय व्यतीत करते हैं परन्तु स्त्री शिक्षा से उन्हें भी कोई मतलब नहीं रहता। पर्स

से गृहस्थी का काम बिगड़वाते रहना और कन्याओं का बाल विवाह कर शीघ्र छुटकारा पाना उनका मुख्य कर्त्तव्य होता है।

जो अधिक पढ़े लिखे लोग हैं वे तो इतने थक जाते हैं कि अपने आधे अंग को बिलकुल ही विश्राम दे देते हैं या खिलौना समझते हैं और उसी प्रकार की खिलौना सन्तान पैदा करते हैं जो भारत के लिये भार स्वरूप हो जाती है।

हमारी अर्द्धांगिनियों को भी होश नहीं है कि बालकपन में हुआ सो हुआ, अब जिस शरीर के हिस्सेवाली बनी हैं उसके अनुरूप अपने को बना लें तभी पति के समान गुणवाली सन्तान पैदा कर सकेंगी। हाथी की पीठ पर बन्दर बैठा हुआ क्या शोभा देता है? पति तो दर्शनशास्त्र और विज्ञानशास्त्र के विज्ञानवेत्ता हों, इधर पत्नी दाल और नमक का मेल भी न जानती हो। यह लक्षण एक अंग के कैसे हो सकते हैं! और इनसे सम गुणवाली सन्तान भी कैसे पैदा होसकती है! यही कारण है कि देशके बालक कुछ भूखों मरजाते हैं, कुछ रोग में जकड़े रहते हैं तो कुछ मूर्ख होते हैं।

इसलिये बन्धुओं को चाहिये कि अपनी अर्द्धांगिनी की चिन्ता उसी प्रकार करें जिस प्रकार अपने अंग की करते हैं। उनके स्वास्थ्य का, उनकी विद्या शिक्षा का पूरा २ प्रबन्ध करें और प्रत्येक काम में उनको दक्ष बनाएं। तभी आपके गृह का पूर्ण प्रबन्ध हो सकेगा और तभी अतिथियों को आपके घर में दान सन्मान मिलेगा।

पद्मपुराण में लिखा है कि मथुरापुर में श्री मनु आदि सात चारण ऋद्धिधारी मुनियों ने चौमासा किया था, परन्तु वे आकाशमार्ग से जाकर कभी कभी अन्य देशों में आहार कर आते थे। एक दिन एक नगर में गये और एक सेठ के यहां पारणा के लिए पधारे। जब रसोई में जाकर सेठ ने विचार किया कि नगर के सब मुनि मेरे देखे हुए हैं और नये मुनि चौमासे में आ नहीं सकते, ये कोई पाखण्डी हैं ऐसा विचार कर वह चौके में से उठ गया, परन्तु सेठ की पुत्रवधू बड़ी बुद्धिमती थी, उसने ससुर के न रहने पर भी उन

मुनि महाराज को बड़ी भक्ति से आहार दान दिया और पुण्यबन्ध किया।

जब शामको सेठ मन्दिर में गया तब वहाँ के त्यागियों ने कहा कि सेठ जी आज आप मध्यान्ह समय आते तो बड़े भव्य दर्शन करते, चारण मुनिराज आये थे, ये लोग आकाश मार्ग से चौमासे में भी विहार करते हैं। यह सुन कर सेठको बड़ा दुःख हुआ और वह बहुत पश्चाताप करने लगा, कि हाय वे ही मुनि मेरे घर गये थे। मैंने भारी अज्ञानता की। फिर सेठने घर में आकर सुना कि बहू ने आहार कराकर सन्मान से मुनिराज को विदा किया था, यह सुनकर सेठ के जले कलेजे पर अमृत की बूंदें पड़गई और उसने मुक्त कण्ठ से पुत्र वधू की सराहना की। अन्त में वह सकुटुम्ब मथुरापुर में मुनियों के दर्शन करने आया, वह मथुरा अब दक्षिण में मथुरा नाम से प्रसिद्ध है।

बहिनों! आप भी ऐसीही गुणवती बनों अपनी सुघड़ाई और सेवासे पति व कुटुम्बियों को वश में करलो। सास ससुर भी तुममें सचमुच ही अपने पुत्र के आधे अंग का दर्शन करने लगें ऐसा प्रयत्न करो। विद्या मन लगाकर पढ़ो और रत्नत्रय का लाभ करो; तुम्हारे सदाचरण से ही सन्तान भी सुआचरण बनेगी। अन्यथा रो रोकर बुढ़ापा पूरा होगा—न आत्म कल्याण होगा, न गृह कल्याण ही होगा; अतएव अज्ञानता का नाश कर कल्याणकारिणी बनो।

(जैन महिलादर्श से)

नैतिक ग्रन्थों का पठन, अध्यात्म ग्रन्थों का मनन, सदाचार की प्रवृति शुभ संस्कार सत्संगति और आत्मज्ञान मानव जीवन में नवीन विकाश कर सकते हैं। मानव जीवन की यथार्थ उन्नति उक्त कारण कलापों से हो होगी।

(१)

प्यारे भाई व बहिनों !

आज मैं अपनी दुःखभरी जीवनी सुनाने बैठी हूं, इस तनिक सी जिन्दगी में समाज के अत्याचारसे कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ा और मुझ सी कितनी ही बहिनो को करना पड़ रहा है। यही बताने के लिये अपनी कथा सुनाने को तैयार हुई हूं।

अपनी मुसीबत की कहानी सुनाने से पहिले, कुछ अपना परिचय देदेना अच्छा होगा। मेरा रामनगर के वैश्य कुलमें जन्म हुआ है। मेरे पिताका नाम रामलाल, माता का श्यामदेई और मेरा नाम रत्नसुन्दरी है। मेरे घरमें केवल माता, पिता, और मैं तीनहीं प्राणी हैं। रामनगर में अपने जैन वैश्यों के करीब सौ (१००) घर हैं। रामनगर के जैन-भाई लगभग सभी पढ़ेलिखे हैं। संस्कृत के परीक्षा प्राप्त चार पंडित भी हैं। किन्तु रामनगर में इंग्लिश का ग्रेजुएट एकभी नहीं है। कारण हमारे नगर निवसी जैनभाई इंग्लिश पढ़कर बुद्धि-भ्रष्ट हो जाती है, धर्मसे च्युत हो जाता है यह समझते हैं इसी वजहसे हमारे यहाँ इंग्लिश पढ़ा हुआ एकभीयुवक नहीं है।

(२)

मैं दस वर्ष की हुई यह देखकर माता पिता को मेरे ब्याह की चिन्ता हुई। एक दिन रात्रि को मेरे विवाह के विषय मे, माता पिता में वात चीत हुई मैं दालान में खड़ी सुन रही थी। दोनों की बातचीत का साराँश यही था-- माताजी का कहिना था कि "किसी पढ़े लिखे योग्य वर से लड़की के हाथ पीरे करदो, किसीसे कुछ लेना न चाहिए द्रव्य की क्या जरूरत है।" और पिताजी का कहिना था कि- "हमारे पास रुपया नहीं है, अगर विवाह ठाठ

से न करेंगे तो जाति में नाक कटजायगी, लोग ताहिना देंगे कि "जन्मसे तो खाया है अब एक लड़की है उसके विवाह मेंभी पंचों को नखिलाया गया" आखिर कोईबात दोनों में तै न हुई।

एक दिन मेरे पिता से मिलने के लिये प्रोहित चौपटानन्द का आगमन हुआ। प्रोहितजी का कहिना तो यही था कि-केवल मिलने के लिये आयाहूं, परन्तु उनका आना मेरी हत्या करने के वास्ते ही था। शेखूपुरा का सेठ पुष्प चन्द जिसकी कि उम्रसाठ वर्षकी थी उसके साथ मेरा ब्याह करने के लिये पिताजी से पांचहज़ार में मेरा सोदा प्रोहित जीने पक्का कर लिया।

उस ज़माने में मैं ब्याह को एकखेल मात्र समझती थी, मुझे यह बिलकुलभी ज्ञात न था कि विवाह सम्बन्ध क्या है?-न यह मालुम था कि विवाह में पतिके नाम तमाम उम्रका बैनामा हो जाता है, अस्तु;

यमराज का साला ६० वर्षके खूसट से मेरा विवाह करदिया गया, मैं जल्लाद के हाथ सौंप दीगई। पांच हज़ार रुपयों की मैं भेट चढ़ादी गई।

मेरी सुसरालमें-मेरे पति औरसौत का लड़का त्रिशूलचन्द्र और उसके दो लड़के तथा एक लड़की यही जन संख्या थी।

मेरा जिस समय गौना हुआ उस समय मेरी उम्र तेहरवर्ष की थी, इन तीन वर्षों में-पति पत्नीका कलयुगी क्या सम्बन्ध होता है यह अपनी हमजोलियों में रहकर पूर्ण तयः सीख चुकी थी।

गोना होकर सुसराल आई। सुसराल में तो आई किन्तु अपनी हमजोलियों में जिस विषय की मैने शिक्षाप्राप्त की थी उसका साधन यहां आकर मुझे न दिखाई दिया क्योंकि मेरे पतिराम केवल ६३ वर्ष के ही थे। अस्तुः

अबमुझे काम वेदना अधिक सताने लगी; रात्रि को निद्रादेवी कोसों दूर भागने लगी, एकान्त प्रिय होने लगा, तरुण युवकों की छवियां हिरदयमें नृत्य करने लगीं। (शेष फिर)

पर्युषण पर्व—

पर्वराज पर्युषण हरसालकी तरह इस साल भी आए। हम जिस प्रकार हमारी व्यक्तीगत त्रुटियां यादकर उसे न होने देनेका निश्चय करते है उस प्रकार हम यहभी सोचेंकि सामाजिक त्रुटियां कौन कौनसी हैं और उसमें मैं कितना भाग ले रहा हूं। गतसालमें मैंने इन त्रुटियों को दूर किया या दूर करने का कितना प्रयत्न किया इस बात पर विचार करना प्रत्येक व्यक्तीका आवश्यकीय कर्तव्य है। हमारे समाज में गतसाल कितनी अनाथ विधवा तथा विधुर समाजसे समाजके जुल्मसे बहिष्कृत कीये गए? कितनी बालिकाएं अपने दादाकी उमरके बूढ़ोंपर कुरबान कीगई एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए व्यर्थकी पंचायतें भराकर अपनी द्वेष बुद्धिको पोसा? एक ही नहीं किन्तु हमारी सभी सामाजिक बुराइयों को तपासें तो क्या दीखेगा। हमारी समझसे तो इससाल हमारी त्रुटियां-बुराइयां बढ़ी ही हैं घटी नहीं क्य कि हमने कभी इस बातका ख्याल तक नहीं किया कि पर्युषण पर्व किस प्रकार मनाना चाहिए नहीं तो इतने पर्युषण पर्व बीतनेपरभी हम अपने समाज के लोगोंके प्रतिभी सच्चा आत्मभाव न रख सके। यदि हम कम से कम समाज के लोगों के प्रतिभी प्रेम न रक्खें तो फिर हमारे प्रेमकी आशा वे जंतु तथा ८४ लाख योनीके जीव कैसे करसकते हैं और हमारी यह बाह्य रूपसे क्षमायाचना की विधी प्रह केवल दंभ नहीं है यह कैसा माना जा सकता है? यदि हमने पर्युषण पर्व का महत्व समझ गया हो कि पर्युषणपर्व यह

'हमारी कमजोरियों की जांच करके वे फिर हमसे न हों'

इस लिए है तो हम हमारे जीवनमें यह बात लाए बिना न रहेंगे और समाज के लोगोंके प्रति प्रेम भाव आए बिना नहीं

रहेगा। देखें इस सालमें हम कितनी इस बातको समझ कर काममें लावेंगे और पर्युषण पर्व को सार्थक करके बतलावेंगे?

शिक्षा प्रचार—

अब तक समाज में सार्वत्रिक शिक्षा प्रचार नहीं हो जावेगा तबतक उसके सुधार की आशा व्यर्थ है। यद्यपि प्रचलित शिक्षा प्रणाली सदोष है तथापि जब तक हम इतने शक्तिमान नहीं बन जाते कि इस दोषयुक्त प्रणालीके स्थान पर निर्दोष शिक्षा प्रणाली समाज में स्थापित नहीं कर सकते तब तक तो इस प्रचलित शिक्षा से लाभ अवश्य ही उठाना चाहिये। हम चाहते हैं कि हमारा समाज "शिक्षा" इस विषय पर खूब विचार करें क्योंकि शिक्षा यह विषय अत्यन्त महत्व का है जिसका सम्बन्ध हमारे जीवन के विकास के साथ है। यह शिक्षा हमारे मनुष्यत्व के विकास होना जरूरी है और उसे वैसा ही बनाना चाहिए किन्तु हमारा समाज इतना पिछड़ा हुआ है कि शिक्षा की समस्या पर विचार करके उसके स्वरूप को बदलदें—स्वावलम्बन पैदा करदें यह बातें हमारी इस हालत में अत्यन्त कठिन है। क्योंकि हमारी समाज में इस विषय पर विचार करने वालों की कमी है इतनाही नहीं है किन्तु इस विषय पर ठीक तुलनात्मक विचार करने वाले बहुतही कम लोग हैं गिने भी पाये जावेंगे या नहीं यह हम ठीक नहीं कह सकते। दूसरे आज शिक्षा के प्रश्न को हल करने की स्वतन्त्र रीति से हमारी समाज में उत्सुकता भी नहीं दीख पड़ती इसलिए हमको प्रचलित शिक्षा से लाभ उठाने की कोशिश करनी चाहिए एवं प्रचलित शिक्षा हमारी समाज में जितना फैलना सम्भव हो उतना फैलाना चाहिए। शिक्षा की आवश्यकता आज समाज के बूढ़े से लगाकर बालक तक को है। इसलिए इसमें सभी लोगों को सुशिक्षित किस प्रकार से करना चाहिए। बालक तथा बालिकाओं को किस प्रकार से शिक्षा देना चाहिए, युवा तथा युवतियों को शिक्षा से अपने मनको संस्कृत कैसे बनाना चाहिए। तथा बूढ़ों को अपने

अनुभव में शिक्षाको स्वभाव कैसे डालना चाहिए यह प्रश्न विचारपूर्ण है। हम कुछ तरीके यहां बतलाने का प्रयत्न करेंगे।

प्रथम उपाय—

प्रथम हमको उन बालकों की तथा बालिकाओं की शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए जिनके जीवन की यात्रा सफल बनाने के लिए साहित्य एकत्रित करना है जो अभीतक संसार शकट में जोते नहीं गए हैं जिनके ऊपर समाज का बनना बिगड़ना अवलम्बित है। उन्हें स्कूलों में भेजना चाहिए और उच्च शिक्षा देने का प्रबन्ध करना चाहिए। इस आधुनिक शिक्षा से चरित्र बल घटता है इसलिये हमको बोर्डिङ्गहाउस व विद्यार्थी गृहो का प्र- गृहों का प्रबन्ध इस ढंग से करना चाहिए कि जिससे विद्यार्थियों के चरित्र की उत्कृष्टता बढ़ती ही जाय। केवल एक घण्टा भर दिन को मौखिक नीति का उपदेश देने से काम नहीं चलेगा। इसलिए हमारे प्राचीन तरीकों को काम में लाने का प्रयत्न करना चाहिये गांव व शहर के संसर्ग से दूर ऐसे स्थान पर विद्यार्थीगृह जहां मुख्य चरित्र का इतना उत्कृष्ट हो कि जिसका आचरण ही विद्यार्थीयों को नीति का शिक्षण दें। उनके रहन सहन में सादापन तथा मेहनत की आदत डालने से तथा विद्याध्ययन के आनन्द में वे सुगमता पूर्वक मनका, शरीर का तथा बुद्धि का विकास करके अपने जीवन यात्रा की सामिग्री सहलता पूर्वक एकत्रित कर सकते हैं। इसलिए स्थानस्थान बोर्डिङ्गहाउस तथा विद्यार्थीगृहो की स्थापना करके भावी पीढ़ी को योग्य बनाने के लिए प्रयत्न में लगजाना चाहिये। यदि जहां विद्यार्थी गृहों का स्थापित करना कठिन हो वहां छात्रवृती द्वारा विद्यार्थियों को सहायता देकर शिक्षित बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। अपने बालकों को पढ़ाने के लिए विद्यालयों में भेजना, गरीब लड़कों को सहायता देकर पढ़ाना विद्यार्थीगृहों में चन्दा देकर इन कामों को सहायता देना यह साधारण जनता का काम है। नेता लोगों के ऊपर लिखी हुई बातों द्वारा छात्रालय तथा कामों

को सहायता देने वाली संस्थाएं स्थापित करके उत्साह को बढ़ाना चाहिए। देश के त्यागी लोगों ने स्वेच्छा से गरीबी स्वीकार कर कुशालयों को चलाने का भार अपने ऊपर लेना चाहिए। विद्यार्थियोंको अपना सारा लक्ष्य विद्याध्ययन तरफ देना चाहिए तथा यह प्रथम उपाय सफल हो सकता है।

दूसरा उपाय—

यह बात जरा कठिन मालूम होती है कि हम संसार में जुनजाने पर पत्नी के पती और पुत्र के पिता बनने पर शिक्षा कैसे ग्रहण करें या ग्रहण करने के लिए स्कूल में कैसे जायं, प्रथम तो लज्जा आती है दूसरी बात यह कि समय कहां है दिन भर पेट का साहित्य जुटाने में लगते हैं रात्रि को गृहदेवी के सहवास में। यदि दोनों बातें न करें तो काम कैसे चले। हम प्रथम तो इस बात को ठीक तरह से समझे ही नहीं कि शिक्षा क्या है उसे प्राप्त करने से लाभ क्या होते! यदि शिक्षा हमारे जीवन को अधिक सुखी और सफल बनाने वाली समझते तो यह कठिनाई हमारे सामने न आती संसार के बड़े बड़े आदमी अपनी उमरका बड़ा हिस्सा बीत जाने पर विद्या सीखे हैं। हमतो अभी सब कर सकते हैं हमारा बहुतसा समय निरर्थक बातों में ही बीत जाता है उस समय को बचाकर यदि सीखा करें तो आसानी से बालपन बीतने पर शिक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। पाश्चात्य देशों में रात्रि की स्कूलें इसी अभिप्राय से खुली हुई हैं कि वहां बालपन बीतजाने पर जो लोग सीखना चाहते हैं उन्हें सिखाया जाय। यदि हम इस प्रकार से प्रयत्न करें तो आजभी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम इस बात को ठीक तरह से समझ गए कि शिक्षा हमारे जीवन सफल बनाने वाली है तो हम उसे प्राप्त कर सकते हैं। आज ज्ञान जितनी सुगमता से मिल सकता है उतनी सुलभता पूर्वक पहले न मिलता था। आज हम साहित्य द्वारा लाभ उठा सकते हैं। इस समय चाहें जिस विषय की पुस्तकें आपको मिलेंगी उससे आप अपनी जिज्ञासा तृप्त कर सकते हैं। किन्तु समाज का उपयोगी साहित्य आपको तैयार करना ही पड़ेगा क्योंकि बहुतसी बातें ऐसी होती हैं

जिनको हम ही जान सकते हैं दूसरे नहीं, इसलिए इन बड़े लोगों के लिए साहित्य प्रचार का सुलभ तरीका पत्रों की वृद्धि यही है। स्वामी रामतीर्थ ने शिक्षा विषय पर विचार करते हुए पत्र तथा पत्रिकाओं की आवश्यकता भारत को बतलाई थी। हमभी अपनी समाज में वाचन की रुचि उत्पन्न करने के लिए प्रयत्न करें साहित्य की वृद्धि करें। पत्र तथा पत्रिकाऐं मनोरंजन के साथ साथ ज्ञान वृद्धि करने वाली बनावें तो संसार में जुते हुए लोगों को सरलता पूर्वक शिक्षा मिलकर जीवन यात्रा को सफल बनाने के लिए बीच में साहित्य की वृद्धि होकर उनकी यात्रा सफल बनने की आशा है। व्यक्तिगत जीवन की सफलता पर ही समाज की उन्नति का मूल साधन है।

जलगांव में ओसवाल समाज का पर्यूषण पर्व—

इस समय यहां के ओसवाल समाज ने पर्यूषण पर्व के अवसर पर एक अपूर्व काम करके बतलाया और वह यह कि बोर्डिंग हाउस का स्थापित करने का निश्चय। यहां के सुप्रसिद्ध नागरिक श्री सागरमलजी, किशनचन्द जी, धनराजजी, जुगराजजी, मिश्रीलाल जी, हस्तीमलजी इत्यादियों के मनमें यह बात आई कि हमारी समाज में इतने रुपयों के खर्च करने पर भी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध हम यहाँ नहीं कर सकते, यह बड़े खेद की बात है इसलिये उन्होंने यह निश्चय करके सेठ राजमल जी को तार देकर बुलाया और श्री सेठ राजमलजी के नेतृत्व में यह कार्य आरम्भ हुआ। सागरमलजी के उत्साह ने कमाल कर डाला। उन्होंने इस कार्य

के लिये जो उत्साह बतलाया वह सरा-हनीय है। करीब २० हजार के चन्दा एकत्र होचुका है बाकी का चन्दा एकत्र करने के लिए डेपूटेशन जिले में फिराया जाने वाला है। ८० हजार चन्दा एकत्र करने का संकल्प है। बोर्डिङ्ग का कार्य थोड़ेही रोज में शुरू होने वाला है। नियम इत्यादि बनाने के लिये चुनते हैं सितम्बर मास में सभा होने वाली है इस बोर्डिङ्ग के चन्दे में निम्न लिखित सज्जनों ने विशेष रकमें दी हैं।

५००१ श्री राजमलजी साहब
१०१ श्री लछमणदासजी साहब
८००१ श्री किशनचन्दजी साहब
१५०१ श्री सागरमलजी
२५०१ श्री पन्नालालजी ललवानी
५०१ श्री जुगराजजी
५०१ श्री मानमलजी
२०१ श्री हस्तीमलजी
२०१ श्री किशनचन्दजी

इसके अतिरिक्त और भी गांव वालों ने छोटी मोटी रकमें दी हैं। बाहर गांव वालों की रकमें भी सराहनीय हैं, ऐसा ही सतारे वाले, बरेली वाले, फतेहपुर वाले, जयपुर वालों ने जो दान दिया है वह अगले अङ्क में प्रकाशित किया जावेगा। विशेष उल्लेखनीय बात तो यह थी कि इस कार्य में महिलाओं ने भी स्वेच्छा से योग दिया। हमारे अन्तःकरण में वह दृश्य तो बड़ाही असर कर गया कि एक विधवा जिसके कोई मनुष्य नहीं वह हमें बुलाकर अपना आभूषण देकर कहा भाई यह वस्तु तुम बेचकर वह रकम फण्ड एकत्रित होरहा है उसमें देदेना। यह आत्मस्फूर्ति सचमुच में जाति के सौभाग्य सूर्य के उदय होने की पूर्व सूचना रूप है। हमारे हृदय में यह विश्वास दृढ़ होगया कि ओसवाल जाति की अब शीघ्र ही उन्नति होने वाली है क्योंकि हमारी माताओं के हृदय में भी यह भाव जागृत हो रहे हैं कि जाति के लिए कुछ करना जरूरी है और वह काम बिना त्याग के नहीं हो सकता। सचमुच वह घटना ओसवाल समाज के लिए अद्भुत अपूर्व है। हम बहनों से प्रार्थना करते हैं कि वे भी इस महत्वपूर्ण आदर्श को सामने रखकर आगे बढ़ें।

आगरे में जैन अनाथालय की स्थापना

जैन और ओसवाल विद्यार्थियों की जरूरत ।

आगरे में जो जैन अनाथालय गत तीन महीनों से चल रहा है उसमें इस समय २६ अनाथों का पालन-पोषण होरहा है। अनाथों को धार्मिक, संस्कृत, अङ्गरेजी और हिन्दी की शिक्षा दीजाती है इसके अलावा ड्राइङ्ग का काम, लकड़ी का काम, सिलाई का, तथा हर प्रकार की बुनाई का काम जैसे निवाड़, दरी, गलीचा आदि अनेक प्रकार की दस्तकारी भी सिखाई जाती है। इस समय अनाथालय का खर्चा २५०) रु० महीने का है। हम चाहते हैं कि हमारे ओसवाल और जैन-विद्यार्थी इससे लाभ उठावें जो ओसवाल और जैन विद्यार्थी इसमें शिक्षा प्राप्त करेंगे उनके रहन सहन में अनेक सुविधायें की जावेंगी। आशा है ओसवाल और जैन समाज के बन्धु इस सुअवसर से लाभ उठावेंगे और अपने बच्चों को शिक्षा के लिये यहांपर भेजने की करेंगे।

अनाथालय की सहायता।

ऐसी उपकारी संस्था को चलाने के लिये कितने द्रव्य की आवश्यकता है इसके लिये हम प्रत्येक सज्जन से निवेदन करते हैं कि वह इसकी तन मन और धन से सहायता करें।

सबसे बड़ी जरूरत जैन समाज और ओसवाल जाति के

बच्चों की है जो भाई इस कार्य में परिश्रम उठाकर बच्चों को भेजेंगे उनको तमाम खर्चा दिया जायगा और वह धन्यवाद के पात्र होंगे।

स्त्री बालक जवान बूढ़ा सब पीजिये, परवाह नहीं जाड़ा बरसात गर्मी की कीजिये !

आदमी के शरीर में वीर्य (धातु) ही अमृत-समान गुणदायक और आनंद बढ़ाने वाली जीवनीशक्ति है। धातुपुष्ट रहने से ही संसारिक सर्वकार्य्य सिद्ध होते हैं। इसलिये हमने बहुत परिश्रम करके, अनेक रोगों पर हजारोंबार आजमाइश करके, सच्चा गुण दिखाने वाला "वीर्य्यसिन्धु" तैयार किया है। अगर आप जिन्दगी का सच्चा सुख लूटना चाहते हैं कमजोरी और नामर्दी को लात मारकर अपने मुखमण्डलकी मनोहर कान्ति और यौवनकी छटासे अपनी प्राण प्यारी को मोहना चाहते हैं तो वैद्यकशास्त्रका असली रत्न हमारा "वीर्य्यसिन्धु" जरूर सेवन कीजिये। "वीर्य्यसिन्धु" से तीसरे ही दिन सच्चा चमत्कार दिखलाई देने लग जाता है और पानी सी पतली धातुको दहीकी तरह गाढ़ा करके शरीर भरकी बीमारियों को जड़से काटकर गिरा देता है। जैसे धातुका पतला होना, पेशाब में धातु गिरना, पाखाना जानेके वक्त धातु गिरना स्वप्नमें धातु गिरना, (स्वप्नदोष) या पेशाब गँदला होना। धातु में स्तम्भन (रुकावट) नहीं होना संभोगकी चिन्ता करते ही धातु निकल जाना पेशाब का अधिक (बहुमूत्र) होना आंखोंमें अन्धेरा आना, शिरमें चक्कर आना, शरीर में दर्द होना, भूख न लगना, अन्न नहीं पचना, पतला पैखाना होना, दस्तकी कब्जियत रहना, शरीर का खून खराब होकर खाज खुजली फोड़ा फुन्सी होना, शरीरका रक्त सूखकर चेहरा पीला और फीका पड़ना स्त्रियोंके गुप्त मार्गसे लाल, पीला सफेद पानी निकलना, स्त्रीधर्म (ऋतु या रजस्वला) ठीक समय पर न होना, खांसी स्वांस इत्यादि बीमारियोंको दूर करके दुबले पतले कमजोर शरीर को मोटा ताजा बलिष्ट करके, नामर्दको मर्द बनानेमें "वीर्य्यसिन्धु" से बढ़कर दूसरी दवा नहीं है। चाहे कितना ही कमजोर बूढ़ा नामर्द आदमी

काम तथा रतिशास्त्र सचित्र

(प्रथम भाग) (२५० चित्र)

पसन्द न आने पर लौटा कर दाम वापिस लीजिये

पुनः छप कर तय्यार होगई है ।

मूल्य वापिसी की शर्त है तो प्रशंसा क्या करें। पाठक तो प्रशंसा करते थकते नहीं हिन्दी के पत्रों ने भी इसको ऐसी पुस्तकों में प्रथम मान लिया है। जैसे——

प्रसिद्ध पत्रों की समालोचना का सारांशः——

चित्रमय जगत् पूना

इस पुस्तक के सामने प्रायः अन्य कोई पुस्तक ठहरेगी वा नहीं इसमें हमें शङ्का है। पंडितजी एक विख्यात और योग्य चिकित्सक हैं। आयुर्वेद हिकमत और ऐलोपेथिक के भी आप धुरन्धर विद्वान् हैं। यह पुस्तक हिकमत ऐलोपेथिक और आयुर्वेद के निचोड़ का रूप कही जा सकती है।

श्री वेंकटेश्वर समाचार।

काम तथा रतिशास्त्र अश्लीलता के दोष से रहित है। इसे कोकशास्त्र भी कह सकते हैं, परन्तु वास्तव में इसका विषय कोकशास्त्र से अधिक है जैसी खोज और परिश्रम से यह ग्रन्थ लिखा है उसको देखते ग्रन्थ की सराहना करनी होगी। जो हो हिन्दी में अपने ढङ्ग का यह एकही ग्रन्थ है।

प्रणवीर।

ऐसी दशा में पं० ठाकुरदत्त शर्मा सरीखे अनुभवी वैद्य ने इस विषय पर ग्रंथ लिखकर परोपकार का कार्य किया है उन्होंने ग्रंथ लेखन में समय और औचित्य का पुरा २ ध्यान रखा है तथा विषय की केवल वैज्ञानिक दृष्टि से व्याख्या की है।

तरुण भारत।

जहां पुराने काल के विद्वानों की लिखी हुई काम सूत्र आदि पुस्तकों से पुरी सहायता ली है वहां आधुनिक विद्वानों की सम्मतियों से भी सहायता ली गई है। हम शर्माजी के इस प्रयत्न के लिये साधुवाद देते हैं।

विजय।

पुस्तक में रंगीले चटकीले और भड़कीले ५० चित्र हैं। भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, रूस, जर्मनी, इटली, फ्रांस और आष्ट्रेलिया तथा इस्पानियां की प्यारी २ और भोली २ खूबसुरत स्त्रियों के चित्र भी हैं। लेखक महाशय ने पुस्तक को ऐसा बनादिया है कि एकबार हाथ में लेकर फिर उसे छोड़ने को चित्त नहीं चाहता पुस्तक सुनहरी जिल्द बंधी है।

मूल्य ६) रु० पसन्द न आवे तो ३ दिन के भीतर रजिष्ट्री द्वारा वापिस कीजिये, यहां पुस्तक देखकर कीमत लौटादी जावेगी।

पता-देशोपकारक पुस्तकालय, अमृतधारा भवन (१३०) लाहौर

ऊपर छपी पांचों बिजलीकी अदभुत चीजोंमें न तेलकी जरूरत है, न दीया-सलाईकी बटन दबा दीजिये, चटसे तेज रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी। जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें बेट्रीकी शक्ति भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लेम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाईं वर्ता जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेकी तीनरङ्गा लेम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा खींचिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लेम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक खर्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है औ कोट में लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्सन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।≈) जुदा (नं० ५) यह कमीजके तीन बटनोंका सेट है जो रातमें प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भांति चमकता है इसका भी तार बेटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें रखा जाता है लोग देख कर आश्चर्य करते हैं भेटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी चीज है आज तक हिन्दुस्तान में नहीं आई है दाम ८) डाक खर्च ॥) जुदा।

इलाहाबाद ६ सितम्बर-आज यहाँ इतनी भयंकर वर्षा हुई कि जिससे अनेकों मकान गिर गये छोटी छोटी झोपड़ियों में रहने वाले गरीब मज़दूरों और किसानों में त्राहि २ मच गई वारिष की तादाद ७-३८ तक पहुंच गई थी।

रात को घूमते हुए कुछ पुलिस वालों को बनिपुर बाजार की एक दुकान का दर्वाजा तोड़ा हुआ और खुला मिला। इस पर उनको सन्देह हुआ और मालिक को बुलाया गया मालिक ने आकर दुकान के अन्दर देखा मगर कोई नहीं दिखाई दिया इस पर अच्छी तरह देखा तो बोरों के ढेर में एक बोरे के अन्दर घुसा हुआ एक चोर मिला जिसका नाम रामगाती मण्डल है। चोर मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया वहांसे उसको छः वर्ष की सख्त सजा देकर जेल भेज दिया गया है।

लड़के से लड़की होगई।

लौना (जालोन) में एक चमार के घर लड़का पैदा हुआ था, चौथे दिन सवेरे जब बसोरिन तेल लगाने लगी तो लड़की निकली। इस पर चमारिन रोने लगी तो बसोरिन ने कहा कि अपने कर्मन को रोओ तुम्हारे देवताओं ने ऐसा कर दिया, अन्त में चमार ने पता लगाया तो उसे मालूम हुआ कि हमारा लड़का बसोरों ने बदल लिया है, और एक कोरी के घर में भेज दिया गया है और उसकी लड़की मेरे यहाँ रखदी गयी है। उसने अदालत दीवानी में लड़का पाने का दावा कर दिया है कोरी इस बात से इन्कार करता है, अब अदालत से एक पंचायत मुकर्रर करदी गई है, जिसके सरपंच पं० बेनीमाधवजी तिवारी हैं, मुकदमे की ता० ४ सितम्बर मुकर्रर थी देखें क्या फैसला होता है।

मालूम हुआ है कि एक विदेशी कम्पनी बम्बई की २० मिलों को खरीदने वाली है।

—:०:—

श्रीयुत पद्मसिंह लुणावत, प्रिंटर ऐण्ड पब्लिशर जैन प्रेस जौहरी बाज़ार आगरा।

"OSWAL" Reg. NO. A 1308

ओसवाल जाति का एक मात्र मासिक पत्र।

नहीं जाति उन्नति का ध्यान, नहीं स्वदेश से है पहिचान।
नहीं स्वधर्म का है अभिमान, वे नर सब हैं मृतक समान॥

वर्ष ७ } सितम्बर सन् १९२५ ई० { अङ्क ९

विषय-सूची।

सम्पादक-श्री० ऋषभदासजी ओसवाल (जलगांव)

वार्षिक मूल्य २॥) } वी० पी० से २॥।) { प्रति अंक ।)

ओसवाल जाति का १ मात्र मासिक पत्र।

ओसवाल

जन्म स्थान जोधपुर

(जन्म मिती आसोज सुदी १० संवत् १९७४ वि०)

उद्देश--

ओसवाल समाज में सेवाधर्म, विद्याप्रेम, सदाचार, मेल मिलाप, देश व राजभक्ति और कर्तव्यनिष्ठता के शुभ विचारों का प्रचार करना।

नियम।

१—यह पत्र प्रतिमास की शुक्ला १० को प्रकाशित हुआ करेगा।

२—इसका पेशगी वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २॥) रु० और वी० पी० से २॥।) रु० है एक प्रति का मूल्य ।) है।

३—वर्तमान राजनैतिक व धार्मिक विवाद से इस पत्र का कोई सम्बन्ध न रहेगा।

४—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख और समाचार पढ़ने योग्य अक्षरों में साफ कागज़ पर एक तरफ कुछ हासिया छोड़ कर लिखे हुए हों।

५—"ओसवाल" में प्रकाशनार्थ लेख, समाचार, समालोचनार्थ पुस्तकें और परिवर्तनार्थ समाचार पत्र आदि इस पते से भेजने चाहिये।

श्री रिषभदास जी ओसवाल

संपादक ओसवाल मु० जलगांव (पू० खानदेश)

६—"ओसवाल" के प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यौहार और सूचना आदि इस पते से भेजनी चाहिये।

"मैनेजर ओसवाल"

जोंहरी बाजार आगरा

ओसवाल का लेखक-मण्डल ध्यान दे।

आपकी सेवा में ओसवाल लेख और कविता की आशा से बराबर भेजा जाता है. परन्तु दुःख है आप इसको लेख आदि भेजकर इसकी सहायता नहीं करते आपके भरोसे पर अङ्क लेट हो जाता है आशा है आप अब बराबर इसके लिये लेख और कविता आदि भेजने की कृपा किया करोगे।

———

पापीजन निज कन्या को, हुंडी दर्शनी वताते हैं।
दस हज़ार की थैली लेकर, फूले नहीं समाते हैं॥

पंच पुकार नहीं सुनते हैं, दिन २ पाप बढ़ाते हैं।
बूढ़े वर पर लटटू होकर बढ़ २ कर वतलाते हैं॥

कुछ दिन में कन्या विधवा होकर के हमल गिराती है।
मन मतंग के वशीभूत हो कुल की लाज डुबाती है॥

आहें भर भर विधर्मियों के फंदे में फँस जाती है।
देख २ दुर्दशा जाति की फटै "त्रिवेदी" छाती है॥

वही धन्य है सृष्टि में, जन्म उसी का सार ।
हो कुल जाति समाजका, जिससे कुछ उपकार ॥

वर्ष ७ } आगरा, सितम्बर सन् १९२५ ई० { अङ्क [illegible]

॥ स्वारथ ॥

(ले० श्रीयुत पुरुषोत्तमदासजी अग्रवाल)

(१)

सब औगुण की खान मान मरियादा हरता ।
कुटिल कुपन्थी क्रूर नाश बुद्धी का हरता ॥
मूठ कपट छलछिद्र द्वेषता को है भरता ।
स्वाभिमान सद्भाव प्रेम है इससे डरता ॥
सहित उदाहरण सत्य बात है यह चरितारथ ।
सब दुखों का मूल एक है जग में स्वारथ ॥

(२)

कौरव पाण्डव वीर वंस को सब हैं जाने ।
तेजवन्त रणधीर—सूरमा थे—मैदाने ॥

विद्या-बुद्धि-निधान और थे खूब सयाने ।
राजनीति में निपुण जिन्हें इतिहास बखाने ॥
अभिमन्यू अरु कर्ण भीष्म थे जिनमें पारथ ।
हुये क्षणक में नष्ट बढा जब इनमें स्वारथ ॥

(३)

इसी तरह बरबाद हमें भी इसने कीना ।
नष्ट सम्पति हुई हो गये अन्न विहीना ॥
हुये निकम्मे दस्तकार थे जो परवीना ।
तके पराई शान इसी ने यह दिन दीना ॥
पराधीन बन गये मिला मिट्टी में भारत ।
जिस दिन से आ गया यहां परदेशी स्वारथ ॥

(४)

निज स्वारथ के काज करे व्यापार विदेसी ।
मरे करोड़ों भूख हो गई हालत ऐसी ॥
मानों बातें देश-भक्त कह रहे हैं जैसी ।
दुख कटने का यही मन्त्र व्यवहार स्वदेसी ॥
उठो भाइयों ! सोच छोड़ दो थोड़ा स्वारथ ।
तनक कमीशन काज करो मत भारत-गारत ॥

(मा० अग्रवाल)

ऐसा साम्यवाद जो दूसरों को जबरन नष्ट कर अपना स्वार्थ बनावें उसको छोड़ो ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

" दूसरों को कष्ट देना " अपने को स्वयं कष्ट में डालना है । ' दूसरों को हानि करना ' अपनी ही हानि करना है—और रंक प्राणी को मत सताओ-अपनी शक्ति का उपयोग परोपकार में करो ।

* * * *

समय का सदुपयोग ।

समय अत्यन्त द्रुतगामी है, न इसका आदि है न अन्त। संसार में महान परिवर्त्तन हुए, अनेक महाबली राजाओं ने अनेक जातियों के ऊपर शासन किया, अनेकबार अनेकों युद्धों में असंख्य मनुष्यों का संहार हुआ, अनेकोंने घृणित तथा क्रूर कर्मकर अपने को कलंकित किया। ये सब युद्ध तथा अत्याचार इन महत्वाकांक्षी तथा विलासी राजाओं की इच्छा को पूर्ण करने के लिये हुए। अनेकों दिग्विजयी सम्राटों ने इस संसार को विजय किया पर वे सबके सब सज्जन-दुर्जन अपना अपना सुयश-अपयश छोड़ अन्त में इस सर्वभक्षी काल के ग्रास हुए। इसलिये मनुष्यमात्र को उचित है कि समय को सुकार्य्य तथा संसार की भलाई करने में बितावे। स्वामी रामदास के शब्दों में "भाइयो! घटिकायें निकल गईं, पल बीत गये और घण्टा टन २ बजता है। इसी तरह तुम्हारे जीवन का समय बीत रहा है, संसार में आकर सुयश, पुराणादिका उपार्जन कर जाओ।" पाठको! मैं अपने इस लेख में अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार समय का सदुपयोग दर्शाने की चेष्टा करूंगा।

समय का सदुपयोग किस प्रकार करना चाहिये इस बात से अधिकांश मनुष्य अनभिज्ञ हैं। अनेक मनुष्य दिन रात हंसी-मसखरी अथवा व्यर्थ की ही बातों में बिता देते हैं। कितने लोग, तास, शतरंज, चौपड़ आदि खेलने में, और कितने लोग निरर्थक पुस्तकों एवं उपन्यासों के पढ़ने ही में इस अमूल्य समय का दुरुपयोग करते हैं और अपने मनमें समझते हैं कि हमारा समय व्यर्थ नष्ट तो होता नहीं, कुछ न कुछ काम करते रहते ही हैं। जो मनुष्य ऐसा करते और समझते हैं वह उनकी बड़ी भारी भूल है।

दिन-रात में २४ घंटे होते हैं। उनमें से ८ घण्टा निद्रादेवी के लिये निकालकर शेष १६ घण्टे अन्यान्य उपयोगी कार्यों में व्यतीत करने चाहिये। कुछ समय कला-कौशल आदि के लि-

जाने में, कुछ समय उत्तम पुस्तकों या समाचार पत्रों के पठन-पाठन में और कुछ समय सुयोग्य मित्रों की सत्संगति तथा कुछ स्वास्थ्य रक्षा के विचार में तथा वायु सेवन में व्यतीत करना चाहिये।

इस संसार के जितने उपयोगी तथा सुन्दर कर्म हैं उन्हें जगतपिता जगदीश्वर ने मनुष्यों के करने के ही निमित्त बनाया है और प्रत्येक कार्य करने के लिये समय भी नियुक्त कर दिया है तथा प्रकृति हमें शिक्षा भी देती है कि अमुक कार्य अमुक समय पर करो। इसलिये हम लोग प्रत्येक कार्य को नियत समय पर करें। जो लोग ऐसा नहीं करते वे प्रकृति के विरुद्ध करते हैं तथा उसका कुफल भी भोगते हैं।

जिसने समय को व्यर्थ नष्ट कर दिया, मानो उसने अपने जीवन को ही नष्ट कर डाला। रामायण, महाभारत इत्यादि उत्तमोत्तम ग्रन्थों के अध्ययन में भी कुछ समय व्यतीत करना चाहिए। सद्ग्रन्थों के अध्ययन से मन प्रशान्त और नीति परायण होता है। अपने से विद्वान् तथा श्रेष्ठ पुरुषों के पास जा कर उनके उपदेशों को श्रवणकर काल [समय] का सदुपयोग करना चाहिये।

समय का दुरुपयोग करना समय को नष्ट करना ही नहीं बल्कि अपने हाथों से अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना है। मैं समाज के सामने यह कहने का साहस करता हूं कि आजकल ओसवाल जाति में जितना समय का दुरुपयोग होता है उतना किसी अन्य जाति में नहीं होता। पुरुष लोग तो कुछ न कुछ समय का सदुपयोग करते हैं, परन्तु स्त्रियाँ तो दिनभर बैठी २ इधर-उधर की निरर्थक बातों तथा कलह में ही इस अमूल्य समय को बिताती तथा स्वयं अपने तथा अन्यों को भी हानि पहुँचाती हैं। इसका मुख्य कारण केवल अविद्या ही है।

हम लोग यदि देश, जाति तथा समाज को अवनति मार्ग से उठाना चाहते हैं तो हमें उचित है कि समय का सदुपयोग करना सीखें। सद्गुणों में समय का सदुपयोग करना भी एक अपूर्व तथा अतिलाभदायक गुण है। संसार में आज कल जिन जातियों को हम आज उन्नति के शिखर पर देख रहे

है उसका एक ही कारण है कि उन्होंने समय का मूल्य लिया है।

संसार में जिन २ महापुरुषों का आज तक हम लोग नाम सुन रहे हैं, वे सब समय के सदुपयोग करना जानते थे। महाराज शिवाजी की सफलता के कई कारणों में यह भी एक महान कारण था। महाराज नेपोलियन ऐसे उच्च पद के कैसे अधिकारी हुए ! यह कहा जाता है कि वे समय का मूल्य जानते थे।

मेरी समझ में तो भारतवर्ष के ऐसे अधःपतन का कारण समय का दुरुपयोग ही है इसलिये हम लोगों का परम कर्तव्य है कि समय का सदुपयोग कर देश और जाति को लाभ पहुंचावें।

[मा. अ.] [ले० श्रीवंशीधरजी कलकत्ता]

पतितों का भविष्य।

[ले०-श्रो० प्रतापमलजी कोचर]

तात्विक दृष्टीसे यदि देखा जाय तो गरीब, अस्पर्श वा शूद्र वर्ण, तथा स्त्री जाति यही पतित है, पतित का अर्थ गिरा हुआ, आज कोई भले ही पतित शब्द की व्याख्या कैसे ही करे हमें तो आज उपरोक्त समाज ही पतित नज़र आते हैं और वर्तमान समय देखते इन का भविष्य कैसा है जिन पर हमें विचार करना है।

यद्यपि वर्ण व्यवस्था ठीक है तथापि उनका परिणाम समय के प्रवाह के साथ एकसा नहीं रहा, एक जमाना ऐसा था कि ब्राह्मण वर्ण सर्व श्रेष्ठ बन के दुनिया पर अपनी प्रभुता की ऐसी छाप लगाई कि अब तक देहाती भाई ब्राह्मणों की चरण रज अपने मस्तकपर धारण करते हैं, पांव धोकर चरणामृत ले कृत कृत्य होते हैं, ब्राह्मण देवता का अत्यन्त सम्मान कर उनकी सेवा करते हैं, ब्राह्मणों का ब्राह्मणत्व उनके आचार पर था, पवित्रता पर था, यद्यपि वे गुण अब न होते हुए भी लोग (बहुधा) ब्राह्मणों को वैद्य समझते हैं, इसका कारण उनका दौर दौरा ऐसा ही था, पुराण, स्मृति, श्रुति, आदि ग्रंथों के रचने वाले ब्राह्मण ही थे इन ग्रन्थों में ब्राह्मण यदि पतित भी क्यों न हो लेकिन पूज्य माना जाय ऐसे कहीं २ श्लोक

पाया जाता है, जिससे भाविक लोगोंको आचार भ्रष्ट ब्राह्मण भी देवता ही दीखते हैं, जमाना सुधार का है इसलिए अब ब्राह्मणों की पूजा प्रतिष्ठा अब कम होने लगी है।

ब्राह्मणों का दौर दौरा एक जमाने में था, इसके बाद क्षत्रिय वर्ण ने दुनियां पर अपनी छाप बिठाई, दुनियां के संरक्षण का ठेका मानों इसी वर्ण ने ले लिया; फलतः परिणाम यह हुआ कि भारत में क्षत्रिय लोग आपस में लड़ने लगे, रामायण और महाभारत इसके साक्षी हैं संरक्षण का ठेका यद्यपि इन लोगों ने लिया तथापि इनका नैतिक प्रभाव लम्बे समय तक नहीं पड़ा जैसा कि अब तक ब्राह्मणों का है, कारण ब्राह्मणों जैसी तीक्ष्ण बुद्धि क्षत्रियों में नहीं थी वे तो वीर श्री के धारक थे।

अब तीसरा वर्ण वैश्य का लीजिए जब कि भारत उन्नति के शिखर पर चढ़ा हुआ था, वा भव्यादि श्रावकों के समय में भारतीय कलाकौशल्य व्यापार खूब धूम धड़ाके के साथ चलता था, हीरे पन्ने स्वर्ण मुद्रा का व्यवहार अभी के कागज पैसे समान चलता था इस व्यापार युग में वैश्य वर्ण ने देशके आर्थिक सूत्र अपने ही रक्खे थे और अब तक है आज भी उन्नति देश की व्याख्या करनी हो तो यही कहना होगा कि जिसका व्यापार अधिक है उतना ही वह देश उन्नत समझना चाहिए भारत का व्यापार दूसरों के हाथ में जाने से वैश्य वर्ण की वही हालत हुई जो ब्राह्मण क्षत्रिय की हुई।

अब अन्तिम वर्ण शूद्र है शास्त्रकारों ने इनका कर्तव्य सेवा के अतिरिक्त कोई नहीं बतलाया, शूद्रों में किसान मजदूर अत्यंत वा अस्पृश्य लोग भी शामिल करने में कोई आपत्ति नहीं है, हां यह अवश्य है कि कई किसान अपने को क्षत्रिय कहलाते हैं। कृषकों को धूप, ठंड को सहके अन्न तय्यार करना और शेष लोगों को बिना मिहनत वा अन्य परिश्रम से मजा उड़ाना क्या उचित है! गरीबों को रात दिन मजदूरी करते २ तड़फ कर भी भरपेट भोजन उन्हें न मिलना और धनवान लोग ऐशो आराम में भोग के कीड़े बन कर क्या सड़ना

उचित है? मनुष्य २ समान होते हुए भी एक दूसरे से घृणा करना कहां तक उचित है? क्या अस्पर्शता ईश्वर निर्मित है? "आत्मवत् सर्वभूतेषु" का तत्व प्रस्थापित करने वाले भारतीयों के लिए यह नीच व्यवहार क्या शोभा देता है? कदापि नहीं, फिर भी इस ४ थे वर्ण ने अत्यन्त दुःख सहे, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों के अत्याचार इतने सहे कि जो मनुष्य जाति को कालिमा लगाने वाले हैं, यही इन अंतिम वर्ण की तपश्चर्या है जिनका फल मिलने का समय आ गया है।

उपरोक्त तीनों वर्णों ने दुनियां में जो विषमता फैलाई थी उसको नष्ट करने के लिए रूस में बोल्शेविज्म पैदा हुआ है वह साम्यवाद का पुरस्कर्ता है, इनका मुख्य तत्व है कि जिसके पास धन हो उसको मौज मजा उड़ाना और निर्धनों को भूखे मरना सृष्टि नियम के विरुद्ध है, धन किसी के पास क्यों न हो वह उस व्यक्ति का नहीं बल्कि देश का है, अब तो बोल्शेव्हीकों ने अपने तत्वों का प्रसार दुनियां भर में करना चाहा है गरीबों के दिन आये हैं अब उन्हें अपनी की हुई तपश्चर्या का फल जरूर मिलने वाला है।

अस्पर्शों का भविष्य भी अच्छा जान पड़ता है, भारत के ७ करोड़ अस्पर्शों की उन्नति करने के लिए कई प्रकार के आन्दोलन होने लगे हैं, हिन्दु सभा, राष्ट्रीय सभा उनकी अस्पर्शता निकालने के लिए प्रस्ताव करने लगी है मिशनरी तथा मुस्लिम संस्थायें भी अपने धर्म प्रसार के हेतु अपने समाज में लेना चाहती हैं, अस्पर्शों की इच्छा हो या नहीं बल्कि अभी ऐसा प्रयत्न हो रहा है कि अस्पर्श यह शब्द किसी कोश में कुछ वर्षों से नजर नहीं आवेगा अस्पर्शों की छाया पड़ना पाप समझने का एक जमाना था आज उसे भाई समझ कर गले लगाया जाता है यह समय का ही प्रभाव है।

अब रही स्त्री जाति, इनका भविष्य भी अच्छा दीखता है, पुरुष जाति का अक्षम्य स्वार्थ होने से बिचारी स्त्री जाति को भयंकर कष्ट सहने पड़े हैं, हजारों वर्षों से स्त्री स्वातंत्र्य हरण करने वाली, इनको मूढ़ रख कर अपने स्वार्थ की पूर्ति करने वाली

पुरुष जाति ही है दुनियां में जितने अनर्थ होते हैं वा हुये हैं वे सब विषमता फैलाने पर ही, स्वार्थ का साम्राज्य बढ़ने पर, दूसरों के स्वत्वहरण करने पर, दूसरे से घृणा कर वा दूसरे को तुच्छ समझ कर ही इस लोक को साक्षात नर्क बना दिया है, पुरुषों के असह्य अत्याचार सहते २ कई वर्ष बीते लेकिन अब इन्हों की भी तपश्चर्या फली भूत होने लगी है, आजतक पुरुष वर्ग स्त्री शिक्षण, विधवा विवाह तथा स्त्री स्वातंत्र्य का कट्टर विरोधी था लेकिन जमाना बदलने पर वही पुरुष वर्ग अब उदारता बतलाने लगा है, जिसका फल वकील, बैरिस्टर मजिस्ट्रेट स्त्रियां होने लगी हैं इतना ही नहीं पार्लियामेन्ट जैसी बड़ी २ संस्था में स्त्रियां काम करती हैं, बड़े२ कारखानों में तथा कई ओहदों की जगह स्त्रियां स्थापित हो चुकी हैं।

उपरोक्त बातों का विचार करने से एक बात स्वीकार करनी पड़ती है कि स्त्री जाति की उन्नति भारत में होना अभी दूर है, होगी अवश्य लेकिन शनैः शनैः कालचक्र फिर रहा है सुख के बाद दुःख, आराम के बाद थकावट, दुःख के बाद सुख, अन्धेरे के बाद उजाला होता ही है, जो चढ़ता है वह गिरता भी है और जो गिरता है वह चढ़ता भी है शुक्ल पक्ष के बाद अन्धेरे पक्ष और फिर पीछे उजाला पक्ष यह व्यवहारिक अनुभव हम सदा देखा ही करते हैं इससे पतितों का भविष्य अच्छा मालूम होता है, उन्हें चाहे कोई विरोध करने का हास्यापद करने का प्रयत्न भले ही करे, लेकिन अवश्य इन्हों का उद्धार जरूर होगा।

गृहस्थ का व्यवहार.

मनुष्य चाहे कैसा ही पढ़ा लिखा क्यों न हो परन्तु जब तक उसका हृदय सरल और निष्कपट नहीं होता है तब तक उसके हृदय में दया की मधुर भावना ही नहीं होती है और न वह ज्ञान होता है कि "संसार के समस्त प्राणी मेरे समान ही सुख और शांति चाहते हैं" इसलिये मेरा कर्तव्य है कि मैं सब को सुखी और शांति बनाऊं।

* * * *
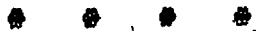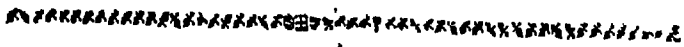
यह बात अकसर कहने में आती है कि सुधार के गीत तो बहुत गाये जाते हैं, सभायें भी बड़ी धूम, धाम शान शौकत के साथ होती हैं, प्रस्ताव भी बड़े बड़े गंभीर विचार होकर पास किये जाते हैं, लेख भी विद्वत्ता पूर्वक प्रकाशित होते हैं, सभी प्रयत्न सुधार के होते हुए भी, कहीं सच्चा, वास्तविक सुधार दृष्टि गोचर नहीं होता और कहीं कुछ होता भी है तो इतना न्यून कि न होने के बराबर। इसका कारण क्या है? कारण तो कई हो सकते हैं क्योंकि सामाजिक सुधार कोई सीधा, सरल काम नहीं है। बहुत से उतार, चढ़ाव, पेचीदा कांटेदार रास्तों में होकर गुजरना पड़ता है। परन्तु इतनी बात तो आसानी से समझ में आ सकती है कि जहां गृहस्थ का व्यवहार भी बिगड़ा हो वहां सामाजिक व्यवहार कैसे शुद्ध पवित्र हो सकता है। जिस समाज का गृहस्थ जीवन ही पतितावस्था में गिरा हो उसका सामाजिक जीवन उच्च कैसे हो सकता है? जो मनुष्य गृहस्थ-धर्म के कर्त्तव्यों का ही ठीक तरह पालन करके अच्छा गृहस्थी नहीं कहलाया जा सकता उससे यथार्थ सच्ची जाति-समाज-सेवा की आशा क्या हो सकती है और उसकी योग्यता भी उसमें कैसे आ सकती है? आज बाल, वृद्ध, अनमेल विवाह आदि बुराइयों को दूर करने के लिये सुधारक गला फाड़ २ कर चिल्ला रहे हैं फिर भी ये कुप्रथायें समाज की छाती पर मूंग दलने से बाज नहीं आती है। इसका भीतरी और मूल कारण यही है कि इन कुरीतियों का खास सम्बन्ध गृहस्थ से है और जहां गृहस्थ जीवन ही बिगड़ा हो वहां उससे संबंध रखने वाली बुराइयां व त्रुटियां क्यों न होंगी? जो स्त्री पुरुष अपने घरों में रात दिन जैसे विचार व जैसे ख्यालात में रहते हैं, और उनका घरेलू बर्ताव, व्यवहार, स्वभाव, रहन सहन, जैसा होता है उसी के अनुसार उनका सामाजिक जीवन भी हुआ करता है।

आज वृद्ध विवाह याने बुढ़ापे की शादी के खिलाफ समाज में इतना आन्दोलन, इतनी घृणा, निन्दा होते हुये भी धन के मदमाते बाज नहीं आते, तो

इसका कारण भी यही गृहस्थाश्रम का बिगाड़ना, उसके कर्तव्यों को न जानना और गृहस्थ को केवल भोग-विलास का साधन मानना है। वास्तव में गृहस्थ भोग-विलास के लिये नहीं किन्तु मर्यादा पूर्वक रहने के लिये है। गृहस्थ की मर्यादा कमजोर मनुष्यों को बलवान बनाने के लिये है इसीलिये उसे शास्त्रों में ज्येष्ठाश्रम बताया है। आज वह व्यवस्था या मर्यादा बिगड़ी हुई है इसीलिये हमारे घरों में विधवाओं और क्वांरों के संकट की भयंकर अग्नि ऐसी धधक रही है कि उसी में गृहस्थ का सारा सुख स्वाहा हो रहा है।

गृहस्थ का आनन्द.

कुटुम्ब के स्त्री, पुरुष, छोटे बड़े सब मिलकर परस्पर की प्रीति व सहृदयता से तथा एक दूसरे की सहायता से तथा एक दूसरे की सहायता व उदारता से चाहे अपने घरको स्वर्ग का नमूना बनालें और चाहें परस्पर की कलह, ईर्षा, व हृदय की जलन व नीचता से घर को नर्क से भी बदतर बनालें यह दोनों बातें घर के स्त्री पुरुषों की योग्यता व बुद्धिमत्ता व सहृदयता पर ही निर्भर है और इसीके लिये सदाचार शिक्षा को विशेष आवश्यकता है, स्त्री शिक्षा की खास जरूरत है।

गृहस्थ के आनन्द के लिये यह बात आवश्यक है कि कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति संयम करना सीखे। इस बात का उसको हृदय में विचार नहीं करना चाहिये कि और लोगों के मुकाबले में मेरी ही बात बड़ी रहे। जिस गृहस्थ में एक भी ऐसा स्वभाव वाला होता है वहां परस्पर में कलह उत्पन्न हो जाती है। एक दुस्स्वभाव वाला मनुष्य अपने कुटुम्ब भर को दुःख और झगड़े टंटे में डाल देता है। युवा पुरुष को संयम द्वारा घर को शान्त बनाये रखने का सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिये। संयम करना, कड़े शब्द न बोल उठना, और प्रेम पूर्ण व्यवहार करना इन बातों को युवा पुरुष अपने ध्यान में रक्खे। एक विद्वान ने लिखा है—"संसार में न तो कोई अपना मित्र है और न कोई शत्रु है। मनुष्य अपने

व्यवहार द्वारा ही अपने शत्रु और मित्र उत्पन्न करता है।" दुर्व्यवहार से माता पिता और सहोदर भाई भी शत्रुवत् होजाते हैं। सद्व्यवहार से परदेशी मनुष्य भी घरका होजाता है।"

हमें अपने घर वालों से कोमल शब्द ही बोलना चाहिये। जो मधुर वचन नहीं बोल सकता है उसके लिये अच्छा है कि वह चुपचाप बैठा रहे। मधुर भाषण से क्रोधाग्नि शान्त हो जाती है। ईश्वर-प्रार्थना भजन-गायन के समय जैसे अच्छे एक गायक के साथ साथ गान विद्या से अनभिज्ञ पुरुष भी कुछ गा लेते हैं वैसेही कुटुम्ब में एक मिष्टभाषी पुरुष के होने से और लोग भी सुव्यवहार करना तथा अच्छा बोलना चालना सीख जाते हैं। युवा पुरुष को अपने होठों को बुरी बातों के लिये कभी न खोलना चाहिये। वृद्ध पुरुष भी कभी २ बुरे स्वभाव के होते हैं परन्तु कुछ भी हो गृहस्थ की पूर्ण सुख शान्ति का भार उस कुटुम्ब के युवा पुरुषों पर ही है। जो घाव वचन वाण द्वारा बनता है उसको अच्छा करना बड़ा कठिन होता है। एक विद्वान ने कहा है कि "कड़े शब्दों में किसी सत्य बात को भी प्रकट न करो। बुरा भला कह उठना भूत या शैतान का काम है इससे कठोर वचन कभी न बोलना चाहिये।"

हमें जैसे अपनी जिह्वा को रोकना चाहिये वैसेही इन्द्रियों को भी वश में करना चाहिये। एक २ इन्द्रिय की चंचलता से बड़े बड़े काम बिगड़ गये हैं। हमें अपने हृदय से स्वार्थपरता, क्रोधाग्नि, इन्द्रिय परायणता, लोभ आदि दोषों को बाहर करना चाहिये। कुटुम्ब के मनुष्यों को अपनी ही प्रतिमूर्ति समझना चाहिये। उदारता से हृदय में बड़ा स्थान दीख पड़ता है। स्वार्थ हमारे हृदय को सिकोड़ डालता है। कुटुम्ब के लोगों की बातों को हमें सहन करना चाहिये और उनकी कड़ी बातों को भूल भी जाना चाहिये। हमें व्यवहार करने में एक दूसरे का बड़ा विचार रखना चाहिये। हमें हृदय में दयालुता धारण करनी उचित है। अभ्यास द्वारा हमें बुरी बातों से

बचना चाहिये। एक भी दुर्गुण बड़े बड़े अनर्थ उत्पन्न कर सकता है। इससे सदैव सद्गुणों से ही काम लेकर अपने कुटुम्ब की सुख शान्ति की वृद्धि करनी चाहिये।

अच्छी चाल ढाल का बनाये रखना भी प्रत्येक कुटुम्ब के व्यक्ति के लिये बड़ी प्रयोजनीय है। शिष्टता एक बड़ी वस्तु है। इससे कुटुम्ब की मर्य्यादा और उच्चता बढ़ती है। शिष्टता बड़े मनुष्यों के बड़प्पन का चिन्ह है। नम्रता शिष्टता की आत्मा है। बड़प्पन का अहंकार शिष्टता का नाशक है। आज कल के लोग नम्र व्यवहार को बहुत कुछ भूले हुए हैं। उद्दण्डता को यह लोग वीरता का चिन्ह समझते हैं नम्रता एक उच्च गुण है। स्वकुटुम्ब के मनुष्यों के प्रति हमें सदैव नम्र बना रहना चाहिये नम्रता का प्रभाव कुटुम्ब के और मनुष्यों पर भी पड़ता है। हमें शिष्ट और नम्र बन कर गृहस्थ के आनन्द को बढ़ाना चाहिये।

संसार में चिन्ता का वारापार नहीं। हम चाहें तो दिन रात चिन्ता ही में निमग्न रह सकते हैं। हमें चिन्ताओं का अधिक विचार नहीं करना चाहिये। सदैव प्रसन्न वदन रहना उचित है। जो कर्त्तव्य का ध्यान रखते हैं उन्हें कोई चिन्ता नहीं सता सकती। प्रसन्नचित्त रहने से गृहस्थ का आनन्द बढ़ता है। जिसका स्वभाव आनन्दमय है, चित्त चिन्ता से रहित है और जो मीठे बचन बोलता है वही गृहस्थ का सच्चा सभ्य है। हबर्ट नामक विद्वान् ने लिखा है कि-"मधुर शब्द बोलने में खर्च तो कुछ नहीं होता किन्तु उससे लाभ बड़ा होता है। ऐसे शब्द आशा उत्पन्न करते हैं, धैर्य और विश्वास बढ़ाते हैं। मधुर शब्दों द्वारा जो दान किया जाता है उसका महात्म्य भी साधारणतः दान से दूना होता है। मीठी वाणी इस लोक में अमृत है।"

कुटुम्ब के प्रत्येक मनुष्य के साथ हमें पूरी सहानुभूति होनी चाहिये। स्वयं सहानुभूति करना दूसरे को सहानुभूति का पाठ पढ़ाना है। सहानुभूति एक उच्च गुण है। सहानुभूति ही संसार का राज्य कर रही है। देशभक्ति और
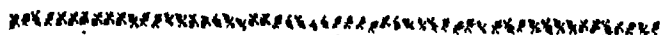
देख-सेना इसकी माता सहानुभूति ही है। जब मनुष्य अपने प्रेमी के लिये सब कुछ यत्न करके लाचार हो बैठता है तब यही सहानुभूति नेत्रों के द्वारा आंसू बनकर अपना रूप प्रकट करती है। रामायण में इस सहानुभूति का बड़ा सुन्दर चित्र खिचा है। राम अपने मूर्छित लक्ष्मण भाई के लिये रोदन और विलाप करते हुए कहने लगे—"हे शूर! रण में जय पाना मुझे अच्छा नहीं लगता क्योंकि यदि आंखों से चन्द्रमा के दर्शन न किये जा सकें तो सन्तोष कैसे हो—जब भ्राता लक्ष्मण ही रणभूमि में निहत हो शयन करते हैं तो मेरे युद्ध करने व जीवन धारण करने से क्या प्रयोजन। देश देश में स्त्री व बन्धु बान्धव मिल जाते हैं परन्तु ऐसा कोई देश दृष्टि नहीं आता कि जहां सहोदर भ्राता मिल जाय।"

अपने कुटुम्ब के मनुष्यों को जो तुम्हारी अधीनता में हों उन्हें दासवत् छोटा न समझना। ऐसा न हो कि वे ऊपर से तो तुम्हारे नम्र सेवक बने रहें परन्तु भीतर से तुम्हारे शत्रु बन जावें। उन्हें अपना समझकर ऐसा बर्ताव करो जैसा कि तुम औरों से अपने लिये चाहते हो। किसी राज्य का शासन करना सुगम है किन्तु अपने गृहस्थ का शासन एक कठिन काम है। भूल या अपराध होना मनुष्य का स्वभाव है। किसी की भूल या अपराध के लिये अधिक ताड़ना मत करो। किसी का दुष्कर्म का स्वभाव दंड से उतनी अच्छी तरह नहीं छुड़ाया जा सकता जितना किसी मनुष्य को प्रेम पूर्वक समझाने से। बच्चों को तुच्छ न समझो। यही तुम्हारे सब कुछ हैं। वह तुम्हारे व्यवहार को बड़े ध्यान से देखा करते हैं और अपने कोमल हृदय पर उसे अंकित करते रहते हैं। जैसा तुम अपनी संतान को बनाया चाहते हो वैसे स्वयं बन जाओ। एक चरित्रवान् मनुष्य का संसार पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है।

गृहस्थ-सुख की पोल।

सुख के सब साधन और सब कुछ सामग्री एकत्रित होने पर भी गृहस्थ में पूर्ण सुख बिरले ही मनुष्यों को मिलता है। और सो भी थोड़े ही स-

भय के लिये। बिजली चमकी, प्रकाश हुआ और फिर वही अंधेरा। लोग विशेष वैभव, सम्पत्ति, धन-सन्तान वालों को जितना सुखी जानते हैं वास्तव में वे उतने सुखी होते नहीं। एक विष की बूंद कटोरे भर अमृत को विष तुल्य बना देती है। कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी कोई जन दुखी। मनुष्य तो चीज़ ही क्या है अवतारों के जीवन घटनाओं ने भी तो संसारी जीवों की शिक्षा के लिये यही सिद्ध किया है कि:—

उस कर्त्ता से डरते रहना,
करता लगाये घड़ी न पल।
पल में नदियां सूखी देखीं,
पल में कर दिये जल और थल॥
पल में देखीं हरी हरी खेतियां,
पल में होगया जंग जङ्गल।
पल में राज की थी तैयारी,
पल में राम चले जंगल॥
पल में लछमन फिरें नाचते,
पल में होगया चल भाई चल।
पल को गोविन्द दास न खो तू,
पल में छोड़ दुनियां के छल॥

अब, सबको नाच नचाने वाले आनन्दकन्द भगवान कृष्णचन्द्र के गृहस्थ का भी हाल सुन लीजिये, नारदजी आये उन्हीं से संसारी सुख की पोल दिखलाने को रोना रोये "अपने दिल का हाल किससे कहूँ। तुम मेरे पुराने सच्चे मित्र हो इससे कहता हूँ"—"कहिये महाराज अवश्य।" "सुनो"।

दास्यमैश्वर्यवादेन
ज्ञातीनांमहमूयन
अर्धं भोक्तास्मि भोगानां
वाग्दुरुक्तानि च क्षमे॥
अरणीमग्निकामो वा
मथ्नाति हृदयं मम।
वाचा दुरुक्तं देवर्षे तन्मां
दहति नित्यदा॥
बलं संकर्षणे नित्यं
सौकुमार्यं सदा गदे।
रूपेण मत्तः प्रद्युम्नः
सोऽसहायोऽस्मि नारद॥
स्यातां यस्याहुकाक्रूरौ
किंनु दुःखतरं ततः॥
यस्य चापि न तौ स्यातां
किंनु दुःखतरं ततः॥
सोहं कितवमातेव
द्वयोरपि महामुने।

अकस्य जयमाशंसे
द्वितीयस्यापराजयम् ॥

"नाम तो मेरा ईश्वर पुकारा जाता है, पर काम मेरा गुलामी करने का है। मजा दूसरे लेते हैं, मिहनत मैं करता हूं। सुखभोग बहुत थोड़ा और गाली-भोग बहुत अधिक मिलता है। जिनका भला चाहता हूं, जिनके लिये दिन रात पिसौनी पीसता हूं, वे ही सबसे अधिक मुझे बुरा कहते हैं। आग बालने के लिये जैसे आदमी अरणी के ऊपर, मन देके, वेग से, अग्निकाष्ठ को मथता है, वैसे रस से ये सब मेरे रिश्तेदार मेरे हृदयों को गालियों से और निन्दा से नित्य मथा करते हैं। जिसके कारण दिन रात मेरा हृदय जला करता है। बलदेव, मेरे बड़े भाई साहब, अपनी भुजा ही देखा करते हैं, और बलके मद में मस्त रहते हैं। छोटे भाई साहब, गद अपनी सुकुमारता के मारे चूर रहते हैं। चिरञ्जीव प्रद्युम्नजी महाराज को अपना सुन्दर मुखड़ा ऐना में निहारने ही से छुट्टी नहीं मिलती। दुनियां भर के झंझट का काम जो मेरे सिरपर लदा है, उसके ढोने में कोई मेरी सहायता नहीं करता। उग्रसैन-आहुक, और अक्रूर, दोनों मेरे तो बड़े भक्त बनते हैं और हैं भी, पर आपस में इतना लड़ते हैं कि मेरे नाकों दम रहता है। जिसके पास ऐसे दो भक्त नहीं उसकी जिंदगी व्यर्थ है और जिसके पास ऐसे दो भक्त हों, उसका जीवन और भी व्यर्थ है। मेरी तो हालत बस अम्मा की ऐसी होरही है जिसके दो जुआरी पुत्र हों, और आपस में ही जुआ खेलें, और उसका दिन यही मनाते बीते कि एक तो जीते और दूसरा तो हारे नहीं। सो, मेरे पुराने मित्र, तुमको कोई उपाय सूझे तो सलाह दो।"

नारद बोले, "सुनिये महाराज आपद् दो प्रकार की होती हैं, एक तो दूसरी की की हुई एक अपने आप बुलाई हुई। सो आपकी आपद् अपनी बुलाई हुई है आपको क्या ज़रूरत पड़ी थी कि कंस को मार कर उनके सठियाये बूढ़े पिता आहुक उग्रसेन को गद्दी पर बिठाने गये, और फिर उनको अकर्मण्य वृद्ध देखकर उनके ऊपर अक्रूर

को भोज बनाया। (अक्रूर भोजन प्रभवा ....वन्नसेनत.........) आपको गोटियाचोली का चट्टे बट्टे लड़ाने का, इर्ष्या में स्थित होकर कठपुतली पेसा आदमियों को नचाने का शौक है, तो फिर आपको भी उनके साथ नाचना पड़ता है। अब जो किया उसको निबाहिये। वे लोहे के शस्त्र से इन ज्ञातियों की जीभ काटिये।"

"सो कौनसा शस्त्र है ?"

"गालीयों के बदले मीठी बोली। चोरी के बदले और इनाम। अपमान के बदले सम्मान।

नान्यत्र बुध्दिक्षांतिभ्यां
नान्यत्रेन्द्रियनिग्रहात्।
नान्यत्र धनसंत्यागाद्गुणः
प्राज्ञे वशिष्यते॥

दुनियां की गति को, आदमियों के चाल चलन को, देखना बूझना; और बूझ के सहना, क्षमा करना, अपनी इन्द्रियों को वश में रखना, धन को नित्य नित्य त्यागते रहना, इसके सिवाय प्रज्ञावान् पुरुष के लिये और कोई काम बाकी नहीं रहता।"

"बहुत अच्छा, सलाह कहुई तो है पर ठीक है। तत्काल, तो आपने जो मेरा आश्वासन किया वह मानों घाटे पर नोन और जले पर अंगारा रखा। पर भाई, बात सच्ची कही।"

"महाराज, आपको मैं क्या सलाह दे सकता हूँ। आप स्वयं गुरुओं के गुरु, जगद्गुरु, आपने मेरे मुंह से जगत् की शिक्षा के लिये जो कहलवाया वह मैंने कह दिया।"

(सं० हितैषी से)

* * * *

क्या तुम में परमात्मा का अंश है? क्या तुम्हें यह मालूम है कि तुम्हारा शरीर निज का नहीं, तुम परमात्मा के साधनमात्र हो? यदि तुमको यह अनुभव होगया है, तो तुम सच्चे राष्ट्रवादी हो! तुम्हें चारोंओर अन्धेरा सूझेगा। तुम्हारे रास्ते में निराशा आ खड़ी होगी। कलङ्क तुम्हारा पीछा करेगा। परन्तु तुम्हें अपने पैरों खड़ा रहना होगा। —योगी अरविन्द।

* * *

धनतेरस या खाक तेरस और दिवाली में दिवाला

गुलाम हैं तो क्या? तबियत के नवाब तो हैं। दुखी हैं तो क्या? अपनी सनक में मस्त तो हैं। परवाह नहीं करते, चिन्ता नहीं रखते, विचार नहीं फटकने देते कि हमारी हस्ती क्या है, कौन जीव और किस शक्ति के पखेरू हैं? आगे चलकर गिरेंगे या मरेंगे। पानी में डूबेंगे या पत्थरों से टकरायेंगे। सचमुच यदि भारत आज तू इतने ही अविचार का चक्कर न खाता तो क्या इने गिने मुट्ठी भर अल्प संख्यक विलायती तेरे जैसे लम्बे-चौड़े अजदहे की छाती पर आकर दाल दलते? कभी नहीं, हर्गिज़ नहीं दाल दलना तो दूर बल्कि हमारे आँखों के इशारे कठपुतली सदृश नाचना ही होता। कहावत है कि एक और एक ग्यारह होते हैं, एक से दो चून के भी बुरे हुआ करते हैं किन्तु हमारी समझ में तो इन भारतीय जन्तुओं के आगे सभी निष्फल मालूम होता है क्योंकि यहां तो एक नहीं दो नहीं कितने ही गुनी अधिक संख्या शासकों के सन्मुख विशेष है लेकिन यह देहधारी दुपाये जन्तु इतनी भी दम नहीं रखते कि सन्मान पूर्वक अपना चैन से जीवन भी बिता सकें इन्हें तो अपनी धुनि और निजी स्वार्थ मतवाला बनाये हुये है अपनी सनक के पक्के हैं। चाहे रहा सहा सर्वस्व ही खाक में क्यों न मिलजाय। इसका सब से ताजा उदाहरण आंखों के सामने है नज़रों के तीर है दुनियाँ के ठाठ रचे जारहे हैं लिपाई हो रही हैं, पुताई कराई जारही हैं, रंग बिरंगे चटकीले बेल बूटे छाँट २ कर दमदमाती सफेदी चहचहा रही हैं जिधर देखो उधरही, जहाँ देखो तहां ही दिवाली का स्वागत ही स्वागत नजर आरहा है हजारं तस्वीरें सैकड़ों कागजी लालटेनें और अपनी अपनी कारीगरी के निराले नमूने सजावट के लिये इकट्ठे किये गये हैं यह सब जाल क्यों बिछाये गये इतनी दौड़ धूप क्यों की गई? केवल

लक्ष्मी को बुलाने के लिये "माया" को फँसाने के लिये। बड़ी २ दुकानों और कोठियों पर इनाम बाँटे जायेंगे बहियाँ पूजी जायेंगी और चिट्ठे बना बना कर लाभ हानि का तराजू तौल डालेंगे, घी के चिराग जलेंगे, महादेव पर भी चढ़ाये जायेंगे, और खीलें बताशे भी बटेंगी बेचारे। रात रात भर जागते रहेंगे चिरागों में रुपए डाल २ कर सारी रैन जलायेंगे बुझने भी न देंगे कि कहीं लक्ष्मी अंधेरा देखकर भाग न जाय, पूजन भी करायी जायेगी, पन्डे पुजारी भी दक्षिणा लेंगे ब्राह्मण देवता भी माल डाटेंगे, अखबार रंग बिरंगे रूप धारेंगे, लीडर चिल्लायेंगे और धर्म नेता धर्म २ की दुहाई मचायेंगे सभायें की जायेंगी, द्वन्द्व मचाया जायेगा किन्तु सब बेकार, सब व्यर्थ अपनी २ ताक धिना खतम हो जायेगी और हजारों घर अनाथ एवम् दाने २ के मुहताज बनेंगे, सनक के पक्के इतने कट्टर मस्ताने दिलवाले हैं कि 'दिवाली' से पूर्व त्रियोदशी को ही 'धन तेरस' बनलार कर दुजन का माल मारने की धारणा करने में जूआ खेलने लगेंगे और सो भी इस लिए कि सालभरकी तक़दीर अजमा रहे हैं, क्या खूब? कमबख्ती के दिन कह कर नहीं आया करते मुसीबत ढोल नहीं बजाया करती, कयामत गाती बजाती हुई नहीं आती, सब कर्मों के फल हैं, करनी के नतीजे हैं किसी ने बिल्कुल यथार्थ कहा है कि "चलनी में धोवे कर्म टटोवे" क्या तुम्हें पता नहीं, कि महाराज युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा और विचारशील पुरुष भी जुआ दुर्व्यसन के चक्कर से चकरा कर बुद्धि से हाथ धो बैठे? क्या उसके परिणाम का पता नहीं, कि अर्जुन जैसे धर्मवीरों की आँखों के सामने उनकी धर्म पत्नी की भरी सभा में किस तरह ख्वारी की गई। क्या हुआ कि पीछे से बदला लिया करे? क्या हुआ जो बाद में महाभारत खड़ा कर दिया और कौन सी बहादुरी की जो दूसरों को मार२ कर अपनी हस्ती का जलजला भी बुझा लिया! पृथ्वी क्षत्रियों रहित होगई,

भारत वीरों से शून्य रह गया, योधा जमीन के पर्दे में समा गए, अपनी स्वत्व पूजा उठ गई और देश तबाही के गड्ढे में जा गिरा, कहो सिवा अप ने सर्वनाश के क्या बस हुआ विजयी दुर्योधन को सोने की लङ्का हाथ लग गई और क्या उन हारने वाले युधिष्ठिर को इंद्रासन का तख्त हाथ लगा ? कुछ नहीं तो न सही आगे और बढ़ो और महाराज नल की जुआबाजी पर नजर फैलाओ यह किसी से छिपा नहीं कि महाराज नल कितने पराक्रमी और साहसी नरेश थे, कितने सम्पत्ति और शक्ति के रखने वाले थे ! किन्तु वे भी इस धूर्त नाशक के चक्कर में आकर मुसीबतों से बुरी तरह टकराये, दाने २ को भटक गये, जङ्गल २ की खाक छानी और दर २ उनकी धर्म पत्नी तक को ठोकरें खानी पड़ीं, चिथड़े २ को तरो होगये और राजा से भिखारी बन दूसरों की नौकरी करनी पड़ी फिर कोई बतलाये कि नल से ही विजय पाने वाले ज्वारी पुष्कर को कौनसी ब्रह्मपुरी का आसन मिल गया ? कुछ भी हाथ न लगा, कुछ भी पास न रहा तो न सही यह तो पुरानी बातें हैं, प्राचीन कथायें हैं, सुनने में आती हैं अच्छा ! लो आंखें देखती बातों पर ही विचार करो कि हर साल धन तेरस से दिवाली तक कितने दिवाले पिटते हैं कितने टाट पलट जाते हैं ? क्या सुनते नहीं, कि स्त्रियां घरों में चिल्ला रही हैं कि कमबख्त जेवर छीन लेगया, भाई चीख रहे हैं कि बर्तन चुरा ले गया, पिता रो रहे हैं कि रोकड़ के रुपए भी सफा चट्ट कर दिये, अब तुम्हीं बताओ कि यह

धन तेरस हुई या खाक तेरस

और त्यौहार खुशी के लिये आया, आनन्द अथवा प्रेम से कौम का आदर्श बताने आया या लट्ठ पार्टी करने के लिये ! घर २ में कलेश हो गया, मुंखार बिन्द पर जर्दी छागई, धन माल छिना बैठे, कपड़े लत्ते, ठिकाने लगगये कहो अब कैसे धक्के के से निकाले हुए सड़ियल टट्टू की सी शक्ल है, सूरत पर शनीचर विराज रहा है कैसी धन तेरस मनी, कैसी

दिवाली आई ? हवा क्यों उड़ रही है, होश क्यों फाख्ता हैं, मुंह ज़रा तो खोलो, वफ तो निकालो, कहो तक़दीर अजमाली या अभी बाकी रही है ! अजी लक्ष्मी पूजन भी करो और ठोकरें भी जमाओ, स्वागत भी करो और अपमान भी करो यह अजब थियेटर का सा सीरियल है, कौड़ियों की द्वारा इधर से उधर तो लक्ष्मी को फेंकते फिरते हैं बुरी तरह अनादर कर ठुकराते डोलते हैं भला। उन्ही के घर लक्ष्मी यह नितान्त असम्भव है लक्ष्मी तो लक्ष्मी वालों के यहां गई, सात समुद्र पार भाग गई, चीखती चिल्लाती हुई नाक़द्रों के घर से अपना दामन छुड़ा लेगई, अब फटे ढोल सेही धन तेरस मनाया करो, हमारी यह ही समझ में नहीं आता कि शास्त्र कहते नहीं, इतिहास बताते नहीं, धर्म आज्ञा नहीं देता, फिर कौन से आपत्ति के पुतले ने दिवाली पर जूआ खेलने की प्रथा चला डाली, नाश की निशानी का शौक़ कौन से देशद्रोही ने चर्रा दिया पुलिस डन्डे जमाती है, परस्पर में जूतियां चलती हैं और अधिकांश जूएबाज़ हार जीत का रुपया ठौर के ठौर ही गिना कर उठने देते हैं विश्वाश भी नहीं करते, इतमीनान नहीं लाते, इसी से जूएबाज़ों की क़द्र का भली भांति भन्डा फोर हो जाता है कहावत भी तो है कि जूआ के द्वारा ही एक सज्जन से सज्जन पुरुष कामी चोर, डाकू, और भीषण पापी बनना एक मामूली सा खेल है किन्तु इससे सुधरना मुर्दे को जिन्दा समझने के बराबर भूल भुलईयां हैं इस लिए खूब समझजो. हृदय में विचारलो, बुद्धि से काम लो, और जुआ को आपत्ति चौकड़ी से अपना पीछा छुड़ाओ, खुशियाँ मनाओ और प्रेम का सुखमय साम्राज्य हो । चिराग जलाओ, खुशियां मनाओ, और अपनी सन्तान को शिक्षा दो कि आवश्यकता होने पर देश के लिए इस तरह लक्ष्मी फूँक दो कि जैसे आज दिवाली में तेल फूँका जा रहा है अपना सर्वस्व अपना धन ही अर्पण कर दो, त्यौहार मनाने का

और अपनी हस्ती देश के निमित्त अभिप्राय अपनी कौम के उद्धारार्थ बनाने की ही होता है इसी निश्कर्ष को ही पहुंचो इसी नतीजे पर उतरो और शिक्षा ग्रहण कर अपना घर और देश अपने हाथों ही संभालने का साहस करो, तब तुम्हारी दिवाली तुम्हें और तुम्हारे देश को वास्तविक दिवाली होगी अन्यथा "दिवाला" तो बना ही हुआ है।

रंग चढ़ादे मान कहा तू।

भारत प्यारे ! भाग्य सितारा अब चमकादे मान कहा तू।
सदियों सोया, सब कुछ खोया, पछिताया दृग भरि २ रोया॥
राज पाट वह माल खज़ाना अब फिर लादे मान कहा तू॥
कहाँ गया वह चक्र सुदर्शन, महारथी कुल कम्पे सुर गन,
कौशल-शिल्प-कला कमनीया कान्ति खिलादे मान कहा तू॥
शब्द-लक्ष्य-भेदी शर तानें, व्यूह, दुर्ग तोड़ें संधानें,
शारीरिक आत्मिक उन्नति कर जाति जगादे मान कहा तू॥
धर्म्म-ध्वजा भारत फहरादे, शान्ति सुधा संजीवन लादे।
मस्तानों पै देश प्रेम का रंग चढ़ादे मान कहा तू॥
कर्मयोग वंशी ध्वनि गूँजै, मोहन-कोकिल भारत कूँजै।
आर्य जगत में विजय दुंदुभी शीघ्र बजादे मान कहा तू॥

हरस्वरूप त्रिवेदी

जुआबाज मस्तानों के फंदे

कोई हैं मस्त चुड़ी में कोई आशिक फिरंगी पर।
कोई शतरंज सुरही पर कोई चौपड़ दुरंगी पर॥
दिवाने ताश नक्श पर हरेक फ़र्दे बशर हिन्दी।

नशे में चूर मस्ताने अजब दुनियां दुरंगी पर ॥
तुरफ़ फ़्लाश और नकमूठ की रंगत जमाई है।
दिवाली में दिवाला ही मिठाई में खटाई है ॥
किसी की वीवी रोती है किसी की मां, चची, ताई।
चुरा कर ले गये ज़ेवर धुनें सर हाय भौजाई ॥
शरीफ़ों की वहू वेटी भी जूएवाज़ वन बैठीं।
चटोरी चाटतीं चाटें ग़िज़ा रवड़ी मलाई है ॥
हमेशा ज्वारियों को लूटते हैं पुलिस ठेकेदार।
रक़म जोतें और दें जूते ग़जव की वेवफाई है ॥
"त्रिवेदी" लक्ष्मी पूजन की ख्वारी आज़ कैसी है।
जुआवाज़ों के फंदों से वचो भाई भलाई है ॥

कहा दिवाला जुए में इनका ये खुश नसीवी उठाओगे क्या ?

बताओ जूए में जूआ वा जो, कि लाभ इससे उठाओगे क्या।
ग़रीव भारत तवाह है ही औ-इसकी हस्ती मिटाओगे क्या ॥
गुलाम दुखिया हुआ ये खाली लुटा लुटेरों के हाथ दमर।
चलीं गले पर हजारों छूरियां हा! तुमभी खंजर चलाओगे क्या ॥
तुम्हारा जुज और वह शान ताकत विदेश वालों ने खींच डाली।
वचीं जो हड्डी इन्हीं पै गर्दिश, का चर्ख चक्कर चलाओगे क्या ॥
खुदा का वैसे ही कोप नाज़िल, हुआ मरें भूखे लाखों बच्चे।
क्षुधा की ज्वाला जले जो दिलमें, इसेही धकधक जलाओगे क्या ॥
पड़े हैं, हैजा प्लेग फैले दहाड़ फसली वुखार आता।

सताया लाखों ही जालिमों ने बताओ तुमभी सताओगे क्या ॥
अगर जो हारे तो तुम समझलो लगन में घर की सफाई होगी।
बदन के कपड़े व घर के जेवर में आ खुदही लगाओगे क्या ॥
हो आज बेजतें जो सेठ, लाला नजर में दौलत खड़ी तुम्हारे।
कदा दिवाला जुए में उनका ये खुश नसीबी उठाओगे क्या ॥
न हार में कुछभी काम देगी पड़ेंगे बुद्धि पै फिर तो पत्थर।
न तन पै धोती रहे तुम्हारे तो लोटे, थाली गमाओगे क्या ॥
गये अगर यों ही हारते जो तो, स्त्री बच्चों को दांव पै रख।
कराके खेंचा कढ़ेरी उनकी फजीहते भी कराओगे क्या ॥
अगर ये मानो कि जीत भी हो मगर हजारों में एक दो की।
हैं माल खावें व घर फूंकें बचा पुलिस को खिलाओगे क्या ॥
अगर जो आदत पड़ी जुआ की फेरे दिवाली जरूर खेलो।
करेगी मुलजिम बनाके चालां पुलिस के डन्डे भी खाओगे क्या ॥
इसीलिये यह है सबसे अच्छा न भूल जूआ का नाम लेना।
है तुमसे 'वर्मा' का साफ कहना ख्याले बदको हटाओगे क्या ॥

चलते पुर्जे का चक्कर

[ले० एक पहुँचा हुआ फकीर]

स्थान—नन्हीजान का कमरा बाजार छैलछबीला ग्राम डगमगापुरी।

विश की परी, आतिश की पुतली और तबज्जीगं की घोड़ी बी०साहिबा पलंग पर लेटीहैं इधरउधर कमसिन लौंडियाँ आपकी पैरचप्पी करनेऔर वाली साहिबा पान छालिया अटा खट कतरने में जुटी हैं अनेक तस्वीरों और सेंटों की खुशबुओं से दिमाग मस्तोपन लाने में नाक की सीध तक

सन्नाटे ले रहा है नाज़ और नखरों के मारे पीकदान उठाने वाले भडुआ की भी नाकों में दम है मखमली गद्दों पर लेट लगाने से भी इन हूर की माँ का शरीर कल्लाने लगता है तभी तो करवटें बदलते २ गरीब चारपाई भी चरचराहट बांध कर चिल्लाती है किन्तु आराम और ऐश्वर्य के नक्कारखाने में बेचारी तूती की आवाज़ सुने भी कौन ? लीजिये उस्तादजी भी अपनी सरंगी और तबलची तबला सम्हाल कर आ बैठे और मजीरा खटकाने वाले लड़के ने अपनी खनखनाहट शुरू करदी थी साहिबा आहिस्ता से उठ कर पलंग पर बैठ गई फिर तो लौ ण्डियोंने अपने २ पंखे झलने बंद कर दिये और कोई पानदान लेने पर कोई साड़ियाँ लेने ऊपर की छत को दौड़ गई इधर खाला साहिबा ने फरमाई डिब्बी निकाल कर दी जिससे बी साहिबा ने मुंह हाथ धोकर खाक के चहरे पर पालिस का रोगन चढ़ाया हाँ ! हाँ !! ठीक तो है इसी पालिस के बखेड़े चक्कर पर तो तवलीगी के दुश्मन पछाड़े ही जायंगे जो मनुष्य संसार में किसी तरह भी धोका नहीं खाते वे चिकनी मिट्टी में फिसलाकर पछाड़े जाते हैं इसी से बचने पर वे अटल और दृढ़ प्रणी कहाया करते हैं किन्तु इससे बचना लोहे के चने चबाने के ही बराबर है अस्तु ! विष भरे घड़े की तरह बी साहिबा मुलम्मों के जेवरों और नुमायशी कपड़ों से चमचमाने लगीं और एक रुमाल हाथ में ले फैन्सी साड़ी पहिन उस्तादजी की बगल में आ विराजीं उस्तादजी भी सरंगी के कान ऐंठने लगे और तार तम्य घटा बढ़ा कर कीं २ करना शुरू कर दिया अब तबले, मजीरे और सरंगी की गति शुरू हुई और तिनक तकिड़िना के साथ ही बी साहिबा का गला भी इन के साथ मिलने लगा यद्यपि यह बी साहिबा निहायत चलती और चतुर छलियों की ही साक्षात मूर्ति और नित्य ही अपने कमरे पर आये मुसाफिरों के साथ उन्हीं का धन लूट ईमान तक ताक में रखवा देने में

ज़ब्बर १ की तबलीग की सनद पाये हुए थीं और दिल में यही समझ कर कि इस्लाम का बोलबाला होने से मेरे गुनाह माफ़ और बहिश्त का दर्वाजा खुल जायेगा तबलीगी कीचड़ में फंसी हुई थीं इन्होंने कितने ही मनचले शौकीन मिजाजों को अय्याशी की धार से काट २ के इस दारफ़ानी दुनियाँ से किनारे कस किया और सैकड़ों के घर बार बिकवा कर एकका तवंगर (फ़कीर) बना डाला और सो भी बी साहिबा के गुण गाने का मस्ताना जोगी। इसी लिये यह तबलीग़ आफ़िस में हकामी हूर के नाम से पुकारी जाती थीं। हौसले बढ़े हुए दिल चढ़े हुए और निज़ाकत की शान में चूर ज़मीन पर पैर रखने में भी चिढ़ो चटकने वाली बी साहिबा ने ताल स्वर मिला कर "निगोड़े नयनवा" की आवाज़ निकाली ही थी कि फ़ौम परस्त चलते पुर्जा बगल में मोटा सा बस्ता दबाये खट से ऊपर चढ़ बी साहिबा की बगल में आ बैठे चहरे से तेज और शक्ल से शराफत तथा पोशाक से जैन्टिलमैन से देख कर बी साहिबा ने चुपके से दो हाथ और खिसक कर चलते पुर्जा को जगह दी और अपने रोज़ाना बाजारू मुसाफिरों का सा ख्याल करके पानदान मांग छालियाँ देने लगीं किन्तु चलते पुर्जा ने मसूड़ों में दर्द बता कर पहली सीढ़ी का खात्मा किया अब बी साहिबा ने लौंडी को हुकम चढ़ा कर बाबू साहब के लिये दो पान लेने भेजा कि पान वाले से डोरे में बंधवा कर ले आ किन्तु इससे भी चलतेपुर्जा मुकर बैठे और कहा कि बी साहिबा आप तो एक वफ़ादार मूर्तियों में शोहरत पा रही हो फिर कच्चे डोरे की तरह लटकाने का क्या मतलब ? मैं तो तुम्हारे पास नाम सुन कर ही आया हूं वरना रात दिन चक्कर काटने वाले इस चर्खे के पैर कहां ठहरे ? और फ़ुरसत भी किसे ? यह देख कर बी साहिबा चकराने लगीं और कुछ देर तक तो मुँह तकती ही रह गईं लेकिन थोड़ी देर बाद ज़बान खोली तो यही तबलीग़ की

भूत सनकने लगा। बानो च त्रते पुर्जा से कहा कि हम अहले इस्लाम को मानने वाली और तबलीग़ का पुजारिन हैं. देखिये हम दुनियां में कितने ऐश और इशरत से दिन बिताती और बढ़िया से बढ़िया रानी महारानियों को भी कपड़ों के पहनने में मात करतीं हैं किसी चीज़ की भी जरूरत नहीं और घर बैठे जबान हिलाते ही सब काम होते हैं।

चलता पुर्जा-इस तरह के खाने और पहनने को इस्लाम वाले ही अच्छा समझते होंगे। या आप भले ही सिहाया करें। यह चार दिन की चौदस खतम होने पर आपको कौनसे दोज़ख का महल मिलेगा? इसकी भी खबर है या नहीं?

बी० साहिबा-जी हां! मुझे पता है कि मैं गुनाह करती हूँ किन्तु यह मेरा खान्दानी पेशा है इसलिये खुदा इसका कोई ख्याल नहीं कर सका दूसरे हमारी कुरान शरीफ़ में आयत आई है कि काफ़िरों को या तो दुनियां से मिटा दो या, इस्लामी झन्डे के तले ले आओ तुम्हें बहिश्त होगी। इसलिये मैंने यह नेक काम भी अख़्तयार किया है।

चलते पुर्जा-वह कैसे और किस तरह?

बी साहिबा-वह इस तरह कि मैं इस काम में जितना पैसा कमाती हूं उसका आधा बांटकर उन फ़कीरों फक्कड़ों को देती हूं जो आज घूम २ कर ग़ैर मज़हब के इन्सानों को किसी न किसी तरह अहले इस्लाम का अनुयाई बनाते हैं और वहां पर भी जो मेरी मुहब्बत के दामन में जकड़ जाते हैं उन्हें पान छालियां खिलातें २ ही ऐसा फांसती हूं कि घरबार छोड़ यहीं के टुकड़ो पर गुजर करें और अपना माल होली की तरह फूंकदें।

चलते पुर्जा-तो क्या यह जितने हिन्दू बच्चे और स्त्रियाँ भगाई जाती हैं और मेलों में दंगे फसाद होते हैं सब तबलीग़ का ही चक्कर है या गुण्डों की बदमाशी?

बी साहिबा-इस वक्त तो इस्लाम तबलीग़ का ही हामी है।

चलते पुर्जा-तो क्या आप हिं-

न्दुओं के साथ भी यह काबिले नफ़रत काम करती हैं ?

बी साहिबा-जी हां ! वह इस लिये कि खुदा के यहां मुझे वहिश्त मिलेगी। मैं यहां तो मज़े करही रही हूं कुछ वहां भी सम्हालूं बस फिर मेरे दोनों हाथों में लड्डू रहेंगे।

चलते पुर्जा-तो क्या आपके यहाँ जो गाना बजाना सीखने आते हैं उनपर भी इस्लाम का पर्दा डाला जाता है ?

बी साहिबा-जी हाँ ! गानें बजाने वालों पर ही क्या ? जितने भी इस्लाम के काम हैं पीरऔर फकीरों की पूजा कवरों पर चद्दर। सैय्द और ताज़ियों का पुजापा गन्डे और तावीजों का जादू सभी चक्कर डाल कर अपना काम बनाते हैं।

चलते पुर्जा-राम २ ! यह तो बड़ाही खोटा और विश्वास-घाती काम है तुम डबल दोजख़ के घनचक्कर में पीसदी जाओगी भला ! इस तरह धोके और फरेबों से खुदा खुश रहे यह विल्कुल वे बुनियाद झूठ है।

बी साहिबा-नहीं जनाब ! हमारे गुनाह भी इससे माफ़ हो जायेंगे।

चलते पुर्जा-अजी ! गुनाह तो क्या माफ़ होंगे दुनियाँ में जो कुकर्म करते वही भरते हैं यहां के यहीं कुदरत ने आतिशो, जिरियान जैसे गण शरीर भूनने के लिये छोड़ रखे हैं तुम कुछ दिन चमक की चमचमाहट में भूल रहीं हो जब यह पानी ढल जायेगा तब तुम्हें असली खुदा नज़र आयेगा।

बी साहिबा-तो क्या हमारे गुनाह माफ़ होना और हमें इस काम के करने में बहिश्त मिलना दुश्वार है?

चलते पुर्जा-दुश्वार ही नहीं बल्कि बिल्कुल ना मुमकिन है देखना ! कुछ दिनों में तुम्हें यहां की यहीं सज़ा मिल जायेगी और तुम्हारी काया काँप२कर थर्रायेगी भला ! जो दुनियां में विश्वासघात, छल, फरेब मक्कारी करें और सुख पावें यह कभी हो ही नहीं सकता ऐसा कहने और लिखने वाले खुद बेवकूफ़ हैं।

बी साहिबा-तो इससे किस तरह निजात मिल सकती है ?

चलते पुर्जा-वह एक तरह कि आप वहुत पाप कर चुकीं कुदरती सल्तनत में बग़ावत फैला चुकीं और

लिये बनकर खुदा की फुलवाड़ी उजाड़ने की मुलज़िम हो चुकी अब इन बुरे कामों को धता दो और जिनके साथ धोका दे २ कर उनका ईमान लिया है उन्हीं के मज़हब में दाखिल होकर ईश्वर का भजन करो

पी साहिबा—तो क्या ईश्वर और खुदा दो दो हैं जो ईश्वर का भजन करूं।

चलते पुर्जा—नहीं दो दो तो नहीं किन्तु तुम खुद बन्दियों के चक्कर में पड़ी रहोगी तो फिर भूल जाओगी इसलिये मैं यह काम बता रहा हूं जिससे पार लगो।

वी साहिबा—तो हम तो भजन करना जानतीं ही नहीं।

चलते पुर्जा—तुम इस बात का वायदा करो कि अड्डए भड्डए भगा दिये जायेंगे और बुरे कामों को छोड़ कर तुम नेक काम अख्त्यारने तैयार हो तब मैं तुम्हें एक मुकर्रिर दिन पर फिर मिलूंगा और शुद्ध करके तुम्हारा नाम बदल ईश्वर भक्ति का पाठ पढ़ाऊंगा।

वी साहिबा—लीजिये जनाब! मैं अभी से सबको जवाब दिये देती हूं किन्तु आप मुझे इस घोर पाप से निजात दिलाइये आप परसों आयें मैं अपनी और भी सहेलियों को इस काम के लिये तैयार कर लूंगी।

चलते पुर्जा—अच्छा ठीक है! अब हमें एक खास जगह जाना है इसलिये चलते हैं और परसों फिर आयेंगे किन्तु देखो तोबा करो कि अब किसी मज़हब वाले को न बिगाड़ना और न मुतंवों को अपना पैसा देना।

वी साहिबा बहुत अच्छा कह कर रो पड़ी और दोनों हाथ जोड़ कर कहा कि परसों जरूर आइये।

चलते पुर्जा हाँ २ कहकर चलते बने।

मनोरंजन

लक्ष्मी पूजन का त्योहार दिवाली है। सपूतों का धर्म है कि खूब जुआ खेल २ कर लक्ष्मी स्वाहा करें पुरखा गत से यह रीति चली आती है

देखो! राजा नल और धर्मराज युधिष्ठिर तक जुआ खेलते थे। यह बात है द्वापरयुग की। अब तो कलयुग है जितने खोटे काम करोगे, उतने ही फलोगे फूलोगे।

* * * * *

यार जुआ की जीत भी प्यारी और हार भी प्यारी क्यों कि वहां तो हाल चौगुने पचगुने होते हैं। तभी तो सारे व्योपारी और सारे टर्रे सारी जातियां संगठन करके छूत छैया को धता बता कर हर शहर और गांव में अद्भुत खेल खेल कर मौज उड़ाते हैं।

* * * * *

दिवाली पर पुलिस और चौकीदारों और जूए के ठेकेदारों की खूब गहर पटती है इनकी हमेशा जीत है क्यों दोस्तो! ठीक है न?

* * * * *

शेठ जी भी दिवाली के उपलक्ष में दो हाथ फेकेंगे। पर भूखा बङ्गाली का कहना है कि सेठ जी! तुम्हारी सदा जीत है, क्यों कि इकतालीस सेरा माल लेते हो और उतालीस सेरा वेचते हो, जब पोल खुलती है तो झट से रो २ कर छूट जाते हो। परयार! पाप का घड़ा फूटेगा। भाइयों मार २ कर जो उल्लू सीधा कर रहे हो और धर्मादा खाना हड़प रहे हो, उसका बदला दिवाली मैया दिवाला काढ़ कर देगी। देशभक्तों को गालियां, क्यों सेठ जी!

* * * * *

भूखा बङ्गाली अपने स्त्री, पुत्र, धन, धान्य को हार गया। पैसा चसका जुए का लगा कि खुदा ने कोप करके उसका सर्वनाश कर दिया। यार लोगों ने खूब भूठी फबतियां उड़ा के नया माल मसाला भी खतम करा दिया। पर भूखा बङ्गाली तो—

"दूर मिस को; कुत्ते कमसिन को,
परी कहते हैं।
दोस्त खुश हों कि जफ़ा हम तो
खुशी कहते हैं॥"
जफायें झेल कर तासीर
उल्फत की दिखाते हैं।

हिना की तरह पिस लेते हैं;
तब हम रंग लाते हैं ॥

* * * * *

भारतीय अपनी सभ्यता व्यवहार शिष्टाचार का दिवाला पीट रहे हैं जो देश को रसातल ले जा रहे हैं कुकृत्यों से कहो किस देश ने स्वराज्य प्राप्त किया है ?

* * * * *

मियां हसन निज़ामी की तबलीग़ और तंज़ीम एक ओर दांव लगाये बैठी है। दूसरी ओर शुद्धी का शेर दहाड़ रहा है, स्वराज्यपार्टी कौन्सिल में दांव लगाये बैठी है। नौकरशाही पेंठ में अठखेलियां खेल रही है। देखें ! इस शतरंजी चालमें विजय लक्ष्मी किसे प्राप्त हो ?

* * * * *

भारत की शिक्षा का दिवाला पिट गया तब भला,

शेर— तिलफ़ में तू आये क्यों,
माँ बाप के अवतार की।

दूध डिब्बे का पिया,
तालीम दी सरकार की॥

पढ़ा २ के लन्दन की हवा खिलाओ ! और हूरों का चेला बनाओ, नई रंगत जमाओ बस स्वराज सामने से भाग आरहा है क्यों ? बाबू साहब ?

* * * * *

क्वारी लड़कियां पढ़लें २ परदे ही परदे में काम बना लेती हैं। और शौहर तलाश करने की तकलीफ़ सरपरस्तों को नहीं देतीं।

तालीमे दुख्तरां से
उम्मेद है ज़रूर।
नाचे दुलहन खुशी से खुद
अपनी बरात में ॥

* * * * *

अरे यारो ! आज़ादी दे दो फिर पर्दा तो सातवें आस्मान पर पहुँचेगा। और वह नङ्ग नाच होगा कि यही लड़कियां इज़ारबन्द को भी हम्ल बेजा समझेंगी कहो शरीफ़ो ! हमल गिरवाने की फ़ीसें कब तक डाक्टरों को चुकाओगे ?

* * * * *

आज कल के बच्चे और बीबियां मग़रबी सांचे में ढल रहे हैं। तरक्की का ज़माना है

लैला ने साया पहना,

मजनू ने कोट पहना।
टोका जो मैंने बोले,
बस२ खामोश रहना॥

* * * *

दिवाली के बाद ही मेम्बरी की धूम मचेगी। बहुत से पुराने मेम्बर मसिया पढ़ेंगे। और नये रंगरुट भर्ती होंगे। हाय। भूखे बङ्गाली का कैसे खर्च चलेगा! सिकत्तर, चपरासी भङ्गी, इक्के वाले सब हरदम अर्दली में हाजिर रहते थे। बाज़ार के दुकान दार चीज सस्ती देते थे सब झुक २ कर सलाम करते थे, गुल छर्रे उड़ाते थे यारो अब करो बेकार डिपार्टमेंट की मेम्बरी। हाय प्यारी मेम्बरी!

मेम्बरी मुझ पर फ़िदा है
मैं फ़िदाये मेम्बरी।
मेम्बरी मुझ को न छोड़े,
मैं न छोड़ूं मेम्बरी॥

हाय२। नई रोशनी और इन नये हाकिमों ने नई आफ़त डाली।

* * * * *

निहायत तेज़ी के साथ दुनियां घरबार लीपने पोतने में लगी है चारों ओर झाड़ फन्नूस और सफ़ेदी की दमदमाहट दम २ दमकती है किन्तु फिर भी खुशी में खिसी घुस ही बैठी कोई स्त्री के जेवरों को रो रहा है तो कोई दिवाला निकाल कर सिर धुन रहा है। और कोई फोकट की आई लछमी को दोनों हाथों से लुटा रहा है ठीक "यह दुनियां अजब है मकारे सराय, कहीं खैर खूबी कहीं हाय हाय।

* * * *

गुलाम देश को जूए की सूझी राम २। अक्ल के दुश्मनों को बेढगी सूझी। कोड़ियोंमें ही लक्ष्मीको इधर से उधर फेंकते हैं, न तो लक्ष्मी की यह कदर करें और न वह। तभी तो लक्ष्मी यहां से रोती चिल्लाती सात समुन्द्र पार भाग गई। चलो! तुम कोड़ियों पर ही गुजर करना।

* * * * *

लीडर चिल्ला रहे हैं, अखबार रो रहे हैं और बड़ेर लम्बे चौड़े लेख अजदहे का सा शरीर बढ़ा २ कर अखबारों में छपे पड़े हैं कि "जूआ मत खेलना" किन्तु शरीफ़ शौकीन तबीयत फिर भी अपना आसन जमाये छक्का पज्जा डाले विना नहीं मानते अजी! इनके लिये तो "बूढ़ा मरे या ज्वान, पर हत्या से काम" चाहे देश भले ही तबाह हो।

सम्पादकीय विचार

समाजोन्नति के लिये त्याग की जरूरत ।

हमारे समाजके समझदार समझने वाले सभी लोग समाजोन्नति को चाह रहे हैं, प्रायः नवयुवकों में तो समाज सुधार की भावना पाई जाती है. प्रायः प्रत्येक शहर से दो चार उत्साही युवक पाए ही जाते हैं और वे एकाध संस्था स्थापित भी कर देते हैं किन्तु फिर भी हमारी जाति उन्नती तरफ जा रही है ऐसा हम नहीं कह सकते क्यों कि समाज में बुराइयां घटने की अपेक्षा बढ़ अधिक रही हैं और कारण भी स्पष्ट है समाज का अधिक हिस्सा स्वार्थ वश बाप दादाओं के नाम समाज सुधार नहीं चाहता कुछ हिस्सा इन लोगों के बहकावे से तथा दबाव से सुधार नहीं चाहता और थोड़ा हिस्सा सुधार चाहता है किन्तु काम कर नहीं सकता और बहुत कम लोग ऐसे सपड़ेंगे जो समय मिलने पर थोड़ा बहुत करते हैं। शायद ऐसे लोग दो चार की संख्या में मिल जाय तो अशोक की जाति सुधार लिए सर्वस्व अर्पण करते हों, तब भला यह महान यज्ञ जिसके लिए त्याग के आहुती बड़ी भारी जरूरत है वह पूर्ण कैसे होसके। हम हिसाबी लोग हैं हम को हिसाब करके देख लेना चाहिए कि बुराई बढ़ाने वाले ज्यादे हैं या घटाने वाले? बुराई की शक्ति अधिक है या कमी! इस समय तो हमारी समझ में यही आता है इस समय हमको यदि हमें समाजोन्नती करनी है तो इस समय जो प्रयत्न होना चाहिए। बुराइयों घटाने के लिए इनसे अधिक प्रयत्न करना चाहिए। इन प्रयत्नों की नींव किस वस्तु पर है? उसे ढूंढनी चाहिए वह वस्तु है त्याग, बिना त्याग के हम यह कार्य नहीं कर सकते। हमारे समाज में इस समय त्याग है या नहीं? है लेकिन—

त्यागका दुरुपयोग होरहाहै—

हमारी समाज में इस समय समाज सेवा इस नीयत से. कर्जा ला लाकर हजारों रुपये ओसर मोसरों में खर्च करते हुए हजारों लोग पाये जावेंगे धर्म सेवा की भावना से ब्राह्मण भोजन में, मन्दिरों में तथा साधु बनाने के लिए खर्च किए जारहे हैं। इस समय जो दांव हम लोक कर रहे हैं उसकी बराबरी में शायदही और कोई दूसरी जाति हो किन्तु हमें यह लिखते हुए अत्यन्त खेद होता है कि हमारो यह करना बिलकुल अज्ञानयुक्त है क्योंकि भोजन जिमाना यह जाति सेवा नहीं है आज भोजन एक दिन जिमाने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं है पर जिस बात पर बनना अवलम्बित है हजारों लोगों के संसार बिगड़ रहे हैं, जीवन की सफलता असफलता अवलम्बित वह सच्ची जाति सेवा है। सेवा वही हो सकती है कि जिस वस्तु के लिए एक व्यक्ति जो तलमला रहा उसकी उसे बड़ी जरूरत हो उसे देना। आज हम क्या कर रहे हैं जिस बात की समाज को कुछ जरूरत नहीं है उसे तो देरहे हैं यहां तक कि उसे उससे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होरही है और उसी वस्तु बिना दूसरे का प्राण जारहा है उसे कुछ भी नहीं देते चाहे वह मर जाय हमें दया भी नहीं आती क्या यह सेवा जाति सेवा हो सकती है? पाठक स्वयं सोचलें। धर्म सम्बन्ध में भी हमारे विचार बड़े ही विचित्र हैं। प्रथम पाप से धन कमा कर उस पाप से छुटकारा पाने के लिए दान करते हैं करें लेकिन धर्म करते समय यह तो जांच ले कि हम धर्म कर रहे हैं वहां कहीं अधर्म तो नहीं है या इससे भी अधिक लाभप्रद दूसरा कार्य है या नहीं? इसको विचार कर लेना जरूरी बात है। ब्राह्मणों को भोजन करा कराके हम उन्हें आलसी मूर्ख अज्ञान बनाकर उनका जन्म बिगाड़ रहे हैं। मन्दिरों में पैसा लगाकर गुण्डों के शिकार बन रहे हैं यदि हम विचार पूर्वक देखें तो हमें यह स्पष्ट दीख पड़ेगा कि मन्दिर पुण्य की अपेक्षा पाप-स्थल अधिक बन रहे हैं और आखिरी बात धन खर्चकर साधु बनाना। हमने

ऐसे कई धर्म पागलों को देखा है कि जो एक एक व्यक्ति को साधु बनाने में हजारों रुपये खर्च कर देते हैं ? हम साधु बनाना बुरा नहीं समझते किन्तु ये साधु सच्चे साधु नहीं बन सकते यह साधु संसार का भला करने की अपेक्षा हानि ही अधिक कर सकते हैं नहीं तो क्यों इतने साधुओं के होते हुए भी हमारी यह दशा होती ? चाहे यह साधु अपना कल्याण करने समर्थ हों किन्तु सामाजिक दृष्टि से यदि हम विचार करें तो आज यह कहना ही पड़ेगा कि समाज का कल्याण करने के लिए जितना सामर्थ होना चाहिये उतना उनमें नहीं है और न वे कर रहे हैं। आज समाज का मरण जीवन का प्रश्न है ऐसी हालत में वे अगर इस तरफ जरा भी ध्यान न दें तो हमें यह बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि उनका उग्र त्याग यह समाज की दृष्टि से-उसके लाभ हानि के विचार से सद् उपयोग नहीं है। हमारी सम्मति में साधु मुनियों का यह अवश्य कर्त्तव्य है कि जिस समाज में पले हैं जिस समाज के वन्दनीय जिस समाज का अन्नग्रहण करते हैं उसके सुधार में पूरा २ योग देना चाहिये यदि वे अपने इस कर्त्तव्य कार्य को पूरा नहीं करेंगे तो हमारी समझ से तो वे आत्म कल्याण में भी सफल कदाचित् हो होंगे फिर--

क्या करना चाहिये—

या तो वे समाज सुधार के कार्य को हाथ में लें यदि वे इस कार्य को बाधक समझें तो नये होने वाले साधुओं को प्रथम अर्द्ध साधु-ब्रह्मचारी रखकर समाज का काम उनसे करवाना चाहिये बाद में कुछ रोज में वह स्वयं ही आत्म कल्याण के हेतु से साधु बन जावेगा लेकिन आज जिस तरह से चेलों का मोह किया जाता है वह न करना चाहिये। आज अगर हमारा साधु समाज इस सुधार के कार्य को हाथ में ले लेवे तो उसे सुधारने की सामर्थ उनमें है किन्तु यह बात उनके आधीनता की है। पर हमने जो दूसरी बात कही वह तो इतनी कठिन नहीं है जिसे वे न कर सकें। यह बात केवल

हमारे हित की है ऐसो नहीं पर उनके भी हित की है आज साधु समाज में कई लोग ऐसे पाये जाते हैं कि जो साधु कहलाने योग्य नहीं इसका कारण एकदम साधुओं का होना है। यदि इसमें लिखी हुई व्यवस्था चालु होगई तो जो पूरे त्यागी हैं वे साधु समाज में आकर जो साधु समाज झगड़े टंटे के लिये प्रसिद्ध है वह झगड़े कम हुए बिना नहीं रहेंगे। आज पूर्ण त्याग बिना साधु बन जाने के कारण केवल नियमों के लिए "बलात्कार से संयम" पाल अपने जीवन को असफल बना रहे हैं। वैसे साधु बनकर सच्चे हृदय से संयम पालकर अपना तथा समाज का जीवन उज्वल किये बिना नहीं रहेंगे। यदि समाज के सुदैव से यह बात स्वीकृत होकर त्याग का सद्‌ उपयोग जाति हित में करने लग गये तो ओसवाल जाति अपनी उन्नति कर संसार की सभ्य जातियों में अपना नाम लिखा सकती है नहीं तो कल आज जो संसार के सामने कलंकित मुख है वह भी शायद थोड़े ही दिन बता सके। इसलिए जिन्हें समाज का हित करना हो वे आगे बढ़ें।

मानव जीवन के कर्त्तव्य बहुत ही उच्च और आदर्श होते हैं जो अपने कर्त्तव्य सदाचार से गिरे हुए हैं तो कहना चाहिये कि अभी सेवा करना अपने को आता नहीं है और अपने अपने कर्त्तव्यों को नहीं जानते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

पढ़ने से मनुष्य सुधरता नहीं है किन्तु सदाचार से ही सुधरता है, उन्नति प्राप्त करता है। जितना आपका लक्ष्य पढ़ने में है उससे कई लाख गुणा सदाचार की रखो। "लाख मन ज्ञान से एक मुट्ठी चारित्र उत्तम है"।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सदाचार की प्राप्ति शुभ संस्कार और मन वचन काय की विशुद्धता पर ही निर्भर है इसलिये धार्मिक नीति का बालकों को सबसे पहले ज्ञान करावो और आपको स्वयं वीर्य विशुद्धि (जाति व्यवस्था) मन विशुद्धि (सदाचार का पालन) भोजन विशुद्धि, संस्कार विशुद्धि (तन विशुद्धि) वचन विशुद्धि और आत्मज्ञान विशुद्धि (आगम विशुद्धि) पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀
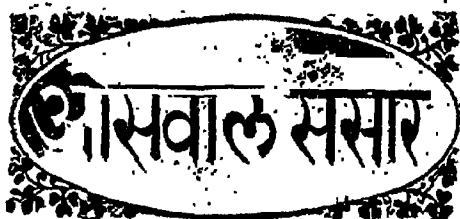
श्री ओसवाल हितकारिणी सभा. अजमेर

द्वारा

संवत १९८१ में अजमेर के ओसवालों की हुई

डाइरेक्टरी

(पारिवारिक परिचय)

का

संक्षिप्त विवरण

घर

ओसवालों के कुल घर २९६ हैं† जिनमें १४३ मारवाड़ी साथ में हैं। १३८ शरदार साथ में हैं और १५ किशनगढ़ साथ में हैं।

बड़े साजनों के २६७ घर हैं और छोड़े साजनों के २९ घर हैं।

३४ घरों में हर घर में अकेला एक मर्द है और चौबीस घरों में हर घर में अकेली एक औरत है।

२१० घर जैन श्वे० स्थानकवासी आम्नाय के हैं, ७२ घर जैन श्वे० मन्दिर आम्नाय के हैं और १४ घर अजैन धर्मानुयायी हैं।

करोड़पति घर सिर्फ एक है, लखपति घर करीब ११ हैं।

† सम्भव है कि दो चार घर और भी हों जिनके नाम किसी भी धड़े में न लिखे जाने से इस गणना में न लिखे जा सके हों।

मनुष्य

कुल ओसवाल मनुष्य ११८१ हैं जिनमें ३६४ मर्द हैं (जो विवाहित हैं अथवा जिनकी उम्र १८ वर्ष से ज्यादा है) ४०७ औरतें हैं, २१७ लड़के हैं (जिनका विवाह नहीं हुआ है और उम्र में १८ वर्ष से कम हैं) और १५३ लड़कियां हैं।

मर्द

३६४ मर्दों में सिर्फ २७२ के औरतें हैं बाकी १२२ बगैर औरत हैं जिनमें ५१ कुंआरे और ७१ विधुर हैं।

२८१ हिन्दी या महाजनी जानते हैं, १०५ अंगरेजी भी जानते हैं और ८ तो बिलकुल अनपढ़ हैं।

पुत्र सिर्फ १६७ के हैं, बाकी के अभी पुत्र ही नहीं हैं।

व्यवसाय (धन्धा)

१४८ दूकानदारी करते हैं, १३७ मुलाज़िमत करते हैं, ७३ के दूसरे धन्धे हैं और ३६ तो बिलकुल वगैर धन्धा हैं।

ओसवालों की दूकानें तीन जवाहिरात की हैं, पांच चांदी सोने की हैं, उन्नीस गोटा किनारी की हैं, बारह कपड़े की हैं, दस घी की हैं, छः नाज की हैं, छः तांबे पीतल के बरतनों की हैं, चार गुड़ शक्कर की हैं, छः परचूनियों की हैं, चार विलायतखाने की हैं, एक ऊनी माल की है, एक कागजी की है, दो डाक्टरी की हैं और एक फोटोग्राफर की है।

२ छापाखाने ओसवालों के हैं, १ साबुन का कारखाना ओसवालों का है, १ पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ओसवालों का है और १ मासिक और २ साप्ताहिक पत्र भी ओसवालों की ओर से निकलते हैं।

सरकारी खजाने में ४, तहसील के खजाने में १ और रेलवे के खजाने में ३ ओसवाल पोतदार और क्लर्क हैं।

रेलवे दफ्तरों में ओसवाल क्लर्क-आडिट (बड़े दफ्तर) में ११ हैं, लोको (छोटे पुतलीघर) में ६ हैं, कैरिज (बड़े पुतलीघर) में भी ६ हैं और २ फिटर हैं और स्टोर में सिर्फ २ क्लर्क हैं।

ओसवाल दलाल ७ हैं, फेरी वाले ८ हैं और खोमचे वाले २ हैं।

ओसवाल बन्धु की ज्यादा से ज्यादा

तहख्वाह ३५०) मासिक आडिट डिपार्टमेंट में है।

ओसवालों की सरायें २ है जिनमें से एक जिसमें ओसवाल यात्रियों को थोड़े कुछ लिये विश्राम दिया जाता है श्रीमान् सेठ हीराचन्दजी सचेती की है जिन्हीं की मुख्य सहायता मिडिल स्कूल तथा कन्या पाठशाला में है और जिन्होंने इस सभा के निवेदन पर इसी वर्ष एक प्रशंसनीय और अनुकरणीय कार्य यह किया है कि अपने ज्येष्ठ पुत्र चिरंजीव कुंवर रतनचन्दजी के विवाह में वेश्या-नृत्य बिलकुल नहीं कराया कि जिससे साधारण स्थिति और धनवान स्थिति के सर्व स्वजातीय बन्धू वेश्यानृत्य की विवाह में शोभा के लिये आवश्यकता के मिथ्या वहम को छोड़ दें।

श्रीमान् सेठ मंगनमल जी ने भी अपने विवाह के मौके पर ऐसा ही किया था जिनके लिये यह सभा दोनों महानुभावों को धन्यवाद देती है और आशा करती है कि हमारे अन्य स्वजातीय बन्धू भी उनका अनुकरण करेंगे और किसी भी खुशी के मौके पर रंडी का नाच गाना हरगिज नहीं करावेंगे।

स्त्रियां

४०७ औरतों में २६७ सधवा (पति-मौजूद) हैं* जिनमें सिर्फ १५६ संतान वाली हैं, बाकी के संतान (बाल बच्चा) ही नहीं है।

विधवायें १४० हैं जिनमें सिर्फ ७७ के पुत्र हैं बाकी बगैर पुत्र हैं।

४०७ स्त्रियों में सिर्फ १०८ हिन्दी (साधारण पढ़ना लिखना) जानती हैं बाकी २६६ बिलकुल अनपढ़ हैं।

लड़के

२१७ लड़कों में ११६ पढ़ रहे हैं वा पढ़ चुके है, बाकी उम्र छोटी होने के कारण नहीं पढ़ रहे हैं, पर ४ की उम्र तो ७ वर्ष की होगई है तो भी अभी नहीं पढ़ने लगे हैं।

१२ वर्ष ऊपर की उम्र के कुल ओसवाल लड़के ५८ हैं।

लड़कियां

* सधवा स्त्रियां २६७ ही हैं किन्तु औरतों वाले मर्द २७२ बतलाये गये हैं कारण यह है कि ५ महाशय यहां अकेले ही रहते हैं उनकी औरतें यहां नहीं रहती हैं।

२६३ लड़कियों में सिर्फ ७२ पढ़ रही हैं अथवा पढ़ चुकी हैं, बाकी उम्र में छोटी होने से अभी पढ़ने नहीं लगी हैं तथापि ६ लड़कियां ७ वर्ष की हो गई है पर अभी तक पढ़ना शुरू नहीं किया है।

९ वर्ष ऊपर की उम्र की कुल ओसवाल लड़कियां ५१ हैं।

संस्थायें

लड़कों की पाठशालायें २ हैं जिनमें से १ में अंगरेजी मिडिल तक की पढ़ाई है करीब ५५ लड़के ओसवालों के बगैर फ़ीस पढ़ते हैं और करीब इतने ही लड़के ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य जाति के फीस देकर इसमें पढ़ते हैं अध्यापकों में २ ओसवाल हैं। हैडमास्टर ८०) रुपये मासिक वेतन पाते हैं और कुल खर्च करीब सवा दो सौ-अढाई सौ रुपये मासिक का है। और दूसरी पाठशाला में १ अध्यापक पढ़ाता है और २५) रु० मासिक का खर्च है इनके अतिरिक्त एक रात्रि पाठशाला भी है जहां रात्रि को १॥ घंटे तक स्थानकवासी आम्नाय-धर्म की शिक्षा दी जाती है यह पाठशाला स्था० नवयुवकों के परिश्रम से ही चलती है।

कन्या पाठशाला १ है जिसमें करीब ५० लड़कियें ओसवालों की पढ़ती हैं दो अध्यापिकायें पढ़ाती है और करीब ४०) रुपये मासिक का खर्च है।

औषधालय १ है जिसमें हरएक मनुष्य को दवा मुफ्त दी जाती है और करीब ६०)-७०) रुपये मासिक का खर्च है।

पुस्तकालय २ हैं जिनमें एक नित्य प्रति बराबर खुलता है सामयिक पत्र भी आते हैं और पुस्तकें भी घर पर पढ़ने को दी जाती हैं और दूसरे पुस्तकालय में पुस्तकों का संग्रह मात्र है, नित्य प्रति नहीं खोला जाता है।

ओसवालों के ३ जैन श्वे० मन्दिर हैं १ घर देरासर है १ दादाबाड़ी है (जहां भी १ मन्दिर है), ४ उपासरे हैं और ९ स्थानक हैं।

सभायें

चालू सभायें २ हैं जो बराबर नियम पूर्वक सम्मिलित होती हैं और कार्य करती हैं। एक यह सभा (श्री ओ० हि० सभा जो ज्येष्ठ द्वि० शुक्ला ३ वि० सं० १९८० तदनुसार रविवार ता० १७-६-२३ को स्थापित हुई है जिसके इस वक्त २८ सभासद् हैं)। सब ही धड़ों के, और सबही धर्मों और आम्नायों के ओसवालों की है और दूसरी

सभा स्थानकवासी नवयुवकों की है।

दो तीन और भी सभायें हैं जिनका संम्मिलन और कार्य बहुत अरसे से नहीं होता है इसलिये बन्द सो है।

विस्तृत वर्णन

सभा इस डारेक्टरी को ज्यादा व्यौरेवार भी प्रकाशित कर देगी जबकि पांच आना प्रति की लागत से खरीदने को ५०० ग्राहक सभा के मन्त्री के पास सूचना भेज देंगे वा सब खर्च कोई एक महाशय दे देंगे।

रतलाम में जातिय संगठन।

श्री बालचन्द जी श्री माल जाइंट सेक्रेटरी श्री ओसवाल (बड़ेसाथ) सहायक मित्र मंडल सूचित करते हैं कि हमारे यहां जोकि मालवा प्रांतका मध्य है औरजहाँ ओसवालों की तादाद बहुत बड़ी है। वहांके नवयुवक जाति प्रेमीयों के हृदय से जाति सुधार का भाव जागृत होकर वहां ओसवाल सहायक मित्र मंडल स्थापित किया है उद्देश जातिमे कुरितीयांओं को दूर करके नव-जीवन का संचार करना उनके इसकार्य सेकुछ आगेवानों की सहानुभूति है इतन ही नहीं किन्तुवे इस कार्यके करने में सहायता भी देते हैं। यहबड़े हर्षकी बात है हम हृदय से चाहते हैं कि ये लोग इस कार्य में सफल हो।

ओसवालों की अवनति का एक मुख्य कारण।

आज ओसवाल जाति रसातल को पहुंच रही है इसका ज्ञान पाठकों को अजमेर की जो डायरेक्टरी प्रकाशित हुई है उससे पूर्ण पतालग सकता है परन्तु खेद है की हमारी जाति की अबभी आंखें नहीं खुलती इसका मुख्य कारण यह है की अभीतक कोई ऐसा आन्दोलन जाति को जगाने का नहीं किया गया। आन्दोलन केजो साधन हैं उनमें मुख्य एक साधन समाचार पत्र हैं और जाति का जो एक मासिक पत्र यह "ओसवाल" निकलता है उससे जाति कोअधिक लाभमासिकहोनेके कारणनहीं पहुंचता। हमारे हाथ में जबसे ओसवाल का भार आया है तबसे हम इसी बिचार में हैं की किन २ उपायों से इस जाति की भलाई हो सकी है तो इसी

ऊपर छपी पांचों बिजलीकी अद्भुत चीजोंमें न तेलकी जरूरत है; न दीया सलाईकी बटन दबा दीजिये, चटसे तेज रोशनी हो जायगी, आंधी पानी में न बुझेगी। जेबमें रखिये चाहे हाथमें पकड़िये आगका बिलकुल डर ही नहीं है। इनमें बैट्रीकी शक्ति भरी रहती है (नं १) यह काली पालिसदार तेज रोशनी वाला हाथ में लटकाने का लेम्प है, जो अन्य लालटेनोंकी नाई बर्ता जा सकता है जब जी चाहे बटन दबा दो खूब उजियाला होगा दाम सिर्फ ४॥) डाक खर्च ॥) जुदा (नं० २) यह जेब में रखनेको तीनरङ्गा लेम्प है जो इच्छानुसार लाल, हरी और सफेद रोशनी बना सकते हैं बटन नीचा खींचिये जल जायगा ऊपर कीजिये बुझ जायगा दाम सिर्फ ३॥) डाक खर्च ॥) (नं० ३) यह एक रंगा सफेद रोशनी वाला जेबी लेम्प है दाम जर्मनी का ३) और इंगलिशका ४) डाक खर्च ॥) (नं० ४) यह रेशम का बना गुलाबका फूल है जो कोट में लगाकर बेटरी कोटके अन्दरवाली जेबमें रखके तारके कनेक्सन करने पर प्रकाश हो उठता है बड़ा ही सुन्दर है दाम सिर्फ ३) है डाक खर्च ।>) जुदा (नं० ५) यह कमीजके तीन बटनोंका सेट है जो रातमें प्रकाश देने के कारण कीमती हीरोंकी भांति चमकता है इसका भी तार बैटरीसे जोड़के कमीजके अन्दर वासकट की जेबमें रखा जाता है लोग देख कर आश्चर्य करते हैं भेटमें किसीको देने लायक बड़ी अच्छी चीज है आज तक हिन्दुस्तान में नहीं आई हैं दाम ८) डाक खर्च ॥) जुदा।

पता:—जे० डी० पुरोहित एण्ड सन्स पोस्ट बक्स नं० २८८ कलकत्ता।

निर्णय को पहुंचे हैं की यदि ओसवाल जाति की भलाई और जैन धर्म का उद्धार भी अगर हो सका है तो एक ओसवाल पत्रके द्वारा ही हो सका है।

ओसवाल जाति के सभी बंधु जैन धर्म के प्रेमी और अनुयायी हैं (यह दूसरी बात है कि कुछ लोग किन्ही कारणों से इस धर्मसे अलग होगये हैं) और जैन धर्म में मुख्य करके (१) श्वेताम्बर स्थानकवासी (२) श्वे० देहरा वासी (३) श्वे० तेहरा पंथी और दिगाम्बर यह चार भेद हैं। इनचार भेदों में रहने वाले ओसवाल को, केवल जाति नाते से यदि कोई एक सम्प्रदाय वाली जैन महासभा,एकत्रित करने को अपनी तमाम शक्ति गलादे तोभी वह एकत्रित नहीं हो सकते क्योंकि उनमें आपस में धर्म का भेदका भाव इतना पड़ा हुआ है कि यदि " ओसवाल " द्वारा इसका उचित आन्दोलन और उपाय अभीसे नहीं किया जायगातो यह रोग असाध्य हो जायगा और जैन धर्म तो तारनेवाला है वह आपसकी फूटके कारण इस जाति को भी डुबोदेगा। सवाल सामने यह उपस्थित है की फिर "ओसवाल" पत्र द्वारा क्यों नहीं आन्दोलन किया जाय। ऐसे स्वजाति बंधुओंकी सेवामें सविनय निवेदन है कीजबतक आपका "ओसवाल" मासिक रूपमें रहेगा तब तक न तो इससे जातिकी भलाई हो सकती है और न जाति में जीवन ही पैदा हो सकता है इसलिये यदि आपको अपनी जाति और जैन धर्म से प्रेम हो तो आप शीघ्रसे शीघ्र आगामी वर्ष से ओसवाल को साप्ताहिक बनादीजियेगा। ओसवाल को साप्ताहिक बनाने में आजकल जो उसकी ग्राहक संख्या है उसको देखते हुये ६००) रु० प्रतिवर्ष घाटा होगा क्या ओसवाल जातिके सपूत इस घाटे को किसी तरहसे पूर्ण करने की उदारता दिखा सकते हैं यदि दिखा सकते हैं तो उनको आजही अपने २ विचार हमारे पास लिखकर भेजदेने चाहिये जिससे हम आगामी वर्ष के लिये इसका पूर्ण प्रबंध कर सकें।

श्रीयुत पद्मसिंह खुराना, प्रिंटर एण्ड पब्लिशर जैन प्रेस जौहरी बाजार आगरा।